TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182281

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H83|A29D Accession No G.H.1679

Author सेनी |

Title दारबुंदा |1948

This book should be returned on or before the date last marked below

८४१'२

ऐतिहासिक उपन्यास

सदरुद्दीन ऐनी लिखित

दाखुंदा

राहुल सांकृत्यायन



प्रकाशक

किताब महल • इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, १९४८

प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—सदलराम बायसवाल, रामप्रिंटिंग प्रेस, कीटगंज, इलाहाबाद

दो शब्द

ऐनी सोवियत-मध्य-एसियाके प्रेमचंद हैं उनका "दाखुंदा" (और "गुलामान" भी) केवल उपन्यास नहीं इतिहास हैं। सोवियत् मध्य-एसियाके परिचयमे ऐनीके उपन्यासों से बढ़कर सहायक शायद ही कोई पुस्तक हो। यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि ऐनीने अपनी पुस्तकोंको अपने लोगोंके लिये लिखा था, जिनसे उनका मनोरंजन ही नहीं शिक्षा भी हुई। लेखकने अपने उपन्यासोमे मध्य-एसियाके समाजका सूक्ष्म चित्र उतारकर रख दिया है, जिससे सुविधाके इतिहास प्रेमी तथा समाजशास्त्री बहुत लाभ उठायेंगे।

राहुल सांकृत्यायन

प्रयाग
१५—३—४८

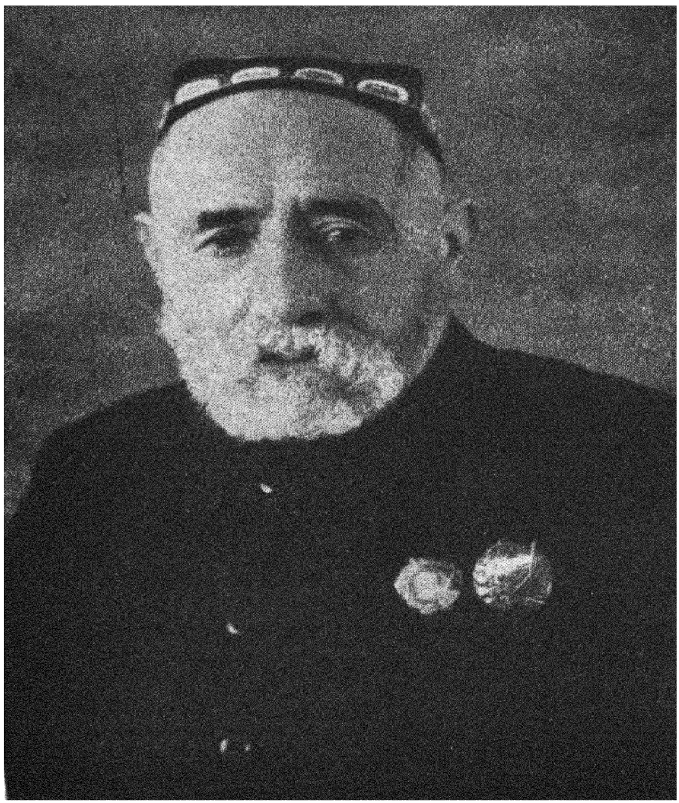
विषय-सूची

खंड	पृष्ठ
प्रथम खंड	
बेचारे किसान (१८६८—१६१३ ई०)	१—१२०
द्वितीय खंड	
अमीरका बुखारा शरीफ (१६१३—१६१७ ई०)	१२१—२२६
तृतीय खण्ड	
अमीर भगा (१६१७—१६२० ई०)	२२७—३२४
चतुर्थ खण्ड	
डाकुओंका राजा (१६२०—१६२६ ई०)	३२५—४५२
पंचम खंड	
कमकरोंका राज (१६२१—१६२६ ई०)	४५३—४६३
परिशिष्ट	४६५—५०७

प्रथम खण्ड

बेचारे किसान

(१९९८–१९१३)



महान उपन्यासकार सदरुद्दीन ऐनी

(जीवनी पुस्तक के अन्त में)

१

दर्रा-निहाँ

यदि आप **सरेजूय**से .**कुर्गानतप्पा** हो पहाड़ोंमें अन्दर ही अन्दर जाना चाहें, तो आपका रास्ता दर्रा-निहाँसे जायगा। दर्रा-निहाँका दूसरा नाम तङ्ग-निहाँ भी है। यह हिसारकी अति रमणीय पर्वत-शृखलाके दर्रों (जोतों) मेसे एक है। जैसाकि नामसे मालूम होता है, यह दर्रा दृष्टिसे छिपा (निहाँ) है, और केवल दो ओरसे—**सरेजूय** और **बाबातक़ी** की तरफसे दिखाई देता है। जिस पर्वतने इस दर्राको अपने घुमावमे छिपा रखा है, वह भी दूरसे देखने पर एक बिना सूराख या छेदकी शिला-सा मालूम होता है। **सरेजूय**से आकर दर्रासे नीचे पहुँचने पर पानीसे कटी एक दरार दिखाई पडती है। पहले-पहल देखने पर आप सोचेगे, कि वर्षाके पानीने युगोसे पहाड़के ऊपरसे नीचेकी तरफ गिरते शनैः-शनै. पर्वतहृदयको काटकर यह आकार प्रदान किया है, लेकिन जब आप और भीतरकी ओर बढेगे, तो यह विचार दूर हो जायगा। आप समझने लगेगे, यह दरार पानीका कटाव नही, बल्कि एक घूम-घुमौआ सँकरा मार्ग है, जिसे मानो सैनिक इजिनियरोने शत्रुकी निगाहसे छिपा रखनेके लिये अपने सैनिक दुर्गमे जानेको तैयार किया है। यह मार्ग बहुत पेचीला और इतना अन्धकारपूर्ण है, मानो पर्वतकी कटिमे सेध दी गई है।

लेकिन यह मार्ग सुरंगोकी तरह ऊपरसे ढँका नहीं। इसकी दोनो तरफ पर्वत कई तल्लोकी अट्टालिकाओकी पाँती-सा खड़ा है और सिरपर आसमान दिखलाई पड़ता है। सारे दिन सूर्यकी धूप चाहे न भी पड़े, किन्तु दोपहरको वह इन दीवारोके ऊपरसे झाँकता जरूर है और उसका प्रकाश दीवारकी जड़पर देखा जा सकता है।

अगर आपके दिलमे पर्वतके चमत्कारको देखनेका शौक है, तो भय और शकाको मनसे हटा, इस तङ्ग अँधेरे मार्गसे त्रस्त न हो, आगे निगाह किये बहादुरीसे कदम बढाते चलिये। दृश्य आरम्भ होता है।

नीचे धारा बह रही है। यह न समझिये कि इस धारामे मन दो मन भारी चीजको बहा ले जानेकी शक्ति है। वस्तुतः यह कितने ही निर्बल चश्मे हैं, जोकि बादशाही जमानेके अन्याय-पीड़ितोकी चश्मो (आँखो) की तरह अपने आँसुओको बूँद-बूँद टपका रहे हैं। अन्तर इतना ही है कि वह आँखोसे खून बहाते थे और यह पानी।

इन झरनोसे गिरती बूँदे एकत्रित हो एक छोटी धाराका रूप लेती हैं। और पानी इतना साफ है, मानो पत्थरोमेसे निखारकर उसे शुद्ध किया गया है और वह रज-धूलि-रहित हीरे-सा दिखलाई पड़ता है। वस्तुतः यह वही बर्फ और वर्षाका जल है, जो पाषाणकणोसे गुजरते साफ होते आया है। इस धारामे मैदानी नदियोकी भाँति कीचड़-मिट्टी नहीं। इसके तट और भूमि शिलाखण्डो और पाषाणकणोके हैं, जिससे पानी सदा दर्पणकी भाँति स्वच्छ रहता है। तट और निम्न भागकी स्वच्छताने धाराकी स्वच्छताको कई गुना बढा दिया है।

यदि आप दोपहरको इस धाराके किनारे आएँ, तो उसपर आँख नहीं गड़ा सकते। दीवारोपर पड़ती सूर्यकी किरणे, निर्मल जल और स्वच्छ धारापर प्रतिबिम्बित हो, अपनेको उछाल रही हैं। दीवारोके पत्थर इस उद्दीपित जलके भीतर इस तरह दिखलाई पड़ रहे हैं, मानो चतुर पाषाण-शिल्पियोने खुरदरे पत्थरोको एकके-ऊपर-एक रख ज्यामितीय

चित्र अङ्कित किये हैं। विशाल दीवार और पतली धाराके अन्दर भुवन-भास्करका चपल प्रतिबिम्ब आपको आश्चर्यित किये बगैर न रहेगा। अगर गीदड़ों भेड़ियों जैसे हिंसक जतुओंसे भय न खाते हो, तो स्वच्छ आकाशवाली रातको इस जगह आइये और यहाँके अद्‌भुत दृश्यको देखिये। दर्राकी छतवाली दरारपर पक्तिबद्ध तारागण किरणे बिखेरते अपने प्रतिबिम्बको धारापर डाल रहे हैं। पाषाणखण्डोंके फर्शपर धारा बड़ी मनोरम गतिसे निम्नोन्नत होती बह रही है, और उसकी गर्दनमे रुपहली जजीरका सुन्दर हार बना रही है। प्रत्येक तारा इस जलमे अपना प्रतिबिम्ब डाल रहा है और इन निम्नोन्नत तरङ्गोमे अपना अलग-अलग चक्कर तथा भँवरियाँ तैयार कर रहा है। इस प्रकार यदि ऊपर आकाशमे सौ तारे दिखाई पड़ते हैं, तो इस अंधेरी रातमे धाराके अन्दर चालीस-धरातलवाले दर्पणके सामने रखे विद्युत्प्रदीपोंकी भाँति बीस गुना तीस गुना किरणे बिखेर रहे हैं।

यदि सामने नजर रखकर आप आगे बढ़े, तो एकाएक यह प्रकाश-मान जल पत्थरोके नीचे वैसे ही छिप जायेगा, जैसे बादलोंके पीछे चाँद। इस मुक्त, किन्तु अति नयनाभिराम दृश्यसे वञ्चित होनेपर खेद अवश्य होगा, किन्तु मनमे अवसाद न आने दीजिये। सौ दो सौ पग और आगे बढ़ जाइये। दीवारकी चन्द घुमावटोंको पार कीजिये। फिर वही पत्थरोके अन्दर छिपा हुआ जल दूसरे पत्थरोपर से उबलता-उछलता दिखलाई पड़ेगा और सुरङ्गी राहसे गुजरते कितने ही और झरनोंको साथ लेते, पहलेसे भी अधिक शक्तिशाली और तेज भी। अब आवाज अधिक तीव्र है, और पाषाणखण्डोंको लुढ़काती-बिछाती, रास्ताको बराबर करती धारा बह रही है। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेगे, धाराको भी अधिक बड़ी और पूर्ण पायेंगे। अब आपका मार्ग उतना सङ्कीर्ण और अन्धकारपूर्ण नहीं है। ऊपर नजर दौड़ानेपर आकाश भी अधिक विस्तृत दिखाई पड़ेगा। अब बर्फ़ और वर्षाके काटे शिलाखण्डोंके

गिरनेका भी भय जाता रहा। यदि कोई पत्थर गिरे भी तो आप अपनेको एक तरफ हटा ले सकते हैं। यहाँ जहाँ-तहाँ पिस्ता, बादाम, देवदार जैसे पहाड़ी वृक्ष भी दिखलाई देने लगे। और कुछ फासला तय करे। यह दर्राका कटि-प्रदेश है। एक धारा पहाड़से गर्जन करती गिर रही है। यहाँसे भरी धारा दौड़ रही है। अगर यहाँ खड़े हो अपनी चारों ओर निगाह डाले, तो जान पड़ेगा आप एक पाषाणी नौकामे सवार हैं। अन्तर यही है कि दूसरी नौकाएँ पानीपर चलती हैं, और यहाँ नौकापर पानी चल रहा है। इस नौकाके मुँह और कटिको खोदकर लोगोंने अपने लिये घर बना लिये हैं। यहाँ कोई घर लकड़ी या कच्ची ईंटोंका नही। इस दर्राके निवासियोके घर पक्षियोके नीड़ोसे अन्तर नही रखते। अन्तर है तो इतना ही कि इन घरोके छिद्र आदमीके शरीरके अनुसार कुछ ज्यादा बड़े हैं। ऊपरके पत्थरो और बर्फानी बाढ़से बचनेके लिये उन्हे सख्त किया गया है।

२

तरुणी पनिहारिन

दर्राके निवासी अपने-अपने काममे लगे थे। लड़कोंने ढोरोको पहाड़ी डाँडेपर ले जा चरनेको छोड़ रखा था। सयाने हलोकी जोड़ी लिये दर्राकी उन समतल पतली जमीनोको जोतनेमे लगे हुए थे, जहाँ युगोसे बर्फ और वर्षाके पानीने गुजरते हाथभर मिट्टी डाल दी थी। औरते और लड़कियाँ दूध गरम कर रही थी, दही जमा या मह रही थी, अथवा मसका निकालने या घी तैयार करनेमे लगी थी। बूढे दो-दो चार-चार हो पत्थरोका तकिया लगाये बैठे, पुरानी कहानियाँ और अपनी जीवन-घटनाएँ सुना रहे थे।

एक जगह एक बीससाला जवान, मानो अपनी चिन्ता मिटानेके लिये, मनुष्योंकी बस्तीसे दूर आकर बैठा था। उसके सरपर फटा साफा, तनपर फटा कुर्त्ता था, ऊपरसे चकत्ता-चकत्ता हुआ जामा, जिसके ऊपर चीथड़े-चीथड़े हुआ कमरबन्द बँधा था। और पैरोंमें तिनकेकी चपलियाँ थी। उसकी चमकीली आँखोसे भय टपक रहा था। सेब जैसे उसके लाल कपोलोंपर त्रासकी रेखा अंकित थी। जवानके हाथमें एक छः हाथकी लाठी थी, जिसकी नोकसे वह भूमिपर यत्नवत् रेखाये खींचता, विन्दु बनाता और मिटा देता था। कभी-कभी वह खड़ा हो सामनेके एक घरपर नजर डालता और फिर अपनी जगह बैठ रेखाकनमें लग जाता।

वह अपने आपसे बोल उठा—क्या ये आज पानीके लिये नहीं आयेगे ?

जिस घरकी तरफ नौजवान जबतब नजर डालता, वहाँ तीन व्यक्ति दिखलाई पड़ रहे थे। एक पचाससाला मर्द शिलातलपर बैठा रोटी-दही खा रहा था। दूसरी थी चालीससाला स्त्री जो आटेका खमीर बना रही थी। तीसरी सोलह-सत्रहसाला लड़की जो मथानीसे दही मथ रही थी। वह बडे जोरसे अपने काममें निरत थी। उसके सिर और मुँहसे पसीना चू रहा था। कभी-कभी वह मथानी छोड़ शरीरको सीधा करती और हाथसे ललाटके स्वेद-विन्दुओंको पोछती। पतली रस्सियोकी तरह बँटे अपने लम्बे कृष्ण केशोको सीनेसे समेट पीठपर डालती। ऐसा करते वह अपनी आँखोके कोनेसे खाना खानेमें लगे पुरुषकी ओर जबतब देख लेती। अगर पाती कि वह उसकी तरफ नहीं देखता है, तो आँखे चुराकर लाठीकी नोकसे रेखाकन करते जवानपर निगाह डालती। संयोगसे यदि निगाहें मिल जाती, तो उसका चेहरा खिल उठता और फिर जल्दीसे वह मथनेमें लग जाती। अगर निगाह न मिल पाती, तो निराश हो जाती और काली आँखोंमें चिन्ताके चिह्न प्रकट

होते; जिसका प्रभाव उसके बाहुओं तक पडता। फलस्वरूप मथानी की गति धीमी पड़ जाती।

पुरुषने खाना खतमकर दराँती और रस्सी हाथमें ले स्त्रीकी ओर देखकर कहा—आचेश! जबतक तेरा खमीर तैयार होता है, तबतक मैं भी एक बोझ ईंधन-लकड़ी ले आऊँ।

वह ककडोकेभरे वर्षाजल द्वारा समतल किये मार्गसे पहाड़के ऊपरकी ओर रवाना हो गया। स्त्रीने खमीरको कठौतेसे निकाल, भेडके चर्मपर रख एक रुईदार जामासे ढँक दिया; फिर पासमें पड़े मिट्टीके आफ़ताबा (टोटीदार लोटा) से हाथ धोया। पानी खतम हो गया। चाहा कि तूबेसे, जो कि परिवार मे घडेका काम दे रहा था, पानी उँड़ेल ले, लेकिन देखा कि वहाँ भी पानी नही है। उसने मथनेमें लगी लड़की की ओर निगाह करके कहा—"गुलनार! पानी ला, मै मसका तैयार करे लेती हूँ। जल्दी कर। पानी बिलकुल नहीं। खमीर अभी तैयार होनेवाला है। तेरा बाप भी ईंधन लेकर लौट रहा होगा। रोटी पकानेके लिये पानीकी जरूरत है।"

गुलनार एक आज्ञाकारिणी भली लडकीकी तरह जल्दीसे उठ तूबेको हाथमे ले पानीके लिये रवाना हो गई। गति उसकी इतनी तीव्र थी, कि देखनेवाला समझता—आज्ञाकारिणी बेटी माँका हुक्म पूरा करनेमे बहुत तन्देही कर रही है। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही था! वहाँ एक दूसरी ही शक्ति काम कर रही थी जोकि उसे कहरवा घास या चुम्बककी भाँति अपनी ओर खींच रही थी।

नौजवान अब भी रेखाये खींच रहा था, किन्तु तरुणीकी प्रत्येक गति-विधिपर उसकी दृष्टि थी। जिस समय तरुणी तूबा लेकर चली, नौजवान भी अपने स्थानको छोड़ माँकी आँखोसे ओझल एक शिलाकी ओटमें जा बैठा। अब तरुणी भी नजदीक आ पहुँची। उसने मुड़कर मथनेमें लगी माँकी ओर एक नजर डाली, फिर तेजीसे रास्ता बदल उस



"मैं पानी के लिये आई" पृष्ठ ७

चट्टानके पीछेकी तरफ चल पडी, जहाँ नौजवान बैठा हुआ था और ऐसी सूरत बनाये, मानो नौजवानके वहाँ होनेका उसे पता ही नहीं। उसने आश्चर्य प्रगट करते कहा—"यादगार ! तू यहाँ क्या कर रहा ?"

"तू यहाँ क्या कर रही ?"

पानी लेने आई—कहकर वह पानीके किनारेकी तरफ चल पड़ी।

—पानी लेने आई ! मैने तो समझा, आग लेने आई, जोकि इतनी जल्दीमे है।

गुलनारने मुस्कुराकर तूंबेको नीचे रख दिया और खुद भी चट्टानपर बैठ गई। फिर एक क्षण तरुणकी चिन्तापूर्ण आँखोकी ओर नजर डालकर कहा—

—सच कह, यादगार ! तू यहाँ क्या कर रहा है ?

—पहले तू कह कि यहाँ क्यो आई ?

—मै पानीके लिये आई, देख, यह रहा तूंबा—कहते लड़कीने लौकेकी तरफ इशारा किया।

—मै यहाँ भेडे चरा रहा हूँ, देख, यह रही चरवाहीकी लाठी—कहकर लाठीकी तरफ इशारा किया।

—यादगार ! मैने ऐसी अवस्थामे तुझे कभी नही देखा। आँखे बता रही कि तेरे दिलमे कोई बड़ी भारी चिन्ता है, मन बेहद परेशान है। सच बता, क्या बात है ?

—कुछ नही मुझे हुआ। मन भी मेरा ठीक है। हाँ, एक बात तुझसे कहना चाहता था, कहूँ या न कहूँ, इसी दुविधामे पडा हूँ।

—अगर मुझे खुश रखना चाहता है, तो कह डाल। चाहे बात कितनी ही बुरी क्यों न हो, मै उसे सुनकर रञ्ज न होऊँगी।

—बात बुरी नही, अच्छी है। खासकर तेरे लिये शुभ और आनन्दकी बात है। बता ही क्यों न दूँ ?

पुराने कुर्त्तेकी ओर इशारा करते हुए गुलनार ने कहा—बस, यही

है। देखती ही है, यह भी करीब-करीब फट चुका है। इसके अलावा दूसरा मेरे पास नहीं है। फिर क्यों तू मुझे बधाई देना चाहता है?

—कल सुबह नये कुर्त्ते पहनेगी और अतलस-अदरसके कुर्त्ते रेशमके कुर्त्ते, न कि यह चिट-पेबन्द लगा कुर्त्ता।

—यादगार, पहेली न बुझा। मै तेरी बात बिल्कुल नही समझ पा रही हूँ। आखिर तुझे हुआ क्या है?

—तूने नही सुना?

—क्या?

—अपनी शादी!

यह बात सुन गुलनारका चेहरा लाल हो गया। अगर यादगारकी आँखो पर भविष्यकी चिन्ताने अँधेरेका पर्दा न डाल दिया होता, तो गुलनारके इस रूपको देखकर वह पहलेसे भी अधिक उसपर मुग्ध हो जाता। लेकिन इस वक्त यादगारका ध्यान गुलनारके ललित सौन्दर्यकी ओर न था। वह एक गम्भीर समस्याकी तान-बुनमे पड़ा था। यादगारने पिछले दिन अकसक्काल (मुखिया) के लड़केसे सुना था, कि गुलनारकी सगाई हमराह बायके लड़केके साथ होनेवाली है। अकसक्काल सोचमे पड़ा है। जल्दी ही शहर जाकर चीजे खरीदी जानेवाली हैं। फिर शादी और फातिहा-पढाई होगी। यही बात थी जिसने यादगारको कलसे परेशान कर रखा था। वह चाहता था कि गुलनारको कहकर इसके बारेमे उसकी राय मालूम करे। यादगारने सारी सुनी बात एक-एक करके कह सुनाई। गुलनारने सुना और सुननेपर उसका भी चेहरा मुरझा गया, परेशानी उसपर भी आ गई। एक ओर यह सब था और दूसरी ओर लज्जा और शरम अपने मनोभावोंको साफ-साफ व्यक्त करने नहीं दे रही थी। वह केवल इतना ही कह सकी—यादगार! सच समझ। तुझे छोड़ मैं और किसीसे शादी न करूँगी। चाहे सिर भी काट डाला जाय, मैं स्वीकार नहीं करूँगी।

यह कहकर उसने तूम्बा उठा लिया और शिरको इतना झुकाये पनघटकी ओर चली, मानो उसपर अस्सी मन भारी सील रखी हो। यादगार जमीनमें खूँटेसे गाड़ दिया गया था, चिन्ता और बेकलीके नीचे दबा जा रहा था।

३

यसावुल (पुलिस-सवार)

दर्रा-निहाँ पर शान्ति छाई हुई थी। हर आदमी अपने रोजके काममे लगा हुआ था। कही कोई असाधारण गतिका चिह्न नही। यादगार और गुलनारके दिलोंमे एक तीव्र हलचल पैदा हो ज्वाला-वमन करना चाहती थी अवश्य, किन्तु इसे उन दो दिलोंके सिवा कोई तीसरा नही जानता था। इसी समय एक बड़ा पत्थर पहाड़की चोटी परसे गिरा। वह पत्थर दूसरेको, दूसरा तीसरेको इस तरह बीसियो पत्थरोको लुढकाते जमीन पर पहुँचा। आपसमे टकरानेसे पत्थरोंकी कड़ाक-कड़ाक आवाज पैदा हुई। पहाड़ी दीवारोंसे टकरा, हजार गुना बन उस आवाजने दर्राको कम्पित कर दिया। इस आकस्मिक आवाजको सुन सारे लोगोंने एक ही बार खडा हो उस ओर निगाह डाली, जिधरसे पत्थर गिर रहे थे। वहाँ पहाड़के डाँड़ेपर एक नौजवानको उन्होने खड़े देखा। जब नौजवानने सारी निगाहोको अपनी ओर देखते, सारे कानोंको अपनी ओर लगे पाया, तो सारी पर्वतमालाको बुलद आवाजसे गुँजाते हुए कहा—यसावुल !

दूर और नजदीकके सारे लोग जिसमे इस आवाजको सुन ले, इसलिये हर तरफ 'यसावुल' 'यसावुल' शब्द दुहराया गया। वस्तुस्थितिका पता हमारे पाठकोंके लिये चाहे स्पष्ट न हो, किन्तु दर्राके लोगोंके लिये

वह साफ थी। सभी हाथके हर काम और चीज़को वही छोड ऊपर निगाह किये पहाड़ी डॉड़ेकी तरफ दौड़े। आप वहाँ होते तो ख्याल करते—क्या यह हरिणोके झुड हैं कि शिकारीको देख या बदूककी आवाज सुनकर इस तरह भाग पडे. अथवा कबूतरोका झुड है जो कि बाज या दूसरे शिकारी पक्षीके आक्रमणसे भयभीत हो जान लेकर उड पड़ा! दश मिनट बाद सारे लोग पहाड़के डॉड़ेपर पहुँच चुके थे। सभी अपनेको विपद-मुक्त समझने लगे। जरा दम लेनेके बाद "वह अभागा शिकारी कौन और कहाँ है?" यह जाननेके लिये उन्होने अपनी दृष्टि वहाँ गडाई, जहाँ **सरेजूयका** रास्ता आकर दर्राके दूसरे रास्तोसे मिलता था।

दश मिनट और प्रतीक्षा करनेके बाद उन्होने एक पचीससाला सवारको आते देखा। उसके शिर पर एक ढाकई साफा था, जो बुखाराके सिपाहियोंकी तरह शलगमकी शकलमे बँधा था। शरीर पर अदरसका लम्बा जामा, पैरोमे बुखारी जूता, पीली सलवार (पाजामा) के किनारोपर लाल-काले रेशमी धागोका काम था। जबानकी बाईं बगलमे एक हिसारी तलवार लटक रही थी, कन्धेसे कार्तूसी बन्दूक, कमरमे रुपहला कमरबद लपेटा हुआ था, जिसके दोनो पहलुओमे चमडेका खीसा बखिया किया हुआ था।

यद्यपि सवारकी शकल-सूरत भयदायक थी, लेकिन लोग अब डॉड़े पर पहुँच चुके थे, उन्हे कोई भय नही था। यह उसकी शक्तिसे बाहरकी बात थी, कि वह सवार या प्यादा पहाड़ीके सिरेपर जा पहुँचता। पहाड़ो पर दौड़ लगाना तो उन्हीका काम था, जो कि यहाँ पैदा हुए और पले। अब हमारे ये पर्वती पक्षी उस आदमीको परिहासपूर्ण दृष्टिसे देख रहे थे, ठीक उसी तरह जैसे कुत्तोकी चगुलसे निकलकर वृक्षपर पहुँच गई बिल्ली। मानो "अगर मर्द हो तो अब आओ हमारे पास। जो चाहो, सवाल करो और जवाब लो" कहते हुए वे उसे

मैदानमे आनेकी चुनौती दे रहे थे। शिकार के जालसे छूटकर निकल भागनेपर जैसे शिकारी और चंगुलसे मुर्गाके निकल भागने पर जैसे गीदड़ हो, वैसे ही सवार क्रोधसे होठोको चाबता व्यर्थ ही पागलकी भाँति पहाड़मे घोड़ेको दौड़ा रहा था।

४

चट्टानके पीछेवाला आदमी

—गुलनार ! गुलनार ! जल्दी आ, हम पकड़े गये।

इन शब्दोको सुनकर निराश सवारके दिलमे फिर आशाका सचार हुआ। उसने घोड़ेको उस दिशाकी ओर मोड़ एक कोड़ा लगाया। घोड़ा भी मालिकके अभिप्रेत स्थानको जाने बिना जानपर खेल सरपट दौड़ा और दो मिनटमे वहाँ पहुँच गया। सवार भी बहुत सजग, बदूकको हाथमे लिये निशाना बाँधे तैयार था। पहुँचते ही उसने कड़कती आवाजमे हुकुम दिया :—

—दाखुन्दा (अबे पहाड़ी) ! अपने हाथोको खड़ाकर नहीं तो यही ढेर हो जायगा।

'दाखुन्दा' नामसे पुकारे गये आदमीके लिये दूसरा चारा था ही नही। उसने आज्ञा मान ली। चारो तरफसे बद जगहमे एक निहत्था आदमी कार्तूसी बदूकसे लैस अश्वारोहीके समक्ष भला और कर ही क्या सकता था ? वह हाथोको ऊपर करके खड़ा हो गया। सवार घोड़ेसे उतर पड़ा। उसने आदमीके फटे साफेके एक छोरसे दोनों हाथोंको पीठकी ओर बाँध दिया और दूसरे छोरको चारजामासे लपेट दिया। फिर एक हाथमे बदूक, दूसरे हाथमे लगाम और चाबुक सँभाले हुए सवार ने हुकुम दिया—चल आगे !

आदमीने सवार की तरफ मुँह करके कहा—**यसावुल** साहब ! मुझे कहाँ ले चल रहे हो ? मेरा क्या अपराध है ?

सवारने चिल्लाकर कहा—अपराध ? तू चोर है और अपनेको फिर भी निरपराध समझता है ? पर अकेला ही तू चोर नहीं है, बल्कि वे सारे ही चोर हैं, जो जनाब-आली (बुखाराके अमीर) की सरकारसे अपनेको अलग समझ यहाँ चैनका जीवन बिता रहे हैं। और मामूली चोर नही हैं बल्कि बागी अर्थात् मृत्युदडके अपराधी चोर। अगर तू बागी चोर नहीं तो क्यों हुकूमतदारो (सरकारी अफसरों) से भागा ? क्यो हाकिमके हुकुमको नही मानता ?

ऊँचाईकी ओर चट्टानकी आड़मे खड़े एक आदमीने सारी घटना देखी और वार्तालाप भी सुना। उसने क्रोधपूर्ण आवाजमे जोरसे कहा :—

—ओ **यसावुल** ! होश सभालकर बात कर। हमने चोर बनकर किसके घरमे सेध लगाई ? किसकी भेड़-बकरियाँ चुराई ? किसके स्त्री-बच्चो पर बुरी निगाह डाली ? चोर वह है जो अकारण गरीबो—निरपराधोके घरोमे जबर्दस्ती घुसता है। चोर वह है जो निहत्थे निरीह आदमियोको पकड़कर उनके शिरपर तलवार और छातीपर बन्दूक चलाता है। चोर वह है जो अपने काममे लगे गरीब आदमियोको बेवजह मारता-घसीटता है। चोर वह है जो गरीबोके न केवल मालको ही लूटता है, बल्कि उनके स्त्री-बच्चो तथा इज्जत-आबरू तकको पामाल करता है। अगर अब भी तेरी समझमे नहीं आया कि चोर कौन है, तो सुन—तू खुद चोर है, तेरा अमलाकदार और हाकिम चोर, तेरा अमीर (बादशाह) और वजीर चोर, तेरा काजी और रईस चोर। सुना ? हम जनाब-आलीकी सरकारसे भागकर यहाँ जिन्दगी नहीं बिता रहे हैं, बल्कि खुदाके बनाये इन किलो (पहाड़ोकी तरफ इशारा करते हुए) की शरणमे शान्तिपूर्वक रह रहे हैं। जबसे तूने और तेरे जनाब-आलीने

दखल दिया, तबसे हमारे आदमियों की अधिकतर आयु हिसार और बुखारा के जेलखानोमे कटने लगी, हमारी बहू-बेटियोंकी इज्जतको हाकिमों और अमीरने हरममे दाखिलकर खानगीके नामसे बर्बाद किया। पूछता है कि हम क्यो तेरे हकूमतदारोको पसन्द नही करते? जब-जब तुम दैवी आपदा और आकस्मिक बलाकी भाँति हमारे सिरपर पडे, हम अनेकों बार हाथ बाँधे तुम्हारे सामने आये, लेकिन तुमने बिना पूछ-ताँछ किये हमारे हाथोको पीठकी ओर बाँधा, हमारे माल-असबाबको लूटा और हमे जेलखानोंमे भेजा।

यसावुल इस सत्य किन्तु कटु बातको सुन उचित उत्तर न पा कुचले साँपकी तरह छटपटा रहा था। वह सोच रहा था, कि यदि इस आदमीको पकड़ पाता, तो एक गोलीमे इसका शिर उडा देता। लेकिन यह कब सम्भव था? एक पहाडी मर्दका—जो दुरारोह दुर्गम पहाड़की चट्टानके पीछे छिपा हो—बदूककी गोली क्या बिगाड़ सकती है? अन्तमे **यसावुल** सिर्फ इतना ही कह सका :—

—मै किसी आदमीको पकडने आया था, जिसपर **सरेजूय**के एक मातबर आदमीकी तरफसे शरई (धर्मानुमोदित) मुकदमा दायर हुआ है। मुझे अच्छी तरह पता है, कि उस गुनहगारको तुम्हारे अन्दरसे खुशी-खुशी पकड़ ले जाना असम्भव है। इसीलिये किसी एकको गिरिफ़्तार करनेका मेरा मतलब था। अगर यह आदमी भी न मिला होता, तो खाली हाथो ही लौटना पड़ता। लेकिन 'खुदा यार शरीयत मददगार' (ईश्वर मित्र, धर्म सहाय) हुआ और जनाब-आलीके प्रतापसे यह शिकार हाथ लगा। अगर इस नौजवानसे तुझे काम है, तो पीछे-पीछे आ, हमारा खिदमताना दे, जमानतदार बन और असली अपराधीको सुपुर्दकर इसे छुड़ा ले आ। अगर नही तो समझ रख कि इसकी उमर जेलखानेकी भेट हुई।

चट्टानके पीछे वाले आदमीने कहा—ले जा, इसका गोश्त कबाब

बनाकर खा। यहाँ पैसा और आदमी बेकारका नहीं है, जो इसके पीछे आये।

५

निराशा और साहस

—जल्दी कर, आगे बढ दाखुन्दा!—यसावुलने हाथ-बँधे जवानको आगे चलने के लिये कहा!

आगे चलनेके अतिरिक्त जवानके लिये कोई रास्ता नहीं था। लेकिन एक बात उसे आगे पग बढानेसे रोक रही थी। उसने घबराहटसे चारो ओर नजर दौड़ाई, मानो किसीसे विदाई चाह रहा हो। यसावुलने सुस्ती देखकर समझा, कि वह चलना नही चाहता। उसने उसकी पीठपर कोड़ा जमाकर कहा—बहरा है क्या?...

यसावुल अपनी बात समाप्त नही कर पाया था कि पनघटसे किसीकी क्रन्दनपूर्ण आवाज आई,

—हाय, यादगार! तुझे क्यों मार रहा है? कहा ले जाना चाहता है?

यसावुलने उधर निगाह करके देखा। एक षोड़शी उसकी ओर दौड़ी आ रही थी। उसने जवानसे पूछा—क्या, यादगार तेरा नाम है?

सिर हिलाकर तरुणने स्वीकार किया।

यसावुलकी प्रसन्नताकी सीमा न रही, उसने हँसते हुए कहा :—

—यार घरमें और हम खोजमे दुनिया भर की खाक छाने! अब भी तू अपनेको निरपराध समझ रहा है? जिस मुल्जिमको मै तलाश रहा था वह तू ही तो है—और गर्दन पर दूसरा कोड़ा जमा दिया।

अब तक षोड़शी भी पास आ गई थी। यह कहनेकी आवश्यकता



"इसे छोड़ दो"

पृष्ठ १४

नहीं कि वह गुलनार थी। वफादार गुलनारमें अपने सच्चे प्रेमीकी गिरिफ्तारीको सहन करनेकी शक्ति नहीं थी। इसीलिये वह एक ऐसे राक्षसी स्वभावके सिपाहीके समक्ष आनेमे न हिचकिचाई, जिसे देखते ही लोग "लाहौल व लाकूव्वत" कह उठते। हॉ, गुलनारकी दशा बड़ी दयनीय थी। कितने ही समयसे यादगारसे उसका प्रेम था और मनमें लालसा रखती थी कि दोनोका प्रेम दोनोके जीवनको एक सूत्रमे बॉध देगा। यादगारने अकसक्कालके लड़केसे सुनकर जो शादीकी बात की थी, वह गुलनारकी मधुर लालसामे विषके एक बूँदकी तरह पड़ गयी थी। तो भी उसने यह कहकर अपने मनको दिलासा दिया था, कि मुझे कदापि जबर्दस्ती जिस किसीकी बीबी नही बना सकते, उसका मै अपनी सारी शक्तिसे विरोध करूँगी। उसके मनमे इसका अन्तिम रास्ता यही पसन्द आया था, कि यादगारके साथ भाग निकले। किन्तु अब वह विचार बेकार था। वह देख रही थी, यादगार उसके हाथसे छीना जा रहा है। उसे एक अपराधी, बदमाश, खूनी, बागी, चोर और गद्दारकी तरह हाथ बॉधे ले जाया जा रहा है। वह यह भी जानती थी, कि यादगार एक गरीब, बेचारा, बेकस, अनाथ आदमी है। उसके बाप या भाई-बद नही कि पैरवी और खरच-वरच करके जमानतपर छुड़ा लायेगे। यह वियोग गुलनारकी दृष्टिमे सदाका वियोग था। यही वजह थी, कि वह सारी लाज-शरमको तिलाजलि देकर यसावुलकी ओर दौड़ी और किसी बातकी परवाह न कर रोती-चिल्लाती बोली :—

—यसावुल साहब! तुम्हारी बलि-बलि जाऊँ और पैर पड़ू। मेरी अरजपर कान दो। यह जवान बेकसूर है, चोर-बदमाश नही है! किसीने इसके विरुद्ध चाहे कुछ भी कहा हो, वह झूठ है। इसे छोड़ दो। अल्लाह तुम्हारे बच्चोको खुश...।

लेकिन यसावुल उन आदमियोमे न था, जिसका दिल एक लड़कीके रोने-चिल्लानेसे नरम पड़ जावे। यदि ऐसी गुस्ताखी किसी मामूली

औरतने की होती, तो उसपर दो-तीन कोड़े पड़े बिना न रहते। लेकिन गुलनारके रूप और सौन्दर्य ने यसावुलके दिलको लुभा लिया था।

गुलनारका रूप-सौन्दर्य वस्तुतः मोहक था। उसकी आँखे चमकीली काली थी; पलके दीर्घ और मनोहर, भौंहें धनुषाकार जो हर दर्शकके दिलको आहत किये बिना न रहतीं। उसके चमकीले आ-जानु लम्बे केश मनको फँसानेमे जालका काम करते थे। गालोंपर पड़ी लहराती जुल्फोके सौदर्यका उतारना सुचतुर शिल्पीके लिये भी असम्भव था। सुन्दर आकार, स्वच्छ बदन, घुँघराले केश, आपसमे मिली भौंहें सभी एक दूसरेके अनुकूल, सभी एक दूसरेके लिये सौन्दर्यबर्धक थे। चमकीली आँखोंसे मुक्ताबिन्दु जैसे कपोलोपर गिरते आँसू गुलाबपर पड़े प्रातः-कालीन ओस-कणको मात कर रहे थे। उस दशामे गुलनारका सौन्दर्य दशगुना बढ गया था। अपनी एक निगाहमे देखनेवालेपर जादू डाल देनेवाली उन बेपरवाह आँखोसे अपार कातरता बरस रही थी। स्वाभि-मानी ओठ जो याटगारके सामने भी कभी मुश्किलसे खुलते थे, वह आज भिक्षा माँग रहे थे।

यसावुलको अपने प्राणोंका भय न होता, तो इस शिकारको वह हाथोसे जाने न देता। पर वह खूब जानता था, कि उसने यदि ऐसा किया, तो तग-निहाँसे सही-सलामत नही लौट सकता। सारे बाशिन्दोकी तो बात दूर, यदि एक आदमी भी नाकेके ऊपर खड़ा हो पत्थर लुढकाने लगता, तो उसे बच निकलनेका रास्ता न मिलता। गुलनारका पकड़ना याटगारकी गिरिफ्तारी-जितना आसान न था। इसे लोग तमाशबीन बनकर नही देख सकते थे। वहाँ इज्जत-आबरूका सवाल उठ खड़ा होता और वे आनपर सब कुछ करनेको तैयार हो जाते। यही वजह थी कि यसावुलको गुलनारके पकड़नेके लिये हाथ बढानेकी हिम्मत न हुई। लेकिन आइन्दा उसे हाथमे लानेकी उसने ठान जरूर ली, क्योकि यह अमलाकदार (कलक्टर) के सामने या भाग्यने यदि

सहायताकी तो हिसारके हाकिम या खुद अमीरके समक्ष पेश करनेका एक अनमोल तोहफा साबित होता। उसने थोड़ा रुककर गुलनारके बारेमें कुछ और जाननेके लिये उससे पूछा,

—क्या तू इस जवानकी बहन है जो इतनी दुखी हो रही है?

—नही—गुलनारने कहा।

—भाजी या भतीजी है?

—नही।

—तो जान पड़ता है, तू इसकी औरत है।

गुलनारने शरमाते हुए कहा—अभी नही।

यसावुलने सिर हिलाते अपने आपसे कहा—इस सहृदयताका रहस्य मालूम हो गया। (फिर गुलनारकी तरफ निगाह करके) अच्छा, बहुत अफसोस न कर, तू अपने भावी पतिको सरेजूय या हिसारमे देख सकेगी।

इतना कहकर यसावुलने रास्ता लेना चाहा। गुलनारको उसकी मुलायम बातोसे आशा हो चली थी, कि उसके प्रियतमको छुटकारा मिल जायगा, लेकिन अन्तिम् जवाबने बेचारीके दिलको बिलकुल तोड़ दिया। तमाम दुनिया उसे अन्धकारपूर्ण दीखने लगी। कोई भी वस्तु अब उसे भयभीत नही कर सकती थी। कुत्तेके आक्रमणसे जान बचानेको तैयार बिल्लीकी भाँति, गुलनार सिहनीके साहसके साथ यसावुलके तरफ यह कहती हुई झपटी :—

—ओ अन्यायी! खूँख्वार! जालिम! देख, अभी तुझे घोडेसे नीचे गिराती हूँ—और गुलनारने चाहा कि यसावुलके कमरबन्दको पकड़े।

यसावुलने रिकाबसे अपने पैरको बिना निकाले जूतेसे जोरके साथ गुलनारके छातीपर मारा और वह कई पग दूर एक गड्ढेमे मुर्देकी तरह जा पड़ी। उसमें चिल्लानेकी भी शक्ति न रही।

पचास कदम ऊपर, चट्टानके पीछे खड़े आदमीने ललकारा :

—ओ आततायी ! नरभक्षक ! तू अपने लिये इस दर्रेमें कब्र खोद रहा है।

यसावुलको खतरा साफ दिखलाई देने लगा। यादगारको सामने रख उसने घोड़ेको चाबुक लगाया और देखते-देखते आँखोंसे गायब हो गया।

६

लुढ़कते पत्थर

जिस वक्त चरवाहेके पत्थर फेकनेसे यसावुलके आनेकी खबर पा लोग भाग गये, गुलनारकी माँने कुछ मिनट प्रतीक्षा की। जब गुलनार न आई, तो समझा कि वह दूसरे रास्ते डाँड़ेपर चली गई, और अधिक प्रतीक्षा न कर स्वय भी लोगोके पीछे पहाड़पर पहुँच गई। गुलनारका बाप भी खबर पा दूसरे रास्तेसे भागने वालोके पीछे पीछे ऊपर पहुँचा। पति-पत्नी एक दूसरेके सामने हुए, तो पतिने सबसे पहले सवाल किया :

—गुलनार कहाँ है ?

—शायद यहाँ हो।

—कहाँ है, पता लगा।

—नहीं मालूम।

—क्यों नहीं मालूम ?

—...?

पतिके बहुत पूछताँछ करनेके बाद बीबीको मालूम हुआ, कि गुलनार पीछे छूट गई, लेकिन पतिके डरके मारे यही दुहराती रही, कि शायद भागनेवालोंमें वह भी यहीं कहीं है। बापने लोगोंमें एक एक

करके ढूँढ़ा, किन्तु वह वहाँ न थी। उसको विश्वास हो गया कि उसपर कोई आफत आई। फिर उसने 'हाय-तोबा' मचाते आसमानको सिरपर उठा लिया—हाय मेरी बच्ची! बच्चीको जालिम ले गया!

एक अस्सीसाला बूढ़ेने गुलनारके बापके औरतोंकी तरहके रोनेको देखकर मजाक करते हुए कहा :

—रुस्तम! तेरा नाम रुस्तम भले ही हो, किन्तु तू अपनी स्त्रीसे भी अधिक कायर है! क्या हो-गया? आसमान नही फट पडा और न जमीन बर्बाद हो गई। लड़की भी अभी पकड़ी नही गई है। अगर पकड़ी गई हो तो भी विश्वास रख, उसे कोई भी नही ले जा सकता। क्या तू इस दर्रामे आज आया है? क्या हम सिर्फ आज यसावुलके सामने हुए? इस जगहको दर्रानिहाँ कहते हैं। यह वही दर्रा है जहाँ रहीमखाँ मगीत अपने चालीस हजार सवारोके साथ भी सफल न हो सका। यह वही दर्रा है, जो दानियाल अतालीककी दुर्गभेदी तोपासे भी भयभीत न हुआ और देह-नौमे घिर गये विद्रोहियोको दो माह तक भोजन पहुँचाता रहा। यह वही दर्रा है, जिसने अकेले मुहमद अमीन हिसारीको सरेजूयमे मदद करता रहा और उस समय जब कि शेराबादसे देह-नौ और बाला-हिसार तक सारे देशपर मगीती सेनाका अधिकार था। यह वही दर्रा है जहाँ सरदारोके अपनेको बेच देनेपर भी तप्पा और पोजन्दके चार सौ सवारोको महमद अमीनने मार भगाया*। आज क्या यह हो सकता है, कि एक यसावुल एक लड़कीको पकड़े और सही सलामत निकल जाये? नहीं, यह नाशुदनी है। तू जरा होशियारीके साथ छिपे रास्तोंसे नीचेकी ओर जा। अगर देखे कि यसावुल लड़कीको लिये जा रहा है, तो पत्थर गिराकर हमे खबर दे। हम अपने जवानोंको हुकुम देंगे, वे ऊपरसे जा दर्राके निकलने वाले रास्तेपर पत्थर

---

* यह घटना १७५४ ई० (११७५ हिजरी) की है।

लुढकाकर उसे बदकर देंगे। अगर यसावुलकी सौ जान भी हो, तो भी यह सम्भव नहीं कि वह एकको लेकर भाग सके।

दूसरोने सिर हिलाते "हॉ ठीक, हॉ ठीक" कह बूढेके साथ सहमति प्रगट की। एक चरवाहे लड़केने बूढेके पास जाकर कहा :

—यादगार भी नहीं है शायद वह भी नीचे रह गया।

अक़सक़ालने झुँझलाकर कहा—अगर गिरफ्तार हो तो सिरकी न्योछावर। मालूम नहीं वह कौन और कहाँका है। यह भारी मूर्खता होगी यदि हम एक बेसिर-पैरके आदमीके लिये हाकिमोंसे भिड़कर आफत मोल लें।

बूढेकी बात सुनकर यह रुस्तम ही था, जो दुरूह रास्तेसे चट्टान के पीछे पहुँचा था, वहींसे उसने सवाल-जवाब किया था।

७

मालिक

एक बड़ी शान-शौकतवाली हवेली थी।

हवेलीके अन्दर चाराघर, बावर्चीघर और तन्दूरघर थे। भीतरी बाहरी हवेलियोंके बीच एक बहुत भारी दो-कतारी भडारघर था, जहाँ बखारोमे जौ गेहूँ मक्का भरा हुआ था। बाहरी हवेलीमें एक मेहमान-खाना (बैठका), दो दालान, एक साईसखाना और साईसखानाके ऊपर भूसाघर तथा पुआलघर थे। हवेलीके आँगनमें कतारसे खूँटे गड़े थे, जिनमेसे एकपर सवारीका घोड़ा बँधा था। गोशालाके नीचे एक जोड़ी जवान बैलोंकी खड़ी थी, जिनकी गर्दनसे जूआ अभी उतारा नहीं गया था। आँगनमें एक छायादार हौज़ था, जिसके पास चबूतरेपर

जोड़ा कालीन बिछा पड़ा था। उसपर बैठने या लेटनेके लिये तीन मसनदोंके साथ दो तोशके रखी थीं।

"खो-खो" खाँसते कोई गलीसे दरवाजाके भीतर आया। आवाज सुन हलवाहा—जो कामसे लौटकर साईसखानाके सामने चटाई पर लेटा था—सिरको उठा, आनेवालेको एक नजरसे देख फिर अपने जामाको मुँहपर डाल सो रहा। आगन्तुकने "साबिर! ओ साबिर!" कहकर पुकारा। हलवाहेने तुरन्त खड़ा हो "लब्बैक" (जी, सरकार!) कहा।

—क्या तू यहाँ सोने आया है? भोरमे जब तू हल जोत रहा था, तो क्या मैने कहा नहीं था, कि खेतसे लौटकर खलिहान जाना? दाँवनेवाले सारे चोर हैं। आँख खता हुई नही कि गेहूँ अपने घर ढो ले गये! मूर्ख! मेरे हुकुम और हिदायतको भूल गया?

साबिर आँखोको मलते-मलते अपनी जगहसे उठकर बोला—लेकिन, मालिक! क्या बिना सोये काम किया जा सकता है?

मालिकने गुस्सा-भरी आवाजमे कहा—आखिर मालिककी रोटी क्या मुफ्त समझ रखी है? खानेके वक्त बैलकी भाँति खाता है और कामके समय लँगड़ा गदहा बन जाता है। अगर सोना इतना ज़रूरी था, तो नौकर ही क्यो बना? जाड़े के दिनो मे, बेकारीके वक्त ऐसा सो जाता, कि वसन्त तक न उठता।

साबिर थकावटसे चूर-चूर था। उसमे उठनेकी शक्ति न थी। वह पैरोंको मल-मलकर खड़ा हुआ, और हवेलीके अदर की तरफ नजर करके चल पड़ा।

मालिकने फिर चिल्लाकर कहा—आखिर, तुझे हुआ क्या है? मै कह रहा हूँ तुझे खलिहान जाने को और तू जा रहा है हवेलीकी ओर?

—घरसे रोटी तो ले लूँ? आज नमकतक मुँहमे नही डाला।

—जा खलिहान पर। वहाँ दाँवनेवालोंके पास रोटी खाना। मत खयालकर कि दाँवनेवाले अपनी रोटी खाते हैं। नहीं-नहीं, वे मेरा गेहूँ

चुराते हैं, उसीकी रोटी खाते हैं। अगर तू भी उसमेंसे एक कौर खा लेगा, तो टाट नहीं उलट जायेगा ?

साबिरने होठोके भीतर कहा—रोटी तो दॉवनेवाले गरीबोंकी खाऊँ और सोऊँ भी नहीं, मगर तेरा काम किये जाऊँ !

—क्या कुर्र-कुर्र कर रहा है कुत्ते ? जल्दीसे खलिहान जा, मै कह रहा हूँ।

साबिर जानेको हुआ तो मालिकने फिर टोका—पहले घोड़ेको साईस-खानामे ले जाकर घास डाल दे।

साबिरने घोडेको ले जाकर अस्तबल मे बॉध दिया, फिर घास ले आ उसे पीटने लगा। मालिकने पीटनेकी आवाज सुनकर कहा—साबिर !

—लब्बैक (जी, सरकार) !

—इधर आ।

साबिरके आनेपर मालिकने कहा—घास कटी नहीं थी तो काटकर डाल क्यों नहीं दी ? अब मै उसे तेरे लिये काटूँ और खुद ही मालोंको चारा दूँ। बैलोंका जुआ उतार और जल्द खलिहान जा !

साबिरने जुआ उतारकर रख दिया और चाहा कि फाटकसे बाहर निकले, लेकिन मालिकने फिर पुकारा—साबिर !

साबिरने दरवाजापर खड़े-खड़े ही "लब्बैक" कहा।

—यहॉ आ !

साबिर आया। मालिकने कहा—खलिहानमें जाकर क्या करेगा ?

—आपकी आँख बनकर रहूँगा, जिसमे दॉवनेवाले गेहूँ न चुराने पायें।

—बस, इतना ही काम ? (अपने-आपसे) खलिहानमें जाकर उनके साथ गप्प-लड़ाते बैठ रहना चाहता है। अज़ीमशाहकी रोटी मुफ्त खाना चाहता है (फिर साबिरकी तरफ निगाह करके) कुदाल लेता जा, खलिहानकी बग़लमें जो जमीन है, उसे बराबर कर देना।

ध्यान रहे, जगह-जगह मिट्टी न ढेर हो जाय। सबको बराबर और साफ करना।

साबिरने कुदाल और झाड़ू साथ ले चलना चाहा।

मालिक—झाड़ू किस लिये ?

—साफ करूँगा।

—साफ करनेके लिये भी झाड़ूकी जरूरत ? बीरीके पेड़से डाली नही तोड़ ले सकता ? उससे झाड़ू देना।

साबिरने झाड़ू रखकर जाना चाहा कि फिर मालिकने कहा—मेरी ओर ताक साबिर ! जमीन बराबर करने के बाद क्या करेगा ?

—क्या इतना काम दिन भरके लियें काफी नही है ?

—अगर काम न करके सोना चाहे, तो दो दिनमे भी यह खतम नही होनेका, लेकिन अगर मालिककी रोटीको हलाल करके खाना चाहता है, तो तीसरे पहरसे पहले ही काम खतम हो जायेगा। जमीनको बराबर करनेके बाद खलिहानकी जमीनको ऊँची करना, जिसमे वह दुगुनी ऊँची हो जाय। किनारोको और ऊँचा करना, क्योंकि खलिहानको बज्र बनानेके लिये वहाँ पानी डालना होगा, मेड़े ऊँची रहेगी तो पानी टिकेगा।

साबिर चला गया।

मालिक मानों एक एकड़ जमीन जोत पटेला दे थके माँदे लौटे हों, 'ओह' करते चबूतरेपर आये। उन्होंने गुलाबी बूटेवाले ऊपरी जामाको उतारकर अलग रखा, पीले कमरबदको खोला, फिर वह भीतरी जामा को ढीला कर गद्देपर बैठे। नीले अफगानी साफेको, जिसने उनके सिरको बड़ा बना रखा था, उतारकर कालीनपर बालिशके पास रख दिया। फिर दूसरी बालिशको बगलमें दबा विचारोंमें डूब गये।

८

जौका हिसाब जौ, और बख्शीश अलग

फाटककी ओर से 'इश्-इश्'की आवाज आई। मालिकने आधा उठकर देखा, कि भार लदे पाँच गधोको हाँके दो किसान फाटकसे अदर आ रहे हैं। किसानोंने "सलामालेकुम्" "सलामालेकुम्" कहते अन्न-भडारके पास आ बोझोंको गिरा दिया। एक किसानने गधोको गोशालाकी तरफ हाँक दिया, जहाँ कि बैल बँधे थे।

मालिक—नजर ! गधोको वहाँसे हटा, नही तो बैलोंके चारेमें मुँह डालेगे।

नजर—अगर, आपकी दौलतमेंसे एक मुट्ठी घास मेरे गधे खा लेगे, तो क्या हो जायेगा ? इतनी फिकर क्यो करते हैं मालिक ?

मालिक—'ऊँट बडा कोहान भी बड़ा' कहावत है ! मुझे अपना ही सिर-दर्द है। तू ऐसी बात कहता है, मानो अपने खलिहानसे दो बोझ भुस लादकर लाया है।

—भुस भुस ही है मालिक ! एक बोझ दो बोझकी बात क्या, आपकी कृपा चाहिये—नजरने गधोको दूसरी ओर हाँक दिया।

मालिक उठकर कोठार के सामने आये। कुर्त्तेकी जेबसे बड़ी चाबी-निकाल, ताला खोल भीतर गये। छतसे लटकते काँटेपर लकड़ीके पल्लेको लटका दिया। बटखरा रखनेकी तरफ डाँड़ीके नीचे एक छोटी-सी लकड़ी टिका दी, जिसमे डाँड़ी उस ओर कुछ लम्बी हो जाय। फिर बोझा लानेके लिये आवाज़ दी।

किसानोंने अनाजसे भरे बोरोंको अदर पहुँचाया। मालिकको तराजूके पास देख एक किसानने कहा :

—मालिक ! तोलनेकी ज़रूरत नहीं। चार मनसे ज्यादा लाये हैं। कम नहीं होगा सरकार !

—तोलकर पक्का कर लेना अच्छा है। कहावत है "हक़ हक़दार को मिलै, यमपुरमें करज न रहै" नहीं तो बराबर होने पर भी मनको सन्तोष नही होता।

किसानने कहा—दो मन देकर चार मन ले रहे हैं मालिक। चार दाना कम हो गया ही तो क्या हुआ ?

मालिक—नही सुना। "जौका हिसाब जौ और बख्शीश अलग" ? अगर तुम्हे ईनाम बाँटने लगूँ तो हो चुका ! आओ हिसाब पूरा करे।

नजर (अपने आपसे)—तू कब्रकी मिट्टी इनाम देगा ! (फिर मालिककी ओर निगाह करके) हाँ, अब याद आया। हमने तराजूसे तौलकर नहीं बल्कि 'मनक'से नापकर अनाज लिया था। हर 'मनक'का हमने पाँच सेर हिसाब लगाया था। यद्यपि वह 'मनक' दश 'चरक'की थी। उस हिसाबसे हमारा यह अनाज ज्यादा है। अच्छा, तोलो, हमारी किस्मतको लूटो।

मालिक—जो होगा, तराजू आप ही साफ कर देगी। अनाज टोकरेमे डाल।

एक तराजू तौलनेके बाद नज़रने कहा—जब आपने गेहूँ तौलकर दिया था, उस समय दश सेर इस टोकरेसे ज्यादा हो जाता था, अब इसमे दश सेर नही समा रहा है।

—मेरा गेहूँ गुद्दादार और भारी था। तेरा पैया और हल्का है, इसीसे ज्यादा चढता है।

तोल खतम हुई। किसानके हिसाबके मुताबिक गेहूँको पाँच मनके करीब होना चाहिये था, लेकिन यहाँ चार मनसे थोड़ा ही ज्यादा हुआ। किसानने बचे गेहूँको अपने बोरेमे डालना चाहा। इसपर मालिकने कहा :

—इस गेहूँको लौटा ले जाना ठीक नही, कोठारमे डाल दे। बखा।

नज़रने कुछ गरम होकर कहा—लेकिन क्या "जौका हिसाब जौ नहीं" है ?

—मुझे तुम्हारे एक मुट्ठी गेहूँका लोभ नही। मेरी अपनी दौलत ही अपने लिये काफी है। लेकिन तुम्हारा लाभ इसीमे है, कि टोकरीका बचा गेहूँ भी हमारे कोठारमे डाल दो। यदि लौटाकर ले जाओगे, तो —दो, तीन दिनमे खतम कर डालोगे। "पानी खुश्कीमे नहीं ठहरता" यहाँ रहेगा तो जरूरतके वक्त तुम्हारे लिये हमारे कोठारका दरवाजा सदा खुला है।

किसानोने टोकरी भर दानेके लिये मालिकको नाराज नहीं करना चाहा। आखिर अगले साल बीजके लिये फिर यही आना था। उन्होंने अनाजको बखारमे डाल बोरे तह कर लिये। फिर नजरने मालिकसे कहा :

—हमारा कागज (हैंडनोट) दे दीजिये, हम जायेगे।

—कागज अदर सदूकमे है। इस वक्त घरमे स्त्री मेहमान आई है। अदर जाना सभव नहीं। हम निकाल रखेगे, बाजारके दिन ले जाना।

—आजकल कहाँ फुर्सत मिलती है कि बाजारको आवे। अच्छा होगा कि इसी वक्त दे दे।

—एक बार कह दिया कि घरमे मेहमान स्त्री आई है। अदर जाना सभव नही। "बहुत अधिक बात गधेपर भार" कही गई है। यदि बाजारके रोज छुट्टी नही, तो जिस दिन छुट्टी हो ले जाना।

नजरने अपने मनमे कहा—ठीक, यदि अधिक बात गधेपर भार नहीं होती, तो तू इतना शोर क्यो मचाता ? (फिर मालिकसे) अच्छा खैर, खुश ! कागज ढूँढकर रखना, भूल न जाना मालिक !

—खातिर जमा रह, मै तेरे कागजको शहद लगाकर चाटूँगा नहीं।

किसान चले गये। हवेलीके अदरसे एक आठसाला लड़का आया। मालिकने बच्चेका हाथ पकड़ कुछ देर प्यार किया, फिर कहा—पुत्र

दिलावर ! जा, फातिमा आपाको कह कि मेरेलिये थोड़ी चाय गरम करके लाये।

मालिक फिर तकिया बगलमे दाबे अपने विचारोंमे डूब गये। पन्द्रह मिनट, आध घंटा बीत गया, अब भी चायका कहीं पता नहीं। जैसे कोई भूली बात एकाएक याद आ गई हो, मालिक खड़े हो गये। हवेलीके अदर पहुँचे। चार औरतें चार पीढोपर बैठी कपड़े धो रही थी। सबने अपनी जगह खड़ी हो, बड़े सम्मानके साथ हाथको सीनेपर रखकर सलाम किया। मालिकने सलामका जवाब न दे कडकती आवाजमें कहा—फातिमा कहाँ ?

बारहसाला लड़की फातिमा धुले कपड़ोको ठीक कर रही थी। अपना नाम सुनते ही वह फौरन सामने आई और बोली—मालिक !

मालिकने बिना कुछ पूछे ही ऐसी जोरकी चपत लगाई, कि फातिमा 'हाय मरी' कह जमीनपर जा पड़ी।

मालिक—मरी ! बलासे। तू अपने और अपने माँ-बापके घरसे खजाना लेकर यहाँ नही आई। अकालके जमानेमे भूखसे मर गई होती। उस समय बापने दस सेर गेहूँके बदले तुझे मेरे हाथ बेचा। अगर मैंने वह गेहूँ न दिया होता, तो तुम सारे उसी अकालमे मर गये होते। अब तो पेट इतना भर गया है, कि बात भी कानसे नही सुनती। एक घटा हो गया, एक चायनिक चाय माँगी, पर कही पता नहीं।

फातिमाने रोते-रोते खड़ी होकर कहा—मुझसे किसीने चायके लिये नही कहा।

"बेशरम ! चाहती है मुझे झूठा बनाना ?" कहकर मालिकने दूसरी बार चपत लगाना चाहा, किन्तु फातिमा भागकर एक ओर चली गई।

अब मालिकने "और जवाँमर्द दिलावर कहाँ है ?" कह बच्चेको ढूँढ़ना शुरू किया। दिलावर बापके आनेके वक्त पानीसे खेल रहा था।

और बापको गुस्सेमे देख माँके घरके दरवाजे पर जा खड़ा हुआ था। जैसे ही 'जवाँमर्द' उपाधिके साथ अपना नाम सुना, चीखकर वह माँके पास चला गया। मालिकने बच्चेकी सजाके लिये इतना काफी समझ बीबियोकी ओर नजर करते कहा।

—लेकिन क्या मैने तुम्हे सिज्दा (दण्डवत्) करनेकेलिये व्याहा? तीन घटा हुआ घर आये, एक चायनिक चाय भी नहीं दी! सब्बीर खलिहान गया। घोड़ो-बैलोने अभी तक चारा नहीं खाया। तुम लोग खुद कोई काम नहीं करतीं, तो आखिर मेरे घरका अनाज खा मोटी हुई इस पिल्लीको क्या हुकुम भी नही दे सकतीं?

मालिक झल्लाये हुए घरके बाहर निकल गये। बाहर आकर कालीन-पर जा लेटे।

६

सम्मानित मेहमान

"मुल्ला अज़ीमशाह!···मुल्ला अज़ीमशाह!·· ओ मुल्ला अजीम-शाह ··!"

मालिकको नींद आ गई थी। आवाजने नीदको तोड़ दिया। जागकर आँख मलते-मलते "ओ हो! अलीमर्दा बेक्। अस्सलाम् अलैकुम्" कहकर खड़े हो उन्होंने दूसरा गद्दा उठा अपनी दाहिनी तरफ बिछा दिया। लेकिन मेहमानसे बिना पूछे, उसके अपनी जगह बैठनेके पहले ही मालिक अपनी जगह बैठ गये। फिर दूसरी बार अपनी जगहसे उठ बालिशोंको मेहमानकी बगलमें रख, अपनी जगहपर बैठ हाथ मिला "अल्लाहु अकबर" कह उन्होने हाथोंको मुँह पर फेरा।

—मेरी आँखे झँप रही थीं, आपको आते नहीं देख पाया। क्षमा कीजिए।—मालिकने आगन्तुकसे क्षमा माँगी।

कोई हर्ज नहीं—मेहमान बोले—बुजुर्गोंने कहा है, "खवाब चाश्तगाही, बेश्तर अज पादशाही" (दोपहरका सोना बादशाहीसे चौगुना)।

—खैर, खूब कुशल-आनन्द सेहत-सलामतसे तो हैं?

—धन्यवाद! जनाब-आलीके राज्यकी छाया, सब सलामती है। आपसे भी वही पूछता हूँ।

—धन्यवाद! प्रथम भगवान्‌की कृपा, दूसरे जनाब-आलीकी सरकारकी दयासे मिट्टीसे बाहर आया···

मालिकने चबूतरेपर रखी चायनिकको छूकर देखा, कि वह ठडी है। चायनिक हाथमे ले "आप आराम करे, मै अभी हाजिर हुआ" कह हवेलीके अन्दर गये। स्त्रियाँ अब भी कपड़े धोनेमे व्यस्त थीं। उन्हें भला-बुरा कहा, किन्तु धीमे स्वरमे जिसमे कि बाहर सुनाई न पडे—फातिमा गर्दन-टूटी तो मेरी चीजोंके बर्बाद होनेकी पर्वाह नहीं करती। तुम लोग भी मानो इस घरमे बेगाना हो, जो कुछ नही बोलती। मै नींदमें सो गया था, क्यो चाय गरम करके छोड़ आई? चाय गरम किया तो क्यो नही मुझे जगा दिया? चाय बरफ बन गई। और बदजात है कहाँ?

बीबियोंमेसे एकने कहा—मालोको चारा डालने बाहर गई। भूसा-घर या आँगनमे होगी।

—मेहमान आया है। दस्तरखान बिछाना चाहिए। चाय तैयार करनी चाहिये ··

इतना कहकर मालिक हवेलीसे बाहर आये और आवाज लगाई।

—फातिमा, कहाँ है तू? जा, अदर देख।

मालिक फिर भीतर गये। कुर्त्तेके खीसासे कुजियोंका गुच्छा निकाल एक कुजीसे लकड़ीकी सदूकका ताला खोला। उसमेंसे एक डब्बा निकाला। डब्बेके अदरसे कुछ मेवा, सूखा तूत और मिसरी निकालकर

डब्बेको फिर सदूकमे रख दिया। फिर ताला लगाकर सदूक बद कर दी। तब मेहमानके पास चबूतरे पर आये।

मालिकके लिये यद्यपि 'काला अक्षर भैस बराबर' था, लेकिन मेहमानने सम्मान प्रदर्शित करते हुए मुल्लाकी उपाधि दे डाली थी, मुल्ला अज़ीमशाह कहकर पुकारा था। अब उसने सम्मानार्थ खड़ा होना चाहा, लेकिन मालिकने झट-झट पग वढाकर कहा—तकलीफ न करे, तशरीफ रखे। फिर अपनी जगह पर बैठ गये। मेहमान अभी, पातित-जानू भर ही हो पाया था, मालिकने उसकी ओर नजर डालकर कहा—पल्थी मारकर बैठिए।

दस्तरखान लाकर फातिमाने चबूतरेपर बिछा दिया। मालिकने मेवा और मिठाईकी तश्तरियाँ उसपर रख दी। रोटीको भी टुकड़े-टुकड़े करके अधिक आगन्तुकके सामने और थोड़ी अपने सामने रखा।

—मेहरबानी कीजिये, रोटी हाजिर है—मालिकने मेहमानसे निवेदन किया और स्वय एक कौर मुँहम डालकर तश्तरीको उसके आगे सरका दिया। मुँहमे एक दाना मेवा डाल मेहमानको भी "महमत फरमाइये" कह मेवा मिठाई खानेकी प्रार्थना की।

—कितना समय हो गया, आपका कही पता नही। आज प्रातः मीरसाहबके सलामके लिये गया था। वहाँ भी आपका पता नही पाया—मालिकने बात शुरू की।

—दुनियाका चक्कर जरा भी छुट्टी नही देता, कि किसी दिन दोस्तोमें बैठकर निश्चिन्ततासे साँस लूँ। आज देखिए तो करमानामे जनाब-आली (बादशाहके) चरणोमे, कल बुखारामे कुशबेगी (महामत्री) के सामने। परसो हिसारमे खुद अपने साहिबेदौलत (गवर्नर) के दौलतखानेमे। इस तरह हर रोज हर जगह उमर गुजरती जा रहा है। जहाँ कहीं अधिक जरूरी और भारी काम होता है, मीरसाहब (गवर्नर) इसी दासको हुकुम देते हैं। एक दिन मीरसाहबसे हँसी-हँसीमें मैंने

कहा—"दूसरे भी हुजूरके खिदमतगार हैं, हुजूरका नान-नमक खाते हैं, उन्हें भी कामके लिये हुकुम दीजिये" इसपर जनाब मीरने फरमाया—दुनियामे अलीमर्दा दो नही हैं। "हर बकरी अगर खलिहान दॉवती तो बैलोंकी क्या जरूरत ?" इस तरह मेरी हुकुमबरदारीकी प्रशसा की। मैने हॅसते हुए कहा—"जो भी हो, सरकारने बैल तो बनाया, किन्तु उसके लायक घास-भूसा भी तो मिलना चाहिये। फिर तो बैल बननेमे भी उज्र नही।" जनाब मीरने प्रसन्न हो अपने निचले जामा (अपनी जरदोजी रेशमी जामाको दिखलाकर)को, इस दासको बख्श दिया।

फातिमाने चायकी चायनिक लाकर चबूतरेपर रख दिया। मालिकने दोबारा चायकी फेराफेरी की, फिर बगलसे रूमाल निकाल पानी पड़नेसे नरम हो गई प्यालीकी मैलको पोछा। तब प्यालामे चाय उँडेलकर पहले खुद कुछ पिया और जूठे प्यालाको जामाके पल्लेसे—जोकि खुद भी दाढीके तलसे लग-लगकर पतीली साफ करनेवाले लत्तेकी तरह मैला हो गया था—मला। आधी प्याली चाय ढाल होठपर फेरी, बिचली अॅगुलीके नाखूनसे प्यालाके अदर टन्टन् कर उसे मेहमानके आगे बढाया। मेहमान डालियोपर गौरैयोका फुदकना देख रहा था। अब उसका ध्यान टूटा। उसने प्यालेको मालिकके हाथसे ले जमीनपर रखा और फिर डालियोपर नज़र गड़ाई। मालिकने रूमालको जेबसे निकाल, चार तहकर चायनिकके मुॅहपर रख दिया। मेहमानका ध्यान अब भी दूसरी ओर बॅटा था, यह देखकर "महमत कीजिये, रोटी भी खानी चाहिये" कहा और खुद भी रोटीका एक टुकड़ा मुॅहमे डाला।

अलीमर्दा बेगका ध्यान वस्तुतः और ही ओर था। वह सोच रहा था, कैसे अपनी चालाकी और चतुराईको मालिकके सामने रखकर आगे की जानेवाली सेवाके बदलेमे अच्छा खिदमताना हाथ आये। वस्तुतः वह चिड़ियोंकी फुदकको नहीं देख रहा था, बल्कि यही सोच रहा था। उसने फिर बात शुरू की—जी, हॉ, मुल्ला अज़ीमशाह ! "सिपाहगरीके तीस

पैर होते हैं।" "हर बातके तीन सौ साठ अंग होते हैं" यह पुराने बुजुर्गों-का कहना है। और यह भी कि "हरेक बातका समय और हरेक विन्दुका स्थान सोता है"। यह बिलकुल सच है। अगर बातको ठीक जगह अदा करे तो हर किसीको मात कर सकता है। इसलिये मीरसाहब हर कठिन कामको मुझपर छोड़ते हैं। मै सूखा करूँ चाहे गीला, उनको फिक्र नहीं। मुझपर उनका ऐसा ही विश्वास है। इसलिये मेरी बातमे दोस्त या दुश्मन कोई भी दखल नही दे सकता। कुछ दिन हुए, एक औरतका मुकदमा पेश था। उन्होने एक दो रोजतक जजालको देखा-भाला। मालूम हुआ कि दावा करनेवाली पार्टी दुधार है। मैने एक चाल चलकर काम पूरा कर दिया। पूछोगे, यदि लड़कीवाले राजी न होते तो क्या करते? अगर राजी न होते तो हाकिम-खाना (अदालत)मे ही न आते? वहाँ भी तो मेरी ही चलती। अभी वही काम करके आया था, कि मीरसाहबने कहा—"मुल्ला अजीमशाहके पास जाओ, उनका एक काम है। उसे पूरा करके आओ" और मुझे आपके पास भेजा। शागिर्दपेशा (चपरासी) और यसावुल और भी हैं, जो महीनो चौखटपर सिर रगडते रहते हैं, लेकिन एक भी काम मुयस्सर नही होता। हाथमे जो भी काम आता है, मै मीर और दावादार दोनोको खुश कर देता हूँ। एक दिन भी बेकार नही रहता। खिदमताना छोड़ गरीब और क्या देंगे? हाँ, मीरसाहब स्वय समय-समयपर इस तरहकी (जामाकी ओर सकेत करके) विशेष कृपाओ द्वारा इस दासको अनुगृहीत करते रहते हैं।

अलीमर्दा ने अपनी बातको समाप्तिपर पहुँचाया। अब उसने यह देखनेके लिये अपनी आँखोको मालिककी आँखोमे गड़ाया कि उन पर बातका क्या असर पड़ा। इसी वक्त दिलावरने पास आकर कहा—दादा! मिठाई दो।

मालिकने मुँह बिचकाकर कहा—बच्चा! ये चचा सरतराश

(हजाम) हैं। कैंची और उस्तुरा साथ लाये हैं। भाग नहीं तो तेरा .. सिरसे उड़ा देंगे।

सरतराशका नाम सुनते ही दिलावरका होश उड़ गया। अब मिठाईका नाम कौन लेता है? वह अदर हवेलीकी ओर भगा।

१०

भगा चरवाहा

बच्चेकी मिठाईकी मॉगसे अजीमशाहका होश-हवास बिगड़ गया था। दो मिनट सिर हिलानेके बाद ध्यानको एकाग्र कर उत्तरकी प्रतीक्षा करते मेहमानकी तरफ निगाह करके बोले :

—यह सब तुम्हारी महिमा है अलीमर्दा बेग! तुम जनाब मीरके जॉबाज सच्चे सेवक हो। मसल मशहूर है :

"इस ब्रह्माडमे दिलके लिये दिलमे स्थान है
द्वेषको द्वेष और प्रेमके लिये प्रेम है"

इसीलिये वह तुमको प्रसन्न रखते हैं। इस बातकी सच्चाई मै भी देखता हूँ। खुदाने मुझे कम-बेशी दौलत दी है। माल-मिल्कियत प्रदान किया है। अलबत्ता, उनको मैं अपने साथ कब्रमे नही ले जाऊँगा, लेकिन उन्हें गली-कूचेमें फेंक भी नहीं सकता। जो मुझे प्रसन्न करता है, मैं भी अपने मनके मुताबिक उसकी सेवा करता हूँ। जबतक जान है, उसे खुश रखता हूँ। माल और जान भी उसके लिये कुछ नहीं। कहावत है 'दिल मेरा ले, माल मेरा खा'। ऐसा ही एक काम आ पड़ा है और वह तुम्हारे हाथोंमें है। अगर मेरा मतलब पूरा करो तो मै भी खिदमत करनेसे पीछे नहीं हटूँगा। यार-दोस्तोंके सामने पैसा क्या चीज है?

—सिर-आँखोपर! जो भी काम हो, फरमाइये। दिलोजानसे उसे पूरा करनेमें कोई कसर न रखूँगा। आपकी दुआ चाहिये!

—सूखी साँस बाँसरी सुर नहीं निकाल सकती। मैं सूखी नहीं, तर दुआ करूँगा।

—किसीने आपका माल तो हजम करनेकी कोशिश नही की ?

—मै सासारिक पैसोके लिये जनाब मीर या तुमको तकलीफ नहीं दूँगा। मेरा पैसा किसने नही खाया ? यह काम एक भगे चरवाहेसे सम्बन्ध रखता है, जो बापके हिसाबमे मेरा एक हजार तका (टक, टका) का कर्जदार है। बदलेमे उसने मेरे यहाँ सेवा करनेके लिये काजीखाना (रजिस्टरी)मे खुद दस्तावेज लिखकर दिया है। इसके अतिरिक्त वह मेरे घर रहता, सर्द-गर्म पानी मे हाथ डुबाये बिना यहीं खाता पीता। भेड़ोको खरीदकर मै जब उसे साथ ले बुखारा जानेको तैयार हुआ, तो वह एकाएक गायब हो गया। अब सुनता हूँ, दर्रा-निहाँमे रहता है। अफसोस मुझे यही है, कि उसने मुझे धोखा दे मूर्ख बनाया, नही तो पैसेके लिये कोई बात नही। दूसरी बात यह कि अगर मै इसे तरह दे दूँ, तो दूसरे नौकरोकी पूँछमे भी पानी लग जायगा, हरेक खिदमतगार खायेगा, पहनेगा और कामके समय भाग निकलेगा। एक नौकर घरमे है, उसकी भी आँख बदल चुकी है। आज ही जनाब मीरके यहाँसे लौटा, तो देखा सो रहा था। जबर्दस्ती उठाकर खलिहान भेजा। वहाँ क्या कर रहा है, कौन जाने। दाँवने वालोके पास हा-हा हू-हू करते बैठा है, या कि जिस हल्केसे कामके लिये जोर देकर भेजा, उसे करता है। चरवाहेके भागनेका यह पहला असर है। अगर इस बातका मैने फैसला नहीं करवाया, तो मेरी ही तरह दूसरोके भी नौकर बिगड़े बिना न रहेंगे। तुम जानते ही हो, कि कही भी कोई बर्बाद (नाबूद) आदमी आबाद (बूद) को, गरीब (नादार) आदमी मालदार (दारम्) को फूटी आँखों देखना नहीं चाहता। जब भूखे और मोहताज होते हैं, तो आकर नौकर हो जाते हैं, हमारी खिचड़ी खाते हैं, नमक खाते हैं। पेट भर जाता है, तो पचल (दस्तरखान)को पैरों तले रौंदते हैं, हमारे

नमकदानको तोड़ते हैं। हमेशा द्वेषाग्निसे जलते रहते हैं—क्यों यह बाय (जमींदार) हैं और हम गरीब हैं? क्यों यह सम्पन्न हैं और हम विपन्न हैं? क्यों यह दारम् हैं और हम नादार? नहीं जानते कि बुजुर्गोंने कहा है "खुदाने जिनको दिया है उनसे ईर्ष्या न कर; उन्हें दौलत खुदाने बख्शी है"। बेगी! तुमसे झूठ क्या, खुदा जानता है। जब मै दरवाजसे आया तो एक लकड़ीके जूते, एक थैले, एक टाट और एक लाठीके सिवा कोई चीज मेरे पास न थी। अव्वल, खुदाकी मेहरबानी, दोयम जनाबआलीकी सर्कारकी छाया। हवेली, बीबी-बच्चा सबका मालिक हूँ। एक नही, चार चार बीबियाँ हैं। दिल और नीयतके मुताबिक माल-मिल्कियत भी है। यद्यपि मैंने कुदाल नहीं चलाई, चोरी नही की, लोगोका माल नही हड़पा। खुदाने मुझे लायक देखा, और दिया। कहावत "बेकिस्मत अगर खेती करै, पानी नही पावै। बाकिस्मत के लिये खेती और बेखेती दोनो बराबर" वस्तुतः स्वय मैंने किसानी नहीं की। कुछ एकड़ (तनाब) ऊसर-बजर पासमे है, जिसमे बटाईदार (चार-यक्कार) या नौकर काम करते हैं। वसन्त (बोनेके वक्त)मे सिर्फ खैरातके लिये भगवानका खयाल करके गरीब किसानोको बीज दे देता हूँ। जब फसल तैयार होती है, तो खुद ही कम या बेशी दे जाते है। बहुतसे लोग दिन रात काम करते हैं, पर पेट नही भरता। फिर वह 'बाय' या मालदारोको कोसते हैं। अगर उनमे बुद्धि होती, तो अपनी किस्मत, अपने दिल और अपनी नीयतको कोसते। हमारा कर्तव्य है कि जबतक जान है, तब तक उनपर सख्ती करे। उन्हें उभड़नेका मौका न दे। वह मनुष्यके धनके शत्रु हैं। अन्धे हैं। मजदूरो और खिदमतगारोके साथ नेकी करनेका परिणाम उलटा ही होता है।

—यह आपका चरवाहा है कहाँका? उसका और उसके बापका नाम जानते हैं?

—नाम है यादगार। बापका नाम था बाजार। वे इधरके रहनेवाले

नही हैं। सात-आठ साल पहले जब कि कूलाबमे अकाल पड़ा था, बाजार अपने बीबी-बच्चेके साथ बुखारा जाते यहाँ आया। उसकी स्त्री यहीं मरी। मैंने उसकी लाशको अपने खर्चसे कब्र दिलाया। उसे और उसके बारह-तेरह सालके लड़केको अपने यहाँ पनाह दी। मार्गके कष्ट और भूखसे उनका प्राण निकलने जा रहा था, मैंने उनकी परवरिश की। बाजार तन्दुरुस्त हुआ। हड्डियोपर पानी चढा। उसने नौकरी माँगी। मैंने सिर्फ सवाब (पुण्य)के लिये उसे चरवाहा रखा। हर साल एक बार समरकन्द और एक बार बुखारा भेड़ें लेकर जाता। हर बार उसने चोरी की। मेरी मोटी भेड़ोको चुराकर बेच डाला। उसकी चोरी इस्लामके काज़ीके सामने साबित हुई और उसकी गर्दनपर पड़ी। मेरा एक हजारका कर्जदार बना। बदलेमे उसने मेरी नौकरी करनेका दस्तावेज बनाकर दिया। लेकिन अपना कर्त्तव्य पूराकर चुकनेके पहले ही वह चल बसा। उसके मुर्देको भी दफन कराया। उसके लड़केने नौकरी करके करज चुकानेके लिये नया दस्तावेज लिख दिया। लेकिन एक बार भी बुखारा गये बिना ही भाग गया। यही बात है जिसके लिये मैने आज जनाब मीरके पास **यसावुल** माँगा। मेरा सौभाग्य है, कि उन्होंने तुम्हें नियुक्त किया। आशा है, उस भगे चरवाहेको पकड़कर मुझे सुपुर्द करोगे और नमकहरामको ऐसी सजा दिलाओगे, कि दूसरोको शिक्षा मिले। फिर ये नंगे, मुफ़्तखोर समझेगे, कि देशमें हाकिम भी है, शरीयत (धर्मशास्त्र) भी है। इस तरह दूसरोंको फिर ऐसा करनेका साहस न होगा। मैं आपको अभी दस्तावेज निकालकर दिखलाता हूँ।

बात खतम करके मालिक हवेलीके अदर गये। कुजियोंका एक गुच्छा निकाल उनमेंसे एक चाबीसे सदूकका ताला खोला। सदूकमेंसे एक बस्ता निकाला, जिसमे दस्तावेज भरे थे। हर दस्तावेज पर एक विशेष चिह्न था। मालिक क ख तक नहीं जानते, तो भी चिह्नसे पहचान लेते, कि कौन दस्तावेज किसका है। ढूँढ-ढाँढ़के समय किसानका

हैंडनोट हाथ आया। उसको बस्तेमें सबसे नीचे रखकर अपने आपसे बोले—मूर्ख! कहता था कि मेरा कागज वापस दीजिये! मैं नादान नहीं हूँ, कि इस फंदेको हाथसे दे तुझे मुक्त करूँ। जिस दिन भी तू बेजा कदम रखेगा, उसी दिन इस कागजके द्वारा तुझे ऐसे चक्करमें डाल दूँगा, कि जान बचानी मुश्किल हो जायगी। अन्तमें बाजार और यादगारके दस्तावेज हाथ आये। बस्ताको बाँधकर सदूकमें रखकर ताला लगाया। बाहर आ दस्तावेज अलीमर्दाको देते हुए कहा :

—इन्हे पढकर खुद समझिये बेगी!

अलीमर्दाने हाथमें ले उनमेंसे एकको ऊँची आवाजमें पढना शुरू किया :—

तारीख...माह रजब, सन् तेरह सौ पाँच हिजरीको बाजार बाय—जाल सी दाढी, मझोला कद, गेहुँआ रग, कजी आँख—वल्द एवज मुरादने धर्मस्कन्धावार सरेजूयमें आकर शरीयत (धर्म)के अनुसार सच्चाईसे स्वीकार किया, मै करार करता हूँ कि मन्मुकिरने मुल्ला अजीमशाह वल्द रहीमशाहसे बुखारा-शरीफ—जिसकी अल्लाहने प्रशसा की और आफतोंसे जिसे अमन दिया—में ढला और प्रचलित आठ सौ उनठस चाँदीका टका लिया। और, कबूल करता हूँ कि माँगनेपर उक्त रकमको इस्लामके काजीके सामने महाजनको अदा कर दूँगा। यह मुसलमानोंके सामने प्रमाण-पत्र है।

मजलिसके हजूरी रऊफ बाय, रहिमान करावलबेगी, खुदा-ए-नजर वगैरह।

—काजीकी मुहर

दूसरे दस्तावेजका लेख भी इसी प्रकार था, अन्तर यही था, कि वहाँ बाज़ारकी जगह यादगारका नाम था।

अलीमर्दाने दस्तावेज पढ़कर "इन दस्तावेजोंके पास रहनेपर सौ जान भी हो, तो भी, वह एक जान नहीं बचा पायेगा। इस वक्त इन्हें

सँभालकर रखिये, जरूरतके मुताबिक निकालियेगा।" यह कहकर दस्तावेज मालिकको लौटा खानेके लिये फातिहा पढ़कर छुट्टी लेनी चाही।

अजीमशाह थोड़ा ठहरनेके लिये कह घरके अँदर गये और मिठाई वाली सँदूकको खोल उसमेंसे एक टुकड़ा पाँच-छटाँकी मिसरी ले आये और कहा—"इससे मुँह मीठा कीजिये" इसके बाद मिसरीका वह टुकड़ा अलीमर्दाके हाथमें थमा दिया। दरवाजा तक पहुँचाते समय उसे ताकीद की—"जो भी हो, कोशिश कीजिये, कि वह हाथ आये।"

—खातिर जमा रखिये। पहले तो खुद उसे ही गिरफ्तार करूँगा। अगर निकल भागा, तो दर्राके दो आदमियोंको पकड़कर जीनखानामें लाकर बद करूँगा, जिसमें दूसरे मजबूर होकर खुद मुलज़िमको हाजिर करे। फिर बदीको जजीरमें जकड़कर आपके सामने लाऊँगा। खैर, खुश। भगवान् रक्षा करें।

—खुदा आपका मार्ग उज्ज्वल करे। शिकार हाथ आये। हक़ हक़दारको मिले—कहकर अज़ीमशाह हवेलीके अँदर लौटे।

११

आकस्मिक बीमारी

मेहमाह (चन्द्र-सूर्य)ने बुने कपड़ेको लपेटते हुए "दिगिच्!" कह अपनी देवरानी तूतीको आवाज़ दी। तूती आई तूतके नीचे चबूतरेपर अगले दिनके कामके लिये नड़ी भर रही थी। उसने चर्खे और परेतेको अपनी जगह छोड़ दूकानखाना (कर्घा घर) में जा मेहमाहसे पूछा—क्या कहती हो?

मेहमाहने दरकीको हाथसे छोड़े बिना कहा—मैं भूली जा रही थी, बादगारके बापने कहा था, कि आज एक टोकरी गेहूँ धोकर रखना।

रातको सफ़र, उसे चक्कीपर ले जायेगा। मैं और सफर शामतक खेतके काममें लगे रहेंगे। इसलिये गेहूँ धोना हमसे नहीं हो सकेगा।

मेहमाहने अभी अपनी बात खतम न की थी, कि एक पाँचसाला बच्चा—जो दूकानखानामें एक ओर गड्ढा खोद जुलाहेकी दूकान (कर्घा) तैयार कर रहा था—बातकाटकर बोल उठा—आचा! मैंने चक्की नहीं देखी। मै भी रातको चचा के साथ पनचक्की जाऊँगा।

—रात होगी तेरा अता (बाप) चक्की बनाकर तुझे देगा। अभी दूकान बना।

मेहमाहने बच्चेको भुलवा तूती आई-से कहा—मेरा थान दो गज भी नही हुआ। तू गेहूँको टोकरेमे धोकर कम्बलपर फैला दे। दो नड़ी और बुननेके बाद मै भी काम पूरा कर तेरा हाथ बटाने आती हूँ।

× × ×

सूर्य अस्त हो चुका था। अन्धकारने दुनियाको कुछ-कुछ ढाँक लिया था, लेकिन अब भी बाजार और सफरका कही पता न था। मेहमाहने करीब-करीब बुझ गये चूल्हेमे एक कडा डालकर देवरानीसे कहा—क्यों आज ये लोग देर कर रहे हैं? यादगारके पिता ने कहा था कि खाना समयसे पहले तैयार रहे, सफर खाना खाकर दिन हीमे पनचक्की चला जायगा। क्या बात हुई जो अभी तक नहीं आये?

तूती आई—कहावत है, "घरकी बात बाजारमें नहीं आती।" उनका काम पूरा नहीं हुआ या कोई दूसरा काम आ पड़ा। लेकिन मैं ख्याल करती हूँ, यादगारका चचा आज रात चक्की नही जा सकेगा। वह दो रोजसे कह रहा है, कि मेरा सिर सिम-सिम करके दर्द कर रहा है। आज बड़ा जोर करके उठा और काम पर गया, नही तो उसमे हिलने-डुलने तककी ताक़त न थी।

—मैं अफगान मुसाफिरके मरनेके दिनसे ही सफरकी अवस्था बदली देखती हूँ। न जाने कहाँसे बीमार मुसाफिरपर दया दिखाते

उसे यहाँ ले आया ? मरते वक्ततक वह उसके पाससे नहीं हटा। अजब नही कि वही बीमारी इसे भी लगी हो।

इस प्रकार मेहमाहने देवरानीका समर्थन किया, लेकिन जब तूती आईपर उलटा प्रभाव पड़ते देखा, तो कहा—घबड़ानेकी जरूरत नही। उसका भाई ईशान (पीर) को लाकर झाड़-फूँक करायेगा "तूने देखा, मैंने देखा" हो उसकी दशा फिर पहलेकी हो जायेगी। देर से आये, कोई बात नहीं, लेकिन गायको आना चाहिये, जिसमे समयपर उसे दुह सके।

इसी वक्त रास्तेसे 'इश्-इश्' करके किसीके आनेकी आहट आई। मेहमाह झटपट चूल्हेसे उठ, दुहनी हाथमे लिये यह कहते बाहर गई—ददेश्! अगर दो बार इसी तरह हुआ और बेवक्त दूही गयी, तो गाय बिसुक जायगी।

लेकिन सामनेका दृश्य देखकर वह एक कदम पीछे हट गई। मेहमाहने जो कुछ देखा, वह वस्तुतः भयानक था। अपनेको न सँभाल सकनेकी वजहसे सफर गधेकी एक ओर लटका हुआ था। बाजार गायके पगहेको हाथसे लपेटे दोनों हाथोंसे सफरको सँभाले हुए था। जैसे ही बाजारकी आँखे बीबीकी दुहनीपर पड़ी, उसने कहा—दुहनीको परे रख, आ इसको सँभालकर उतारें।

इसके बाद बाजारने बीबी और भ्रातृवधूको मददके लिये बुलाया।

दोनों औरते दौड़कर बाजारके पास पहुँची और उतारकर सफरको दरीपर लिटाया। बाजार बोला—मै खेतपर जा बैलोंको लाता हूँ।

घरसे निकल वह खेतकी तरफ रवाना हुआ। मेहमाहने दीवा जलाया। तूती आईने अपने घरमेंसे गद्दा और तकिया लाकर बिस्तरा तैयार किया। बीमारने न मुँहसे आवाज निकाली न आखे खोलीं। दोनो स्त्रियाँ एक दूसरीकी सहायता करती बिस्तरपर बैठी बीमारकी देख-भाल करने लगी। इस वक्त मेहमाहकी दृष्टि एक मटमैले रंग के कीड़े

पर पड़ी। वह सफरके मुँहपर रेंग रहा था। चिराग लेकर नजदीकसे देखा, तो एक सींगवाला मोटा जूँ-सा दिखलाई पड़ा। मेहमाहने पकड़ जमीनपर फेंक पैरोसे घीसकर उस कीड़ेको मार दिया। फिर व्यगके स्वरमे तूती आईसे कहा—दिगिच्! अपने गद्दोको धूपमे रख, इसमे जूँ पड़ गये हैं।

तूती आईने सफाई देते कहा—जबसे वह बीमार मुसाफिर हमारे घर आया, तभीसे गद्दो और तकियोमे जूँएँ पैदा हो गईं। मै कितना ही चुनती और मारती हूँ, लेकिन ये बाप-जले खतम ही नही होते!

तूतीआईने चाहा कि पतिके हाथको लेकर मले, लेकिन जैसे ही उसे अपने हाथोमे लिया, जान पड़ा जैसे तपा लोहा है और उसका हाथ जल जायेगा! बीमारने अपने हाथको हटा कर "हाय जला" कहते उसे दूसरी तरफ पटक दिया, जहाँ कि वह मेहमाहकी जाँघपर पड़ा। मेहमाहको उसकी गर्मी कपड़ेके अदर भी मालूम हुई। रोगीकी हालत बड़ी चिन्ता-जनक थी।

तूती आईने पतिके ललाटपर हाथ फेरते पूछा—तुम्हे क्या हुआ?

रोगी "हाय जल गया!" कह आधा उठ दूसरी करवट गिर पड़ा।

बाजारने बैलोको खूँटेसे बाँध बीमारके पास आ "हालत कैसी है?" पूछा।

मेहमाहने कहा—आँखे नही खोलता। जल्दी जाओ, एक ईशान (पीर)को लाओ। दम और दुआकी जरूरत है।

बाजारने कहा—"यदि रोगी अच्छा होनेवाला होता है तो वैद्य खुद घरके दरवाजेपर पहुँचता है" इस मसलके मुताबिक दरबाज़वाले ईशान सुल्तान खान-दुनियाके मशहूर ईशानोमेसे एक—आज रात याकूब बायकी हवेलीमें मेहमान हैं। उन्हींको लाकर दुआ कराता हूँ।

बाजार ईशानको लानेके लिये चला गया।

१२

ईशान (पीर)

कनकुर्त्त गॉवमे आज असाधारण चहल-पहल थी। गॉवकी सबसे अच्छी और शानदार इमारत **याकूब बायकी** हवेली आज खूब सजाई गई थी। बाहर दरवाजा और कूचेतक पानीका छिड़काव हुआ था। आज आनेवाले प्रतिष्ठित अभ्यागतके दर्शनोके लिए **याकूब बायने** घोडेपर जा बुखारामे शिक्षाप्राप्त **कूलाबके** मुल्ला **महम्मद सलीम, मुल्ला असद नजर मखदूम, मुल्ला अली महम्मद** और दूसरे मुल्लों-को खबर दी थी।

अस्र (अपराह्न) की नमाज़के करीब "आये आये" की आवाज आई। सब सोनेपर हाथ रखे रास्तेपर खडे हो गये। एक पच्चीससाला जवान सफेद घोड़ेपर दूरसे आता दिखाई पड़ा। उसका आकार मझोला, शरीर मॉसल, बड़ी-बड़ी ऑखे नीचेकी ओर झुकी, दाढी भरी, छोटी और काली थी। जवानके सिरपर पगड़ी, तनपर पियाजी रगका बुखारी चकमन, पैरोमे पीले रगका सुन्दर जूता और जीनके ऊपर दरवाजका बना मनोरम नमाजी कालीन था। चार आदमी पैदल, पैरोंमे काठका जूता पहने साफोमे दातुअन बॉधे साथ-साथ दौड़ रहे थे।

स्वागत करनेवालोमेसे एकने **याकूबसे** "क्या ईशान सुल्तान खॉ यही छोकरा है ?" कहते आश्चर्य प्रकट किया।

याकूब बायने यह कहकर प्रश्नकर्त्ताकी शकाको मिटाना चाहा--हॉ, आप ही हैं। बुजुर्गोंने कहा है, जवानीमे तोबह करना पैगम्बरका सदाचार है। आप जवान हैं, तो भी बहुत सयमी हैं।

मेहमान बहुत नजदीक पहुँच गये थे। **याकूब बायने** आगे बढ़कर ईशानके हाथको चूमा और उसे अपनी ऑखोंसे मला। दरवाजेपर

पहुँचनेपर बगलमें हाथ दे ईशानको घोड़ेपरसे उतरनेमें मदद दी। दूसरे लोगोंने भी पीरका हाथ चूमकर आँखोंसे मला।

पीरके पधारनेके उपलक्षमें हवेलीमें एक मोटे दुम्बेकी कुरबानी दी गई। ईशान कालीनपर बैठे। याकूब बायने पीछे पीछे आ बड़े आदर और सम्मानके साथ "स्वागतम्" कहा। जब ईशानने बायसे कुशल-मङ्गल पूछा, तो वह खड़े हो हाथको सीनेपर रख "शुक्र हजरतकी दुआ और कृपासे सब कुशल-मगल है," कहकर अपनी जगहपर बैठ गया। ईशानके स्वागतके लिए आये गॉवके लोग भी उनकी आज्ञासे नजदीक आये और दोबारा सलाम और हस्तचुम्बनकर पीरके इशारेपर दरीकी एक ओर पॉतीसे बैठ गये।

नमाजका वक्त आया। ईशानके चेलेने अजान दी। सबने पाणि-पाद-शुद्धि की। पीरने भी वजू किया। ईशान इमाम बने और सब लोगोंने उनके नीचे अस्तकी नमाज पढी। नमाजके बाद सब चक्र बॉधकर बैठे। पीर स्वय ही चक्रके प्रमुख थे। सबने सिर नीचे करके ऑखे मूँद लीं। कुछ क्षणबाद ईशान थोड़ा आगे बढ दाहिने बैठे एक आदमीके समक्ष आसीन हुए। ईशानकी जॉघसे उसकी जॉघे मिल रही थीं। ईशान अपने दाहिने हाथको उस आदमीकी जॉघपर रख सिर नीचा किए कुछ देर मौन बैठे रहे। इसी तरह दूसरे और तीसरे आदमीके साथ भी कुछ-कुछ क्षण बिताते पीरने सारे चक्रको समाप्त किया। तबतक शामकी नमाजका भी वक्त आगया। अजान दी गई। नमाज पढ़ी गई। अब मुल्ला लोग भी आ पहुँचे थे। ईशान बड़ी गर्मजोशीके साथ उनसे मिले। उन्होंने भी गर्मागर्म कुशल-मगल पूछा, लेकिन हस्तचुम्बन नहीं किया। ईशानके कहनेपर वे उनके साथ एक पक्तिमें बैठे।

दस्तरखान (परोसनेकी चादर) आया। घी-छलकते शोरबाके साथ घी-चूती रोटियोंका भोजन हुआ। फिर मुल्ला महम्मद सलीमने पूछा—कहाँ पधार रहे हैं?

—इच्छा है हिसार और दोशम्बा (आधुनिक स्तालिनाबाद) की ओर जाकर उधरके बुजुर्गोंकी समाधियोंके दर्शन करूँ। उस तरफ बहुत सी चमत्कारिक समाधियाँ हैं। आम लोग नहीं जानते, लेकिन जिन्हे शेखोके पथका परिचय है और पवित्र कब्रोके साक्षात्कारका सौभाग्य प्राप्त है, वह जानते हैं कि इन जमीनोमें कितने बुजुर्ग सो रहे हैं। पिछले साल जब मै हिसारमे था, तो जनाब आस्ताना कुलबेक कुशबेगी (गवर्नर) हिसारने इस दासकी अयोग्यताके होते हुए भी सौहार्द दिखलाते निमन्त्रित करनेकी अनुकम्पा की। यह चकमन (जामाकी तरफ इशारा करके) आपका ही प्रसाद है। आपके पास भी इस चकमनको इस्ताम्बूल (तुर्कीसे) शेख अब्दुल अजीजने भेजा था। कहते हैं, असलमें यह मुसलमानोंके खलीफाके तोशाखानासे प्रदान किया गया था। सेवक कुछ-कुछ परचित्त-ज्ञानसे भी परिचय रखता है। जिस वक्त मीर कुशबेगीके साथ एक चक्रमे बैठा, तो मालूम हुआ, कि ऑजनाब भी उससे वचित नहीं हैं। सासारिक धधो और राजकाजमे लगे रहनेपर भी ऐसी सिद्धिका पाना बड़ी प्रशसनीय बात है। मीर कुशबेगीने इच्छा प्रगट की, कि फकीर ऑजनाबके पास रहे, और दोनों एक दूसरेके सत्सगसे लाभान्वित हों। इसीलिये मुझसे कहा—"आप हिसार या दोशम्बाकी बिलायत (जिला) में जहाँ भी रहना चाहे, मै स्थान दौलते-आलीके तरफसे प्रदान करूँगा और आप वहाँ निवास करने मेरे नजदीक रहे।" मैंने भी वहाँ आसपास देखा और दोशाम्बासे नातिदूर यगीबाजारके जवारमे यगेकुर्गानको पसद किया। वही एक चक उपजाऊ जमीन प्रदान की। इस साल वहाँके किसानोंको कामपर लगा गेहूँ और शाली (धान)की खेती कराई। अब जा रहा हूँ कि वहाँ एक फकीरखाना तैयार कराऊ। साथ ही वहाँ काफिरनिहाँ नदीके किनारे बहुत सी कामकी जमीन पड़ी है, चाहता हूँ, कि वहाँ नहर और पनचक्की बनवा दूँ। ताकि प्रभुकी प्रजा लाभ उठावे।

ईशानकी बात बहुत लम्बी थी, लेकिन वह दिलचस्प थी। मुल्लोंको चाहे ईशानके परिचित-ज्ञान और कब्र-साक्षात्कार से दिलचस्पी न भी हो, लेकिन प्याजी चकमनका प्रसाद और उपजाऊ जमीन, पनचक्की और नहरकी बात सुनकर उनके मुँहमें वैसे ही पानी भर आया, जैसे बच्चे को हलुआ देखकर। यहाँ तक कि मुल्ला नज़र मखदूमने मुल्ला महम्मद सलीमके कानोंमें "हम व्यर्थ ही बुखाराके मदर्सोंकी धूल चाटते आधी उमर गँवा आये, मान-प्रतिष्ठा धन-दौलत तो ईशान (करपात्री) के चरणों-को चूम रही है।" कहते हसरत जाहिर की। मुल्ला महम्मद सलीमने ईशानके वार्तालापका सक्षेप करके कहा—है है, क्या खूब! आपका सफर जियारत भी है, तिजारत भी है।

१३

जिन्ने पकड़ा है

जिस वक्त मुल्ला लोगोंकी ईशानके साथ खूब छन रही थी, उसी वक्त किसीने पैरहने की तरफ दीवेकी छायामें खड़े हो याकूब बायको इशारा किया और स्वय दरवाजासे बाहर जा रास्तेपर खड़ा हो गया। याकूबने धीरसे उठ उसके पास पहुँचकर पूछा—खैरियत तो है बाजार बाय? रातको इस वक्त क्या काम? यदि हजरत ईशानके दर्शनोंके लिए आये हो, तो आओ मै दर्शन कराता हूँ।

—मेरे शिरपर भारी आफत आई है। दादार (छोटा भाई) बहुत बीमार है, पैर और जीभसे बिलकुल बेकाबू है। हजरत ईशानके पधारनेकी बात सुनकर आया हूँ। आज ही रात या कल पधारकर यदि कुछ मन्त्र-तन्त्र करते, तो शायद बेचारेकी जान बच जाती।

—बहुत अच्छा। लेकिन मुझे नहीं मालूम, कि तुम हजरत ईशानकी मान-पूजा ठीक तौरसे कर सकोगे।

—जरूर करूँगा। मैं जी जानसे हाजिर हूँ। जैसे भी हो मेरा दादार अच्छा हो जाये। धन-दौलत मेरी नजरमे कुछ नहीं।

—यह ईशान मामूली ईशान नहीं। हिसारके क़ुशबेगी और स्वय जनाब-आली (अमीर-बुखारा) ऑजनाबके चेले हैं। अगर ऑजनाबको अपने घर ले जाना चाहते हो, तो सवारीके लिये घोड़ा भेंट करना जरूरी है, और तुम्हारे पास घोड़ा है नही।

—घोड़ा नहीं है तो क्या? दूधवाली गाय और बैल तो हैं। बीमार-की जान बचे। मै आपकी सलाहके मुताबिक 'जानगिरों जामा गिरो' करके किसी तरह भी खुश करूँगा।

—अगर बैल भेट करो, तो हजरतको ले चलनेकी कोशिश करूँगा।

बायके नौकर जफरने रास्ता पर होती इस बातको सुना और उसने अपने आपसे कहा—"बकरीको जानकी चिन्ता और कसाईको चर्बीकी।"

बाजारने एक बैलकी भेंट स्वीकार करके पधरावनीके समयके बारेमें पूछा। याकूब बायने उत्तर दिया—आज रात सम्भव नहीं। हज़रत ईशानके दर्शनोके निमित्त आलिम लोग तशरीफ लाये हैं। कल सुबहकी नमाज़के बाद ले आऊँगा।

× × ×

अगले दिन जब ईशान सुबहकी नमाज़ पढ़ चुके, तो बायने सलाम करके कहा—तकसीर (अपराध क्षमा-निधान)! लक्ष्मी आपके चरणोमें आ रही है। यगक़ुर्गानमे जो ज़मीन मिली है, खुदाने उसके लिये एक बैल भेजा है।

ईशानने बायसे "कहाँ से, कैसे बैल आया?" इसके बारेमे कुछ भी पूछे बिना आधा खड़ा हो बायकी गोशालामें थानपर बँधी बैलोंकी जोड़ीको देखकर पूछा—इनमेंसे कौन?

याकूब बायने "यह नहीं" कह बाजारके भाईकी बीमारी और एक बैलकी भेंटका बयान किया और कहा—तकसीर ! ऐसा करें कि बला भाग जाय। यदि बैलोंकी जोड़ी मिल गई, तो प्रतिदिन एक बीघा जोतनेके लिये काफी रहेगा।

ईशान—खुदाकी मदद चाहिये। मैं उसको बाँध लूँगा।

—खुदाकी मददमे इन्सानकी भी मदद जरूरी है। यदि हज़रतके यह खड़ाऊँवर्दार (अनुचरोंकी तरफ इशारा करके) न हों, तो बैल क्या बकरी भी मुयस्तर न हो।

ईशानने अपने खड़ाऊँवर्दारकी तरफ निगाह करके कहा—मुल्ला नवाज़ ! सुना न ? यह बाय भी तेरी करामातको समझते हैं। अब मुरीदोके साथ किस तरह बर्ताव करना चाहिए, इसे अच्छी तरह सीख ले।

फिर बायसे "आओ चले" कह दोनो रवाना हुए। मुल्ला-नवाज भी साथ हो गया, क्योकि उसे बैल लाना था।

× ×

—बादारकी हालत और भी बुरी है। ईशान भी अभी नहीं आये—कहकर बाजारने अपने दिलका दर्द बीबीसे जाहिर किया। इसी समय बाहरसे बायकी आवाज आई। बाजार औरतोसे दूसरे घरमे जानेकी बात कर खुद बाहर आ गया और ईशानको देखते ही रोना शुरू कर सलाम करना भी भूल गया। फिर उसने उनके हाथोंको अपनी आँखोसे मला और उन्हें साथ लेकर बीमारके पास पहुँचा। बीमार हाथ-पैर पटक रहा था। कभी आखे खोल कर वहाँ बैठोंकी तरफ फाड़-फाड़ कर देखता, फिर आँखे मूँद लेता। ईशानने अपने हाथको रोगीके ललाटपर रख कुछ पढ़ कर 'फू' किया, फिर अपने सिरको नीचेकर आखें मूँद ध्यानस्थ हो गये। कुछ मिनट बाद सिरको उठा कर एक ठडी आह खीच बायकी तरफ निगाह करके कहा :

—इसपर जिन्नने असर किया है। वक्त तो बीत गया है; अच्छा, रातको

मुझसे पूछना। मैं कोशिश कर रहा हूँ। काम बिगड़ चुका है। अब अफसोस करनेसे क्या फायदा? अब भी समय है। जब तक प्राण तब तक प्रयत्न करना चाहिये। शायद बच्चा छुटकारा पा जाये। कहावत है, "जब तक जड़ पानी मे तब तक फलकी आस", लेकिन इसके लिये सबसे अधिक प्रिय एक प्राणधारी न्यौछावर करना चाहिये।

बाजारने कहा—एक बढ़िया बैल है जो दादारके बाद मुझे सबसे ज्यादा प्रिय है। वही आपके चरणोंमे न्यौछावर है। ऐसा कीजिये, जिसमे मेरा दादार खलास हो जाय।

—खलासी पहले तो खुदाके हाथमे, दूसरे अपने इखलास (सद्भाव) पर है। पीरोंने कहा है "इखलास व खलास" जो हमारे हाथमें है, करनेसे उठा नहीं रखेगे। आगे खुदा मालिक।

ईशानने फिर मत्र पढना आरम्भ किया। दो-तीन बार बीमारकी तरफ दम किया, फिर हाथ-पर-हाथ रखकर कुछ पढा। दूसरोंने भी हाथ-पर-हाथ रख 'आमीन' कहा? फिर ईशानने एक लम्बी चौड़ी दुआ पढ मुँह पर हाथ फेर बीमारकी ओर 'फू' करके दम किया। दूसरोंने भी मुँह पर हाथ फेर 'अल्लाहु अकबर' कहा।

बाजारकी आँखे डब-डबाई हुई थी। ईशानने उसकी ओर देखकर कहा—चिन्ता मत करो। कहावत है "दर्द दूसरा मौत दूसरी" मैं जाकर ताबीज लिखता हूँ। उनमेसे एकको मोटे कपड़ेकी तीन तहमे लपेट दाहिने बाजू पर बाँध देना। और तीन ताबीजे भेज रहा हूँ, जिनमे एक अब, दूसरी शामको, तीसरी रातको पानीमें घोटकर पिला देना। और भी तीन दुआएँ लोवानकी लकड़ीपर लिखकर भेज रहा हूँ। उनमेंसे एक अब, दूसरी शामको, तीसरी रातको आगमे डाल बीमारके नीचे धूप देना।

यह कहकर पीर अपनी जगहसे उठ खड़े हुये। दूसरे भी खड़े हो गये। बाजार आगे दौड़कर बैल खोल ईशानको भेंट करनेके लिये तैयार था। ईशानने दूसरोंसे आँख बचा बैलकी तरफ एक नजर देखा।

याकूब बायने मुल्ला नवाज़से कहा—बैलको तुम पकड़ लो—फिर बाजारकी तरफ मुड़कर कहा—तुम जल्दी अपने दादारके पास जाओ। किसी समय उसे अकेला न छोड़ो।

याकूब बायने ईशानके साथ बातचीत करते घरका रास्ता पकड़ा। पीरने याकूब बायके यहाँ आ वज़ू (हस्त-पाद-मुखप्रक्षालन) कर दो रुकात (चरण) नमाज पढ़ी। नमाज़से उठकर खीरके थालपर पीर साहब बैठे भी न थे, कि गाँवके मुअज्जिनने आकर बाजारके भाईके जनाज़े (शवयात्रा) का समाचार सुनाया।

बायने चुटकी लेते हुए ईशानसे कहा—तकसीर! लोग कितने सद्भाव (इखलास) वाले हैं, यदि उनका रोगी अच्छा हो गया तो यह ईशानकी दुआसे, यदि मर गया तो यह खुदाकी मर्जीसे। फिर ईशानको जनाज़ेका समाचार दे खैरात देते हैं। हर हालतमें ईशान शव-स्नापकोंसे तो अधिक सम्मानित और सौभाग्यशाली है। बेचारे मुर्दा नहलाने-वाले मुर्देकी मृत्युसे कोई सम्बन्ध नही रखते, सिर्फ मरनेके बाद मुर्देको धोते-धाते हैं, लेकिन मुर्देके साथ जानेकी उन्हें आशा नहीं। वह कुलक्षणी समझे जाते हैं।

१४

जनाज़ा (अरथी)

ईशान अपने जूताबरदारों और गाँवके इमामके साथ बाजारके घर जा, फातिहा पढ, गमी मना फिरसे वज़ू (हस्त-पाद-मुखप्रक्षालन) करने मस्जिदमें पहुँचा। याकूब बाय बुड्ढों और गाँवके अर्बाब (चौधरी)के साथ मुर्दाखानेमें गया। गाँवके एक बूढ़ेने सफरकी मृत्युपर तसल्ली देते बाज़ारसे कहा :

—तुम्हारा दादार बाज़ार बाय! तुम्हारा भाई दुनियामें बगैर कुछ

देखे ही चल बसा। बेचारेके सन्तान भी नहीं कि, घरमें दीया जलाये। बीबी है जो बीसवाँ या चालीसवाँतक और बहुत हुआ तो वार्षिक श्राद्धतक चली जायगी। तुम्हारे लिये उचित है, कि सफरकी आत्माको शान्त और परितृप्त करो। दोस्त-दुश्मनके बीच इज्ज़त-आबरूके साथ उसे कब्रमे सुलाओ। ससारी चीज़े अच्छे-भले दिनोंके लिये दर्कार होती हैं। भगवानकी दया है, तुम्हारे पास किसानी है, माल-मिल्कियत है, गल्ला-दाना है, बैलकी जोड़ी...

बूढ़ेने जब बैलकी जोड़ीका जिक्र किया, तो बाजारने एक बार आशा भरी निगाहोसे गोशालाकी तरफ देखा। उसे ख्याल आया कि सफरके मरनेके बाद ईशानने बैल लौटा दिया। लेकिन जब वहाँ बैलका कोई पता न पाया, तो उसपर दुबारा भारी निराशा छा गई।

बूढेने बाजारकी दशा देखकर समझ लिया, कि उसकी बातका उसपर कोई असर नही हो रहा है। कुछ और गरम होकर उसने कहा—बाजार! मै तुझसे बात कर रहा हूँ। इधर ध्यान दे। खुदाका शुक्र है, एक भाईको छोड़कर दुनियामे तेरे पास किसी चीज़की कमी नहीं। शरीरमें वास्थ्य और काम करनेकी शक्ति है। इज्ज़त-आबरू बढ़ा। अगर केसी चीजकी कमी हो तो याकूब बाय दिल खोलकर मदद करेगे—

बूढेने यह कहते अपनी नेक सलाहको खतम किया। याकूब बायने सिर हिलाकर उक्त कृपालु शिक्षाप्रदाताका समर्थन किया, और कहा—अलबत्ता! अलबत्ता! मेरी बड़ी इच्छा थी, कि पुत्रके तूय (काज-प्रयोजन)मे बाजार बायकी सेवा करूँ। अब भी वह इच्छा दिलमें है। खुदा वह दिन दिखाये। मै खुद आगे बढ़कर यादगार बायकी तूय करूँगा, लेकिन आज जो खुदाने बाजार बायके सिरपर कष्टके दिन डाले हैं, मै किसी तरह मदद देनेसे पीछे न हटूँगा। इनके भाईके शवके मान-सन्मानके लिये जो कुछ जरूरी है, देनेको मैं तैयार हूँ।

गाँवके अरबाब (चौधरी)ने बायकी बातकी पुष्टि करते हुए

कहा—शाबाश ! अल्लाह तुम्हें बरकत दे बाय ! भले दिनोंमें सभी दोस्त होते हैं, लेकिन पक्का दोस्त वह है, जो बुरे दिनमें काम आये और हस्तावलम्ब दे।

बाजारने अश्रुपूर्ण नेत्रोंको आस्तीनसे पोंछते हुए कहा—मेरी अकल ठिकाने नहीं है। जो आप उचित समझें, सरदार बनकर करे। मुझे सब स्वीकार है।

बाज़ारने शवस्नापकके हाथमे पड़े शवकी भाँति सारा अख्तियार गाँवके बड़ोके हाथोंमें दे दिया। इसके बाद सारे खर्चके लिये अधिकार बाज़ारके हाथमें नहीं बल्कि गाँवके **अर्बाब और याकूब बाय**के हाथोंमें था। कब्रमे रखने और भोजका सामान याकूब बायके घरसे आया। बायने खैरातके लिये भी एक सौ तका (टका) अर्बाबके हाथमे रक्खा। ईशानकी भेटके लिये विशेष तौरसे एक थान ढाकाका भी दिया। जवारके भोजभट्टकोको जनाजा (अन्त्येष्टि-क्रिया)की खबर दी। आस-पासके इमाम भी सदलबल आ, फातिहा पढ जनाज़ेमें शामिल हुए। गाँवके इमामने मुर्देकी तैयारीकी देख-भाल की। शवस्नापकोंने कफन सीकर नहलानेके लिये मुर्देको तख्तेपर रखा। मुवज्जिन (अजान देने वाले)ने "हाथमे पानी दें" कहकर इमामसे निवेदन किया। इमामने यह कहकर विधिका चक्र शुरू किया—'पिछले एक सालके रोज़ा-नमाज़ और दूसरे धार्मिक कर्तव्योके न करनेके बदले एक घोड़ा फकीरको दिया जाय (इसके लिये अरबाबके घरसे घोड़ा माँग लाया गया था)'। फकीरने लौटाकर घोड़ा इमामको वापस कर दिया। इस तरह बीस बार घोड़ा दान किया गया। चक्कर समाप्त होनेके बाद फकीरको एक टोकरी गेहूँ दे घोड़ेको उसके मालिकके पास लौटा दिया गया। फकीर एक टोकरी गेहूँके साथ सफरके बीस सालके पापोंको भी अपने सिरपर लादे गया। अब इमाम (ग्रामपुरोहित)के विचारानुसार सफर नवजात शिशुकी भाँति बिल्कुल निष्पाप था।

जनाज़ाकी नमाज़ पढ़नेके बाद मुर्देको कब्रमें रखकर खैरात बाँटी गई। तीन दिनतक कब्रपर फातिहा पढ़ा जाता रहा। पहले जुमाँ (शुक्रवार)को प्रातः फातिहा-पाठके बाद कुरानका पारायण किया गया। दो सप्ताह बाद 'बीसवाँ' और पाँच सप्ताह बाद 'चालीसवाँ' (श्राद्ध) मनाया गया। 'बीसवाँ' और 'चालीसवाँके' दिन भी कुरानका पारायण हुआ, भोज-भात हुआ। जिसमें इमाम, मुवज्ज़िन और गाँवके बड़े-बूढ़ोंके लिये देग गरम हुआ।

शोक और सूतककी अवधि समाप्त होने पर अरबाबने बाजारके घर सारे खर्चका हिसाब दिया। उसके मुताबिक बाजारपर बायका एकसौ तंका और पाँच बोरा गेहूँ कर्ज था। देशकी प्रथाके अनुसार सब खर्चको गेहूँमें जोड़ा गया था। अरबाबने कहा—बाजार! गल्ला-दाना ज्वार-कपास जो कुछ भी पास हो, उसे बेचकर बायके नक़द तकोंको लौटा दो, जिसमें तुम्हारा भाई कब्रमें शान्तिसे सोये। गेहूँको कुछ और बढ़ाकर अगले साल खलिहानसे दे देना।

बाजारने कहा—मैं अकेला हूँ। यह जोतने-बोनेके दिन हैं। नाज-दाना उठाकर किसके पास ले जाकर बेचूँ! बायसे कहिये, इतनी नेकी की है, तो कुछ दिन और क्षमा करें। जैसे ही मुझे कामसे छुट्टी मिलेगी, मै अपने घोड़े-गधे पर चीजें लादकर दोशम्बा (स्तालिनाबाद) या कूलाब ले जाकर बेंच आऊँगा।

—बाजार! कोई चिन्ता फिकर मत करो। रवाजके मुताबिक अनाजका भाव करके बायको ही दे दो। बायके पास बहुतसे साधन हैं। वह दोशम्बे ले जाकर बेंच लेगा या कूलाबमें। जैसे भी हो, मुर्देके कर्जको जल्दी-से-जल्दी बेबाककर देना ही उचित है, जिसमें बेचारा सफर तुम्हारा भाई कब्रमें शान्ति-पूर्वक सो सके।

बाजारने बात मानकर गेहूँ कितना बढ़ाकर देनेके बारेमें पूछा। अरबाबने कहा—यह भी देशके रवाजके मुताबिक होता है, लेकिन

बाय तुम्हारे साथ रियायत करके कुछ कम कर देगा। अगर आदमी किसीसे वसन्तमें बोनेके वक्त गेहूँका बीज उधार ले, तो रवाजके मुताबिक खलिहानमें दुगुना देना होता है। अभी वसन्तको छः सात महीने बाकी हैं। गेहूँके तैयार होनेमे दस महीनेकी देर है। खैर, बायके पाँच बोरोंके बदले दश बोरा हिसाब कर लो, लेकिन मेरी और बायकी नेकियोंको भूलना नहीं। बायके कामकी बात तो हो गई। अपने सेवाओंके बारमें मैं कुछ नहीं कहता। मेरे लिये तुम जो उचित समझो, करो।

इस तरह अर्ब्राबने बायके हिसाबको खतमकर फिर कहा—आओ, चलो, बायके पास चले। यहाँ जो बातचीत हुई, उसे बतलाकर बायको भी राजी कर लें। जिस दिन बायको छुट्टी हो, गल्ला लेकर उसके घर पहुँचा आना।

'अच्छा चलें' कहकर बाजार अर्ब्राबके साथ बायके यहाँ गया। उससे सारी बात कही। बायने भी प्रथम तो बाज़ारके खातिर, दूसरे सफरकी आत्माकी शान्तिके खातिर, तीसरे अर्ब्राबकी खातिर बातको स्वीकार करते हुए बाजारको हिदायत दी—अर्ब्राबकी कृपाओका भी बदला देना चाहिए।

१५

"शुभ सम्मति"

उस साल बाजारकी खेती अच्छी नहीं रही, क्योंकि दो बैलोंकी जगह एक बैल और दो काम करनेवालोंकी जगह सिर्फ एक काम करनेवाला रह गया था। बाज़ारके घरका काम भी पहिलेकी तरह नहीं चल रहा था। सफरके 'चालीसवाँ'के बाद उसकी बीबी मायके चली गई। मेहमाह अकेली थी। उसे खाना पकाने, घर साफ़ रखने और फटे-पुरानेकी सिलाई करनेके लिये मुश्किलसे छुट्टी मिलती, इसलिये पहिलेकी

तरह बुनाई आदिका काम नहीं कर सकती थी। बाज़ार कुछ समय बायका काम करनेके लिये भी मजबूर था।

गेहूँ तैयार हुआ। सबसे पहिले याकूब बायके बोरे खलिहानपर पहुँचे, फिर दाँवनेवालों, ओसानेवालों, इमाम और दूसरोंका हक देनेके बाद बाजारके लिए सिर्फ भूसा भर रह गया। दूसरे नाज सरकारी माल-गुजारी और सालभरकी अपनी रोजीके लिये पर्याप्त नहीं थे। इस साल जाड़ा शुरू होते ही बाजार याकूब बायसे मदद लेनेको मजबूर हुआ। बायने भी मदद करनेमे कोई कसर न की। बायके कहनेके मुताबिक उसके और बाजारके बीच चीज-वस्तु कोई महत्त्व नहीं रखती, सिर्फ एक दूसरेकी सलामती चाहिये थी, सिर्फ सावधानीके तौरपर ना-उमेद दिनोंके लिये एक टुकड़ा कागज चाहिये था। बाजारको जिस चीजकी भी जरूरत हो, सब मौजूद थी। काजीके कागज़से बाजारको डरनेकी जरूरत नहीं। यह कोई उतनी भारी बात नहीं। जो शर्तें जबानी हुई थीं, सिर्फ उन्हींको तो कागजपर लिख देना था।

जो भी हो, बाजार कागज लिखनेकी बातसे चिन्तामे पड़ गया। अपनेपर बहुत बल देकर सन्तोष करके वह घरपर बैठा रहा, आवश्यक वस्तुओंके लिये बायके दरवाजेपर नहीं गया। अन्ततः उसके घरमे न एक मुट्ठी दाना खानेको, न एक बित्ता कपड़ा पहननेको रह गया। बाध्य हो गल्लाके लिये बायके यहाँ एक दिन उसे जाना पड़ा। बायने इस तरह बात शुरू की—दादार! मैं तुम्हारे लिये किसी बातको उठा नहीं रखता। तुमने स्वयं पिछले साल तङ्गी हाथ-सिकोड़ीके समय देखा, कि मैंने तुम्हारे कौलको कौल तुम्हारी बातको बात माना और तुमपर विश्वास किया। तुमपर विश्वास करके आजतक मैंने न हानि उठाई न धोखा खाया। यह अवस्था जबतक तुम और हम ज़िन्दा हैं, ऐसी ही रहेगी। लेकिन जो एक दिन तुम्हारे या हमारे लिए भगवानका बुलौवा आया, और तुम्हारी हमारी लेन-देनका भार हमारे कमसिन बच्चोंपर पड़ा, तो मालूम

नहीं, वह हक़को हक़दारके पास पहुँचायेंगे या नहीं। महापुरुषोंने कहा है "जबतक बद न कहो तबतक नेक सामने नहीं आता।" इसीलिये उसी बद और ना-उमेद दिनके लिये एक दिलपूरीकी जरूरत है, जिसमें यह हिसाब तुम्हारे और हमारे सिरपर क़यामत (यमराज)के लिये न रह जाय। यह दिलपूरी है, काज़ीका एक टुकड़ा कागज। इस कागजसे तुम डरो नहीं। जो गल्ला तुम लोगे, मै उसका हिसाब तकामें करूँगा। उसके बदले दस्तावेजमे तुम अपनी जमीनको मेरे हाथ गिरौं कर दो। पीछे जमीनको पहिले हीकी तरह अपने हाथमे रखो। जुताई-बुवाई करो। खुद मेवादारी (मेवाके बागका काम) करो। सिर्फ इतना और कि पिछले साल वादेपर जो चीजे ली थी, उन्हे लौटा दो।

यह सुनकर बाजारका होश उड़ गया। यद्यपि बायके कथनानुसार "काजीके एक टुकड़ा कागज"के अतिरिक्त कोई और नुक्सानकी बात नहीं दिखलाई पड़ती थी, लेकिन उसका मन शकित हो उठा। उस दिनसे मानो वह बेवतन, बेजमीन और बेघर हो चुका था। लेकिन उपाय क्या? बुवाईके वक्त तक अपने, अपनी बीबी और लड़केका पेट भी भरना था, और यदि इस साल बीज न मिला, तो अगले साल भी गेहूँ के बिना भूखों मरना पड़ेगा।

बायने बाज़ारकी शकापूर्ण -आँखोंसे भाँप लिया, कि सिनेमाके पर्देपर गुजरती फिल्मी छायाकी तरह कौनसे विचार उसके अन्दर उठ रहे हैं। फिर स्वरको कोमल करके उसने कहा—बाजार! मेरी यह बाते सुनकर तुम सन्देहमें तो नहीं पड़ गये? तुम स्वयं जानते हो कि अबतक मैंने तुम्हारे हकमें कोई बदी नहीं की और आगे भी बदी करनेवाला नहीं हूँ। इन बातोंको मैंने सिर्फ़ सावधानी और ना-उमेद दिनोंके लिये कहा। यदि तुम्हें संदेह हो गया है, तो अब भी मैं पहिलेकी तरह बिना लिखा-पढीके ही तुम्हारा पेट भरनेको तैयार हूँ, लेकिन काजीका कागजका एक टुकड़ा हमारे बीच हो जाय, तो उससे मन, सन्तुष्ट रहेगा। खुद. सोचो, और जिससे

चाहो, सम्मति ले लो। फिर कुछ तय करके आओ। अभी जाओ, बोरा लाओ और गेहूँ ले जाओ।

बायकी अंतिम बात—जो बहुत ही नरम और सहानुभूतिपूर्ण थी—सुनकर बाजारका भय करीब-करीब दूर हो चुका था, तो भी उसने कहा—अच्छा, कलतक सोचनेकी मुहलत चाहता हूँ।—इतना कहकर उसने छुट्टी ली।

—'बारक'ल्लाह! (शाबाश!) बात इसे कहते हैं। कहावत है, "सोचकर काटा जामा छोटा नहीं होता।" सोचो, सलाह करो, फिर जो कुछ कहना हो कहो। हाँ, जैसा कि मैंने कहा—अगर घरमें खानेकी चीज न हो तो जल्दी बोरा ले आकर गल्ला ले जाओ।

बाजारने भी 'सलामत रहें' कहकर रास्ता लिया।

× × ×

—हाँ, आक़ा बाजार! कहाँ से? तुम्हारा होश उड़ा-सा मालूम होता है!

—कोई बात नहीं। यहाँ ही तुम्हारे मालिकके यहाँसे आ रहा हूँ।

—वहाँ क्या बातचीत हुई? मेरे मालिकसे तुम्हारी जान-पहिचान कबसे है? अब तो हम जैसोंकी ओर निगाह भी नहीं करते।

बाजारने फीकी हँसी हँसकर कहा—बेदर्दोंकी तरह बात कर रहे हो ज़फ़र! यदि मुहताज न होता तो साफा छूट जानेपर भी उसे लाने तुम्हारे मालिकके घर नहीं जाता। यही गरीबी और मुहताजी है, जिसने मेरे रक्तको पीला कर दिया और धकेलकर तुम्हारे मालिकके दरवाजेपर पहुँचाया।

ज़फ़र बायका हलवाहा था। वह खेत जोतकर लौट रहा था। उसने बाज़ारको रास्ते पर जाते देख बात शुरू की। ज़फ़रने बाजारके करीब पहुँच बैलोंको "होः—होः"—कहकर रास्तेके किनारे खड़ा कर दिया। "सलामलेकुम्, कैसे हो? राजी-खुशी तो हो? बाल-बच्चे कैसे हैं?" कहकर बाज़ारसे उसने कुशल-मंगल पूछा।

बाजारने भी कहा—वालेकुम् सलाम, खुदाका शुक्र है। तुम तो अच्छे हो ?

ज़फ़र बहुत थक गया था। वह बोला—'आओ, यहाँ बैठें। चार बातें करें कि चिंता दूर हो जाय।' फिर राहके एक ओर जा बैठा। बाजार भी आकर बैठ गया। फिर जफरने पूछा—किस मुहताजीने तुम्हें मालिकके दरवाजे तक धर घसीटा ?

बाजारने एक एक करके याकूब बायके साथ हुई बातोंको दुहराया और अतमें कहा—जमीनके गिरवीं रखनेकी बातने मुझे चिन्तामें डाल दिया है। कौन जाने, इसका अत कहाँ जाकर हो ! इसी दुविधामें मैं पड़ा हूँ।

ज़फ़रने सिर हिलाकर असम्मति प्रगट करते हुए कहा—आक़ा बाजार ! मेरी बात मानो। इस कामको न करो। मैं अपने मालिकको तुमसे अच्छा जानता हूँ। (नाभिके नीचे फटकर अलग हो गये चीथड़े-चीथड़े जामाको दिखलाकर) देखो यह मेरी पोशाक। मै सालमें बारहों-महीने दिनरात काम करता हूँ। पेटमें सदा आग जलती रहती है। कभी पेट भरा, नहीं जानता। मालिक हर आदमीको अपनी दयालुता दिखलाता है, लेकिन वह झूठ है। उसके समान निर्दय धोखेबाज आदमी दुनियामें कम ही हैं। यह सारी सहानुभूति जो वह तुम्हारे साथ दिखला रहा है, वह सिर्फ तुम्हारी जमीन और माल-मिल्कियतको हड़पनेके लिये। यह "दिलपूरीका एक टुकड़ा काग़ज़" उसीका श्रीगणेश है। अगर बाय वस्तुतः दयालु होता, तो मैं जो गुलामकी तरह उसके घरमे काम करता हूँ, उसे वह पेट भर खाना क्यों नहीं देता ? क्यों नहीं तन ढॉकनेको कपड़ा देता ?

ज़फ़रने एक ठडी साँस लेकर फिर बात शुरू की—तुम्हारी तरह एक टुकड़ा उपजाऊ जमीन मेरे बापके पास भी थी। वह ज़मीन बायके पास कैसे गई, सो बतलाता हूँ। पिताके कथनानुसार जिस वक्त शादी—

खाना-आबादी करनी चाही, बायने दया दिखलाते उन्हें पैसा-कपड़ा दिया। इसके अतिरिक्त जिस किसी चीजकी जरूरत होती वह मेरे पिताको देता। जब बायका कर्जा भारी हो गया, तो बायने 'दिलपूरी'के तौरपर जमीनको गिरों करा लिया। धीरे-धीरे बैलकी जोड़ी और खेतीका सामान भी मेरे पिताके हाथसे निकलकर बायके पास आ गया। मेरे पिताके लिए धरती-आकाश कहीं हाथ-पैर फैलानेके लिये जगह न बची। वह बायकी चाकरी करनेको मजबूर हुए। मरते दमतक एक दिन आहार और दो दिन निराहार रह कड़ी मेहनत करते मेरे पिताने जीवन बिताया। उनके देहान्तके बाद मै भी इसी याकूब बायके घरपर गर्भदासकी तरह रह रहा हूँ। मेरे लिये कहीं जाने, काम करनेका रास्ता नहीं। लाचार चाहे भूखा रहूँ या अघाया, इसी कसाईका काम करता हूँ। चोटीसे एड़ी तकका पसीना मेरा बहता है और मुनहले गेहूँका दाना इस आदमीको नसीब होता है, मै काली मेहनत करता हूँ और कपासके सफेद गालोंको यह आदमी अपने कोठारमें भरता है; भारी कामके मारे मेरा बदन सूख जाता है और तिल और सरसोका तेल यह आदमी जमा करता है। आज सबेरे उसी जमीनमें हल चलाने गया था। पुरानी बातें याद आगईं। आँखोंसे खून टपकने लगा। चाहता था, कोई मिले जिससे अपना दर्द कहकर दिलको हलका करूँ। तुम्हें पाकर मैने अपने बोझको हलका किया।

जफरने अपनी बातको खतम करते कहा—राहमे रोक रखनेके लिए क्षमा करना बिरादर! कुछ भी हो, खूब सोच-समझकर याकूब बायके साथ काम करना।

फिर ज़फ़रने बैलोको हाँकते हुए मालिकके घरका रास्ता लिया।

ज़फ़रकी बातें सुनकर बाजारका भय और बढ़ गया। एक सिर और हजार दर्द, एक दिल और हजार ख्याल लिये वह घर पहुँचा। देखा, बच्चा रो रहा है और पत्नी कह रही है—चुप रह, अभी तेरा अता (बाप) आ रहा है, रोटी ला रहा है।

जब बच्चेकी दृष्टि बाप पर पड़ी, तो माँको छोड़ बापकी गोदमें जा "दा-दादाजान ! मैं रोटी खाऊँगा। रोटी लाये ? कहाँ है रोटी ?" कह बापकी जेब और बगलको टटोलने लगा।

बाजारने मुँह चूमते हुए कहा—दादाकी जान ! दादाके प्राण ! अभी रोटी लाता हूँ। आचेश् ! बोरा कहाँ है ? ला दे मुझे। मैं बच्चेके लिये एक मन रोटी लाता हूँ।

मेहमाहने कहा—हाँ, रोटीका इन्तिजाम करना जरूरी है। बच्चेने सारा दिन नमक तक नही चखा। रोटी रोटी कर रहा है।

—पड़ोसियोंसे एक रोटी उधार क्यों नहीं ले ली ?

—किस पड़ोसीसे ? सब किसीसे तो एक-एक दो-दो रोटा ल चुका हूँ। दुबारा माँगनेका साहस नही होता। माँगनेपर वह देंगे, इसकी आशा नही। बीबी सारासे दो दिन पहले एक रोटी उधार ली थी। आज जब बच्चा बहुत रोने लगा, तो हियाव करके दीवारके पास जाकर बोली "भगवान् भला करें, एक और रोटी उधार दो।" वह मुँह बिचकाकर बोली "रोटी खतम हो गई। आज मेरे घर खमीर बनेगा, यह भी मालूम नहीं" और यह कहकर घरसे बाहर चली गई।

—जैसे भी हो, एक रोटी कहींसे लाकर बच्चेको खिला। बायने एक बोरा गेहूँ देनेका वादा किया है। लेकिन गेहूँको पनचक्कीपर लेजाकर आटा पिसानेमे एकदिन और लग जायगा (बच्चेकी तरफ निगाह करके) यादगार ! तू अपनी आचाके पास बैठ, मै अभी बोरा भरकर रोटी लाता हूँ !

बाजार उठकर बोरा ले दरवाजाके बाहर गया, किन्तु तुरन्त पैरको पीछे लौटा बीबीसे बोला—तेरे साथ एक सलाह करनी है। बाय गेहूँ देनेको तैयार है, लेकिन कहता है कि अपनी जमीन गिरो कर दो। समझमें नहीं आता कि क्या करूँ ? तेरी क्या राय है ?

—कदापि इस कामको न कर। हम बेवतन दर-दरके भिखारी बन जायेंगे।

—लेकिन, फिर जिंदगी कैसे कार्टे ?

—ज्यादा नहीं, थोड़ा खाना चाहिये। सब्र करके किसी तरह गेहूँ बोनेके वक्तक दिन बिता लेना है।

—लेकिन भोजन खानेकी ही तो बात नहीं। बैलको दाना और खेतके लिये बीजकी जरूरत है। और इस कम खानेको भी कौन देगा ? तुझे एक रोटी उधार भी नहीं मिल रही है। मैं साल भरके खर्चको बिना लिखा-पढ़ी और गिरोंके किस तरह कर्ज़ पा सकता हूँ ?

—कुछ भी हो, मैं इस कामकी सलाह नहीं दे सकती। खुद ही समझ ले, जबतक तनमें जान है, इस काम को न कर।

बाजारका दिल भी इस कामके लिये तैयार न था, लेकिन दूसरा रास्ता क्या था ? आशा थी, बीबी कोई सलाह देगी, लेकिन उसका 'यह काम न कर' कहना कोई लाभदायक सलाह न थी। इसलिये सिर्फ बायकी कृपाका भरोसाकर वह चल पड़ा। अनन्त समुद्रमें गोते खाता लहरोंके थपेड़ोंसे आगे बढ़ता-बढ़ता बाजार बायके दरवाजेपर पहुँचा। आवाज लगाने पर बाय बाहर आया और हाथमें बोरा लिये बाजारको देख, वह समझ गया, कि बाजारकी हालत बहुत तङ्ग है। उसे और स्पष्ट करनेके लिए उसने बाजारसे पूछा :

—बहुत जल्द लौट आये ? क्या बिना किसीसे सलाह किये ही मेरी बातें कबूल कर लीं ?

—अभी गेहूँ लेकर चक्की पर जाना चाहता हूँ। बच्चा बहुत भूखा है। सलाह करनेके लिये समय न मिला। कल सलाहकर जवाब दूँगा।

अपने रुखको बिलकुल बदलकर बायने कहा—दादार ! दुनियाका काम इस तरह नहीं चलता। चाहिये था कि सलाह करते, कोई निश्चय

करके आते। अब भी कोई हर्ज नहीं। बोरेको यहीं रख इसी वक्त अरबाबके घर जा सलाह कर आओ।

बाजार उसी वक्त उलटे पैर लौटा और अरबाबके यहाँ जाकर उससे सारी बात कही और राय माँगी। अरबाबने कहा—इस काममें सलाहकी क्या जरूरत? दुनियामें कोई आदमी नहीं है, जो बिना दिलपूरीके पैसा दे। बायने परसाल मेरा ख्याल करके बिना लिखा-पढ़ीके ही कर्ज दे दिया। इस साल भी यदि बीचमें पड़ूँ, तो बिना कागज-पत्रके कर्ज दे देगा। लेकिन जो कुछ मैंने सुना है, उससे जान पड़ता है, कि बायकी हालत भी अच्छी नहीं है, यद्यपि इस बातको वह दूसरोंके सामने प्रगट नहीं करता। मगर, मुझे अच्छी तरह वह बात मालूम है। तुम देखते हो, बाय प्रतिदिन दो बकचा बाजारी माल अपने घोड़ेपर लाद आज कनक्रुर्त्त, कल बलजुवान परसों किसी तीसरे बाजारमें ले जाकर बेंचता है। प्रति सप्ताह हिसार या दोशम्बे जाकर वहाँसे मालकी गाँठें लाता है। तुम समझते होगे कि यह सारा माल बायकी अपनी चीज है और वह अपने पैसेसे लेन-देन, क्रय-विक्रय करता है। नहीं, बात ऐसी नहीं है। वह भी दूसरे बेगों और रूसी कम्पनियोंसे कर्ज लेता है, जिसके लिये दस्तावेज लिखकर देता है और जमीन-मिल्कियतके अपने दस्तावेजोंको गिरों रखता है। इस साल जो तुमसे वह दस्तावेज माँग रहा है, वह इसी ख्यालसे कि तुम्हारे दस्तावेजको भी गिरों रखकर अपने दर्दकी दवा करे; नहीं तो उसके दिलमें तुम्हें तकलीफ देनेका ख्याल नहीं है। बाय इस तरहका खराब आदमी नहीं है, कि धोखा देकर किसीकी जायदादको हथिया ले। जाओ, दस्तावेज लिखना कबूल करो, कोई बात नहीं होगी। अगर बायको जमीनकी जरूरत हो, तो मुल्कमें आधी जमीन बेकाश्त और परती पड़ी हुई है।

अरबाबकी बात सुनकर बाज़ारको कुछ ढाँढ़स बँधी। जफरकी बात और बीबीकी इन्कारकी बात यादकर उसका दिल काँप रहा था,

लेकिन अब दूसरा रास्ता ही नहीं था। बायकी बातसे मालूम हो चुका था, कि वह अब एक बोरा गेहूँ भी नहीं देगा। हार मानकर राजी हो बाज़ारने अरबाबसे कहा—ऐसा ही सही। तुम मेरे साथ बायके यहाँ चलकर लिखा-पढीका दिन मुकर्रर कर दो। मै भी गेहूँ ले चक्कीकी तरफ जाऊँ।

अच्छा चलो, चले—कहकर अरबाब बाजारके साथ बायके घर गया।

१६

तूय खुदाका ख़ज़ाना है

याकूब बायने अपने वादेके अनुसार किसी चीजमे उठा नही रखा। बैलका चारा-घास, खेतके लिए बीज और दूसरी सभी चीजे दी।। बाजार भी हरेक चीजको याद रखते रात दिन लगकर काम करता। सौभाग्यसे इस साल ऋतुने भी बाजारकी सहायता का। वक्तपर खूब वर्षा हुई। वक्तपर सूर्यने जमीनको गरम किया। इससे फसल आशातीत अच्छी हुई। मेहमाहने भी अपने वचनके अनुसार सयम और सन्तोष किया, "चूल्हेकी बचत हिन्दुस्तानके व्यापारकी पूँजी" कहते हर खर्चमे किफायत की। उसने सिर्फ अपने ही खर्चमे किफायतसे काम न लिया, बल्कि पतिके खेतीके काममे भी मदद दी। इस तरह पहले ही साल खेतीकी आमदनीसे बायके कर्जका आधा चुका दिया। बायने बहुत मुरव्वत दिखलाते बाज़ारसे कहा—बाज़ार बाय! कोई चिन्ता नही करो। बायका कर्ज़ा है, यह ख्याल करके फिक्रमें मत पड़ो। जब खुदा दे और घरके खर्चसे अधिक हो, दे देना। मुझे दुनियाकी चीजे पसन्द नहीं। आपसमें दिलजमई और सलामती रहे, बस यही दर्कार है।

अगले साल भी बाज़ारका काम बुरा नहीं रहा। फसल अच्छी हुई

लड़केने भी हलके कामोंमें मदद की। हवा-पानी भी सहायक हुई। संक्षेपमें भाग्य बाजारके कामके साथ रहा। बाज़ारने दॉये गेहूँकी रास खलिहानमें ज़मा की थी। यादगार बैल चरा रहा था। रास्तेसे ज़ाते अरबाब बाजारको देखकर "सब कुशल-मङ्गल तो है?" कहते खलिहानके पास तूतकी छायामे बैठ गया। बाजार भी "सलामत रहे" कहते रस्सी-हॅसिया एक ओर रख अरबाबके करीब बैठ गया। अरबाबने कहा—इस साल तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है। लड़का भी मदद कर रहा है। अब जल्दी इसके हाथको हलाल (सुन्नत) कर डालो।

—अभी आठ सालका है। जिन्दगी रही तो एक-आध साल बाद यह शुभ कार्य हो जायगा। इस सालकी पैदावारसे चाहता हूँ कि कर्जसे छुटकारा पा जाऊँ और बायका सारा हिसाब बेबाक कर दूँ।

—तूय (कार्य-प्रयोजन) भी कर्ज है। अधिक नही तो कम ही सही कुछ तैयारी करके छोटे-बड़ोके सामने रख देना चाहिये। बायके पास अपना धन है। वह तुम्हारे चार मन गल्ले पर आँख गड़ाये नही बैठा है।

—भगवान् उसके धनको बढ़ाये। बायने तो "कुछ नही दो तो भी हर्ज नही, बीबी-बच्चेको तकलीफ नही देना" कहकर मुझे समझाया, तो भी मै इस साल कर्जसे अपनेको बिल्कुल खलास कर लेना चाहता हूँ; फिर अच्छी अवस्था देखकर पंचोके सामने हाजिर होना अच्छा होगा। तूय भी कर्ज है, इसमे सदेह नही, किन्तु वह सन्तोषका कर्ज है। दो-एक साल देर हो, तो भी हर्ज़ नही। कहते हैं "देर आया दुरुस्त आया।"

—"तूय खुदाका खजाना है" तुम आरम्भ करो, खुदा पूरा करेगा। परवाह न करो, इसी साल कमर कस लो। तुम्हारा एक ही बच्चा है। जल्दी इसके हाथको हलालकर पंचोंकी पाँतीमे आ जाओ। खुदा मदद करेगा, तो दो-तीन साल बाद कहीसे जोड़-जाड़कर इसका घर बसा देना

जरूरी है। बेचारी माँ भी अकेली है। बहू पाकर उसकी भी मुराद पूरी हो जायगी और एककी जगह दो सन्तानों वाली हो जायगी।

—ज़रा सोच समझकर कोई बात तै करनी है।

—हिम्मत दर्कार है हिम्मत। हिम्मत करो तो खुदा बेड़ा पार कर देगा कह—अरबाब अपने काम पर चला गया।

बाजारने रातको यह बात स्त्रीको सुनाई। मेहमाहने अरबाबकी जल्दीकी सलाह पर और भी जोर देते हुए कहा—अरबाब ठीक कहते हैं। आज हम-तुम हैं, कौन जानता है, कल कौन रहेगा कौन नहीं रहेगा। जबतक हमारी आँखे खुली हैं, इसी बीच बच्चेका हाथ हलाल कर देना चाहिये।

बाजार इस साल तूय करना बिल्कुल नही चाहता था, लेकिन अरबाब और बीबीकी दलीले सुनकर अपना विचार उसे बदलना पड़ा। वह सोचने लगा—वस्तुतः यदि इसी साल तूय कर डालूँ, तो भार हल्का हो जायेगा। जितनी ही देर करो, उतनी ही लोभ-लालच ज्यादा होती है और काम भी बढ जाता है। बाय इस साल कर्जके लिये तगादा नहीं करेगा। अगर तूय करूँगा तो वह कुछ और देनेसे हाथ नही खींचेगा।

बाजारको सबसे अधिक जो बात रोक रही थी, वह यही थी, कि उसने तूयके लिये किसी जानवरको खिला-पिलाकर मोटा ताजा नही किया था। पासमे एक बैल जरूर था, मगर उसीपर उसकी सारी खेती निर्भर थी। बाजार इसी चिन्तामे था, कि याकूब बायसे भेट हो गई। दुआ-सलाम करनेके बाद उसने तूयके फैसलेपर बाजारको बधाई दी। बाजारने कहा—अगर आप कहते हैं, तो इसी साल कर डालूँ लेकिन मेरे पास कोई जानवर नहीं, जिसे तूयके लिये हलाल करूँ।

—उसके लिये चिन्ता मत करो। मेरे पास एक मोटी-ताजी गाय है, उसीको लाकर कुर्बानी करना। उसकी जगह अपने बैलको लाकर बाँध देना।

यह सुनकर बाजारका दिल काँप उठा। बैलके न होनेपर खेती कैसे होगी। बाय बाजारके भावको बिल्कुल ताड़ गया और तुरत बात बदलकर बोला—पर्वाह मत करो। जोतनेके वक्त बैलसे अपनी जमीन जोतना, बल्कि उसके साथ मेरे बैलको भी जोड लेना ताकि जुताईमें बल पडे। हॉ, सिर्फ इतना होना चाहिये, कि बैल तुम्हारे दर्वाजेपर बँधा चारा न खाये। यदि इसका ख्याल करना, तो समय-समयपर मेरी जुताईमें भी मदद दे देना।

बायकी इस बातने बाजारकी सारी आशकाओंको दूर कर दिया। उसने अपने दिलमे कहा—मैंने जितना भी शका-सदेह बायके बारेमें किया, सभी निर्मूल निकले। इस तरहके शुभेच्छु दुनियामे बिरले ही होते हैं। उसके सम्बन्धकी जफरकी बाते भी पोच हैं। जब वह हमपर इतना मेहर्बान है, तो तूय इसी साल करके छुट्टी पा लेनी चाहिये।

१७

पोलावखोरी (भोज)

धनुर्मास (नवम्बर) यानी पतझड़का अत और शरदका आरम्भ था। ऋतु सुन्दर थी। सूर्य रास्तेको छोड़ अधिक दक्षिणकी ओर, ताजिकिस्तानके पहाड़ोसे दूर चला गया था, तो भी ऋतुके स्वच्छ और सुखद होनेसे धूपका अच्छा प्रभाव था। कर्क (अक्तूबर) के आरम्भमे चद रोज कुछ प्रतिकूल वायु चला। बर्फ मिली बर्षा हुई। अब वृक्ष अपने सुनहले पत्तोंको गिरा, नगे हो, रुईके गाले जैसे धवल हेमन्ती परिधान पहिननेके लिये उद्यत थे। गॉव और खेतोंमे शिशिरका सरस, मोदप्रद समय प्रकट हुआ। लेकिन जिस समय लोग कड़ी सर्दीकी आशा कर रहे थे, उसी समय सूर्यकी किरणे इतनी गर्म हो उठीं, कि सभीको एक अलौकिक आनन्द और अकालिक सुख मालूम होने लगा। अकालिक

सुखकी इस झलकको बाज़ारके परिवारमे भी देखा जा सकना था। घरके अंदर मेहमाह पड़ोसिनों, दयादिनोके साथ रोटी और खिचड़ी (आश) पकानेमे लगी थी। गॉवकी कदवानू (कयवानू) जो दूसरे रोज भी अपनी खुशीको छिपाये नहीं रह सकती थी, आज तूयके रोज काम बिना हँसी-मजाकके कैसे कर सकती थीं। उसने कहा—जाओ, छोड़ो भी आचेश ! दश थाल आश (खिचड़ी)मे इतनेसे मॉससे क्या बनेगा ? अभी एक टुकड़ा तेरे मौसाको भी दे आती हूँ, खाकर रातके लिये तैयार हो जायगा।

एक बुढियाने नाराज होकर कहा—अरे ! तेरा मुँह जले ! पचास सालकी हो गई और अब भी यह हवस ?

—अभी मुझे हुआ ही क्या है ? तुम स्वय सत्तर सालकी हो गई, किन्तु क्या तुम्हारा मन नही करता ? सुना नही है ' बुढ़िया हुई सत्तरी, देखा और गिर पड़ी ?"

केवानीका जवाब सुनकर सभी औरते कहकहा मारकर हँस पड़ी।

बाहरी बैठकेको बाजारने सजाया था। फर्श और कालीन बिछे थे। हवेलीके दरवाजेसे कूचातक पानीका छिड़काव किया गया था, जिससे प्रगट था कि आज यहॉ कोई भारी उत्सव और भोज है।

मेहमाहकी प्रसन्नता भले ही सीमाका अतिक्रमण कर रही हो, लेकिन बाजार बहुत चिन्तित था। वह हर घड़ी सौ बार दीवार और छतपर सूयके अस्त होनेकी प्रतीक्षा कर रहा था। दीवार और छतपर सूर्यकी किरणे मद्धिम पड़ीं। बाजारकी चिन्ता और बढ गई। जब कभी उसकी दृष्टि गोशालापर पड़ती और वहॉ अपने बैलको न पाता, तो अगले सालकी खेतीकी चिन्ता कलेजेमे सुई चुभोने लगती, उसका सारा उत्साह ठढा पड़ जाता।

सूर्य अस्त हुआ। शाम आई। गौरैयोंने दीवारोंके छिद्रोंमें जाकर बसेरा लिया। बाजारका भी तरद्दुद दूर हुआ, क्योंकि बार-बार जमा किये

कूड़ेके ढेरको खोदकर वह बिखेर देतीं। बाज़ारको इसीलिये कई वार झाड़ू लगाना पड़ा था। उसने बैठकेमें चिराग जला दिया। चिरागको लकड़ीकी दीवठपर रखा। फिर दर्वाजेसे बाहर आ राहपर खड़ा हो मेहमानोंकी प्रतीक्षा करने लगा। बहुत देर नही हुई, कि मस्जिदकी तरफसे आगे-आगे मुल्ला इमाम (ग्रामपुरोहित), बगलमे याकूब बाय और पीछे-पीछे गाँवके पन्द्रह-सोलह बड़े-बूढे आते दिखाई पड़े। जब वे नजदीक आ गये, तो अरबाब (चौधरी) उनसे अलग हो बाजारके पास आकर खड़ा हो गया और मेहमानोका स्वागत करने लगा। सभी बैठकेके अन्दर पहुँचे। मेहमानोंके जूते ठीकसे रखकर बाजार भी अन्दर आया और पैरहनेकी ओर पातितजानु बैठ गया। मुल्ला इमामने फातिहा पढा। दूसरोंने हाथ उठा "आमीन" कहा। इमामने हाथोको मुँहपर फेरा, दूसरोंने भी "पग पहुँचै ऊपर न पहुँचै" कहकर अपने हाथोंको मुँहपर फेरा। बाजारने खड़े हो सीनापर हाथ रख "स्वागत" कहा। मेहमानोंने अपने सिरोंको थोड़ा झुकाकर इसका जवाब सकेतमे दिया। सकेतका अर्थ था "सुकाल होवे"।

बाज़ारने घरके भीतरसे दस्तरखान (परोसनेका कपड़ा), रोटी और मिठाई लाकर रखी। गॉवके मुवज्जिन यानी सूफीने दस्तरखानको फैला दिया। फिर रोटियॉ ले दो दमुल्लाके सामने और दूसरोके लिये हर जगह एक-एक रोटी रखी। बाजारके हाथसे मिठाईकी तश्तरी ले दो मुट्ठी दमुल्लाके सामने और दूसरोंके सामने थोड़ी-थोड़ी रखी, बाकी मिठाइयोंको बचा दो रोटियोपर धर अपनी रूमालपर रख दिया। एक मेहमानने हँसी करते कहा—यदि मेरी बीबी पुत्र जने, तो उसका नाम सूफी रख उसे गॉवका मुवज्ज़िन बनाऊँ।

दूसरे चुप रहे। मुवज्ज़िनने चायनिक (चायभरे बर्तन)को भी जगह-जगह रख हर चायनिकके पास एक-एक प्याला रखा। दमुल्ला इमामने अपने सामनेकी दोनों रोटियाँ दस्तरखानके छोरपर खींचकर

रख दी, फिर अपनी दाहिनी ओर बैठे **याकूब बायके** सामनेकी रोटीको टुकड़े-टुकड़ेकर दो-चार टुकड़े बायके सामने रख बाकीको अपने सामने रख लिया।

इमामने "मर्हमत फरमाइये" कहकर बायको रोटी खानेके लिये कहा और स्वय भी एक कौर रोटी दो-तीन टुकड़े मिठाईके साथ मुँहमे डाली। दूसरोंने भी अपने आगेकी रोटियोको टुकडे-टुकड़ेकर एक दूसरेको "लीजिये-लीजिये" कह खाना शुरू किया।

याकूब बायने एक प्याला चाय दमुल्ला इमामके सामने बढाते कहा—तकसीर (क्षमा-निधान)! बुखारा शरीफके भोज तो बडे ही रौनकदार होते होगे?

—बुखारा शरीफ (काशीधाम)का भला क्या कहना! वहाँका एक भिश्ती भी अगर भोज करता है, तो आलिमो-फाजिलों (पडितों), शेखो (सतो) और बड़ोंको निमत्रितकर बडे सम्मानके साथ पधरावनी कराता है। विद्या भी बुखारामे है, धर्म (शरीयत)भी बुखारामें है, भोज और उत्सव भी बुखारामे है, ऋद्धि-सिद्धि भी बुखारामे है। हमारे पैगम्बर सल्लल्ला-अलैह-व-सल्लम ने मेराज (स्वर्गदर्शन)की रात बुखाराको देखकर कहा—"अल् बुखारा व मिन्नी" (बुखारा मेरी आन है), इसीलिये दुनियाके अत तक वहाँ कोई कुपथ न पैदा हो सदा शरीयत (इस्लाम) मौजूद रहेगी। यह बुखारावालोंका धर्म-प्रेम है, कि वह भोज-उत्सवको इतनी शान-शौकतसे करते हैं। इस्लामकी किताबोमे लिखा है, कि पिताकी गर्दनपर पुत्रके कुछ ऋण हैं: अव्वल यह कि पिता किताबके अनुसार पुत्रका अच्छा नाम रखे। दोयम् यह कि पुत्र हो तो दो और पुत्री हो तो एक दुम्बा (भेड़) न्यौछावर करे! सोयम् (तीसरे) यह कि यदि पुत्र हो तो वयस्क होनेसे पहले भोज देकर उसका हाथ हलाल (सुन्नत) करे और पुत्री हो तो कन्यादान करे। तूयको हदीस (स्मृति)की किताबोंमें 'वलिमा' कहा गया है। हमारे पैगम्बर सल्लल्ला-

व-सल्लमने स्वय अपने नातियोका 'वलिमा' किया था। इमाम हसन व इमाम हुसैनकी सुन्नतके दिन पैगम्बर-परिवारमे कोई चीज न थी। ऑ-हजरतने खुद अपने जामा और बीबी फातिमाकी ओढनीको एक यहूदी बनियेके पास गिरो रखकर 'वलिमा'मे खर्च किया। ऑ-हजरतका यह काम बतलाता है, कि तूय करना कितना धर्म और पुण्यका कार्य है। धर्मकी किताबोमे लिखा है, कि यदि कोई आदमी गरीब निर्धन होते भी आलिमों-फ़ाजिलोका सम्मान कर तूय करे, तो खुदावन्द तबारक-व-ताला आगे न्यायके दिन तूयमे खर्च किये हरेक चावलके बदले बहिश्तमे एक-एक महल बखशेगा, जिसकी दीवारे चाँदीकी, दरवाज़े सोनेके, छत-मेहराब और कगूरे मोतीके होगे

लोगोने मुल्लाके इस महोपदेशको बार-बार सुन रखा था, इसीलिये वह उस ओर ध्यान न दे अपनी चख-चखमे लगे थे। तो भी वहाँ दो आदमी ऐसे थे, जो मानो पूरा-पूरा कान लगाकर सुन रहे थे। इन दोनोमे एक था मुवज्जिन जो पैरहनेकी ओर पातितजानु बैठे आँखे-मूँदे ध्यान उधर लगाये मालूम देता था और जब-तब सिरको दाहिने बाएँ झुमाते तन्मयताका भी परिचय दे रहा था। यह देखकर दर्शक समझता कि वह जल बनकर आकाशमे तुरत उड़ने ही वाला है। यह सब होते हुए भी मुवज्ज़िन जब-तब होशमे आ आँखोको खोलकर जहाँ तक उसका हाथ पहुँचता, दस्तरखानपर बिखरे रोटीके टुकड़ो और मिठाई-मेवोको चुन-चुनकर अपने रूमालमे डालता जाता था। दूसरा व्यक्ति था बाजार जिसपर वस्तुतः इमामके उपदेशका भारी प्रभाव पड़ रहा था। वह यद्यपि अरबाबकी दलीलों, बीबीकी बातो और बायके वादोपर विश्वास करके इस साल तूय कर रहा था, लेकिन परिणामसे भयभीत था। जब तूयके समयके नजदीक आनेपर देखा कि खर्च भी ज्यादा हो रहा है, इससे उसका भय और भी बढ़ने लगा। थानसे कमाऊ बैलके खुल जाने पर आने वाली बला आँखोंके सामने और स्पष्ट दिखाई देने लगी थी। यही वजह

थी, कि आज सारा दिन उसका दिल विह्वल और विकल था। लेकिन जब दमुल्ला इमामने महोपदेश आरभकर तूयका माहात्म्य वर्णन किया, तो बाज़ारके मनसे सारी आशकाये दूर होगई। उसने अपनेको दुनियाका सबसे अधिक सौभाग्यशाली आदमी और अपनी पहिली शकाओंको शैतानका बहकावा समझा। अब वह सोचने लगा, कि इसके कारण यद्यपि उसकी आर्थिक अवस्था बुरी होगी, किन्तु साथ ही तूयसे बहुत अधिक पुण्य और सवाब भी मिलेगा। दमुल्ला इमामने इस भावको आयतों, हदीसों और पैगम्बरकी जीवन-घटनाओंसे सिद्ध कर दिया। इसीलिये बाजार रोम-रोममे आँख रखते इमामकी तरफ निगाह किये, सिरसे पैरतक कान रखते महोपदेशको सुन रहा था।

आश (मासमिश्रित खिचड़ी) तैयार हो गया था। घरके भीतरसे किवाड़ पर टक्-टक्की आवाज आई। इमामके उपदेशामृतको पान करनेमे जो माधुर्य अनुभव हो रहा था, उसे छोड़ बाजारको मज़बूरन अपनी जगहसे उठना पड़ा। वह घरके अदर आश लाने गया। एक दो जवान मेहमान भी मदद देने खड़े हो गये।

मुवज्जिनने आश और पोलावके थालोंको तीन-तीन मेहमानोंके सामने एक-एक करके रखा। अन्तिम थालको रोटीसे ढॉककर बैठकेके एक कोनेमे रख दिया, यह मुवज्जिनका माल था। अब मुवज्ज़िनने पातितजानु हो इमामके थालके पास बैठ आशवाले मासको खड-खड किया और दमुल्लाके आशमे डालनेके लिये बाज़ारसे खासतौरसे एक रोटी मॉग ली। रोटीके बड़े टुकडेको अपने लिये आश पर रखा।

सब लोग आश-भोजनमे इतने निरत थे, न किसीने सॉस खींची न बात की। सारी शक्ति इस काममे खर्च हो रही थी, कि मुँहमे कौर डालें और बिना चबाये निगल जाये, खासकर इमाम और मुवज्ज़िनमें तो मानो इसके लिये होड़ लगी थी। पेट भर खानेपर लोगोंने हाथ खींच लिया, परन्तु मुवज्ज़िन अब भी दस्तरखानपर आशके चावलों और

रोटीके टुकड़ोंको चुननेमें लगा था। पास बैठे एक मेहमानने "सूफी बहुत भूखा है" कहकर अप्रसन्नता प्रकट की। दमुल्लाने मज़ाक करते कहा :—

—हर्ज क्या है ? कोशकी पुस्तकोंमे सूफ़ीको 'दस्तरखानका झाड़ूदार' कहा है और साथ ही धर्मकी किताबोंमे यह बात भी कही गई है, कि दस्तरखानसे चुनकर खाये चावलके दाने और रोटीके टुकड़े बहिश्तकी हूरों (अप्सराओं)के लिये महर (वधू-धन) होते हैं।

मुल्लाकी यह बात सुनकर दूसरोंने भी दस्तरखानसे चुनकर दो-एक दाना चावल मुँहमे डाल बहिश्ती हूरोके लिये महरकी रकम जमा करनी शुरू की।

भोजन समाप्तकर लोग आरामसे बैठे। खानेके वक्त बाजार बैठकेसे बाहर आकर खड़ा हो गया था। अब वह अन्दर आकर पातितजानु (घुटने टेककर) बैठा। इमाम और दूसरोंने दोनों हाथ उठा फातिहा पढ़कर मुँहपर हाथ फेरा। बाजारने खड़े हो बड़े सम्मानके साथ "भले पधारे" कहा। मेहमानोंने सिर हिलाकर उत्तर दिया।

दस्तरखान समेट लिया गया। ताज़ी चाय आई। मेहमान चाय पीने लगे। याकूब बायने अरबाबकी ओर निगाह करके कहा—अकसक्काल (सफेद दाढ़ी) ! कहो, कैसा भोज है ?

—दादार बाजार अपने लड़केका हाथ हलाल कर रहे हैं, बड़े-छोटे सबकी यहाँ दावत करके आप सबसे सलाह पूछते हैं।

बायने कहा—बहुत अच्छा। खुदा मुबारक करे। बाज़ार बायका तूय हमारा तूय है। हम कमर बाँधकर हर काम करनेको तैयार हैं। (बाज़ारकी ओर निगाह करके) तूयको किस तरह करना चाहते हो ?

बाज़ार—जिस तरह छोटे-बड़े पसन्द करे, उसी तरह।

बाय—बहुत खूब ! ऐसा ही हो। हिम्मतको बुलन्द करो। खर्चसे मत डरो। कमीमे मदद करनेको मैं तैयार हूँ। भोजकी खबर जवारमें

भी दे दो। एक देग आश ज्यादा पक जाय, पक जाय, पर इज्जत-आबरू नहीं जानी चाहिये। जवारके लोग जब भोज-भात करते हैं, तो हमको खबर देते हैं। हमारे गॉवमे तूय हो और उन्हें खबर न हो, यह हो नही सकता। अतमे एक बार फिर कहता हूँ, खर्चका खयाल मत करो। "तूय ख़ुदाका खज़ाना है" वह खुद इसे पूरा करेगा।

नीचेकी तरफ बैठे एक तरुण मेहमानने कहा—चचा बाय ! आपने सिर्फ अपना फिक्र की और हमे भुला दिया। इस साल आका बाजारका तूय होगा, यह सोचकर हमने दो महीनेसे एक-एक मन जौ खिलाकर अपने घोड़ोको तैयार किया है। अगर आका बाजारने बकरी न दी, तो सारी मेहनत अकारथ जायेगी।

बाय—इसके कहनेकी जरूरत नही। कौन नही जानता, कि बिना बकरी और कूबकारी*के तूय नही हो सकता। लेकिन तुम्हे भी बाजारकी स्थितिका ध्यान रखना चाहिये और केवल एक बछडे और पॉच बकरियों पर सन्तोष करना चाहिये।

अर्बाब—बाजार बायने सारे प्रबन्धका भार मेरे ऊपर छोड़ रखा है। इस वक्त कर्ता-धर्ता मैं और बाय हैं। हमे चार आदमियोमे सुर्खरू होने लायक काम करना है। बकरी-घुड़दौड़ कहो, गायन सभा कहो, जो भी कहना चाहो कहो। हम सब देशके रवाजके अनुसार करेंगे। बाय आवश्यक चीजोकी मदद करनेको तैयार हैं। मै स्वय हरएक रस्म-रवाजको अच्छी तरह जानता हूँ। बाजारको बस कमर बॉधकर मेहमानोंसे "भले आये, भले पधारियो" कहते रहना पर्याप्त है, दूसरी बातकी चिन्ता करना आवश्यक नहीं। (फिर इमामकी ओर देखकर) तकसीर (क्षमानिधान) ! अब एक दुआ पढिये, रात बहुत बीत गई।

इमामने दोनों हाथ उठा लम्बी-चौड़ी दुआ पढनी शुरू की।

---

*बकरी छीननेकी प्रतिद्वन्द्वितावाली घुड़दौड़।

"आमीन आमीन" कहते मुँहपर हाथ फेर लोग चलनेके लिये हिलने-डोलने लगे। अरबाबने हाथसे इशारा करते हुए कहा—"क्षण भर और विराजे!" बाजारने जामा-रखी चार डालियाँ सामने ला रखी। मुवज्जिनने बाज़ारके इशारे पर हिसारका बना एक नीमशाही जामा इमामको, एक हिसारी रेशमी जामा बायको और एक दूसरा जामा अरबाब (चौधरी)को पहनाया। वहाँ एक कूलाबी रेशमी जामा बच रहा था, जिसे बाज़ारने अपने हाथसे मुवज्जिनको पहनाया। मेहमानोकी ओरसे "मुबारक हो मुबारक हो"की आवाज़ बुलन्द हुई। इमामने फिर एक बार फातिहा पढ़ा। मेहमान एकके पीछे एक निकलकर प्रस्थान करने लगे। बाज़ारने दरवाजापर खड़े हो हरएकको "भले पधारे" कहकर सम्मानके साथ विदा किया।

रात बहुत अँधेरी थी। इस अँधेरी रातमे बाजार अपनी बीबीके साथ हवेलीमे अभी तूयके प्रारम्भ न होनेपर भी आधा बर्बाद हो, अकेला रह गया।

१८

गलीमें

—हाँ, जफर! कहो, कैसे गलीमे बैठे हो?

दीवारका तकिया लगाये, दोनो पैर फैलाये बायके फाटकपर बैठे जफर ने जवाब दिया—मालिक घरमे नही हैं। जरा साँस लेनेको छुट्टी मिली और यहाँ आकर बैठ गया।

—मेरा भी मालिक आज घरमे नही है। सारेके सारे आज बाज़ार की हवेलीमे गये हुए हैं—कहते कुर्बानने भी जफरके पास बैठते 'सलामलेकुम्' किया।

अभी उनका कुशल-प्रश्न समाप्त नही हुआ था, कि तीसरा चौथा

…आया और कूचेमें एक सभी जम गई। सबसे पीछे आनेवालेने "आज तुम सभी पिंजड़ेसे निकले पछीकी तरह आकर बैठे हो" कहते मज़ाक किया।

—हाँ, मालिक अरबाबके साथ तैयार हो बाज़ारके घर आग लगाने गया है। आज बस यही काम चल रहा है।

—बाजारकी कबसे बुद्धि मारी गई? आज बायके पास, कल अकसक्कालके पास, परसों इमामके पास बस बड़ों बड़ोंके यहाँ उठक-बैठक करता है।

जफर—बाजार नादान है। परसाल बायने मुँह मीठाकर धोखा-धड़ीसे उसकी जमीनको लिखवा ली थी, लेकिन देखा कि इस तरह बाजारकी जमीन हाथ नही आयेगी, न वह हमारे घर चाकरी करनेको मजबूर होगा। अब चाहता है, काम ही खतम कर दे, और धरती-आकाशसे जड़ काट उसे अपना गुलाम बना ले। मैंने परसाल इस धोखेको बतला आनेवाली आफतसे बाजारको सजग किया था, लेकिन मेरी बातकी अपेक्षा उसने अरबाबकी बात मान अपनी जमीन गिरो रख दी। इस साल फिर उसीकी सलाहसे तूय कर रहा है।

—बेशक, बाजार अहमक है। वह बाय और अकसक्कालकी दोस्तीका दम भरते उनकी सलाहसे सब काम कर रहा है। किस बायने किस गरीबका तन ढाका है, जो याकूब बाय करेगा। यह बाय हम लोगोंको अपनी सेवाके लिये पैदा हुए जानवर समझते हैं—कुर्बानने कहा।

तीसरा बोल उठा—बिरादर! "पानी कीचड़के ऊपर" मसलके मुताबिक मुल्कके हाकिम भी बाय लोगोंका पक्ष लेते हैं। अगर एक बाय और एक गरीबके बीच जजाल हो जाये, तो सारे बाय अरबाबको आगे-आगे किये हाकिम और क़ाजीके पास जाकर गरीबका घर जलाकर ही साँस लेते हैं। हम गरीब उनके सामने मुँह तक नहीं खोल सकते।

हाकिम भी उनकी ओर, क़ाज़ी भी उनकी ओर, रईस भी उनकी ओर, यहाँ तक कि अमीर भी उन्हींकी ओर है। जब नियाजशाहने धोखा दे मेरी ज़मीन लिखवाकर अपने हाथमें करली, तो काजी-हाकिम-रईस सभीके यहाँ दौड़ा। सबके पास अरज-गोहार की। सब मुझे मारकर खदेड़ते रहे, लेकिन आज खदेड़ा कल मैं फिर पहुँच गया, फिर दाद-फरियाद की। अन्तमें हाकिमके यसावुल-बाशी (सवार-अफसर)ने कहा "यदि तू पैर न रोक प्रतिदिन यहाँ आकर हाकिमको तंग करता रहा, तो तुझे बदी बना जेल भेज देंगे"। मैंने समझ लिया कि यह साफ-साफ बायके पक्षपाती हैं। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। फटा जूता पहने पैदल बुखारा मैंने अमीरके पास जाकर अरज लगाई। अमीरने एक मुबारकनामा (आदेश पत्र) दिया। पढ़ाकर सुना। जानते हो, क्या लिखा था?—"कारातगिन निवासी अशूर नामक गरीबने दरबारमे आकर अरज लगाई कि नियाज़-शाहने मेरी जमीनको जबर्दस्ती छीन लिया और वलायत (सूबा)का हाकिम मेरी सुनवाई नही करता, यह कहकर सहायतापत्र माँगा। जाँच करो। यदि यह बात ठीक है तो उसकी जमीन दिलवा दो, नहीं तो शरीयत शरीफ (सद्धर्म)के अनुसार ज़जालका फैसला करो।"

अशूरने ठढी साँस लेकर फिर कहना आरम्भ किया—देखो तो सही, मैंने हाकिमसे निराश होकर वहाँ अरज लगाई थी और अब फिर मेरे मामलेको उसीके हवाले किया गया! यदि इस मुबारकनामाको ले जाकर हाकिमको देता, तो जो जानसे न मारता, तो भी मेरी बुरी गत बनाता। मुबारकनामा न देकर मैं गर्म चला गया। वहाँ भी अधिकारीने "तूने विलायतके हाकिमके विरुद्ध शिकायत की" कहकर दण्ड देना चाहा, इसलिये वतन छोड़कर यहाँ भाग आया। देखते ही हो, लोगोंके ढोर चराकर जिन्दगी बिता रहा हूँ।

—सब जानते हैं—जफरने कहा—अमीर भी बायोंकी तरफ है। ऐसी स्थितिमे हम गरीबोके लिये क्या रास्ता है? हमारी रोजी-ज़मीनको

जाल-फरेबसे इन बायोंने अपने हाथमे कर लिया। कोई नहीं जो इनके फदे मे न पड़ा हो। यदि बाज़ारको बुद्धि होती, तो इन धोखेबाज़ोंको अपने घरमे जमाकर उनकी सलाह न लेता। कब देखा कि भेड़ियेने मेड़को, लोमड़ीने मुर्गेको, बिल्लीने चूहेको अच्छी सलाह दी है। बाज़ार पहले एक अच्छा खाता-पीता किसान था। अब बायकी 'कृपा'से दर-दरका भिखारी बननेको है। अगर उसके पास अकल होती, तो हम तुम जैसे गरीबोसे सलाह लेता। कहावत है :—

"सजातीय उड़ता सजातीयके साथ
कबूतर कबूतरके साथ, बाज़ बाजके साथ"

दूसरेने कहा—ज़फर ! तू बहुत सीधा है। जबतक बाजारके हाथमे कुछ भी चीज है, तबतक समझाकर दबाकर उससे तूय करायेगे, भोज करायेंगे, हर काम करायेगे और उसकी धन-दौलतको फुँकवाकर उसे हमारे-तुम्हारे जैसा भुक्खड़ बना अपने दरवाजे पर ला बैठायेगे। यदि बाज़ार उनकी बात माननेसे इन्कार करे, तो उसके ऊपर मुकदमाकर काजीखाना (न्यायालय) तक उसे घसीटेंगे, गाँवसे निकाल भगायेगे। जब मुल्कका हाकिम भी उनकी तरफ हो, तो हम गरीबोको क्या आशा ? इसलिये "आज बीता, कलके लिये खुदा बादशाह" कहते अपना रास्ता लेना चाहिये।

कुर्बानने कहा—इन बेगोको जो हम देखते हैं, उनमेसे कोई बापकी कब्रसे धन-दौलत लेके नही आया है। हरएकने धोखा-फरेबसे हम जैसे गरीबोंकी जमीन-असबाब, बैल-गायको अपने हाथमे किया। हमें मुहताज बना, हमसे काम करवा उन्होंने अपने लिये धन जमा किया। यदि अच्छी तरह देखा जाय, तो मालूम होगा कि उनकी सारी माल-मिल्कियत हमसे और हमारी मिहनतसे पैदा हुई है। अन्तर है तो यही, कि हम बहुत नादान हैं और वह बहुत चतुर, हम ज्यादा सीधे-सादे और वह

ज्यादा धोखेबाज। इसलिये हमारे भोलेपन और हमारी निर्बलतासे लाभ उठा, हमारी सारी चीजोंपर हाथ साफकर, हमें बेज़बान जानवर बना मालिक बन बैठे हैं। अगर हम उनके विरोधमे कुछ कर नहीं सकते, तो कमसे कम उन्हें सलाहकार बना हमें भलाईकी उम्मीद तो नहीं करनी चाहिये। बाजारकी भूल यह है, कि वह उनसे भलाईकी उम्मीद रखता है, उन्हें हितेच्छु समझता है। उसने क्यों नही एक बार हमसे तुमसे सलाह ली ? जफ़रका कहना ठीक है, "कबूतर कबूतरके साथ और बाज बाजके साथ।"

इसी समय ज़फरने दूरसे आदमियोके झुडकी छाया अपनी ओर आती देखकर कहा—कबूतरो ! भागो बाज़ आ रहे हैं।

दूसरोने भी उस ओर निगाह करके देखा, कि बड़े लोग बाजारकी हवेलीकी तरफसे आ रहे हैं। सभी खड़े हो अपने बसेरोकी तरफ भागे।

१६

शरई दस्तावेज़

तूय खतम हो गया। लेकिन उसकी समाप्तिके साथ बाजारके घरमें शोक और मुसीबत छा गई। याकूब बाय और अरबाबने सारा प्रबन्ध अपने हाथमे ले इतना खर्च किया, जिसका ख्याल भी बाजारके दिमागमें नही आ सकता था। बायके घरसे लेकर जो चीजे खरचकी गई और उनका जो दाम लगाया गया, उसने खर्चको और ज्यादा कर दिया। अभी भोजके देगो (हडो)को न साफ किया गया था, न आँगनमे खोदे चूहोको ही मूँदा गया था, कि बायने हिसाब करनेकी बात शुरू करदी। हिसाब करनेसे मालूम हुआ कि घरकी चीजों और जानवरोंके अतिरिक्त बायसे पाँच सौ तका लेकर खर्च हो गया है। बायने बाज़ारसे कहा :—

—दादार ! जैसे भी हुआ, तुम्हारे यज्ञको निर्विघ्न पूरा कर दिया। मेरे पाससे लेकर इतना तका खर्च हो गया, तो कोई हर्ज नहीं ? पैसा कोई चीज़ नहीं। ससार असार है। जिन्दगी बनी रहनी चाहिये। लेकिन जिन्दगी और तन्दुरुस्ती आदमीके हाथकी चीज़ नहीं। मोमिन (मुसल्मान)को सदा मरनेके लिये तैयार रहना चाहिये। मृत्यु आदमीके गर्दनकी नाड़ीसे भी अधिक समीप है। उन्ही मनहूस दिनोंके लिये आदमीको चाहिए, कि अपने कामोको शरीयत (धर्म)के अनुकूल करे। परसाल तुम्हारे ऊपर मेरा ढाई सौ तका कर्ज था। भोजके ख्यालसे वादा किये पहलेके ढाई सौ तकोको भी तुमने बेबाक नही किया। सूदको खैर, मै यज्ञके लिये छोड़ देता हूँ। पहलेका कर्जा पॉच सौ तका हुआ था, अब नया मिलकर सब एक हज़ार हुआ। यह रकम बहुत ज्यादा है, इसके लिये अपनी ज़मीनकी लिखा-पढी कर दो। तुमको खुद मालूम है, मै एक व्यापारी आदमी हूँ। कर्ज-कबाला मामला मुकदमा करना मेरा काम है। इतनी भारी रकमको जमीनके गिरो रखने पर भी नही छोड़ा जा सकता, क्योकि जमीनकी आय भाग्यके आधीन है। शायद तुम समझो, कि मै तुमसे एक निश्चित रकम सूदके तौर पर लेना चाहता हूँ, बिल्कुल नहीं। मै सूदखोर नही हूँ। सूद हराम है, यह मै अच्छी तरह जानता हूँ। तुम बेचारा और गरीब हो, यह भी मै अच्छी तरह समझता हूँ, इसलिये मै तुमसे इस रकमको दूसरे सूदखोरोंकी तरह अधिक सूद लेनेके लिये नहीं रखना चाहता। हर महीने सिर्फ एक-एक तिल्ला*पर आधा तका अर्थात् सौ तके पर ढाई तका, यानी इस हजार तका पर पचीस तका दे दिया करना, और बस। सूदखोरीके पापसे बचनेके लिये जमीनका शरीयतके अनुसार बैनामा लिख देना जरूरी है।

---

*बुखाराका "तिल्ला" (सोनेका सिक्का) चॉदीके बीस तकोंका होता था।

फिर प्रतिमास पचीस तकाका ठीका मै मान लूगा। इतना तंका कहाँ से आयेगा, इसके लिये डरनेकी जरूरत नहीं, चाहो तो अपनी जमीनमे काम करके दे सकते हो। यदि यह नही तो मेरे घरमे काम करो। तुम्हारी जमीनको मैं बेकार नहीं रहने दूँगा। उससे भी चीज पैदा की जा सकती है।

बायकी इस निष्ठुर बातको सुनकर बाजार मानो स्वप्नसे जाग उठा, उसका नशा उतर गया। उसने देखा कि बायकी सारी सहानुभूति और अरबाबका तूय (यज्ञ) करनेपर जोर किस बातके लिये था। आँखे खुली, लेकिन उसके लिये धरती और आकाशमे सिर्फ अँधेरा ही अँधेरा दिखलाई देता था। बहुत सोचा, किन्तु इस फन्देसे निकलनेका कोई उपाय नही सूझ पड़ा। उसने सिर्फ इतना ही कहा :

—आपने कहा था कि अपना तूय करो, जो कुछ मेरे पास है, उससे तुम्हारी मदद करूँगा। क्या आपकी वह मदद यही थी, कि मेरे पास पैर रखनेके लिये जो थोड़ा-सा जमीनका टुकड़ा था, उसे भी छीनकर मुझे गुलामी करनेको मजबूर कर रहे हो?

अरबाबने बीचमे दखल देते हुए कहा—बाजार! तुम बच्चोंकी-सी बात करते हो। तुमने कहाँ देखा है, कि दूसरेके बच्चेकी यज्ञके लिये कोई हजार तका लुटा दे या इतनी भारी रकमको बिना लिखा-पढी और बेसूद ही रख छोड़े। बायकी मदद यही थी, कि तुम्हे किसी सूदखोरेके दरवाजे पर जाना नही पड़ा, घरकी तरह बायके यहाँसे ला लाकर खर्च किया, यज्ञ किया, त्योहार किया। आदमीके साथ आदमीकी मदद बस इतनी ही होती है। अगर तुमने सोच रखा है, कि बाय अपना हजार तङ्का तुम्हारे यज्ञमे दान दे देगा, तो यह तुम्हारी बड़ी भूल है। दुनियामे कभी ऐसा नही होता।

बाजार—मैने नही कहा कि बाय इतना तङ्का मुझे दान दे दें, लेकिन प्रतिमास पचीस तङ्का याने सालमे तीन सौ तङ्का सूद अन्याय है।

बायने "अन्याय"का शब्द सुन आगबगूला होकर कहा—कसूर खुद मेरा है। सृष्टिसे लेकर आजतक, बाबा आदमसे लेकर हातिम तक नेकीके बदले बदी, उपकारके बदले अपकार ही होता आया है। यह सब जानते हुए भी मै तुम्हारे साथ नेकी करनेको तैयार हुआ। फिर तुम्हारी ओरसे "अन्यायी"की पदवी मिलना बहुत कम है। अच्छा आओ, अब तुम्हारे साथ न्याय करे। पाँच सौ तङ्का जो तुम्हारे यज्ञमे खर्च हुआ, उसे लाकर मुझे इस वक्त दे दो। पुराने कर्जेको मै एक साल तक और बिना सूदके रहने दूँगा।

लेकिन बाजार उस वक्त पाँच सौ तङ्का तो क्या पाँच सौ पैसा भी नहीं दे सकता था। मजबूर हो बाज़ारने शिर खुजलाते-खुजलाते बायकी शर्तोंको कबूल किया। दूसरे दिन नायब काजीको बुलाकर दस्तावेज लिखवाया गया :

तारीख माह सफर सन् १३१८ हिजरी। बाजार बाय—मझोला कद, काली दाढी, गेहुँआ रंग, कजी आँख—वल्द एवज मुरादने कूलाब विलायतके काजीखानामें आकर शरीयत के अनुसार सही और विश्वसनीय करार किया, कि मन्मुकिरने याकूब बाय वल्द यूनूस बायके हाथमे अपनी सारी दस तनाब (एकड़) जमीन मिल्कियतको शरीयतके अनुसार बै किया। यह जमीन मेरी निजी और मौजा कन्कुर्त विलायत (जिला) कूलाबमें अवस्थित है। उक्त जमीनके उत्तर, पच्छिम और पूरब आम-रास्ता और दक्षिणमे कूल-नजर है। बुखारा शरीफके ढले मुबलिग एक हज़ार तङ्का पर उक्त सीमा द्वारा सीमित भूमिको उपरोक्त महाजनके हाथ बेचकर फिर महाजनको हर चान्द्रमासकी पूर्णमासीको पचीस तङ्का देनेकी शर्तपर उक्त ज़मीनको ठीका लिया। अगर ठीकाकी रकमको वादाके मुताबिक न दे सका, तो बिना हीला-हुजत, बिना शर्त महाजनकी

चाकरी करूँगा। यह दस्तावेज मुसलमानोंके सामने लिख दिया। दस्तखत—मुल्ला महम्मद सलीम, अरबाब रोज़ी अब्दुलक़यूम .....।

दस्तावेज लिख जानेके बाद नायब काज़ीने पूछा—बाज़ार बाय!

—लब्बैक (जी सरकार)।

—क्या अपनी दस तनाब जमीन याकूब बायके हाथों एक हज़ार तङ्कामें शरीयतके अनुसार तुमने बेचा?

—बेचा।

—कीमत पाई?

—पाई।

—उसी जमीनको पचीस तङ्का माहवार पर ठीका लिया?

—लिया।

—यदि ठीकेकी रकमको प्रतिमास न दे सके तो बायकी चाकरी करोगे?

—हाँ!

इस तरह इन्ही सवाल-जवाबोंमे बाजारके पास जो कुछ था, सब हाथसे निकल गया, वह जड़-मूल कटवाकर बायका ग़ुलाम बन गया। अब बायकी मीठी-मीठी बाते भी खतम हो चुकी थी और अरबाबका बिचवईपन भी। लेकिन अब भी बायकी दया-दृष्टिसे बाजारकी आशाएँ नही खतम हुई थी, इसलिये जब वसन्तमे खेत बोनेका समय आया, तो उसने बायके घर जाकर यज्ञके पहिलेके वादोंका स्मरण दिला खेत जोतनेके लिये बैल माँगा। बायने त्योरी बदलकर कहा—मेरे पास बैल बेकारका नही है। यदि अपनी जमीनको जोतकर वसन्तकी फसलके लिये तैयार नही कर सकते, तो चाहे मेरे कर्जका सूद दो, या उसके बदलेमें मेरी चाकरी करो।

—अगर ऐसा है तो मै कैसे खेती करूँगा ? ठीका और अपने पेटके लिये भी पैसा कहाँसे लाऊँगा ?

—तुम खुद सोचो, यह तुम्हारा काम है।

—मेरे ऊपर दया कीजिये बाय !

—तुम अभागे हो। तुम्हारी मदद करनेसे कोई फायदा नही, अगर तुम भाग्यवान् होते, तो इन चन्द सालोमे, जब कि मै तुम्हारी सहायता करता था, तुम्हारा घर अशर्फियोसे भर गया होता, लेकिन अवस्था यह है, कि मैने जितनी ही तुम्हारी मदद की, उतने ही तुम गिरते गये। अच्छा यही है कि भगवान्के काममे हाथ न डालकर तुम्हे भाग्यके हाथोमे छोड़ दूँ।

२०

जलावतन

ब्रूत (मार्च)का महीना था। सर्दी अब भी बहुत अधिक थी। पचागके अनुसार यद्यपि सर्दी समाप्त हो चुकी थी, किन्तु अभी उसका अखण्ड राज्य था। सर्दी जालिम हकूमतकी तरह हार और भागनेके समय भी सारी चीजोको पामाल कर रही थी। हाँ, उस साल मार्चकी सर्दी बर्फकी अत्याचारी सफेद-सेना थी, जो क्रान्तिके वसन्तके आगमनसे प्रलायमान हुई, लेकिन जिस तरह दोतोफ और कोलचककी सफेद-सेना सिबेरियासे और देनिकिन तथा ब्रगलकी दक्षिणी रूसके केन्द्रसे पाशविकता और सर्वनाश मचाकर भगी।

दाहिने बायेसे हवा सर-सर बह रही थी। बादल बड़ी तेजीसे दक्षिणसे उत्तरकी तरफ दौड़ रहे थे। बरफमिश्रित वर्षा हो रही थी। जोरकी बाढ़ोंने नहरोंके रास्तोको तोड़ दिया, वृक्ष जड़से उखड़ गये, दीवारे पट

हो गयीं, पहाड़के पत्थर अपनी जगहोंसे धसके, मकानोंके कोठे जमीनपर आ पड़े।

इस तूफानसे गिरे घरोंमे एक घर बाजारका भी था। बाजार, मेहमाह और यादगारके साथ बैठकेके कोनेमे ठिठुरते भविष्य पर सोच रहा था। धूप और पानीसे बचानेवाला मकान पस्त हो गया था, आखिरी पोशाक भी चिथड़ी-चिथड़ी हो गई थी। घड़ा, प्याला और थाल टूटकर मिट्टीमे मिल गये थे। बाजारने पत्नीकी ओर निगाह करके कहा—नहीं नहीं, चलो चले। इस जवारमें जिन्दगी काटना सम्भव नही।

मेहमाह—कहाँ चले, किस आशाको लेकर चले ?

—जहाँ कही भी भाग्य ले चले वहाँ चले, जहाँ कही भी दाना-पानी खीचे वहाँ चले।

मेहमाह—भूखे रहें, प्यासे रहे, नगे रहें ? चाहे जो भी शिरपर आये, अपना वतन, अपना वतन है। इस विपदामे पैदल कहाँ भागेगे ? न जाने किस पहाड़के सामने किस दीवारके नीचे परदेशमे मरेंगे। सन्तोष करना भगवानको धन्यवाद देना ही ठीक है, जिसमे इनसे भी बुरे दिनोको न देखना पड़े।

—इस अवस्थामे सन्तोष नहीं किया जा सकता। किस बातके लिये भगवानको धन्यवाद दें ? बैलकी जोड़ी गयी, जमीन गयी, खेती और जिन्दगीके साधन गये, बसेरा भी आज उजड़ गया। (बैठकेकी छतके छिद्रकी ओर इशारा करके) यह हाल इसका है, यह हमारा अन्तिम शरण-स्थान है, जो आज या कल जानेवाला है। फिर किस आशा-भरोसा पर इस दयारमे रहे। नही, नही हो सकता। चलो चले।

बाजारके लिये ऐसी निराशा ऐसी हसरत होनी उचित थी। बायने अर्बाबके द्वारा कहलवाया था—अब बाजारको इस जमीनपर पग नहीं रखना होगा। अगर खेती करना है, तो मेरे दूसरे खेतोमेसे लेकर करे। चाहे बटाईके तौरपर या चाकरके तौरपर काम करे। मै मुल्कके रवाजके

मुताबिक मजूरी दूँगा, लेकिन उसकी अपनी जमीनको बटाईके तौरपर भी उसके हाथमें देना ठीक नही समझता। नहीं तो शायद एक न एक दिन वह "जलियादी" (मौरूसी)का दावा कर बैठे। अगर मेरी जिन्दगीमे नही तो मेरे न रहनेपर मेरे लड़कोंको जमीन सुपुर्द न करेगा। इसलिये इस जमीनसे उसका पैर उखाड़ देना जरूरी है। पतझड़के बोये गेहूँ और जौको ठीकेके हिसाबमे ले लेना है।

बाजारने बायके फैसलेको सुनकर देश छोड़नेका पक्का इरादा कर लिया, क्योकि अगर वह ऐसा न करता तो बालबच्चे सहित भूखे-प्यासे गुलामकी तरह याकूब बायकी चाकरी करनी पड़ती।

जब-जब वह कामके लिये अपने खेतो पर जाता, विशेषकर जब वह उस टुकड़ेको देखता, जहाँ कई सालोकी मेहनतसे उसने चारबाग (मेवोका बाग) लगाया था, तो हसरतसे उसका हृदय फटने लगता और आँखोंसे खून टपकता। अब अच्छा यही था, कि इस दयारसे निकल जाये। अगर काम करना ही है, तो ऐसे आदमीका करे, जिसने उसपर इतने जुल्म न ढाये हों, अगर मरना ही है, तो ऐसी जगह मरे, जहाँ दुश्मनोंकी गाली और दोस्तोका ताना सुननेको न मिले।

हाँ हाँ! कौन मुर्गा है जो अपने सीनेको फाड़नेवाली लोमड़ी की खिदमत करेगा? कौन दुम्बा है जो पकड़कर अपनी दुमको चीरनेवाले भेड़ियेकी पूजा करेगा? यही वजह थी, कि वह कई दिनोंसे चलनेके लिये अपनी बीबीसे कहा-सुनी और लड़ाई-झगड़ा कर रहा था। बीबीके अपनी बात न माननेपर हिम्मत न हार वह कुछ समय चुप रहता, बादमे फिर उसी सवालको छेड़ देता। आज जब कि उसका घर भी गिर गया और वह अशरण हो गया था, उसने फिर इस सवालको और जोरके साथ सामने रक्खा और अन्तमे लाचार हो बीबीको उसे कबूल करना पड़ा।

२१

मेहमानी

वर्षा बहुत हो रही थी। रास्तेमें कीचड़ थी और मौसिम सर्द। दिन चलते-चलते गुजरा। शाम होने वाली थी। एक आठ-साला बच्चा रास्तेमे चल रहा था। वह हर कदमको तीन-चार बार आगे रख, फिर पहली जगह आ पीछेकी तरफ देख लेता।

मालूम होता था, बच्चेने बहुत सर्दी खाई है, वह अपनेको गरम करनेके लिये तेज चलना चाहता है। लेकिन बार-बार पीछे ताकनेसे साफ था, कि वह किसी की प्रतीक्षामें है। हाँ, वहाँ पीछे एक चालीस-साला मर्द पीठपर एक पैतीस-साला स्त्रीको उठाये चल रहा था। राहकी थकावट और बोझके भारीपनसे मर्द अपने कदमको बहुत धीरे-धीरे उठा रहा था। वह हर कदमपर इधर-उधर निगाह डालता कि कहीं पड़ाव मिले और वह वहाँ विश्राम करे, या कोई आदमी मिले, जो इस बिपदामें उसके साथ सहृदयता दिखलावे।

मर्दको अधिक देर प्रतीक्षा नही करनी पड़ी। एक मुसाफिर आ पहुँचा। उसे देखकर मर्दकी मुर्झाई आँखें दीपक-सी जगमगा उठीं। मर्दके कुछ कहनेसे पहले ही मुसाफिरने पास आकर उससे पूछा—कहाँसे आये ?

—कूलाबकी तरफसे। तीन दिन हुआ रास्ता भूल गया, नहीं जानता कहाँ जा रहा हूँ। अगर हो सके तो पड़ाव (मजिल) तक मेरा पथ-प्रदर्शन कीजिये, जिसमे वहाँ आराम लें और शायद बीमारकी भी अवस्था सुधर जाये।

—यहाँ पासमें एक दर्रा है, जहाँ चरवाहोंके कितने ही खानदान रहते हैं, वे बड़े अतिथि-सेवी हैं। मैं भी वहीं जा रहा हूँ। यदि चाहो तो तुम भी मेरे साथ आ सकते हो।

मर्द थकावट और कमजोरीसे गिरने-गिरने वाला था। पड़ाव और अतिथि-सेविताकी बात सुनकर उसकी हिम्मत बढ़ी और "आओ चलें" कहकर साथ हो लिया।

मुसाफिर आगे-आगे और बीमार औरतको पीठपर लिये मर्द पीछे-पीछे चला। अनजान आदमीको देखकर बच्चा मर्दके पीछे छिप गया था, अब उसने पूछा—अता! हम कहाँ चल रहे हैं?

मुसाफिरकी ओर इशारा करते बापने जवाब दिया—तेरे चचाके घर चल रहे है, वहाँ मेहमान रहेगे, वहाँ रोटी है।

—वहाँ रोटी है?

—हाँ।

बच्चा खुश हो कभी आगे-आगे कभी पीछे-पीछे चलता। चक्कर काटते पर्वतके किनारे वह दर्राके मुँहपर पहुँचे। देखा, वहाँ दस-बारह अदमियोंको हाथपैर बाँधकर लिटा रखा है। उन बदियोंके सामने पैर बँधे कुछ घोडे और गधे भी थे। दूसरी ओर तीसके करीब हट्टेकट्टे हथियारबद आदमी बैठे हुक्का पीते चख-चख कर रहे थे। उनकी शकल-सूरत देखनेसे मालूम होता था, कि उनमे कोई किर्गिज, कोई ताजिक और कोई अफगान (पठान) हैं। उनके पास तीन पत्थरोके ऊपर एक बड़ा देग रखा था, जिसके नीचे आग जल रही थी और अदर मास पक रहा था। दूसरी ओर कितने ही भरे बोरे रखे थे। पासमे कुछ मोटे-ताजे घोडे जौ खा रहे थे।

मुसाफिरने अपने "मेहमानों"को हाथ-पैर बँधे मर्दोंके पास लाकर बदियोंकी ओर इशारा करते हुक्म दिया—यह मेहमानखाना है। यह लोग भी तुम्हारी तरह आज रात यहाँ मेहमान हैं। अपने भारको ज़मीन-पर रखो, और अपने हाथोंको यहाँ लाओ।

मर्दने स्त्रीको जमीनपर रख हाथोंको बढ़ा दिया। साथ आये मुसाफिरने उसके हाथो-पैरोंको बाँधकर दूसरे "मेहमानों"के पास लिटा

दिया। बच्चा अपने हाथोंके बाँधते वक्त जोर-जोरसे रोने लगा। आदमीने उसकी कनपटी पर एक चपत जड़कर कहा "चुप रह"। बच्चा चुप हो गया, किंतु नही मालूम डरसे या चोटसे। इसके बाद आदमीने चाहा कि बीमार स्त्रीके हाथको भी बाँध दे। उस समय एक काले रगके २५-२६ साला जवानने आकर आज्ञा दी—इस मुर्देका हाथ बाँधनेकी जरूरत नहीं, रस्सीको खराब न कर, इसका फिर काम होगा।

—यह क्या बात है, कौन लोग हैं, हमारे साथ क्या करना चाहते हैं?—कह नये बदीने अपने नजदीक पडे दूसरे बदीसे पूछा। उस बदीने पैरकी तरफसे थोड़ा खिसककर शिरको हिलाते हुए 'यहाँ बातचीत करना खतरनाक है' जैसे इशारा किया।

रात आई। शस्त्रधारियोंने मास-शोरबा खाया, बाकी मासको दस्तरखान (चादर)मे लपेट खुर्जीमे डाल बोरोंके पास रख दिया। फिर दोको बदियों-पर और एकको मालपर पहरा देनेके लिये छोड़ बाकीने पहिले रूमालसे अपने-अपने सिर और दाढीको मज्बूतीसे बाँधा, जिसमे कि देखनेवाला सिर्फ आँखोको ही देख सके, फिर वह घोड़ोंपर चारजामा कसकर सवार हो थोड़ी देरमे आँखोंसे ओझल हो गये।

मेहमानोमे बीमार औरत बच्चेको छोड़ सारेही ऐसे चुप थे, मानो उनके मुँह भी बँधे हुए थे। कोई दमतक न लेता था। पहरेदारने बच्चेके रोनेसे तग आकर एक टुकड़ा रोटी निकालकर बच्चेके मुँहके पास रख दिया और यह कहकर धमकाया—यदि फिर रोया तो तेरे कान काट लूँगा।

बच्चेने रोटी खाना सीखनेवाले बिल्लीके बच्चेकी तरह रोटीके टुकड़ेको मुँहसे घसीट-घसीटकर खाया, भूखसे कुछ शाँति मिली, फिर उसे नींदने आ घेरा।

× × ×

बादलोंके बीच जहाँ-तहाँ दिखलाई देते तारोंसे जान पड़ा कि वह

फटने वाली है। एक पहरेदारने एक बार आकाश फिर मार्गकी ओर देखकर शकित-हृदय हो दूसरे पहरेवालेसे पूछा—उनके ऊपर कोई आफत तो नहीं आई ? क्यों वह अब तक नहीं लौटे ?

—क्या आफत आयेगी ? हाकिम आज हिसारमे नहीं है, वह दोशंबे गया हुआ है।

पहिले पहरेवालेको इससे कुछ तसल्ली हुई और उसने फिर कहा—मुझे हाकिमसे डर नही है। हाकिम कभी भी चोरको चोरी करते समय नहीं पकड़ते। जब चोर मालको अपना बना चुकते हैं, तो सभव हुआ तो गिरिफ़्तार करते है, जिसमे चोरीके मालको हथियाये। मुझे डर शहरके लोगोंका है। यदि खबर पाकर सब उनके ऊपर टूट पड़े, तो सबको नहीं तो कुछ को शायद पकड़ सके। ऐसी अवस्थामे हाकिमके आदमी भी चोरोंके पकड़नेमे उपेक्षा नही कर सकते।

—शहरके निहत्थे लोग बन्दूकके सामने क्या कर सकते हैं, बताओ तो सही ? खासकर हमारा सर्दार बहुत जबर्दस्त है। वह हर तरहकी आफत और सकटसे अपने साथियोको निकाल ला सकता है।

पहरेवाला अभी अपनी बातको समाप्त भी न कर पाया था, कि उसकी बात सच होती दीख पड़ी, और दस मिनटमे सारे सवार आकर जमा हो गये, उनमेसे हरएकके पास भार था।

काले रगके जवानने ढेरकिये बोरोकी ओर सकेत करके कहा—इन्हें अपने घोड़ोंपर लादो।

घोड़ोंके पैरो को खोल उनकी पीठपर माल लादकर वह खुद उनपर सवार हुए, और बाकी घोड़ोंको उन्होंने कोतल ले लिया। काले जवानने बंदियोंकी ओर निगाह करके उनसे पूछा—"मुझे पहिचाना या नहीं ?" "नहीं, नहीं पहिचाना" कहकर बदियोंने जवाब दिया।

जवानने नीचे खड़े अपने साथीसे कहा—"तू यहाँ ठहर, जब हम कोतल (जोत) पार हो जाये, तो बच्चेका हाथ खोल देना और

जल्दी-जल्दी हमारे पास दौड़ आना"। जवानने यह कह घोड़ेको एड़ लगाई, दूसरे सवार भी उसके पीछे दौड़े।

उनके दूर निकल जानेपर पीछे छोड़े आदमी बच्चेका हाथ खोल "तू दूसरोंके हाथोंको खोल देना" कह घोड़ेपर चढ़कर चल दिया।

कुछ देरमें बदियोंके हाथ खुल गये। उनके मुँहका ताला भी टूट गया। एकने दूसरेसे पूछा—तुमने पहिचाना ?

—क्यों नहीं पहिचाना, वह काला जवान इनका सर्दार चक्कबे तूक़्साबा लक़ेका लड़का इब्रहीम गल्लू है, जो कितने ही डाकुओंको जमा करके लूटमार करता है। वह जवान जो हमारे सामने बैठा था और जिसने बच्चेका हाथ खोला, उसका नाम अब्दुल्ख़ालिक है। वह बड़ा जालिम और इब्राहीम गल्लूका दाहिना हाथ है। जान पड़ता है, आज रात इन्होंने हिसार नगरको लूटा और कितनोंको भिखारी बनाया। यद्यपि ये लोग हाकिम और उसके अमलोंसे मिलकर डकैती करते हैं, किंतु हाथमे पड़ जानेका इन्हें भय भी रहता है।

दूसरे बदीने कहा—तुम जब सबको पहिचानते थे, तो सर्दारके पूछनेपर उसे क्यों नहीं बतलाया ?

—तुम बहुत भोले जान पड़ते हो। यदि मैं कहता कि मै पहिचानता हूँ, तो वह मुझे उसी वक्त मार डालता। डाकुओंका नियम है, यदि उन्हें सदेह होता है कि दूसरा उन्हें पहिचानता है, तो उसी वक्त उसे मार डालते हैं, जिसमे उनका भेद न खुले।

२२

परदेस, क्लेस

सरेजूयकी एक मस्जिदमें बामदाद (अतिप्रातः)की नमाज पढ़कर लोग बाहर निकलनेवाले थे, कि मुवज्ज़िन (अजान पुकारनेवाले)ने आवाज़ दी :

—भाइयो ! कूलाबसे आये मुसाफिरकी बीवी—जो कितने ही दिनोंसे मस्जिदके ताबूत खानेमे पड़ी हुई थी—आज रातको खुदाकी बदगी बजाने दूसरे लोकको चली गई। जमातको उसे दफनानेके लिये थोड़ा-थोड़ा चँदा देना चाहिये। हरएकको खुदाके रास्तेमे थोड़ा-थोड़ा देकर पुण्य-लाभ करना चाहिये।

रातको जब मुसाफिर—औरत मरी, तो उसके पतिने रोते-राते इसकी सूचना मस्जिदके मुवज्जिनको दी। मुवज्जिनने यह बात मुहल्लेके बाय तथा मुखिया अज़ीमशाहसे कही, और मुर्दाके दफनानेके बारेमें पूछा।

अज़ीमशाहने जवाब दिया—यद्यपि मुर्देके दफन-कफनका खर्च मेरे लिये कोई मुश्किल नही है, लेकिन लोग पुण्यसे वचित न हों, इसलिये यह काम जमातको सपुर्द करना अच्छा है। अतएव बामदादकी नमाजके बाद इस बातको लोगोसे कह खुदाके नामपर थोड़ा देनेके लिये कह, तूभी इसमे प्रेरक बन पुण्यका भागी बन। जो कमी होगी वह मै पूरा कर दूँगा।

यह वजह थी, जिससे मुवज्जिनने जमातको सूचित किया। लोग मस्जिदके दर्वाजेपर जमा हो, "खुदाके पैसेको किसके हाथमे दे" कहकर मुवज्जिनसे पूछने लगे। मुवज्जिनने अजीमशाहकी ओर इशारा किया। लोगोमेंसे एकने कहा—क्योन अकसक्काल को देवे ?

अक्सक्काल (चौधरी) यद्यपि इस सेवाके लिये दूसरोंसे अधिक हकदार था, लेकिन मालिकका नाम आ जानेपर उसने आगे बढनेकी हिम्मत न की और कहा "जब मालिक खुद मौजूद हैं, तो मेरे हाथमे पैसा जमा करनेकी जरूरत नही। 'गौरैयाको कौन मारे ? कसाई' की मसलके अनुसार बाय खरच-वरचका ढंग ज्यादा अच्छा जानते हैं, वह कमीवेशीको पाससे पूरा भी कर सकते हैं।"

किसीने एक तका दिया, किसीने एक मीरी और किसीने आठ पूल

(ताँबेका पैसा)। इस तरह बीस तका बायके पास जमा हो गया। मालिकने मुवज्जिनके द्वारा कब्रखोदकको कब्र खोदने मुर्दानहापकको मुर्दा नहलाने के लिये नियुक्त किया, और अपने घरसे चार गज कपड़ा कफनके लिये दिया।

दफनानेकी तैयारी हो गयी। इमामने "दौरा" किया लोगोने "खुदाई जनाजा" पढ़ा। जवानोने अर्थीको उठाया। मालिक और कुछ और लोग अर्थीके साथ कब्रिस्तान गये। मुर्दाको दफनाया गया, इमामके (कुरानके) सूरा तबारुक पढनेके बाद सब अपने-अपने घर लौटे।

मालिकने इमामको दो तका, मुर्दा-नहापकको दो तका, कब्रखोदकको दो तका, अक्सक्कालको दो तका और मुवज्जिनको एक तका—सब नौ तका नगद और चार गज गाढा खरचकर सबको खुश और कामको पूरा कर दिया। अक्सक्कालने धीरेसे मुवज्जिनके कानमे कहा—पैसाका स्वभाव पानी जैसा है। वह बड़ी नदी या समुन्दरकी ही तरफ जाता है। मालिकने दफनाने और खैरात बाँटनेके बाद मुसाफिरको अपने पास बुलाकर पूछा—तुम्हारा नाम क्या है ?

—बाजार।

—कहाँके रहनेवाले हो ?

—कूलाबके इलाकेका।

—कहाँ जाना चाहते हो ?

—चाहता था कि बुखाराकी ओर जाकर चाकरी करूँ।

—बहुत अच्छा। दुनियाँमे ऐसा होता ही रहता है। मै भी दर्वाजके शाहोके खान्दानसे हूँ, यहाँ आ पड़ा और खुदाकी मेहरबानीसे बाल-बच्चा और घरका मालिक बना। तुम्हारी पत्नी मर गयी। भगवान्की दया हुई और जीवित रहे, तो फिर ब्याह हो जायेगा। शुक्र है, कि तुम उतने बूढ़े नहीं हो। बच्चा भी मदद करनेके लिये पासमें है। अगर चाहते हो तो हमारा घर मौजूद है। पेटके लिये दो मुट्ठी अन्न और तनके लिये कपड़ा

मिलनेमें कमी न होगी। और क्या चाहिये? चाहोगे तो बीबीवाले भी बन जाओगे।

बाज़ार माल-मिल्कियत खो कर वतन छोड़ यहाँ आ पड़ा था। कहाँ जाय, क्या करे इसका उसे कुछ पता न था। उसने मालिककी राय मान चाकरी करनेका निश्चय किया।

मालिकने समरकन्दकी ओर ले जाकर बेचनेके लिये भेड़ें जमा की थीं। यात्रा करनेके समय तक उनकी चराईका काम उन्होंने बाजारके हाथमे दिया। आठ-सालका यादगार भी घरके कामोंमें लगा रहता, घोड़ों बैलोंकी देख-भाल करता, गायके सामने चारा डालता।

यद्यपि मालिकने बाजारके वेतनके बारेमे कुछ नही कहा था, किन्तु वह मन लगाकर काम करता, भेड़ोंको सवेरेसे शामतक घासभरे पहाड़ी पथारोंमें चराता, जिससे दो माह बीतते-बीतते भेड़े खूब तैयार और मोटी-ताजी हो गयीं।

२३

नई आशा

गर्मीका मौसिम आया। हिसार और समरकन्दके बीचके रास्तेकी बरफ गल गई। अब यात्राका समय था। मालिकने देखा कि बाजार एक बहुत मेहनती नौकर है। ऐसे नौकरसे बहुत देरतक बिना वेतन चाकरी कराना ठीक नहीं। नौकर स्वय चाहे सिर्फ खाने-कपड़ेपर काम करनेको तैयार हो, लेकिन दूसरे नौकर उसे बिगाड़ और बहका देंगे। इसलिये "बीमारीसे पहले दवाका प्रबन्ध"की कहावतके अनुसार मालिकने समरकन्दके लिये रवाना होने से पहिले बाजारको बुलाकर कहा—मैं नहीं चाहता कि तुम बिना वेतनके काम करो, इसलिये बातचीत करके उसे तय कर लेना अच्छा है।

—आपकी सलामती चाहिये। मैं एक मुसाफिर हूँ, आपके घरमें अपने घरकी तरह रह रहा हूँ। पहिले तो मुझे वेतनकी आवश्यकता नहीं, यदि आप नहीं मानते, तो मैं कुछ नहीं कहूँगा, आपकी इच्छा चाहे जितना वेतन ठीक कर दे।

—दूसरोंको उतना वेतन नहीं दिया जाता, लेकिन तुम भले आदमी हो, मै तुम्हें पचास तका वार्षिक दिया करूँगा। कहो क्या कहते हो ?

—खुदा आपकी दौलत बढाये, मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ।

—भेड़के सौदागरों और चरवाहोंके बीच एक और भी नियम चला आता है, उसे भी तुम्हें सुना रखना चाहता हूँ। वह नियम यह है, कि यदि भेड़को भेड़िया खा जाय या वह गुम हो जाय, तो उसका हर्जाना चरवाहेके ऊपर होता है। यह नियम इसीलिये बना है, कि अधिकाश चरवाहे ईमानदारी नहीं जानते। मालिकका अन्न-जल खाते, पोशाक पहनते हैं, लेकिन उसके मालकी परवाह नही करते, जिसकी वजहसे बहुत-सी भेड़ें रास्तेमे गुम या नष्ट हो जाती हैं, कुछ चरवाहे तो स्वय चोरी करते हैं। इसलिये यह शर्त रखी जाती है, जिसमे चरवाहे प्रमाद न करे और खुद भी चोरी न करे। बेशक तुम वैसे नमकहराम आदमियोंमें नही हो, तो भी यह शर्त रखनी जरूरी है, नहीं तो दूसरे चरवाहे भी शर्त न रखनेकी माँग करेंगे।

यद्यपि बाजारका मन पहिले कुछ डरा, लेकिन अपनी सावधानी और तत्परतापर पूरा भरोसा करके उसने इस शर्तको मान लिया।

बाज़ार वस्तुतः अब अपने भाग्यपर बहुत सन्तुष्ट था। वह सोचने लगा, इस तरह बारह साल कामकर लेनेपर मेरे पास छः सौ तके हो जायेगे। यदि सालके अन्तमे वेतन ले उससे भेड़े खरीद लिया करूँ, तो मेरे पास एक छोटा-मोटा झुण्ड हो जायेगा। यद्यपि मै अपनी शादी नहीं करना चाहता, लेकिन यादगारके वयस्क होनेतक एक

झोपड़ी बना लेना जरूरी है, क्योंकि उसे परिवारवाला बनाना है। मेरी अन्तिम आयु लड़के और बहूके साथ गुजरेगी। अफसोस, बेचारी बीबी इस खुशीको न देख रास्तेमे बेघर और बेधन चल बसी। सच्ची ईमानदार पत्नी! उसने सारी आफतोंको मेरे साथ-साथ झेला। उसके मर जानेसे यह भविष्यका आनन्दपूर्ण जीवन फीका मालूम पड़ता है—फिर बाजारने यह कहकर मनको तसल्ली दी—

—मेहमाह मर गई। मेरी वफादार मेहमाह चल बसी। लेकिन बिना चिन्ह (यादगार) के नही। उसने यादगारको मेरे पास अपनी यादगार छोड़ी।

बाजार अब याकूब बायके जुल्मोंके लिये पछताता न था। वह सोच रहा था—उसने जो कुछ बुरा या भला किया, अपने लिये किया, यदि उसने बुराई की तो मुझे अज़ीमशाह जैसा भलेमानुस मालिक भी मिला।

२४

यात्रा

यात्राका दिन आ पहुँचा। उर्गूत और हिसारके भी कितनेही भेड़-सौदागर यात्राके लिये तैयार थे। किसीके पास सौ किसीके पास पचास भेडे थी। सबने अपनी-अपनी भेडे चरवाहोके जिम्मे लगा अजीम-शाहके साथ यात्रा की। चरवाहोने भेड़े हाँकीं। मालिक भी घोड़ोंपर सवार हो उर्गूततक साथ-साथ गये।

बाजार रातको भी आराम न कर अपनी ढाई सौ भेड़ोकी रखवाली करता। कुत्तेको हर तरफ दौड़ा भेड़ियो और दूसरे श्वापदोंसे भेड़ोंकी रक्षा करता। उर्गूततक कोई खतरा नही आया। खतरनाक जगहोंसे सकुशल निकल आनेपर बाजारने भगवान्‌को धन्यवाद दिया। वह सन्तुष्ट और प्रसन्न था। समझता था कि अब इसके बाद कोई आफत

शिरपर न आयेगी, क्योंकि उसने सुन रखा था कि उर्गूतसे आगे समरकन्दतक बस्ती-ही-बस्ती है, सभी जगह मकान और खेतियाँ हैं, सभी जगह गाँव और बाग हैं, इस प्रदेशमे न भेड़ियेका डर है न चोरका। उर्गूतके भेड-सौदागर चरभूमिमे कुछ दिन चरानेके लिये चरवाहोंको हुकुम दे अपने घरोमे चले गये। अजीमशाह भी उनके मेहमान हुए। जब भेड़ो और मालिकोकी थकावट दूर हो गई, तो वे फिर समरकन्दकी ओर रवाना हुए।

चरवाहोको धीरे-धीरे आनेके लिये कहकर मालिक घोडेपर सवार हो आगे चले गये। चरवाहे, जिनमे बाजार भी था, भेड़ोको हाँकते समरकन्दकी ओर चले। रास्ता अब पर्वतीय मार्गसे अच्छा और आबाद था, लेकिन पहाड़की स्वच्छ-सुखद हवामे पले चरवाहोकी हालत धूलि भरी हवासे बुरी हो गयी थी। भिनसारसे सूर्योदयतक उतनी तकलीफ न थी, क्योकि आस-पासकी नहरोके वाष्प-विन्दु प्रातःकालीन ओस-कणके रूपमे जमीनमे पड़कर धूलको कुछ तरकर उसे ऊपर अधिक उड़ने नही देते थे। लेकिन जैसेही भुवन तापक सूर्य निकलकर अपनी किरणोंको ससारपर डालते और ओसकण वाष्प बन हवामे उड़ जाते, तो शुष्क अतएव हल्की धूलि पशुओकी खुरोसे रौंदी जा हवामे उड़ने लगती। जब सूर्य दस हाथ ऊपर उठता, तो धूल भी सूर्य और आकाशको ढाँक ससारको अन्धकारपूर्ण कर देती, मानो सूर्य उदय होनेके एक घटे बाद फिर अस्त हो गया। लेकिन इस अस्त होने और रातके अस्त होनेमे अन्तर था। रातको यदि सूर्य अस्त होता, तो आकाशमे चमकीले तारे खिल आते, जो सूर्यके समान प्रकाशमान न होने पर भी इतनी रोशनी देते, कि पथिक अपने पथको पहिचान सकता। किन्तु अब पथिकको न चाँद, न तारे, न आकाश न भूमि न वृक्ष न दीवार दिखलाई पड़ती थी। सिर्फ साथ चलते कुत्ते और भेड़े पथप्रदर्शन करतो। पहिले चरवाहे जबर्दस्ती कभी-कभी कठिनाई से आँख खोलकर देखते। लेकिन जब आँसू बहाते-बहाते आँखे

सूज गयीं तो उन्हें बन्द करना पड़ा। धीरे-धीरे आँख खोलनेकी भी शक्ति न रही। चरवाहोंके सिर और मुँहपर पड़ी धूल ललाटके पसीने और आँखोंके आँसुओंसे भीग कर कीचड़ बन गयी, जिससे उनकी सूरतें मिट्टीकी बनी मूरतों जैसी दिखलाई पड़ती। धूलिने उनके आँख, मुँह, नाकको बन्द-सा कर दिया था। लोहारकी भाथीकी तरह उनकी नाक धूल खींच धूँआ बाहर कर रही थी। उनके कानोंमें इतनी धूल पड़ गयी थी, कि दूरसे आती 'कू-कू'की आवाजके सिवाय कुछ नही सुनाई पड़ता था।

इसी तरह भेड़ोंको लिये चरवाहे दर्गमूके तटपर पहुँचे। अब न चरवाहोंको और न भेड़ों ही को एक भी कदम आगे चलनेकी हिम्मत थी। भेड़ोंको चरनेके लिये छोड़ चरवाहे भी अपने को धो-धा साफकर वृक्षोकी छायामे विश्राम करने लगे। बीरीकी छाया और दर्गमके किनारे बहते शीतल मन्द समीरने कब्रसे निकाले इन मुर्दोमे नयी जान डाल दी। हर साँसके साथ भीतर जानेवाले शुद्ध वायुने उनके गले और फेफड़ेको शुद्धकर हृदयको पूर्ववत् फिर गतिशील बना दिया। धीरे-धीरे भूख मालूम हुई और उन्होंने सूखी रोटी और पनीरको बहते पानीके साथ खाया। भेड़े भी तृण-जलसे पेट भर विश्राम लेनेके लिये भूमिपर लेटी और उन्होंने अपने खुरोंसे खुजलाते आँखों और कानोको शुद्ध किया। सूर्य भी पुनः उदय हो अपनी प्रभासे दर्गमूके जलको प्रभासित करने लगा। सूर्य जितना ही नीचे ढलता गया हवा उतनी ही अधिक आनन्दप्रद होती गयी।

रात वहाँ बिता दूसरे दिन प्रातः फिर चरवाहोंने भेड़ोंको हाँका। बाजारने भी अपनी भेड़ोंपर एक एक करके नज़र डाल सन्तोषके साथ रास्ता लिया।

चरवाहे इसी तरह पड़ाव पार करते जुमा-बाजार और तीलक् होते समरकन्द शहरके पास पहुँचे और मालिकोंके कथनानुसार शहरमें

न जा कावर्जार गाँव, और दश्तक नहरके किनारे-किनारे ज़ामिन् और पिस्तामजारके बागोंके पाससे होते दश्ते-सोख्ताकी ओरसे फिर दर्गामके किनारे चलने लगे। बागोके बीच धूल और खाकने उन्हें पहलेसे भी अधिक परेशान कर दिया, क्योकि यहाँ वृक्षोकी शाखाये भेड़ोकी खुरोंसे उड़ी धूलको आकाशमे अधिक दूर उड़ने नही देती थी और प्रत्येक धूलि-कण उड़कर एक क्षण बाद अपनी जगह आ गिरता था, मानो वसन्तकी वर्षाकी भाँति धूलिकी वर्षा हो रही थी।

बाज़ार जब कावर्जार और पिश्तामजारके बागोके बीच धूलि-समुद्रमें डूबता भेड़ोके पीछे-पीछे जा रहा था—उसी समय एक बागकी दीवारके पास उसने किसीको रोते-चिल्लाते सुना। रोने वाला कह रहा था—हे पुण्यात्मा पथिको! हे दयालु चरवाहो! मेरे ऊपर दया करो। लकवा मारनेसे मुझे हिलने डोलनेकी ताकत नही है। मेरी मदद करो और उस फाटकतक पहुँचा दो। भगवान् तुम्हारी भलाई और इच्छापूर्ति करे।

बाजारको भलाई और इच्छा-पूर्तिकी बहुत परवा थी। उसने पाँच मिनट समय नष्ट होनेका ख्याल न कर बीमारको उठा दूसरे दरवाजेपर पहुँचाया और उसका आशीर्वाद ले वह फिर अपनी भेड़ोमे पहुँच गया।

२५

उड़ता दान

चरवाहे दश्तसोख्ताकी बालुका-भूमिसे हो जब दर्गाके किनारे पहुँचे, तो बाजारने अपने स्वभावके अनुसार अपनी भेड़ो पर नजर डाली और "दो दुम्बे नहीं, दो तगड़े दुम्बे नही" कहकर वह चिल्लाने लगा। तो भी उसे विश्वास नही आया कि दुम्बे गुम हो गये। एक घने बसे शहरके पास दो भेड़ोका गुम होना विश्वास करनेकी बात नहीं थी। उसने फिर

एक एक करके भेड़ों पर नजर दौड़ाई। सचमुच ही दो नही थीं। उसकी भेड़ोंके एक कानपर मालिककी चारखानावाली मुहरके चिह्न लगे हुए थे। उसने अपनी भेड़ोंको दूसरी भेड़ोंसे अलग करके किनारेकी तरफ हाँका और एक बार फिर उन्हे देखा। वहाँ दो मोटी भेड़े नही थी। अब भी उसके मनको विश्वास नही हो रहा था। उसने साथियोसे कहा। उन्होने भी खोजनेमे मदद दी, लेकिन कही पता नही लगा।

अब इसमे सन्देह नही रहा, कि दो भेड़े गुम हैं। लेकिन बाजारका मन मानता न था। वह इसके लिये तैयार नही था, कि दो भेड़े इस तरह गुम हो जायँ, अर्थात् एक सालकी मिहनतकी कमाई बरबाद हो जाय। लेकिन वस्तुस्थिति यही थी, चाहे वह कितनी ही नापसन्द हो, किंतु उसे कबूल करना ही था। उपाय क्या था? उसने चाहा कि पीछे लौटकर रास्तेको फिरसे देखे-भाले, क्या जाने कही पता लग जाये। लेकिन साथियोने यह कहकर मना किया—भेड़ कभी भी अपने मनसे झुण्डसे अलग हो नही रुक सकती। यहाँ भेड़ियेका होना भी सम्भव नही। जान पड़ता है, उन्हे कोई दोपाया भेड़िया उठा ले गया।

बाजार इसे माननेको तैयार न था। साथियोको छोड़ नदीके किनारे किनारे दूरतक जा उसने सिरमे धूल डाली और थोड़ी देर दर्गम्के तट पर बैठ इस दुर्घटनाके लिये शोकाश्रु बहाता रहा, फिर मनको तसल्ली देते बोला—कोई उपाय नही, भगवदिच्छाबलीयसी। भाई मरा, बैल-जोड़ी और जमीन हाथसे चली गयी, जीवन-सहधर्मिणी और सारे सकटोकी सहचरी मेह्-माह भी छोड़कर चली गयी? इस-तरहकी विपदाये जिसके ऊपर भी पड़ती, उसका दिमाग खराब हुए बिना नही रहता। उन विपत्तियोके सामने दो भेड़ोका गुम होना, एक सालकी मजूरीका बर्बाद होना कुछ भी नही। इसे बर्दाश्त करना चाहिये। यदि जीवन रहा तो अगले साल इस क्षतिको पूरा कर लूँगा।

बाजार इस तरहकी समझकी बातोंसे दिलको समझा दर्गम्के पानीसे हाथ-मुँह धो फिर अपने साथियोंके पास लौट आया।

× × ×

भेड़-सौदागर समरकन्दके दलालो और कसाइयोसे मिलकर अपने चरवाहोंके पास आये। अजीमशाहने अपनी दो भेड़ोके गुम होनेकी बात सुनकर तनिक भी खिन्न न हो कहा—

खैर, कोई हर्ज नही, दो भेडे गुम हुई, सिरकी निछावर। फिर भेड़े आजायेगीं। सलामती चाहिये। गुम हो गयी चीज "उड़ते दान"में गिनी जाती है।

अजीमशाहने इस तरहकी फिलासफी द्वारा अपने नौकरको आश्वासन दिया। भीतर अपने दिलमे वह बहुत खुश था और अपने आपसे कह रहा था :

—दो भेड़े गुम हो गयी मेरा क्या नुकसान ? उनकी क्षति-पूर्ति बाजारको देनी होगी, जिसे वह भेड़ोको समरकन्द पहुँचानेसे पहले ही दे चुका है। यह काम बाजारके लिये भले ही हानिकर हो, लेकिन मेरे लिये तो यह भगवान्का वर है। यदि बाजार मेरा कर्जदार न होगा, तो सम्भव है, वह मेरा काम छोड़कर दूसरेके यहाँ चला जाय। ऐसे मिहनती चाकरको सदा कर्जदार और मुहताज बनाये रखना चाहिये। दो भेड़े गुम हुई, यदि दो भेड़े और भी गुम हो जॉय, तो और भी अच्छा, क्योकि तब वह अगले सालके लिये भी मेरा बन्दा हो जायेगा।

२६

ज़कातची*

एक बाग था, जो चारो ओर छोटी दीवारसे घिरा था। भीतरकी

---

* चुगीका अफसर।

ओर एक छोरसे दूसरे छोर तक थाले बने थे, जिनमें सेब, ज़र्दालू, गिलास, आल-बालू, दूलाना, नाख, दिल-अफरोज, आलूचा, मुरूद और दूसरे मेवोंके वृक्ष पॉतीसे लगे हुए थे।

लेकिन वृक्षोंके शिखर शुष्क और शाखाये टूटी, मेवा न देने लायक रह गयी थीं। बागमे एक तरफ करीब एक बीघा जमीनमे अगूरकी बेले लगी थी, जिनके खुत्थे बहुत पुराने और बेले साल दो सालसे न छॉटी गयी थी। कुछ क्यारियोमे बेले बीरी या जर्दालूके वृक्षोसे लिपटी हुई थी। इन क्यारियोकी अधिकाश शाखाये यद्यपि सूखी-सी थी, किन्तु कितनी ही बेलोमे अगूरके नये हरे गुच्छे दिखलाई पड़ रहे थे। बागकी दूसरी ओर नहरका तट-भाग टूटा-फूटा और गिर गया था, जो उसके स्वामीकी दुरवस्थाका परिचय दे रहा था। बागके अन्दर घुसतेही सामने एक पुरानी दालान थी, जिसके आगे एक कुण्ड था। कुण्डके किनारे सरोके वृक्ष छाया किये हुए थे।

कुण्डकी बारीपर लम्बे पडे चार आदमी आपसमे बात करनेमे लगे थे। उनमेंसे एकने दूसरेसे कहा—इस्ताम्कुल्! यदि थोड़ा परिश्रम करता, तो यह तेरा बागही एक सालकी मुसल्लिसी (शराब)के लिये अगूर दे देता और अगूरकी फसलके समय पड़ोसी भी मेरे और तेरे हाथोसे कष्ट न पाते।

इस्ताम्कुल्ने जवाब दिया—रुस्तम आक्का! खूब बाते मार रहे हो। खुद अपने बागको इससे भी ज्यादा चौपटकर चुके हो और यहॉ आकर मुझसे लन्तरानी झाड़ रहे हो। मै और तुम खुदाके खास बन्दे हैं। खुदा नही चाहता कि हम तुम काम करे। हमारा बाग और चारबाग (मेवाबाग) हमारे पड़ोसियोके बाग हैं, जिनमे वे मिहनत करते हैं और हमारे लिये अगूर तैयार करते हैं। अगर आस पासके हर बागसे पॉच-पॉच पूत् (पन्द्रहसेरी) की भी निशाचर्य्या (चोरी) करे तो पचास पूत्, यदि दस-दस पूत् करे, तो सौ पूत् हमारे हाथ आयेगा।

यदि उसकी मुसल्लिसी डालें, तो साल भर पानीकी जगह सिर्फ मुसल्लिसी (मदिरा) ही पीते रह सकते हैं।

—खानाबाद शम्शीने अपने बागको खूब आबाद कर रखा है न ? कल दीवारसे झाँककर मैंने देखा कि कियारियाँ पत्तेकी जगह अंगूरोंसे ढँकी हुई हैं। ऐसे बागोंसे बीस-बीस पूत् भी ले, तो कोई हर्ज नहीं—कहते तीसरे आदमीने बीचमें टोक दिया।

—रोज़कुल्! अधिक लोभ न कर, सुना नहीं "कम कम खा, सदा खा" ? फसल बहुत अच्छी समझकर यदि एक बागसे इकट्ठा बीस पूत् निकाल लें, तो बागदारकी जान निकल जायेगी। और वह चोर पकड़नेमें जानतक लड़ा देगा। सयमके साथ थोड़ा-थोड़ा खाना ठीक है। यदि हम जुल्म पर उतर आयेंगे, तो जान लड़ाकर मेहनत करने वाला बागदार हमारे पीछे पड़ जायेगा—कहकर रुस्तमने दोस्तोंको शिक्षा दी।

एक कोनेमें साँस बन्द कर बैठे शाकुल्ने हसरतके साथ कहा—सत्यानाश हो, नैकश्लेका। वह हमारे शहरमें शराब-खाना और पीवा (पानशाला) खोलकर भुवन-मोहिनी सुन्दरियोंको चषकवाहिनी बना मौजसे बैठा है और हमको उसने इस कुपथमें बर्बाद होनेके लिये छोड़ दिया है। हमारे बाप-दादा कब शराब पीकर बड़े हुए थे ? यदि हम इस कुपथमें न पड़ते, तो हमारे बाग शम्शीके बागसे भी और अच्छी तरह आबाद होते।

—छोड़ो इन बातोंको, एक दूसरी बात सुनो। अंगूर करीब-करीब मीठा हो चुका है। पिछले सालकी मुसल्लिसीसे एक ठिलिया बाकी रह गयी है, उसे भी पीकर समाप्त करें और सभी घड़ोंमें नया अंगूर डाल नयी मुसल्लिसी तैयार करें—बाय-पुत्र बेदारने कहा।

हस्तामक़ुल्—यह ठिलिया कहाँ थी ! मैंने जुमाके दिन बहुत खोजा

लेकिन न पाया। ख्याल किया, किसी दिन नशेमें उसे भी खतम कर डाला होगा।

—पारागोरकी क्यारीमे रखे था।

—ओ अभागे!

—उठ, जा ले आ, पीकर खाली करे।

—मदिरा भी साथियोंके साथही पीनेमे अधिक आनन्द देती है, लेकिन घीचूता बिरयानी गोश्त (भुनामास) या सीख-कबाब न हो, तो मदिरापान क्या?—रोजकुल्ने कहा।

—गोश्त नही तो बकला(टोमाटो)जान ही सही। दस बकला-जान, चारदाना पियाज और एक बोतल मदिरा, फिर मजा आ जाता है—रुस्तमने कहा।

"ठहरो ठहरो"—कूचाकी ओर निगाह करते नौरोजने कहा—"कूचेमें भेड़े जा रही हैं, अगर हम उनमेसे जकात (चुगी) ले सके, तो बिरियानी गोश्त भी हो सकता है और सीख-कबाब भी।"

—सचमुच बहुत-सी भेड़े जा रही हैं, किस तरह हाथ साफ करें?

नौरोजने कहा—यह आसान है रोजकुल! उठ, जा दीवारके पास लम्बा पड़ रह। तेरे पीछे रुस्तम आका रहेगा। मै रास्तापर जा सबसे पीछे आनेवाले चरवाहेको बातमें फसाता हूँ। जिस वक्त मुझे बात करते सुने, रोजकुल भेड़का पैर मजबूतीसे पकड़े और रुस्तम आका उसे खीचकर अन्दर करले। और इस्तामकुल्! भेड़के गलेको मजबूतीसे बाँधनेके लिये तू एक रस्सीको तैयार करके रख जिसमे वह "मा" न कर सके।

रोजकुल्—कितनी भेड़े पकड़ूँ?

इस्तमकुल्—जितनी पकड़ सके।

रुस्तम्—नही, कहावत है "चोर भी हो लेकिन न्यायके साथ"

इसलिये बुखाराके जकातचियों (चुगीवालों) की तरह जो कुछ हाथ आये, सबको हड़पना नही चाहिये। एक या दो पकड़ना, बस।

योजना बनानेवाला आदमी "उठो, जल्दी, समय न बीत जाय" कह, उठकर दीवार फाँद कूचेमे आया और बीमार बन दीवारके पास पड़ रहा।

इसी बीमारको बाजारने अपनी मनमुराद पूरा होनेकी नियतसे उठाकर दूसरी जगह पहुँचाया और उसकी दो भेडें 'उड़ता दान" हो गयीं।

२७

यह भी उड़ता दान

बुखारा शहरके किलेके दक्षिणवाले मैदानमे—जो कि नमाजशाह दरवाजासे निकलनेपर मिलता है—सैकड़ों भेड़े अलग-अलग झुण्डोंमें जमा थी। मैदानमे प्रवेश करनेवाले स्थानपर फर्शके ऊपर गद्दा बिछा हुआ था, जिस पर सिपाहियाना पोशाकमे एक आदमी पालथी मारे बैठा था। आदमीकी बगलमे हर तरहकी पोशाकोंका एक बगचा रखा था, दूसरी ओर दो आदमी सामने रजिष्टर और कलमदान रखे बैठे थे।

सिपाहियाना पोशाकवाले आदमीने "पायकी" कहकर आवाज दी।

—हॉ तकसीर (क्षमा निधान) ! पानी ताजा करके अभी लाता हूँ,—कहकर पायकीने जवाब दिया और हाथका हुक्का लिये मैदानके बाहर कुण्डके पास जाकर गड़गड़ेके पानीको गिरा, कमरसे लटकते थैलेमेसे लत्ता निकाल उसके सिर, गर्दन, नली और चिलमको अच्छी तरह पोछा। फिर सीखसे हुक्काकी नलीको साफकर गीला तम्बाकू चिलममें रखा और ताजा पानी डाल चिलम ऊपर रख जल्दी-जल्दी मैदानमें

आया और सिपाहियाना आदमीके सामने "ताजा पानी" कहकर उसने निगाली उसके मुँहमे दे दी।

आदमीने एक-दो फूँक खीचनेके बाद पूछा—क्या हाल है तेरा?

आपकी कृपासे रोजही हँड़िया चढानेके लिये मिल जाता है—कह सलाम करके पायकी "ताजा पानी" कहते भेड़ोंके झुण्डमें घूमने लगा।

× × ×

बाजारमें बड़ी चहल-पहल थी। बीस-बीस पचास-पचास दुम्बे बिककर जहाँ-तहाँ खड़े थे, उनमे अजीमशाहकी भी बीस भेड़े थीं, जिन्हें फतहुल्ला भेड़-दलालके द्वारा एक बुखारी कसाईने खरीदी थीं। कसाईने दाममेसे दो सौ तका गिनकर बाकीके लिये अगले बुधकी करार की थी। अजीमशाहने तकोंको गिनकर सामने रखा और चाहते थे कि उन्हें अपने दूसरे तकोंमें मिला दे, इसी समय पायकीने "ताजा पानी, ताजा पानी" पुकारते वहाँ आ पहुँचा और हाथके हुक्केको बीचमें कर वहाँ बैठे हर एक आदमीके सामने निगाली फिरायी। जब फतहुल्लाने हुक्का पीना चाहा, तब पायकीने एक हाथमे ले चिलमको 'फू फू' करके जगाते दूसरे हाथसे निगालीको फतहुल्लाके मुँहमे देना चाहा। जलती राख उसके दूसरे हाथपर गिर पड़ी और हाथकी झिझकसे हुक्का ठीक उसी जगह जमीनपर गिरा, जहाँ अजीमशाहके तके चिने हुए थे। पायकीने बड़ी होशियारीसे हुक्काको न लुढ़कने दे फुर्तीसे उठा लिया और फतहुल्लाको पिलाकर "ताजा पानी" पुकारते बाजारमे चला गया।

× × ×

आज अजीमशाहका सौदा खतम हो गया था। उन्होंने सारे मिले पैसोंको हिसाब करके देखा, तो मालूम हुआ, कि कुछ तके कम हो रहे हैं। दुबारा गिना फिर भी कम। जब विश्वास हो गया, कि तके गुम हैं, तो चिल्लाकर आसमानको सिरपर उठाते 'चोर हरामी' और क्या-क्या कहकर गाली देने लगे।

बाजारने समरकन्दमें दो दुम्बोंके गुम होनेके वक्त मालिककी तसल्ली देनेवाली बातका खयालकर सहृदयता प्रकट करते हुए कहा—मालिक ! हरज़ नहीं, गुम हुई चीज "उड़तादान" है। खुदा उसके बदलेमें दूसरी चीज देगा।

अजीमशाहने आपेसे बाहर होकर कहा—उड़ता दान ? उड़ता दान उन लोगोंके लिये है, जिन्होंने अपनी खुशीसे कभी खैरात और दान न दिया या न देनेकी शक्ति रखते हैं। और मै ? मै अपनी आमदनी और बचतके आधेको सदा दान-पुण्यमे खरच करता हूँ। तेरी बीबीके मुर्देको दफनाया वह भी खैरात थी, तुझे और तेरे बेटेको खिलाया-पहनाया, स्थान दिया यह भी खैरात, कितने ही बेचारोको काम देता हूँ यह भी खैरात। बादशाहको ज़कात और व्यवस्था कर देता हूँ, ईदकी नौछावर देता हूँ, कुर्बानी करता हूँ यह सब खैरात हैं। इसके बाद "उड़ते दान"की मुझे क्या जरूरत ? मुझसे बढकर खैरातदेनेवाला खुदाका बन्दा दूसरा नहीं। तू जा अपना काम कर, मुझे उपदेश देनेकी कोशिश न कर।

अजीमशाह "क्या यह शहर बे-बादशाहका है" कहते उठे और बाजारके मैदानमे गद्देपर पलथी मारकर बैठे आदमीके सामने जाकर बोले—ज़कात्ची बेक ! मैं बादशाहको ज़कात देता हूँ, व्यवस्था-कर देता हूँ, बादशाही बाजारमे माल बेचता हूँ, बादशाही बाजारमे दिन-दहाड़े मेरा पैसा चोरी चला गया। यहाँ-कहाँ व्यवस्था रही ? फिर मै किसलिये ज़कात और व्यवस्था-कर दूँ ? आप बाजारके हाकिम हैं, मुझसे जकात लेते हैं, इसलिये चोरको पकड़कर मेरे पैसे दिलवाइये।

ज़कातचीने इसी झगड़ेके सम्बन्धमें आकर खड़े फतहुल्लासे धीरेसे पूछा—इस कामको किसने किया होगा ?

—मैं खयाल करता हूँ यह काम शेरका है वही वहाँ आया था। —फतहुल्लाने जवाब दिया।

—शेर पायकी !

—हॉ तक़सीर !

"ओ अभागे" कह ज़कातचीने अज़ीमशाहकी तरफ मुँह करके "अच्छा, हम तहकीकात करेगे" फिर अपने आदमीसे कहा "सन्दिग्ध आदमियोंको पकड़कर मीरशब (कोतवाल)खानामें भेजो ।

आदमीने पूछा—किनको ?

—किन्ही मामूली गरीबोंको । खाते-पीते आदमी चोरी थोड़े करते हैं, चोर हमेशा-भूखे नंगोंमे ही से होते हैं ।

—बहुत अच्छा तकसीर !—कहकर आदमी आज्ञाको कार्य रूपमे परिणत करनेके लिये चला गया ।

अजीमशाहको जकातचीकी इन सारी कोशिशोसे अपने पैसेके लौट आनेकी उम्मीद न थी । धनुषसे छूटा तीर कहॉ लौट कर आता है ! अजीमशाहका दिल ठढा नही देखकर जकातचीने अधिक जकात देने वाले दूसरे भेड़-सौदागरोकी तरह अजीमशाहको भी एक बादशाही जामा पहिनाकर जनाबआलीके लिये दुआ करा खुश कर दिया ।

बाजारसे भेड़ोके सौदागर, दलाल और कसाई सब चले गये । चरवाहे भी बाकी बची भेड़ोको झुण्ड-झुण्ड करके चर-भूमिकी ओर ले चले ।

जकातची भी अपनी चीजोंको समेटकर आदमियोंके जिम्मे लगा रवाना होना चाहा, इसी समय "ताजा पानी" पुकारते पायकी दिखलाई पड़ा । जकातचीने कहा—शेर !

—लब्बैक, तकसीर (जीह्मा-निधान) !

—कितना उड़ाया ?

—दश तका तकसीर !

—झूठ न बोल, मैंने सुन लिया, ज्यादा था ।

—नहीं तकसीर ! आपके सिर की क़सम, यदि दस तकासे एक पूल (पैसा) भी ज्यादा हो।

—अच्छा, तो उसकी जकात ला।

पायकीने थैलेमे हाथ डाल ताँबेके पैसोंमेसे कालिख लगे पाँच तकोंको अलगकर जकातचीके सामने रखा। जकातचीने जाजिमसे पोंछकर तकोंको अपनी जेबमें डालकर कहा—शेर ! मेरी शिक्षा सुन, ऐसा काम बड़े सौदागरों और बायोंके साथ न किया कर। बड़े लोग जरा-सी बातमे जमीन आसमान एककर हर जगह न्याय करानेके लिये पहुँच सकते हैं। जो कुछ करना हो साधारण लोगोके साथ कर, क्योकि उनकी पुकार कहीं नही पहुँचती। देख, वह बाय हल्ला मचाते हुए मेरे पास आया। खैर, फतहुल्लाने सहायता की और बात वही दबा दी गयी। मैंने जनाब-आलीकी सरकारकी तरफसे जामा पहिना दिया, बाय लोगोंके साथ ऐसा करना ही होता है, चाहे वह जकात (कर)के नामपर कुछ भी देवे। गरीबोंसे हम एककी जगह दो-दो तीन-तीन कहकर जकात लेते हैं और उन्हें कुछभी नही देते, तो भी वह दमतक भी नहीं मार सकते।

शेर—आपके सिरकी कसम बेगीजान ! जकात उनसे कौन लेता है, लेकिन सबपर हाथ साफ करते तीरको निशान पर ठीक लगाना मुश्किल है। वह कभी-कभी भूलसे हरिनकी जगह भेड़ियेपर चल जाता है।

वह फिर 'ताजा पानी' पुकारते बाजारसे बाहर चला गया।

२७

ऋणग्रस्त

बुखारासे लौटनेके बाद मालिकने हिसाब करना चाहा और एक रोज बाजारसे बातचीत शुरू करते कहा—यद्यपि बुखाराकी यात्रा मेरे लिये बहुत अच्छी नहीं रही, किंतु तुम्हारे लिये भी वही बात हुई, तो भी

हिसाबको रख छोड़ना अच्छा नहीं। यद्यपि दूसरी भेड़ोंको और भी ज्यादा दामपर बेचा, किंतु तुमसे गुम हुई दोनों भेड़ोंका दाम पचीस तकाके हिसाबसे पचास तंका रखता हूँ।

बाजार—भेड़े कितनेमें खरीदी गई थीं?

—उनकी खरीदसे तुम्हें क्या मतलब? पहले तो हरेक भेड़को मै अलग-अलग नहीं खरीदता, कि उनकी कीमत मालूम हो। मै दस-दस बीस-बीस करके एक साथ खरीदता हूँ। उनमे कोई दस तकेकी होती है, तो कोई चालीस तकेकी भी होती है। दूसरे यह कि खरीदनेके बाद ६ महीने वह मेरे पास रही। मेरा पैसा उनपर रुका रहा। मैंने उन्हें खिला-पिलाकर मोटा किया, जिसमे समरकन्दके बाजारमे पहुँचकर तका बनें। इस तरह खरीदका दाम बतलाना मुश्किल है। अच्छा यही है कि तुम्हारे लिये असल कीमतसे कुछ कमही का हिसाब करूँ, जिसमे यदि मेरे हाथसे जाय तो तुम्हारे हाथमें रहे। तुम गरीब आदमी हो, मेरे लिये दुआ करोगे।

हाँ तो हिसाबके मुताबिक तुमपर मेरा पचास तका ऋण रहा। बच्चेके साल भरके खाना-कपड़ेका भी हिसाब करनेपर वह भी पचास तका होता है, इस प्रकार सारा ऋण पचास तका हुआ।

—लेकिन क्या।बच्चा सालमे पचास तका खायेगा—कहकर बाज़ारने आश्चर्य किया।

मालिक—"बछड़ा घास-घर खाली करता है और बच्चा रोटी-घर" की कहावत नहीं सुनी?।एक बच्चा एक सालमें एक बड़े आदमीसे भी ज्यादा खाता है, लेकिन मैंने तुमपर दया करके कमका हिसाब लगाया। यह ठीक है यदि तुम न होते तो खुदाके नामपर मैं उसे खिलाता-पहनाता, किंतु जब तुम जिंदा हो, हाथसे काम भी करते हो, तो मैं तुम्हारे बच्चेको पालूँ-पोसूँ यह उचित नहीं। मैं वैसा करना चाहूँ, तो भी तुम्हें इन्कार करना चाहिए। यदि बच्चा घरका एक दो काम कर भी देता है, तो भी

उसके बदले मैं खिलाने-पिलानेका बोझा नहीं उठा सकता, क्योंकि उससे जो काम मै लेता हूँ, वह केवल सिखलानेकी नीयतसे ही, अपने लाभके ख्यालसे नहीं। अब तो उसे सीखनेके लिये कहना भी हानिकर मालूम होता है। एक दिन गाय चरानेके लिये कहा, तो वह उसकी घटी गुम कर आया। खैरियत यह हुई, कि किसी राह चलतेको मिली और वह पहुँचा गया। अच्छा, तो तुम मेरे सौ तकेके करजदार हुए। अब यह तुम्हारी मर्जी है, यदि चाहो तो इसके लिये एक हैंडनोट लिख दो और मेरे यहाँ काम करो, यदि नही चाहते तो पचास तका नगद लाकर मुझे दे दो। तुम्हारे छः महीनेके कामकी मजूरी बच्चेकी छः माहकी खुराक-पोशाकमे बराबर हो गई। आगे जहाँ खुशी हो वहाँ जाओ।

यद्यपि अब बाज़ारकी सबसे अधिक इच्छा यही थी, कि इस घरसे जल्दीसे जल्दी चला जाय, लेकिन उसकी नजरमे कोई ऐसा आदमी नहीं आया, जो मालिकके हिसाब-किताबको बराबर कर देता। अतमे उसे हैंडनोट लिख देनेको राजी होना पड़ा। अजीमशाहने बाजारको काज़ीके मिर्जा (लेखक) के पास ले जाकर कहा—इस आदमीकी तरफसे मेरे नाम सौ तकेका एक करारनामा लिख दीजिये।

मिर्जाने पूछा—यह सौ तका लाभ-सहित रखना चाहते हो या धर्म-ऋणके तौर पर देना चाहते हो।

अजीमशाह—आजकलके जमानेमे धर्म-ऋणका क्या काम ? बेकारका पैसा कहाँ है ? जरूरत पूरा करनेके लिये कर्ज़ देता हूँ, यही धर्म मेरे लिये पर्याप्त है।

—सौ तकापर प्रतिमास कितना पैसा ?

—आप ही बतलाइये प्रतिमास कितना पैसा ठीक होगा ?

—सभी जानते हैं, यदि कर्जखोरके पास माल-मिलकियत हो, अपनी जमीन-हवेली गिरो रखनेको हो, तो हर बीस तकापर प्रतिमास आधासे

एक तका तक होता है। यदि पासमें कोई चीज न हो तो लोग बीस तका-पर प्रतिमास दो तका लेते हैं।

—मेरे कर्ज़दारके पास कोई माल-मिलकियत नही है, न वह स्वयं ही इस प्रदेशका रहनेवाला है। इसलिये एक काम करें, कि 'न सीख़ ही जले न कबाब ही', मै आधा तका मासिक लेनेको राजी हूँ।

—यह आप ही की हिम्मत है। लेकिन जब कर्जदारके पास गिरों रखनेके लिये चीज न हो, तो कागजपर सूद लिखना ठीक नही, क्योकि वैसा करनेपर वह हराम हो जायगा और शरीयत (धर्मशास्त्र)के अनुसार नही होगा। अगर कोई चीज गिरों रखनेको होती तो 'लाभ'को उसी चीजकी पैदावारका इजारा (लगान) मानकर कागज पर शरीयतके अनुसार लिखा जा सकता था। अब रास्ता यही है, कि साल भरके लाभको कर्जकी रकमपर रख उसके लिये एक करारनामा लिखा जाय।

—बहुत अच्छा, यह काम आपका है। ऐसा करे कि काम शरीयत-सम्मत हो।

मिर्जाने सौ तकाके लाभका हिसाब तीस तका करके एक सौ तीस तकाका करारनामा बाजारकी तरफसे लिख दिया, और बाज़ारको मालिक-का कृतज्ञ होनेकी शिक्षा देते हुए कहा—मालिकका शुक्र मानो। यदि उनकी जगह कोई दूसरा आदमी होता, तो बीसपर दो तकाका हिसाब करके तुम्हे दो सौ बीस तकाका कर्जदार बनाता। मालिकने तुमपर बड़ी मेहरबानी की।

मिर्जाने चपरासीको बुलाकर उसके हाथमे कागज दे करजदार और महाजनको 'शरीयत-पनाह' (धर्मरक्षक) काज़ीके पास ले जा मुहर करानेको कहा। चपरासीने उन्हें ले जाकर काजी-खानाके दरवाजेके सामने रखी चटाईपर बिठा कागजको काजीके हाथमे दिया। काजीने कागजपर नजर दौड़ाकर कहा—बाज़ार!

—लब्बैक!

—मुल्ला अज़ीमशाहसे एक सौ तीस तका लिया ?

—लिया।

—जिस वक्त भी मालिक माँगेगे, इस पैसेको काजीखानामे आकर उनको दे देगा ?

—हाँ।

चपरासीने उकड़ूँ बैठकर मुहरको काज़ीके सामने रख दिया। काजीने कागजपर मुहर कर दी। फिर चपरासीने खड़े हो कागजको काजीके हाथसे लेकर पातितजानु बैठे कर्जदार और महाजनको भी 'खड़े हूजिये' कहा।

काजीने मुल्ला अजीमशाहकी तरफ निगाह करके कहा—मुल्ला अज़ीमशाह ! आप तो गूलरके फूल हो गये। कभी हमारे यहाँ आतेही नहीं। अदर आइये, कुछ बातचीत करे।

अजीमशाह 'बहुत अच्छा तकसीर !' कहते देहलीके अदर काजीके पास गये। काजीने उनका सन्मान करते आधा खड़े हो बैठनेके लिये जगह बतलाई। अजीमशाहने वहाँसे कुछ नीचेकी तरफ बैठकर जनाब-आली (बुखारा-अमीर), ईशान काजी (न्यायाधीश महाशय) और मखदूम जानो (काजी-पुत्रो)के लिये दुआ की। काजीने 'लड़के ! दस्तरखान और चाय ले आ' कहकर अपने नौकर लड़केको हुक्म दिया। फिर अजीमशाहसे बात करते बुखारा-यात्राकी बात छिड़ गई, जिसपर उलहना देते काजीने कहा—बुखारा जा मुझे भूल गये। और साग-सब्जी कोई सौगात मेरे लिये नही लाये ! इस बार अगर बुखारा जायँ तो मुझे न भूलियेगा।

अजीमशाहने कुछ शर्माकर कहा—बुखारा बाज़ारमे भेड़ोका पैसा कुछ चोरी चला गया, जिससे मन खराब हो गया और काम आधा-तिहा करके ही लौट आया। आगे जानेपर हुजूरकी सेवा करके अपराधकी क्षमा माँगूँगा।

काजीने अफसोस करते हुए कहा—खुदा उसका बदला एककी जगह दस दे। कितनी रकम चोरी गई ?

—बहुत ज्यादा नहीं। थोड़ेसे तके गये। तो भी पैसा खोए जानेका किसे अफसोस नहीं होता।

—अलबत्ता, अलबत्ता, 'मोमिनका माल मोमिनका खून' कहा है। बदनसे खून चाहे थोड़ा भी निकले, लेकिन कौन अफसोस नहीं करता। बुखाराशरीफके हाकिमोंसे अर्ज नहीं किया ?

—बाजारके जकात्चीसे कहा। उसने दो-तीन सदिग्ध आदमियोको बँधवाकर मीरशबखाना (कोतवाली) भिजवा दिया मैं और ज्यादा इस बातके पीछे नहीं पड़ा।

—जकात्ची इससे अधिक कुछ नही कर सकता था। क्यों नहीं जनाब काजी-उल्-कुज्जात ईशान काजी-कलाँ (महान्यायाधीश)के पास जाकर निवेदन किया ? वह चोरको पकड़कर शरीयतके अनुसार पैसा दिलवा देते।

—थोड़ीसी रकमके लिये हजरत ईशान-कलाँको हैरान करना मैने पसद नही किया।

—क्यो ? चाहे ईशान काजी-कलाँ हों, चाहे दूसरे काजी या हाकिम, सभी आप जैसे धनवानोंकी मदद करनेहीके लिये हैं। हमारे बाग, चारबाग (मेवाका बाग) आप हैं। हमारा आश-पुलाव, हमारी रोटी, हमारा सब।कुछ पहले दौलत-जनाबे-आली (बादशाहकी सरकार) से है; दूसरे आप।जैसे धनवानोसे।। साथ ही यदि आप इसके बारेमे ईशान-कलाँसे निवेदन करते, तो इसके लिये उनको मुहराना (मुहर लगानेका पैसा) और चपरासियोंको खिदमताना मिलता। ईशान-कलाँ भी पैसेको बुरा नही समझते !

—जी तकसीर !

—मेहरबानी कीजिये, रोटी आ गई, भोजन हो।

कुछ खा लेने पर 'तकसीर! बहुत खा चुका' कहकर अजीमशाहने हाथको आधा खीचकर फातिहा पढनेके लिये काजीसे निवेदन किया। काजीने भी हाथ खींच जनाबआली (बादशाह)के लिये दुआकर फातिहा पढा। लड़केने आकर दस्तरखानको समेटा। अजीमशाहने बातचीतको समाप्त समझ सीनापर हाथ रखकर कहा—अब जानेकी आज्ञा मिले।

काजीने 'हाँ जाना चाहते हैं, अच्छा। इतने अल्प-दर्शन न बने। जब तब आते रहिये' कहकर हाथोको उठा दुआ करके मेहमानको बिदा किया। अजीमशाह भी हाथोको मुँहपर फेर मेहमानखानेके दरवाजे और देहली तक बिना पीठ फेरे लौट एक पार्श्व हो बाहर आये।

बाजार अब तक मिर्जाखानेकी दीवारके सहारे बैठा दिलमे सोच रहा था—मेरे मालिका काजीके साथ इस तरहका चोली-दामनका सबध है। ऐसी अवस्थामे वह जितना भी चाहते, उतनेका कर्जदार बना मुझसे लिखवा लेते। मिर्जाकी बात सच है, वस्तुतः मालिकने मुझपर बडी मेहरबानी की।

अजीमशाह जब काजीके पाससे बाहर आये तो चपरासीने कागजको चौपते कर उनके हाथमे थमाते हुए कहा—मालिक! मुझे अपने धनमे से वचित न रखियेगा।

अजीमशाह उसके हाथमे आधा तका रख फिर मिर्जाखानामे गये और मिर्जासे कहा—एक तका कातिबाना (लेखकका श्रम), दो तका मुहराना, आधा तका खिदमताना कुल साढे तीन तका खर्च आया, इसे भी कागजकी पीठपर लिख दीजिये।

लिखवा लेनेके बाद घर लौटते वक्त मालिकने बाजारसे काजीके साथ बैठकीका खूब अतिरजित वर्णन किया।

२६

मनमाना हिसाब

इस कर्जके बाद बाजारने आठ-साल तक मालिककी नौकरी की और हर साल दो-दो-बार समरकन्द और बुखारा भेड़े लेकर जाता रहा, लेकिन फिर बाजारके ऊपर आफत नही आई और किसी भेड़को कोई चोर या भेड़िया नही ले गया। यात्रासे लौटनेपर वह मालिककी भेड़ोको चराया करता।

आठ सालमे हिसाबके अनुसार बाज़ारकी मजदूरीके चार सौ तके हुए, और एक सौ तके कर्जको निकाल देने पर भी उसे दो सौ सत्तर तके मिलने चाहिए थे। लेकिन हुआ ऐसा नही। हर सालके आरम्भमे नया हिसाब होता, और नया कागज बनता, जिससे नवे वर्षके आरम्भमे बाज़ारपर अजीमशाहका आठसौ उनसठ तका कर्ज हो गया। कैसे ऐसा हुआ, इसे समझनेमे बाजारकी बुद्धि काम नही दे रही थी। लेकिन अजीमशाहके लिये यह हिसाब वैसा ही स्पष्ट था, जैसे दो और दो-चार। प्रथम वर्षमे अजीमशाहने एक सौ तीस तका बाजारको कर्ज दिया था। दूसरे वर्षके आरम्भमे बीस तकापर आधा तका मासिकके हिसाबसे रकम एक सौ उनहत्तर तकापर पहुँची। बाजारने बच्चेकी खुराक-पोशाकको अपने वेतनसे न काट उसके काममे मुजरा करनेके लिये बहुत कहा, लेकिन मालिकने उसे न मानते हुए जवाब दिया—यादगार क्या काम करता है, कि उसके बदले उसे खुराक-पोशाक दूँ। परसाल चार गज गाढा उसके दो कुर्त्ते और पायजामेके लिये काफी होता था। लेकिन इस साल वह एक कुर्त्ता और पायजामेके लिये भी काफी नहीं। जबतक यादगार वयस्क नहीं हो जाता, तबतक उसकी खुराक और पोशाक तुम्हारी मजदूरीसे कटेगी। अगर यह बात कबूल नहीं करते, तो मेरा पैसा लौटाओ। मैं तुम्हारे लिये एक सफेद-फातिहा पढ़ता हूँ।

हाँ तो हिसाबसे तीसरे सालके आरम्भमें बाज़ारपर दो सौ बीस तका, चौथे साल दो सौ छियासी तका, पाँचवे साल तीन सौ एकहत्तर तका और छठे साल चार सौ बियासी तकाका कर्ज हुआ। इस वक्त तक यादगार खाना बाथके सर और कपड़ा मालिककी तरफसे पाता रहा।

बाजारने देखा कि लड़का खूब काम कर रहा है। उसने ख्याल किया, कि इसके लिये कोई काम ढूँढना चाहिए, जिसमे वह अपनी खुराक-पोशाक आप पैदा करे और बाजार अपनी मजदूरीसे मालिकका कर्ज बेबाक कर दे। सरेजूय के अमलाकदार (माल-अफसर)के यहाँ एक बुखाराका चपरासी था। उसको पता लगा। उसने बीस तका सालानापर यादगारको नौकर रखना कबूल किया, लेकिन इस शर्तके साथ, कि यादगार बुखारामे जाकर उसके घरमे काम करे। यद्यपि बाजारके लिये यह दुःसह था, कि कृपामयी मेहमाहकी यादगार (स्मृति) अपने इकलौते पुत्रको बुखारा भेजे, लेकिन कर्जसे जल्दी मुक्त होनेके खयालसे वह इस शर्तपर भी राजी हो गया। लड़केको सिपाहीके हाथमे देनेसे पहले "नमकका हक हलाल करनेके लिये" इस बातको अजीमशाहसे कहा और उनसे सफेद-फातिहा देनेके लिया प्रार्थना की।

अजीमशाहने मानो, उन्हे यादगारकी कोई जरूरत नही, बड़ी बेपरवाहीसे पूछा—लेकिन जानते नही एक अपरिचित नगरमे इस बच्चेका भविष्य कैसा होगा ? यदि बेटेसे मन भर गया हो, तो भेज दो, इसमे तुम्हें फायदा है। लेकिन यदि बेटेका प्रेम है, तो यहाँ ही रक्खो। अब लड़का बड़ा हो गया है। यद्यपि वह एक जवान आदमीके बराबर काम नही कर सकता, लेकिन आधे आदमीके बराबर काम कर सकता है। मैं सोच रहा था, कि इस सालसे उसकी खुराक तुम्हारे ऊपर न रहे और तुम्हारी तनखाहको कर्जमें काटा जाय। मुझे उम्मीद है कि अगर दो साल और यहाँ रहे, तो यादगार सालमें पचास-साठ तका यही कमा सकता है। बाकी मर्जी तुम्हारी, हर आदमी अपनी ही सलाहको बेहतर समझता है।

बाजारको सबसे ज्यादा फिकर इस बातकी थी, कि उसकी तनखाहसे कर्जको चुकाया जाय। उसका मन यह भी नही चाहता था, कि लड़का दूर जाय। इसलिये उसने मालिककी बात स्वीकार की और यादगारको बुखारा न भेजा।

सातवे सालके आरभमे फिर करारनामा नया करनेका वक्त आया। अजीमशाहने चार सौ बयासी तका कजपर एक सालका लाभ (सूद) रुपये छः सौ चौबीस तका हिसाब किया उसमेसे बाजारकी तनखाहका पचास तका काटकर पाँच सौ छिहत्तर तकेका नया कागज लिखवाया। आठवे सालके आरम्भमे यह रकम लाभ जोड और तनखाह काटकर छः सौ निन्नानवे तका हो गई। नवे सालके आरभमे आठसौ उनसठ तकेका नया दस्तावेज लिखा गया।

बाजारने देखा कि तनखाह काटनेपर भी कर्जकी रकम कम होनेकी जगह बढती ही जा रही है। उसको मालिकके हिसाबपर सन्देह हुआ और वह कार्जाखानाके समाचारची (चायवाले) कुदरतसे सारी कथा कहकर हिसाब लगा देनेको कहा। कुदरतने जवाब दिया—बिरादर! इस तरहके हिसाबको मनमाना हिसाब (हिसाब-हमदूना) कहते हैं। यह हिसाब समझना मेरी और तेरी अकलसे बाहरकी बात है।

३१

वसीयत (अधिकारपत्र)

कुछ दिनोसे बाजार [illegible] बीमार पड़ा था। बीमारी सख्त होनेसे बाहर आनेकी उसमें ताकत न रह गई थी। रातको बेटा सामनेसे नही हटता था, लेकिन दिनको वह काम कैसे छोड़ता? मालिक हर रोज सबेरे और शाम बीमारको देखने, कुशल-मगल पूछने और तसल्ली देने आते। बीमारी और बिगड़ने लगी। अब वह करवट भी नही बदल सकता था। एक दिन अजीमशाहके आनेपर उसने कहा—मालिक!

मैंने तुम्हारा नमक ज्यादा खाया और सेवा कम की। यदि भगवान्‌की इच्छा है और मेरे दिन पूरे हो गये, तो छुट्टी दीजिये।

अजीमशाह—"दर्द दूसरा और मौत दूसरी", आदमी सिर्फ बीमार पड़नेसे नहीं मरा करता। कहावत है "जब तक जड पानीमे तब तक फलकी आशा" लेकिन "जब तक बद न कहो, नेकी नहीं आती" इसीलिये इस्लामने वसीयत करनेको सुन्नत (सदाचार) कहा है। इमाम और अर्बाबको बुलवाता हूँ। उनके सामने हम दोनो अपना हिसाब करें। तुम इस कर्जको अदा करनेके लिये अपने लड़केको वसीयत कर दो। वसीयतके मुताबिक लड़का नया दस्तावेज लिख देगा। आशा है, इस वसीयतसे सब ठीक हो जायेगा।

बाजार ननु-नच किये बिना "भले काममे देर करनेकी जरूरत नही" कहते मालिककी बातपर राजी हो गया। अजीमशाह बीमारके पाससे बाहर गये। कुछ देर बाद इमाम और अर्बाबको लेकर लौटते वक्त यादगारको हवेलीके बाहर काममे लगा देख आवाज देकर बोले—छोड़ दे, दुनियाका काम तो हर वक्त रहता है। बापका आशीर्वाद लेना जरूरी है। आ, बापके पास बैठ। उसकी देख-भाल कर।

यादगार भी उनके पीछे-पीछे बीमारके पास गया। बाजारने इमामके लिये सम्मान प्रदर्शित करते सिरको उठाना चाहा, लेकिन न कर सका। उसने सिर्फ इशारासे ही आदर प्रगट करनेपर सन्तोष कर लिया। इमामने हालचाल पूछ लेने के बाद कुरानकी आयत पढकर बीमारके लिये दुआ माँगी। बाजारने साँस ले लेकर इमाम और मालिकके कहनेपर कर्जदारीकी बात कह सुनाई और उनके सामने लड़केको अपने नामसे नया दस्तावेज लिखनेके लिये वसीयत की। यादगार कुछ न जवाब दे धरतीकी ओर देखता रहा।

अज़ीमशाहने कहा—यादगार! बोलता क्यो नही? क्या इस अतिम घड़ीमे भी बापकी बातपर कान नही देना चाहता?

यादगारने आँखको जमीनसे हटाये बिना ही कहा—बकरीको उसके पैरसे बाँधते हैं और भेड़को उसके पैरसे" अगर मेरा बाप कर्जदार है, तो इससे मुझको क्या ?

बाजार बेटे के मुँहसे यह शब्द सुनने की उम्मीद नही रखता था। वह बहुत निराश और खिन्न हुआ। उसकी आँखोसे आँसुओंकी धार बह निकली। मुल्ला इमामने यादगारसे कहा—अगर तेरे बापके पास माल होता, तो उसके बाद तू उसका मालिक होता। आज जब उसके पास कर्ज है, तो तू उसे स्वीकार नही करता ! क्यों शरीयतके हुकुमसे गर्दन खीचता है !

यादगार—बाप कर्जदार है, इसका पता आपको कहाँसे चला ? मैं इतना ही जानता हूँ, कि मै और मेरा बाप इनके यहाँ दस सालसे काम कर रहे हैं। हमने फजूल खर्ची नही की, यज्ञ नही किया, जलसा-दावत भी नही की। मेरे बापसे पहले ही साल सिर्फ दो भेडे गुम हो गई और उसके बदले हम दोनोकी दस सालकी मजूरी इनके पास है, फिर कैसे मेरा बाप इतनी भारी रकमका कर्जदार बन गया ? नही, मै इस तरहके हिसाब-हमदूनाको अपने सिरपर उठानेको तैयार नही हूँ।

यादगारकी बातचीतसे उद्दडता और सरकशी प्रकट हो रही थी। मालिकको बहुत भय लगने लगा। उन्हे चिन्ता होने लगी कि यदि यादगारने राजी-खुशीसे दस्ताबेज न लिखा, तो जबर्दस्ती लिखवानेसे क्या फायदा ? इस जगह न उसकी कोई माल-मिलकियत है, न दूसरा ही कोई चित्ताकर्षण। यदि बापके मरनेपर यह भाग जाये तो सूखा दस्तावेज किस काम आयेगा ? मालिकने कहा :

—यादगार ! तेरा बाप बच्चा नही था, पागल नहीं था। वह हिसाबके मुताबिक कर्जदार हुआ और उसने इसके लिये इस्लामके काजीके सामने करारनामा लिखकर दिया। यह ठीक है कि हर साल मूलधनपर कुछ तका लाभका भी जोड़ा गया, लेकिन वह देशके रवाजका

आधा ही था। इसके अतिरिक्त हर सालके दस्तावेजकी लिखाईके खच, मुहराना, कातिबाना, और खिदमतानाको मैंने दिया, यह सब दस्तावेजकी पीठपर लिखा हुआ है। सिर्फ यही खर्च साठ तकासे ज्यादा हुए। यदि तू नया दस्तावेज बना देगा, तो तेरी उम्रका ख्याल करके मैं रकमको बिना-लाभ (बे सूद) करके धर्म-ऋणकी तरह मान लूँगा। अपनी वार्षिक मजूरी ठीक करके उसमे कर्ज अदा करते जाना। काजी-खानामे जो पैसे खर्च हुए, उन्हे भी मैने बख्श दिया। कर्ज की रकम जो आठ सौ उनसठ तका हुई है, उसमेसे भी उनसठ तका बख्श दिया। अब सिर्फ आठसौ तकाका हिसाब होगा। खुदा न करे, यदि तेरे बापके दिन पूरे हो गये, तो कब्र और कफनमे भी जरूरत पडेगी।

अजीमशाहने अपनी बातको समाप्त करते हुए कहा—मैं इस बातको औ बख्शनेकी बातको इसलिये करता हूँ, कि तेरा बाप दुनियासे बेकर्ज जाय। ऐसा न हो कि तूने और तेरे बापने जो मेरा नमक खाया है, खुदा उसका बदला कयामतमे लेकर मुझे दे। तुम कयामतके दिन सच्चे काजीके सामने मेरे कर्जसे कैसे इन्कार कर सकते हो ?

यादगारने अब भी किसी तरफ निगाह नही फेरी थी और सिरको दाहिने-बाये घुमा "नही, यह नही होगा" कह कर चाहा, कि अपनी जगहसे उठे। उसी वक्त उसके बापने—जिसपर अजीमशाहकी कब्र और कयामतवाली कथाने बहुत प्रभाव डाला था—करुणापूर्ण स्वरमे कहा—यादगार ! मेरे बेटे यादगार ! इधर निगाह कर, मेरी तरफ।

यादगार फिर लौटकर अपनी जगह बैठ गया और उसने बापकी आँखोकी तरफ देखा, जिनसे आँसुओंकी धार बह रही थी। बाजार उन आर्द्र और करुण नेत्रोसे कुछ देरतक लड़केकी ओर देखता रहा। वह कातर दृष्टि, निराशापूर्ण दृष्टि प्रेम और खेदसे मिश्रित दृष्टि अपनी सारी निर्बलताओं और बेबसियोके साथ अपने लड़केसे दया और सहृदयताकी भीख माँग रही थी। यादगारपर प्रभाव पड़े बिना नही रहा। वह निराशा

और कातरतासे भरी दृष्टि थी ही ऐसी, कि अगर पत्थरपर भी पड़ती, तो उसे पानी-पानी कर देती, फिर एक बेटेके दिलकी तो बात ही क्या ?

बाजारने बेटेकी दृष्टिसे उसके भीतरी भावोको भापकर कहा—क्या, तू चाहता है, कि इस सनातन ऋणको अपने सिरपर उठाये या चाहता है, कि मेरा मुर्दा कूचेमे पड़ा रहे ?

यादगारमे अब इन्कार करनेकी शक्ति नही रह गई थी। उसने कहा—'अच्छा, तुम्हारी खातिर मै दस्तावेज लिखने को राजी हूँ'।

द्वितीय खण्ड

अमीरका बुख़ाराशरीफ

१६१३—१७ ई०

१

कब्रिस्तानसे गुलिस्तान

आकाश निर्मेघ था। सूर्योदय अभी नही हुआ था, किन्तु तारे अन्तर्धान हो चुके थे। प्रातः समीर मंद-मद चल रहा था, मानो विश्वमें व्याप्त रात्रिकी निर्जीवताको दूर कर रहा था। इस प्रमोदवर्धक प्राकृतिक सुषमामें एक चीज थी, जो दर्शकके मनको अवसाद दिये बिना नहीं रह सकती थी और वह था कब्रिस्तानका दृश्य। कब्रिस्तान एक विस्तृत ऊँची किन्तु सुनसान जगहमें अवस्थित था और अपनी डरावनी सूरतसे हर आदमीमे भयका सचार करता था। वहाँ एक छोरसे दूसरे छोर तक उभड़ी हुई मिट्टीकी ढेरियाँ ही ढेरियाँ दीखती थीं, मानो इस भूमिमें सोये मुर्दे चाहते थे, कि सिरसे मिट्टीको उठा फेंके। कब्रोसे भरी भूमि आदमियोंकी सभा जैसी मालूम देती थी, किन्तु यह सभा मूक, निश्चल और शोक-पूर्ण थी।

इस मूक सभाकी शान्तिको एक अठारह-बीस साला जवानका करुण-क्रन्दन भग कर रहा था। जवान एक कब्रके पास बैठा रो रहा था। उसकी क्रन्दन-ध्वनि मानो एक शोकपूर्ण सगीत था, जिसने अपने श्रोताओंसे जीवनके सारे चिह्नोंको छीन लिया था। इस मौन ससारमे जीवनके चिह्नका प्रकाश सिर्फ कुछ काले जन्तु दे रहे थे, जो कभी-कभी अपने शरीरको कुछ ऊँचा करके हमारे क्रन्दन-गायककी ओर दृष्टि डाल लेते थे।

कुछ देर रुदन कर लेनेके बाद तरुण चुप हुआ। कुछ क्षण बाद

उसने सिरको जरा ऊपर उठाया और कब्रपर अपनी निगाह गड़ा उसे सम्बोधित करते हुए बोला—केवल तुम थे, जिसकी प्रसन्नताके लिये मैंने सभी कष्टोंको सहा, केवल तुम थे जिसकी खुशीके लिये इस तरहकी जिन्दगीकी सारी कटुताए बर्दाश्त की, केवल तुम थे जिसकी आज्ञा-पालनके लिये एक अन्यायपूर्ण ऋणका भारी बोझा अपने सिरपर लिया, अब जब तुम मुझे अकेला छोड़कर चल दिये, तो मै इस बलासे छूटनेकी कोशिश करूँगा।

तरुण थोड़ी देर चुप रहा, मानो अपनी मुक्तिका मार्ग ढूँढ रहा हो। फिर उसने स्वय प्रश्नोत्तर किया—भागना ? कहाँ भागना ? भागनेके लिये ऐसा स्थान चाहिये, जहाँ कोई मेरा पीछा न करे। लेकिन ऐसा स्थान कहाँ है ?

जवान अपनी जगहसे उठा, मानो उस स्थानके पानेका प्रयत्न कर रहा हो। उसने चारो ओर नजर डाली। विस्तृत आकाश आँखोके सामने था। उसके मनमे लालसा हो आई, यदि मेरे पख होते और मै आकाशकी ओर उड़ सकता, तो पर्वतोकी चोटियो और मेघकी गोदमे बैठ भूमि-की ओर देखता—उस भूमिकी ओर जिसने मुझे इतने कष्ट दिये और हर्षके एकमात्र साधन मेरे पिताको छीनकर घृणापूर्वक मेरी ओर देख रही है। इसी समय उसकी निगाह उस पर्वतपर पड़ी, जिसके दर्राको दर्रानिहाँ कहते हैं। तरुण एकाएक बोल उठा—यह है वह स्थान।

तरुणने चरवाहीके समय अपने साथियोंसे दर्रानिहाँके सम्बन्धमे बहुत-सी कथाएँ सुनी थी। उन्होने कितनी ही बार उसकी प्रशसा करते कहा था—यह वह दर्रा है, जहाँ पक्षी यदि पर मारे तो पर जल जाय। वहाँ हाकिमो और काजियोके लिये स्थान नही। वहाँ देव और परियाँ मनुष्योंके साथ वास करती हैं। वहाँके अधिकाश लोग परियोके साथ प्रणय करते हैं। इसी लिये वहाँकी कन्याये अत्यन्त सुन्दर होती हैं।

तरुण दर्रानिहाँके बारेमे सुनी कहानियोंको फिरसे यादकर मुसकुरा

उठा, मानो वह वहाँ पहुँच चुका है, वहाँके निवासियोंसे स्नेह पैदाकर चुका है। वहाँकी परी-जाद देवकन्याओंमेंसे एकके प्रेमको प्राप्त कर चुका है। तरुणके लिये मुक्त होनेका वह एक अच्छा साधन था, साथ ही वहाँ जाकर किसी परीज़ादको चिरसहचरी बनानेकी अभिलाषाके पूर्ण होनेका भी अवसर था।

इस आकर्षक विचारने फिर जवानको वहाँ बैठने नहीं दिया। वह हवाकी तरह दर्रानिहाँकी तरफ चल पड़ा। उसने उस दिनको रास्तेमें बिताया। रात होते-होते दर्राके मुहपर पहुँच एक चट्टानपर सो गया। यह शयन-स्थान मालिकके अस्तबलसे कहीं बेहतर और सुखद था। हवेली की दीवारकी जगह यहाँ पर्वतकी गगनचुम्बी दीवार थी, जिसपर मालिक की साहबी नहीं चल सकती थी। जहाँ-तहाँ बहती जलप्रणालियाँ पाषाणके हृदयको विदीर्ण करके घर्घर-ध्वनिमें घोर संगीत गा रही थीं। सिरके ऊपर चमकते तारे प्रभाकी वृष्टि कर रहे थे।

रातको कितने ही समय तक नेत्रों द्वारा इस प्रकृति-सौन्दर्यका पान करते उसे नींद न आई। उसने अपने भविष्यपर दृष्टि डाली और वह उसे अधिक भव्य मालूम पड़ा। दर्राके भीतर पहाड़ोंकी चोटियोंपर पहाड़ी वृक्षोंके बीच वह स्वतन्त्र विचरण करेगा। वहाँ हर तरफ चश्मे, हर तरफ जलप्रणालिकायें हैं। वहाँ तरुण गान करते, कन्यायें नाचती। वह सारे तरुण सुशील, सारी कन्यायें दिव्य सुन्दरी।

तरुणकी जब आँख खुली तो देखा, पर्वत-शिखरपर सूर्यकी किरणें प्रतिभासित हो रही हैं। उसने अपनी जगहसे उठकर और पास बहते झरने में हाथ-मुँह धोया। कलकी राहकी थकावटके बाद भी आज वह अपने भीतर अधिक बल अनुभव कर रहा था, यद्यपि भूखके मारे अँतड़ियाँ तिलमिला रही थीं। उसे सिर्फ यही फिक्र थी, कि कुछ मिले और खाये। खानेकी खोजमें उसने चारों ओर नजर दौड़ाई। उसे पहाड़ी बूटी दिखाई पड़ी। उसे उखाड़कर पानीमें धोकर उसने खाया। गन्ध अच्छा नहीं था,

तो भी उसने उसे खा लिया। थोड़ा खानेके बाद मनको सन्तोष हुआ और वह फिर आगे चल पड़ा।

अब मानो वह अपने नगर, अपने देशमे चल रहा है, ऐसे देशमे जहाँ कोई आपदा उसका पीछा नही कर रही है। दर्रानिहाँका दृश्य अकेले घूमते जवानको बहुत पसन्द आया। इस पतली अँधेरी राहकी भूलभुलैया उसे उतनी भयानक नही मालूम हुई, तो भी हर घुमावपर देव या परीके होनेका सदेह होने लगता था, किन्तु वह उनसे भय नही खाता था, क्योकि वह कथानकोमे सुन चुका था, कि यह देव और परियाँ मानवोसे बन्धुत्व रखते हैं, अपने यहाँ आये शरणार्थियोकी सहायता करते हैं। जब वह भागकर उनके पास शरण लेने आया है, तो क्यो उनसे डरे? समय दूर नही जब उनका सम्बन्धी बनेगा, कन्या लेकर दामाद बनेगा।

सँकरे, अँधेरे मार्गसे वह एक विस्तृत प्रकाशित मैदानमे पहुँचा। वहाँ जगह-जगह देवदारुके वृक्ष छाया फैलाये हुए थे। वृक्षोकी सुन्दर पक्तिके नीचे स्वच्छ जलकी धार बह रही थी। भूमिपर हरी घास और बूटियाँ हरे कालीनकी तरह धारा-तटसे वृक्षोके नीचे तक बिछी हुई थी। यह गुलिस्तान (पुष्पवाटिका) था, जिसने कब्रिस्तानसे भगे बेघर जवानकी सैलानी तबियत को मुग्धकर दिया था। वह इस नयनाभिराम दृश्यको अतृप्त दृष्टिसे देखता, आनन्दसे फूला न समाता एकाएक बोल उठा "यह है मेरा बाग"।

जवान आगे बढना चाहता था, लेकिन बहुत थक गया था, इसलिये एक पत्थरपर बैठकर उसने अपने सिरको धोया। नाक-कानमे घुसी धूलको साफ किया, फिर एक घटा प्रवाहपर नजर गड़ाये उधर देखता रहा। पानी दर्पणकी भाँति स्वच्छ था। उसने उसमे अपनेको देखा। उसे आश्चर्य हुआ। इससे पहले भी बाल बटनेके लिये दीवारपर टँगे औरतोके दर्पणमें उसने अपनी सूरत देखी थी, लेकिन वहाँ अपने मुँहको मुर्झाया, आँखोंको निस्तेज, आकारको उदास और चिन्तापूर्ण पाया था। और इस समय!

उसका मुखमडल सेबकी तरह लाल और भव्य, आँखे प्रातःकालीन

ताराकी भाँति प्रकाशमान थीं। उसके मुसकुराते होठोंपर हर्ष और उत्साहका नृत्य हो रहा था। उससे भी अधिक उसके अधरोंके ऊपर एक काली रेखा धनुषाकार खिंची हुई थी। अधिक ध्यानसे देखनेपर मालूम हुआ, कि वह रेखा नही बल्कि बहुतसे सूक्ष्म काले बिन्दु, एक दूसरेके करीब-करीब लगे हुए हैं, जो पहले पहल देखनेमे रेखासे लगते हैं। यह रेखा या बिन्दुसमुदाय शीतल जलसे धुले लाल ओठोपर बहुत ही सुन्दर मालूम देते थे। तरुणको अपनी सूरत सुन्दर मालूम हुई। वह सोचने लगा, परियोके देशमे आनेसे उसकी सूरत भी परीज़ादो जैसी हो गई है। तरुणाईकी उमगो, मधुर विचारों और भविष्यकी आशाओने तरुणको एक दूसरी दुनियामे पहुँचा दिया था। वह उठकर पानीके साथ-साथ आगेकी तरफ चला।

कहाँ चला? उस जगह जहाँ जल्दी ही परीजाद मानवसे उसकी मुलाकात होगी। वह उनके साथ परिचय, स्नेह और प्रेम पैदा करेगा। यदि भाग्यने साथ दिया, तो एक परीजाद कन्याको अपनी प्रेयसी बनायेगा। वह अपनेभी बुरा नही था, यह उसने अपना मुँह पानीमे देखकर जान लिया था, इसलिये एक परीज़ाद कन्याको अपनी प्रेयसी बनानेका अनधिकारी नही था। यह मधुर विचार उसके दिमागमे गूँज रहे थे, जब वह रास्तेपर जा रहा था।

आगे जाकर उसने कुछ देखा। क्या वह स्वप्न देख रहा था? एक देवकन्यासी चन्द्र-कान्ता षोड़शी निर्झरके किनारे बैठी तूबेमे पानी भर रही थी, यह अवश्य ही स्वप्न नही था, वास्तविकता थी, जिसे वह अपनी आँखोके सामने दिनके प्रकाशमे देख रहा था। पहिले वह पगको रोक अपनी जगह खड़ा हो गया। सोचने लगा, यह मेरी भाग्यदेवी है, जो अगवानीके लिये आई है, फिर पीछे रहनेकी जरूरत क्या?

वह फिर आगे चला। कन्याकी दृष्टि उसपर पड़ी। उसे आश्चर्यसे अपनी तरफ देखते देख वह सोचने लगी—यह कौन है? समीप आनेपर

कन्याने जाना कि वह वहाँका रहनेवाला नहीं है। फिर उसने पूछा—तू कौन है? कहाँसे आया?

—एक मुसाफिर हूँ। सरेजूयसे आ रहा हूँ।

कन्याको इस उत्तरसे आश्चर्य हुआ। अब तक उसने सरेजूयसे काजीके आदमियो और हाकिमके सिपाहियोको ही आते देखा था, किन्तु इस तरुणका रग-रूप उनसे बिल्कुल भिन्न था। फिर यह कौन है जो यहाँ आया है? कन्याने फिर पूछा—किसलिये यहाँ आया है?

—तेरी शरणमे आया हूँ।

—मेरी शरणमे?

—हाँ, तुम्हारा शरणमे, इस दर्रेके निवासियोकी शरणमे।

—क्या भागकर आया है?

—'भागकर आया हूँ' कहा जा सकता हूँ?

कन्याने अपने तूबेको उठाकर चलना चाहा, लेकिन देखा कि तरुण उसकी तरफ आशा भरी निगाहोसे देख रहा है। उसने कहा—आ, मेरे घर आ।

तरुण बिना कुछ पूछे 'अच्छा' कह उसके पीछे-पीछे चला।

कन्याकी आँखे और भौहे, अधर और मुँह, रग और रूप कितने चित्ताकर्षक थे? कानोको ढकते कन्धोपर पडे काले केश कितने सुन्दर थे! कन्या तेजीसे चल रही थी, किन्तु हर चन्द कदमपर पीछेकी ओर मुड़कर देख लेती थी, मानो मेहमानकी गति-विधि जानना चाहती हो। यद्यपि तरुणका हृदय अभी षोड़शीके प्रणयमे बँधा नही था, किन्तु जबतब पड़ती उसकी निगाहे तरुणको अपनी ओर खीच रही थी, या उसके दिलमे मुहब्बतके बीज बो रही थी।

दोनो नीरव चल रहे थे, लेकिन तरुणको यह नीरवता असह्य मालूम हो रही थी। वह बात करनेका मौका ढूँढ रहा था, किन्तु एक अपरिचित कन्याके साथ क्या बात करे, यह उसकी समझमे नही आ रहा था।

बहुत सोचनेके बाद वह इतना ही कह सका—ला, तेरे तूंबेको मैं ले चलूँ। तू थकी-सी मालूम देती है।

कन्या अपने अंदर कोई थकावट नहीं महसूस कर रही थी। वह ताड़ गई, जवान इस हीलेसे बात करना चाहता है। वह जवाब देनेसे पहले जवानकी ओर निगाहकर मुसकुराई और फिर बोली—मैं थकी नही हूँ। रोज दस-पन्द्रह बार पानी ले जाती हूँ। हाँ, तेरे पैर जिस तरह उठ रहे हैं, उनसे मालूम होता है कि तू दूरसे आया थका-माँदा है।

जवान लज्जित हो गया। उसे जवाब देनेके लिये कोई शब्द नहीं मिला। फिर नीरवता शुरू हुई, किन्तु चद मिनटोंमें वे घरके नजदीक पहुँच गये। चूल्हेके पास बैठी स्त्रीने "गुलनार! जल्दी-जल्दी आ, पानी बिना पतीली जलना चाहती है" कहकर लड़कीको आवाज दी।

लड़कीने जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाते दो क्षणमें चूल्हेके पास पहुँच पानीको रख दिया। मुड़कर देखा, कि तरुण चन्द कदम दूर खड़ा इधर-उधर देख रहा है। कन्याने कहा—क्यो रुक गया? यही हमारा घर है। फिर चूल्हेसे उठकर जवानको देखनेके लिये आई स्त्रीसे कहा—यह परदेसी मुसाफिर है। कही जानेका ठौर नहीं, इसलिये मै इसे अपने साथ लेती आई।

स्त्रीने "अच्छा किया" कहकर प्रसन्नता प्रकट की, फिर अपनी ओर आते जवानकी तरफ निगाहकर "आ बेटे, आ, यहाँ बैठ" कहकर पास बिछी चटाईकी तरफ बैठनेका इशारा किया। फिर पूछा—"तेरा नाम क्या है?"

—यादगार

—ओ हो! बहुत अच्छा नाम है।

स्त्रीने अपनी लड़कीसे कहा—जल्दी कर, गाय दूह ले। समय न बीत जाय। मै तेरे मेहमानके लिये क्षीर-कद्दू (लौकीकी खीर) पकाऊँगी।

कन्या गई और उसके साथ यादगारका दिल भी। अफसोस! वह इस

परिवारमें अभी अभी आया था और उतना परिचय न रखता था, अन्यथा गाय ले आनेमे मदद देनेके बहाने वह उसके साथ जाता।

२

परदेशी संध्या

पहाड़में लोमड़ीकी माँदे जैसी खुदी थी। बगलमें अनगढ पत्थरोंकी दीवारे खड़ीकर उन्हे तृण-काष्ठसे ढाँक दिया गया था। यही लोगोके घर थे। एक घरके सामने दो चटाइयाँ पड़ी थी, जिनमेसे एकपर यादगार और दूसरेपर एक दूसरा आदमी बैठा था। उनके बीच एक कम्बलका दस्तरखान बिछा था, जिसपर एक कठौतमें कद्दूकी खीर रखी हुई थी। उसे दोनो लकड़ीके चम्मचसे खा रहे थे। दूसरी ओर चूल्हेके सामने भी उसी तरह कठौतमे खीर रखी हुई थी, जिसे गुलनार और उसकी माँ भी चम्मचसे खा रही थीं।

मर्दोने खाना खतम करके फातिहा पढा। गुलनार कठौत और दस्तरखान उठा ले गई। मर्दने यादगारसे पूछा—बेटा! पूछनेमे गुनाह नही। तू कहाँका रहनेवाला है और कैसे इधर आ निकला?

यादगारने अपनी और अपने बापकी जीवन-घटनाएँ सक्षेपमे सुनाई, लेकिन मालिककी आज्ञा बिना इधर आनेकी बात छिपा रखी। इधर आनेके बारेमें केवल इतना ही कहा—मैं एक पर्वतका पुत्र ठहरा, सरेजूयका जलवायु मेरे अनुकूल नहीं। अब बापकी मृत्युहो गई, तो वहाँ दिल नहीं लगा, इसलिये सोचा कि किसी और जगह चलकर कोई काम पकड़ लूँ, जिसमें रोजी चले और फिर इस तरफ चला आया।

—यदि एक टुकड़ा रोटी और दही-दूधपर सन्तोष हो, तो यहाँ सारे जीवन पड़ा रह सकता है; लेकिन यहाँ कमाना और बँचाना संभव नहीं। ऐसे आदमी यहाँ बहुत कम हैं, जो मजूरीपर आदमी रखें। कुछ खाते-

पीते लोग हैं, किन्तु वह भी अपना काम आप करते हैं। कुछ ऐसे लोग हैं, जिनके पास दोचार माल (ढोर) हैं, अकेले होनेसे उनका सारा समय खेती-बारीमें लगता है। चरवाहा मिले तो वह अपने मालोंको उसके सुपुर्द कर देते हैं। यदि तू चाहे तो कल ही मैं ऐसे लोगोंके कुछ मालोंको जमाकर तुझे दे दूँ। तू उन्हें चरा। हर आदमी अपनी हैसियतके मुताबिक एक-एक प्याला खिचड़ी देगा। इस तरह तेरा गुजर-बसर हो जायगा।

यादगार अपने विचारोमे डूबा हुआ था। मर्दने समझा कि अभी वह थका-माँदा है और उसका ध्यान उसकी बातोकी ओर उतना नही है, इस लिये कहा—अच्छा, अभी दूरसे चलकर आनेसे तू भी थका है और मै भी अभी अभी कामसे आया हूँ। कल इसके बारेमे सलाह करेगे। इस वक्त जल्दी सो जा। चटाई लिये आ।

मर्द आगे आगे चला और घरसे कुछ पग दूर एक स्थान दिखलाकर बोला—बेटा! चटाईपर यहाँ सो जा। डर मत। मै भी घरके सामने सो रहा हूँ। जरूरत हो तो 'चचा रुस्तम' कहकर पुकारना, मै आ जाऊँगा।

मर्द यादगारको स्थान दिखला बीबी और लड़कीके नजदीक लेट रहा। पाँच मिनटके अदर ही चचा रुस्तमके नथने बजने लगे।

और यादगार? सभव नही था, कि उसे जल्दी नींद आती। कैसे सभव था, कि माँ-बाप और वतनसे वियुक्त एक जवान एक परदेशी पहाड़मे अपने भावीके लिये अनिश्चित, सन्तोषकी नींद सोये? यादगारके मनमे तरह-तरहके विचार उठ रहे थे। कितना अच्छा होता, यदि इस रातको वह गुलनारके सामने होता, उससे बाते करता, कहता-सुनता और अपने भविष्यके बारेमें सलाह लेता। वह जैसी सलाह देती, वैसा ही करता। किन्तु यह कहाँ सभव था? कन्या उसे अपनी माँके सामने ले जाकर मानो भूल ही गई। यादगारने स्वय अपने भविष्यके बारेमे सोचना चाहा, किन्तु आगे क्या होने वाला है, इसका स्वय उसे कोई पता नहीं था। अपने दिलमें उसने कहा—चचा रुस्तमके कथनानुसार मैं यहाँ अच्छी

तरह जीवन बिता सकता हूँ, लेकिन यदि गुलनार आज ही की तरह मुझे भूल गई, तो इस जीवनसे क्या आशा ?

यादगार जब अपने भविष्यके बारेमें कुछ न सोच सका, तो उसने अतीत जीवनपर एक दृष्टि डाली। कूलाबसे निकलना, डाकुओंके हाथमें पड़ना, माँका मरना, अज़ीमशाहकी चाकरी, अकारण बापका कर्ज़दार बनना, बापकी मौत, उसकी कब्रसे बिदाई लेना और दर्रीनिहॉकी ओर भागना...एक एक घटना सिनेमाके फिल्मकी तरह उसकी मानस आँखोके सामने फिरने लगी। यह सब एक भयानक स्वप्न था, जिसे यादगारने देखा था, नहीं तो कौन आदमी है, जो इन आफतोको जिन्दा बर्दाश्त कर सकता। और सबके अन्तमे गुलनारसे भेट।

किन्तु यह अन्तिम दृश्य स्वप्न नहीं यथार्थ था। ऐसा यथार्थ, जिसे यादगारने जाग्रत-अवस्थामे देखा। यह जाग्रत-अवस्था उसका सौभाग्य था, जो इतनी दीर्घ-कालके भयंकर स्वप्नोंके अन्तमे आई। उसने गुलनारके नयनाभिराम मुखमडलको देखा, उसके अमृतवर्षी अधरोंसे स्नेहपूर्ण बातें सुनीं। वस्तुत: यादगारके लिये यह मगल-दिन और मगल-मुहूर्त था। अफसोस ! यह मगल-दिन, मगल-मुहूर्त चिरस्थायी और दीर्घ नहीं हुआ। गुलनारने लाकर माँसे उसका परिचय कराया और फिर खबर तक न ली, मानो इस आदमीको उसने जीवनमे देखा ही नहीं था। यदि यही उदासीनता, यही उपेक्षा आगे भी रही, तो यादगारका भगवान ही रक्षक। यादगारको उस समय वे गज़ल याद आये, जिन्हे उसका बाप शोकपूर्ण घड़ियोंमें गाया करता। वह भी इस विरह-निशामे उन्हें गुनगुनाने लगा :

परदेशीको कौन पूछे ?
इस परदेशी सन्ध्यामें।
सारी दुनिया बेफ़िक्र है,
सारा देश है बेगाना।

चक्कसमान मेरा सिर घूमे
मेरा तन बेत-सा डोले।
मेरा हृदय अग्नि सा सुलगे
इस परदेशी सन्ध्यामे।
मेरा देश न कोई धन
नाही पूछे कोई बात।
रात-दिवस मैं रोता जाऊँ
परदेशीको कौन पूछे
इस परदेशी सन्ध्यामे ?

यादगार सोच रहा था, कि सभी निद्रामे मग्न हैं, इसीलिये वह धीरे-धीरे गुनगुनाया , लेकिन इस बातका ध्यान रखे, कि कोई सुन न ले। उसे विश्वास था, कि सिरके नीचे रखे पत्थरके अतिरिक्त कोई और उसे न सुनेगा, किन्तु बात ऐसी नहीं थी। एक व्यक्ति दूसरा भी जाग रहा था, जिसने अपने हृदय-नेत्रको यादगारके साथ जोड़ रखा था। यद्यपि शयन-स्थानकी दूरी और रात्रिके अन्धकारके कारण वह व्यक्ति हर दस मिनट पर यादगारके पार्श्व-परिवर्तनको नही देख सकता था, तो भी वह उसकी इस स्थितिको महसूस जरूर कर रहा था।

जब उस व्यक्तिने यादगारके 'परदेशीकी वियोग-निशा'के करुण-क्रन्दनको सुना, तो उसका सन्देह विश्वासके रूपमें परिणत हो गया, और जानाकि अनभ्यस्त परदेसी पछी घायल हो अर्धमृत हो चुका है। वह व्यक्ति गुलनार थी।

जिस समय दोनो तरुण-जन—यादगार और गुलनार—एक दूसरेके समुख हुए, उनके भीतर बिजलीके दो तारोंके मिलते जैसी प्रेम ज्वाला प्रकाशित हुई। यादगारका हृदय जितना गुलनारकी ओर आकृष्ट हुआ, उतना ही गुलनारका हृदय यादगारकी ओर आकृष्ट हुआ था। किन्तु यादगारकी वियोगाग्नि उसकी दूसरी चिन्ताओं और विपत्तियोंसे मिलकर

जल्दी अपना प्रभाव डालनेमें समर्थ हुई। वह शोक और निराशाका शिकार हुआ। जब गुलनारने उसके करुण गानको सुना, तो उसका हृदय विकल हो गया और उस समय यदि माँ-बापके साथ न होती, तो वह भी इस करुण-क्रन्दनमें यादगारका साथ देती। हृदय रो रहा था, किन्तु उसे साँस लेनेका अधिकार नहीं, अभिलाषा विकल थी, किन्तु बुद्धिने उसे मजबूतीसे बाँध रखा था, अन्दर आग जल रही थी, लेकिन एक ठडी साँसके निकालनेका अवसर नहीं था।

३

बदेहागोई

ग्रीष्मका समय था। भुवनभास्करने सिरके ऊपर आ बन-पर्वतको एक समान प्रकाशित और सन्तप्त कर रखा था। दोपहरका समय था, तो भी इस पर्वत-प्रदेशकी आबोहवा और मौसिम वसन्तकी भाँति कोमल और सुखद था। हरिण कभी पहाड़के डाँड़े, कभी कमरपर घूम-फिर रहे थे। मधुर-कठ पक्षी वृक्षोंकी शाखाओंपर बैठे सगीतका अभ्यास कर रहे थे। स्वच्छ जलकी धाराये पर्वतके ऊपरसे नीचेकी ओर एक शिलापरसे दूसरी शिलापर गिरती-उछलती अपने नियमित ताल द्वारा गानमग्न विहगोंका साथ दे रही थी। भेड़ें निद्रामे, मेमने छलाँग मारनेमें, चरवाहे-छोकरे दौड़नेमें और हरिणशावक चौकड़ी भरनेमें मस्त थे। वहाँकी प्रकृतिमें हर प्राणी, हर वस्तु अपने अदर हर्षोत्फुल्ल दिखलाई पड़ती थी। सुबहसे दोपहर तक चराकर चरवाहोंने अपने ढोरोंको परितृप्त कर लिया था। वह उन्हें वृक्षोंकी छायामे छोड़ दो-दो चार-चार मिलकर बाँसुरी बजाने, गजल गाने, बदहागोई करने जैसे खेलोंमें निरत थे। एकने तान ली—

यार मेरा घरमे औ गिरि गिरिमें मैं रोता फिरूँ।
हृदय-बेधक क्रन्दनोंसे शिलाको रोदित करूँ।

चश्मेके पास बैठा हूँ उसके ही चश्मों सामने।
चश्मको अपने ही चश्मे-जलसे धोता रहूँ।
दिल खुश है औ फूल खुश है, बुलबुलका गीत भी खुश है॥
वह वहाँ है मैं यहाँ हूँ विरहसे मैं रो रहा।
कौन कह सकता मुझे रोनेसे अपने दिल खुश है।

केवल यादगार इस गीत-मण्डलीमे सम्मिलित न था। वह एक मस्त चालसे चलती धाराके किनारे देवदारके नीचे बाँसुरी बजा रहा था। दूसरे चरवाहे जिन गीतों और गज़लोंको गा रहे थे, उन्हें वह बाँसुरीमें अदा कर रहा था, विशेष कर इस पदको—

वह वहाँ है मै यहाँ हूँ विरहसे मैं रो रहा।
कौन कह सकता मुझे रोनेसे अपने दिल खुश है॥

पदका विषय अपनी अवस्थाके अनुकूल था, इसलिये वह दूसरोंके चुप हो जानेपर भी उसे गाकर बाँसुरीमें बजाता था।

जब इस करुण-गीतसे उसे सन्तोष न हुआ, तो बाँसुरीको एक ओर फेककर आह मारते घासपर लेट अपने विचारोंमें डूब गया। किन्तु अब उसके विचार पहलेकी तरह निराश-पूर्ण न थे, अब वह अतीतको कम याद करता और भविष्यके लिये भी अधिक चिन्तित न था। हर रोज़की जिन्दगी भी बुरी तरह नहीं कट रही थी। रुस्तमकी सहायतासे उसे बीस-पचीस गाय-भेड़े मिल गयी थीं, उन्हें वह रोज चराने ले जाता था, फिर मालोंके मालिक जो कुछ साग-रोटी दे देते, वह उसके खानेसे भी ज्यादा होता। इसके अतिरिक्त दूध दही मट्ठा जितना चाहिये उतना मौजूद था। इस दर्रामें आये दो-तीन महीने हो गये थे, अब उसके मनसे अज़ीमशाहके पीछा करनेका खतरा भी दूर हो गया था। एक तरह कह सकते हैं, कि उसका जीवन निश्चिन्त कट रहा था।

उसका ध्यान सिर्फ एक स्थानपर यानी गुलनारसे बँधा हुआ था।

पहले वह नव-यौवन-सुलभ एक मामूली आकर्षण था, किन्तु अब वह हृदय-दाहक प्रेमके रूपमे परिणत हो चुका था।

गुलनारकी छिपी सद्भावना और स्नेह-पूर्ण सहानुभूतिने प्रेमकी आगको दूना कर दिया था। लेकिन अब भी यादगारने गुलनारके सामने प्रेमको स्पष्ट तौरसे प्रकट नही किया था। यादगार चाहता था कि गुलनार-के सम्मुख अपना दिल खोलकर रख दे, लेकिन वह डरता था, कि कहीं वह इसे पसन्द न करे। यदि पसन्द करती तो यह सौभाग्य था, किन्तु यदि नापसन्द कर दे, तो ? यह सोचकर यादगार अपने आपसे बोल उठा—हाय ! मेरा भाग्य ! उस समय मेरी सारी आशाये निराशामे, मेरे सभी मधुर स्वप्न कटुतामे, मेरा सारा प्रेम हसरतमे परिवर्तित हो जायगा, उस समय जीवन भार हो जायगा।

आज यादगारके दिलमे बाँसुरी बजाते, मजल गाते, मालोंको चराते, बैठते या सोते हर वक्त यही विचार चक्कर काट रहे थे। बाँसुरी बजानेसे ऊबकर घासपर लेटे जब वह अपनी आँखोंको मूँदे हुए था, यह विचार और जोर पकड़ने लगे। उसके दिलने कहा—"जो भी हो आज अपने मनकी व्यथाको प्रकट करके रहूँगा" लेकिन फिर अन्देशा हुआ और तबतक धीरज धरना ठीक समझा, जबतक उसकी ओरसे इशारा नहीं होता।

इसी वक्त एक ककड़ी यादगार की छातीमे लगी, उसने एकाएक आँखोको खोल दिया और लेटे ही लेटे चारों ओर नज़र दौड़ाई। किसी-को न देखकर फिर आँखे मूँद विचारोके ससारमे चला गया। फिर दूसरा ककड़ आया, लेकिन वह उसका कुछ भी न ख्यालकर अपनी जगहसे नही हिला। तीसरी बार कुछ बड़ासा पाषाण खण्ड उसके पास आकर गिरा। यादगारको निश्चय हो गया, कि कोई उससे परिहास कर रहा था। उसने उठकर चारों ओर बड़े ध्यानसे देखा। देखा कि चारमज़के वृक्षकी आड़मे कोई छिपा हुआ है, लेकिन कौन है उसे वह पहचान न सका।

मधुर विचारोंका आनन्द लेते उसके मनको यह परिहास पसन्द न आया। वह उसे पकड़नेके लिये दौड़ा। जब यादगार वृक्षके समीप पहुँचा, तो छिपे व्यक्तिने भागनेकी जगह उसे डरानेके ख्यालसे सामने आ "वाह" कहकर अपनेको यादगारकी ओर फेंक दिया। यादगारने उसे अपने सुदृढ हाथोंमे थाम लिया। उन नाज़ुक नरम अगके हाथोंमे आते ही यादगारके शरीरमें बिजली दौड़ गयी। ये नाज़ुक और नरम हाथ गुलनारके थे।

यादगारको अब भी विश्वास न था, कि वह स्वप्नकी दुनियासे दूर है, इसलिये उसने गुलनारके हाथोको हाथमे ले आँखोंसे मलकर देखना चाहा। लेकिन इससे पहले गुलनारने कहा—क्या मेरा परिहास तुझे बुरा लगा?

—खुदा न करे कि तेरा परिहास मुझे बुरा लगे। मुझे वस्तुतः यह विश्वास नही हो रहा है, कि यह दौलत मुझे जाग्रत-अवस्थामे मिल रही है। अब भी शका होती है, कि मै स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ?

—तो क्या तू मुझे स्वप्नमे देखकर भय खाता है?

—अधिक बात न बना, जले दिलपर नमक न छिड़क।

गुलनारने गर्व और नाज़के साथ हँसते-हँसते कहा—क्यों, तेरा दिल जल रहा है?

—अगर अब भी तुझे विश्वास नही, तो मेरे सीनेपर हाथ रखकर देख।

गुलनारने दाहिने हाथको यादगारके सीनेपर रखकर "आहा, मेरा हाथ जल गया" कहकर तुरन्त हाथको खींच लिया।

किन्तु गुलनारकी भीतरी अवस्था दूसरी ही थी।

यादगारका दाहिना हाथ अब उसके कन्धेपर था। वहाँ देवदारके वृक्षको तकिया बनाकर बैठी, यादगार उसके सामने बैठा था। कुछ देर तक दोनों एक दूसरेकी ओर नीरव देखते रहे।

इस नीरवताको पहले-पहल गुलनारने तोड़ा—

कबतक "मेरी अँखियाँ तेरी अँखियाँ" करके बैठे रहें। आ गज़ल या गीत गाये।

—मै गज़ल गाना नहीं जानता। अगर तू गाये तो तेरे पीछे मैं भी गाऊँगा।

—गज़ल नही जानता? ना, झूठ बोल रहा है। अभी यहाँ कौन गज़ल गाता था?

—मै नही जानता, तू ही बतला कौन गाता था?

गुलनारने एक ककड़ी जमीनसे उठा यादगारकी ओर फेकी—यही "किसने गाया" को ही गा।

—तेरे आनेपर मैं सब कुछ भूल गया। अब यदि तू गज़ल गाये, तो मै भी अपने गज़लको याद करके सुनाऊँगा।

—खैर रहने दे। आ बदेहागोई* करें।

—अच्छा, मै अपने वाक्योंको बदेहा करके कहता हूँ।

—कौन सी बातों को?

—यही, सुन।

—मेरा कान तेरी ओर है।

यादगारने आरम्भ किया—

मेरी अखियाँ तेरी अंखियाँ,
गुस्सा भरी तेरी अँखियाँ।
क्या अवस्था मेरी होगी,
घायल करें तेरी अँखियाँ।

गुलनारने एक ककड़ी यादगारकी ओर फेंकते हुए कहा—

आः तुहमतची! मैंने कब तुझपर गुस्सा किया?

---

* दोका मिलकर सवाल जवाबमें गाना।

—बात न बदल, इसका जोड़ा कह।

—अभी कहती हूँ, लेकिन यदि तू इसका जवाब न बोल सका, तो इस बृक्षसे एक कमची तोड़ तेरे पैरोंपर साट लगाऊँगी!

—ओः सरेजूयका हाकिम कहाँसे आ गया? खैर, कह, अगर मैं जवाब न बोल सका, तो जो चाहे करना।

गुलनार यादगारको इस तरह बातमें फसा पद जोड़नेकी कोशिश कर रही थी, किन्तु कोई बात मनमें बैठ नहीं रही थी, इसलिये उसने कहा—तू और एक बार अपने गाये पदको पढ़, फिर मुझसे जवाब सुन।

यादगार—मेरी अँखियाँ तेरी अँखियाँ,
गुस्सा भरी तेरी अँखियाँ।
क्या अवस्था मेरी होगी,
घायल करे तेरी अँखियाँ।

गुलनार—तेरा हाथ औ' मेरा हाथ,
तेरा हाथ सुन्दर है यह।
क्या ही अच्छा यदि मेरे गले,
हार होए तेरा हाथ यह।

यादगार—मेरा मुखड़ा तेरा केश,
यह तेरा खुशबूय केश।
क्या ही अच्छा जो मेरे मुखड़े
पर पड़े यह तेरा केश।

गुलनारने अपने केशोंके बारेमें ये पद सुने, किन्तु उसका उत्तर उसे न सूझ पड़ा, इसलिये बदेहागोईको बदलनेका विचार करके कहा—यादगार! तू "राजकन्या"को जानता है?

—राजकन्याको यदि मैं न जानूँगा, तो कौन जानेगा?

—जानता है तो कह।

—राजकन्या तू ही तो है।

—परिहास रहने दे, सच कहती हूँ "राजकन्या" (शाह-दुख्तर) वाली ग़ज़लको तू जानता है या नहीं ? आ फिर हम दोनों उसीको बदेहा (सवाल-जवाब) करके पढ़े ।

यादगार—बहुत अच्छा :

राजकन्या मधुर कन्या राजकन्यका ,
भौंह अपनी दे दिखा कि मै बनूँ गुलाम ।

गुलनार—भौंहे मेरी क्यो तू देखे यार दुर्विचार ,
देखा धनुष बाजार ना यह भी उस समान ।

यादगार—राजकन्या मधुर कन्या राजकन्यका ,
आँखे अपनी दे दिखा कि मैं बनूँ गुलाम ।

गुलनार—आँखे मेरी क्यो तू देखे यार दुर्विचार ,
देखा सुरमा बाजार ना, यह भी उस समान ।

यादगार—राजकन्या मधुर कन्या राजकन्यका ,
मुखड़ा अपना दे दिखा कि मैं बनूँ गुलाम ।

गुलनार—मुखड़ा मेरा क्यों तू देखे यार दुर्विचार ,
देखा कुल्चा बाजार ना, यह भी उस समान ।

"यादगार ! यादगार ! ओ यादगार ।" की आवाज़ने—जो तीस चालीस कदम दूरसे आ रही थी—दो तरुण हृदयोंके प्रेमाभिलापको उबाल खाती पतेलीपर पड़े ठण्ढे पानीकी तरह समाप्त कर दिया । इच्छा न रहते भी यादगार उठकर आवाज आनेकी ज़गहकी ओर गया, देखा कि चरवाहे खड़े हँस रहे हैं । एक लड़केने यादगारसे कहा—अगर आवाज़ न देता, तो शायद शाम तक बदेहागोई समाप्त न होती । हम कबके अपने मालोंको चरानेके लिये ले गये, तेरे माल भी स्वय उठकर चरने गये । जल्दी आ, उनकी खबरदारी कर ।

"अच्छा, अभी आया" कह यादगारने फिर चाहा कि बैठकर "राजकन्या" शुरू कर । किन्तु गुलनारने कहा, इस समय इतना ही

बस ! अब भी काफी देर हो गयी। मैं नवजाई गाय लेने आई थी, कि दोपहरको उसे दुहकर बछड़ेको पिलाऊँ। नहीं जानती देरके लिये माँ की कितनी झिड़कियाँ खाऊँगी और वह क्या-क्या कहेगी।

—क्या कहेगी ? कह देना कि बदेहागोई करती रही, क्यों ?

—एक बार कहकर देखूँ क्या ? शायद वह बालों तकको नोचकर रख देगी। जल्दी कर गाय पकड़कर ला दे और मैं उसे घर ले जाऊँ।

यादगार गायके लिये गया, देखा कि वह अब भी वहीं बैठी है और दूसरोंके साथ चरने नहीं गयी। वह अपने नवजात बछड़ेके लिये रुक गयी थी। यादगारको देखते ही "होः होः" करती पास आ गयी। यादगार ने उसे गुलनारके हाथमें देते हुए कहा—राजकन्याकी बाकी गजल कल गायेंगे, भूलना नहीं।

—यदि अम्मा जजाल (झगड़ा) न करे तब।

यादगार अपने मालोंकी ओर चला और गुलनार अपनी गाय लिये घरकी ओर।

४

विरह

—रुस्तमबाय ! एक कटोरा मट्ठा ला, खलियानसे प्यासा आया हूँ—कहते अक्सक्काल (चौधरी) रुस्तमके दरवाजेपर आया। रुस्तमने उसे बैठनेके लिये देवदारके नीचे लोई बिछा दी और "गुलनार ! रोटी और लस्सी ला" कहकर लड़कीको दस्तरखान लानेके लिये आवाज दी।

अक्सक्कालने बात आगे लड़केकी शिकायतसे शुरू की—जवाँमर्द पोलात मालोंकी अच्छी तरह देखभाल नहीं करता। भेड़ें और बकरियाँ एक मास दूध छोड़ चुकी हैं। गाय भी—जिसे ब्याये छै महिना नहीं हुआ, एक मासमें विसुक गयी। स्वयं मैं लोगोंके झगड़े झंझटमें मारा-

मारा फिरता हूँ। यदि उनके कामोंसे छुट्टी मिलती है, तो खेतके काममें लगता हूँ। यद्यपि अपने खेतोंके अधिक भागको चारयक्कार-पंचयक्कार (बटाई) पर लगाये हुए हूँ, किन्तु यदि स्वय देखभाल न करूँ, तो काम ठीकसे नहीं होता। आँख हटायी नहीं कि माल गायब।

—लेकिन पोलात तो हर रोज ढोरोंको चरानेके लिये ले जाता है।

—ले जाता है, लेकिन सुना कि एक चक्कर लगा छायामे उन्हें बैठा देता है, फिर ये सारे शरारती बच्चे परिहास और खिलवाड़मे लग जाते हैं। जबसे इस मुसाफिर लड़केने आकर चरवाही शुरू की है, तबसे खेल और बढ गया है और मालोकी कोई परवा न करता। हमराह बायके लड़केसे सुना कि यादगार हर रोज झरनेके किनारे बैठकर बाँसुरी बजाता है, दूसरे बच्चे उसका साथ देते हैं। कल यादगार और गुलनारने बदेहागोई की। दूसरे लड़के भी उनकी बदेहागोई सुननेमे लगे थे। मालोंके चरानेकी कौन परवा करता है?

गुलनार एक कटोरा लस्सीके साथ रोटी और दस्तरखान ला बाप और अकसक्कालके सामने रखकर चली गयी, गुलनारके दूर चले जाने पर अकसक्कालने फिर बात शुरू की—तुम्हारी लड़की रुस्तम बाय! सयानी हो गयी। लोग इधर-उधरसे मंगनीके लिये आ रहे हैं। हमराह बाय चाहता है, उसे अपने लड़केके लिये। मेरे विचारमे यदि बाय किसीको भेजे, तो इन्कार न करना। बाय एक धनी-मानी आदमी है। उसके साथ सम्बन्ध करना बहुत अच्छा होगा। वह तुम्हारी इच्छा-पूर्ति करेगा, अच्छा महर (बधूधन) देगा, तुम्हारी आबरू बढायेगा।

रुस्तमने कहा—भाग्य जाने, अभी मै शादीका ख्याल नहीं करता। माँ बेचारी अकेली और बूढी है। बड़े-बड़े सारे काम गुलनार करती है। वह मेरे खेतीके कामोंमें भी हाथ बटाती है। यदि उसे शादी करके बिदा कर दिया, तो हम बेकस हो जायेंगे। भाग्य मदद करे, तो मेरी इच्छा

है, कि एक योग्य जवानको लाकर घर-दामाद बनाऊँ, जिसमें एककी जगह दो सन्तान हो, बुढापेमें हमारी मदद करें।

—जवान लड़कीको योग्य दामाद पानेकी आशामे घर बैठाये रखना या उसे अपने ऊपर छोड़ रखना बिल्कुल ठीक नहीं है। चाहे वह कितनी ही सुशीला और इज्जतदार हो, किन्तु छिद्र ढूँढनेवालोके मुंहको कौन बन्द कर सकता है? शायद तुमने नही सुना, वह चरागाहमे जाकर मुसाफिर जवानके साथ बदेहागोई करती है। अभी ही इस बातकी चर्चा बहुत है। यदि जल्दी इसे न रोका और किसीके साथ लड़कीकी सगाई करके लोगोका मुँह बन्द न किया, तो वे झूठी-सच्ची कहानियाँ गढकर मुफ्तमे बदनाम करेगे। यदि मै जानता कि तुम उस जवानको लड़की देना चाहते हो, तो कुछ नही कहता, लेकिन मुझे विश्वास है, कि तुम ऐसा नही करोगे। अपनी गुलाब जैसी लड़कीको एक आवारा-मुसाफिरके हाथमे तुम कब देना पसन्द करोगे? बुरा न मानना, मैने यह बात दोस्त और भाईके तौरपर कही। मै चाहता हूँ कि एक धन-धान्य-सम्पन्न दामादको देकर तुम्हें प्रसन्न और भाग्यवान बनाऊँ। मेरे विचारमे हमराह बायके लड़केसे बढ़कर अच्छा और धनाढ्य दामाद नही मिलेगा। तुम इसपर खूब सोचो और अपनी स्त्रीसे सलाह करो। जो भी हो सबसे पहिले यह जरूरी है, कि लड़कीका मुसाफिर लड़केसे मेल-जोल बन्द करो। मै फिर कल तुम्हारे पास आऊगा—यह कह अकसक्काल अपने कामपर चला गया।

× × ×

अकसक्कालकी बातने यादगारके भाग्यको उलट दिया और फिर उसे मा-बापके देखते गुलनारसे बात करनेका अवसर नहीं मिला। अगले दिन जब रोजकी तरह मालोंको लेनेके लिये यादगार आया तो रुस्तमने उससे कहा—बच्चा! अब मेरे मालोंको चरानेकी जरूरत नहीं, खेतसे जो कुछ घास-वास लाता हूँ, वह इनके लिये काफी है; जा अपना काम कर।

मानो यादगारके सिर पर आसमान फट पड़ा, लेकिन उपाय क्या था ? अधमरेकी तरह वह रुस्तमके सामनेसे उठा। उसके जानेके बाद रुस्तमने लड़कीको बुलाकर कहा—गुलनार ! अब तू सयानी है, खुद अपनी राहको सफेद कर। इसके बाद परदेसी जवानके साथ बातचीत करना ठीक नहीं।

यादगारके लिये विरहका दिन, हृदय जलानेका दिन आरम्भ हुआ। यह ऐसा विरह था, जहाँ मिलनकी कोई आशा न थी। उसने दोनों जनोंकी दशाको दयनीय बना दी, और ज्वाला न बन भूसेकी आगकी तरह अन्दर ही अन्दर सुलगना शुरू किया।

एक सप्ताह और बीता। सारे सप्ताह दोनो प्रेमी एक दूसरेको न देख सके। विरहका यह सप्ताह उनके लिये सालसे भी बड़ा था। ऐसा साल जिसमे दिन नही निराशाकी एक ऐसी अँधेरी लम्बी रात थी, जिसके खतम होनेपर आशाके प्रातःकालके आनेका कहीं पता न था।

जब यादगारको हमराह बायके लड़केके साथ गुलनारके सम्बन्ध होनेका पता लगा, तो उसका धैर्य टूट गया। यही कारण था कि वह ढोरोंको छोड़कर चट्टानकी आड़से गुलनारके आनेकी बाट जोह रहा था। उसने गुलनारको इस सम्बन्धके लिये बधाई दी, स्वय भी यसावुलका बन्दी बना।

५

सूद-महासूद

आज अजीमशाहकी हवेलीमें भोजकी तैयारी थी। आलीशानका सुन्दर दस्तरखान बिछा था। गद्दे के ऊपर महल्लेके दमुल्ला हमाम, एक ओर अफसरोंके और दूसरी ओर यसावुल अलीमर्दोंके बैठे हुए थे।

अजीमशाह खुद नीचेकी ओर बैठे प्यालोमे चाय डालकर मेहमानोंके सामने रखते बार-बार पीनेके लिये निवेदन कर रहे थे।

सभाका सरदार अलीमर्दा था, कैसे दर्रानिंहा गया, कैसे बहादुरीके साथ भगोडे चरवाहेको पकड़ा इत्यादि बाते वह खूब नमक मिर्च लगाकर कह रहा था। इसी बातके दर्मियानमे उसने एक परमसुन्दरी कन्याके दिखाई देने और यादगारके साथ प्रेमका जिक्र करते उसके सौन्दर्यकी खूब प्रशसा की।

दमुल्ला इमामने कन्याके सौन्दर्यकी प्रशसा सुनकर मुँहमे भर आये पानीको चाटते हुए कहा—या अल्ला, क्या यह सच है!

यसावुल—जो कहा उससे भी ज्यादा सुन्दर, मै समझता हूँ जनाबआलीके उर्दा (अन्तःपुर)मे भी इस तरहकी सुन्दरी शायद ही हो।

इमाम—एक तीरसे दो शिकार करते तो क्या अच्छा न होता?

—सिपाहीकी नजरसे सोचकर मैने वैसा करना पसन्द नही किया, लेकिन इरादा कर लिया, कि इस षोड़शीको हाथ लगाऊँगा। अब तो खैर उसकी माँग बड़ी जगहोसे हो रही है। जब मैंने उसकी प्रशसा जनाब मीर (गवर्नर)से की, तो उनकी नजर गड़ गयी। अब उनके सामने अपने लिये मै कैसे मुँह खोल सकता हूँ।

—और मेरा भगोड़ा भी हाथ लगा—कहते अजीमशाह भी बीचमे बोल उठे—धन्यवाद। अब उसके बारेमे सोचना है।

इमाम—इस लड़केके पास न यहाँ और न कुलाबमे ही पैर रखनेकी जगह है। यदि कोई रास्ता न निकला, तो जनाब यसावुलका खिदमताना भी मारा जायगा।

अजीमशाह—इनका खिदमताना पहिलेसे ही अलग रखा हुआ है, मेरे हककी बात कीजिये। मै भी इस जवानसे पैसेकी आशा नहीं रख सकता, क्योकि मै जानता हूँ, कि वह पैसा नहीं दे सकता। लेकिन कोई

ऐसा रास्ता निकालना चाहिये, कि कुछ साल मेरा काम करे। मेरे लिये बस, इतना ही काफी है।

यसावुल—इसके बारेमे आपने क्या सोचा है ?

अजीमशाह—मेरी रायमे उसे हवालातमे रखने या बुखाराके जेलमे भेजनेसे कोई लाभ नही। यदि अपनी राजी-खुशीसे काम करना कबूल न करे, तो इससे भी फायदा न होगा, क्योकि कबतक हम उसके पीछे-पीछे रहेगे। आज रहेगा और कल भागकर अपना रास्ता लेगा। मेरे ख्यालमे अच्छा यही है, कि पहिले उसे बुखाराके **जिन्दान** और **काना खाना** (खटमल-घर)मे आजीवन कैद और जनाबआलीके दार-मीनार (फाँसी)का भय दिखलाना चाहिये। यह काम आप यसावुल साहब खुद और अकसक्काल कर सकते हैं। दूसरे यह है, कि कब्र और कयामत, (नरक-यातना)से डराकर उसे कर्ज अदा करनेके लिये चाकरी करनेकी बात करे। और यह काम दमुल्ला साहब अच्छी तरह कर सकते है।

दमुल्लाने सीनेपर हाथ रखते—सिर आँखोपर।

यसावुल—अच्छा, खिदमताना और दूसरे खर्च कौन देगा ?

अजीमशाह—खिदमतानाकी फिक्र न कीजिये। पहिले जरूरी यह है, कि लड़केको अच्छी तरह डरा-धमकाकर उसकी नाकमे दम कर दिया जाय। खिदमताना भी मेरे हाथस लेना ठीक नही। इसके लिये अकसक्काल लड़केके नाम पर खारवाजीसूद पर कुदरत समावारचीसे कर्ज लें। झगड़ा खतम होने पर जब लड़का मेरी चाकरी करने लगेगा, तो मै खुद कर्ज बेबाक कर इसका भी एक और दस्तावेज लिखवा लूँगा।

× × ×

अगले दिन यसावुल अक्कसक्कालको साथ ले जेलखानेके दरवाजेपर गया और अकसक्कालसे बोला—आप लड़केके पास जा हर तरहकी बात करके उसे सुलहके लिये राजी कीजिये और सबसे पहले मेरा

खिदमताना माँगिये। यदि वह इस पर राजी न हुआ, तो मै खुद आकर उसकी हड्डी-पसली तुड़वा आँखे निकलवाता हूँ।

अकसक्काल जेलखानाके अन्दर जाना चाहता था, कि इमाम उधरसे आया। अकसक्कालने उससे पूछा—हाँ, क्या खबर तकसीर! नरम हुआ या नही?

—शरीयत (धर्म) क्या है, इसे वह बदमाश लड़का कुछ जानता ही नहीं। उसे बस इसी दुनियाके दण्ड-सासतको दिखलाना चाहिये। कब्र और कयामतको वह एक पैसेपर भी खरीदनेको तैयार नही।

—अच्छा तकसीर!—हँसते हुए अकसक्कालने इमामसे कहा—चायका पैसा तो आपने हलाल कर दिया, अब जाकर वजू और नमाजमे लग जाइये, इस कामको मै खुद करता हूँ।

इमामने अपना रास्ता लिया, अकसक्कालने यादगारके पास जाकर ताना मारते कहा—गाजी (धार्मिक-योद्धा) निरकुश लड़का यही है? खुदाने अच्छा किया जो खुद मालिक बीचमे पड़े, नही तो अब तक बुखाराके जेलमे भेज दिया गया होता। मै तेरे बापकी आत्माके खातिर तेरे पास आया हूँ, कि इस कामको अच्छी तरह निपटा दूँ। लेकिन इस कामके लिये कोशिश करनेसे पहिले यसावुलको खिदमताना देना जरूरी है। कहींसे बीस तका लेकर उसे अदा कर।

—मै कहाँसे खिदमताना लाकर दूँ? फिर यसावुलने मेरी क्या खिदमती की? खिदमत यही की कि मुझे बन्दी बनाया, मेरे सिरपर कोड़े मारे।

—लड़के! अभी तू सयाना नहीं हुआ है, दुनियाँकी चाल व्यवहारको नही जानता। चाल यह है, कि खिदमताना अपराधी देता है। यदि तू न भागता तो न गुनहगार होता और न खिदमताना देता। अब जब तूने खुद ऐसी बेवकूफी की, तो अपने कियेकी दवा कर और इसका दड भी अपने गर्दनपर ले।

—मेरे पास घर-जमीन नहीं है, कि बेंच कर खिदमताना दूँ, मुझे भला कर्ज कौन देगा ?

—तू खिदमताना देनेके लिये राजी हो, दूसरी बातकी फिक्र मत कर। तेरे नामसे कर्ज लेने और तेरे बापकी आत्माके लिये इस कामको पूरा करनेका जिम्मा मै लेता हूँ। केवल इतना ही कबूल कर, कि इस झगड़ेमे जो कुछ खर्च आयेगा, उस सबको तू अपनी गर्दनपर लेनेको तैयार है।

—यादगारने जमीनकी तरफ मुँह गाड़े जवाब दिया—इसे आप ही पर छोड़ता हूँ, लेकिन जरा जल्दी मेरे हाथ-पैर मे जडे कुन्देको नरम कराइये। मेरे पास बिल्कुल ताकत नही है।

—तू अपना अधिकार मेरे हाथोमे सौंप और मेरी बात मान। मै जहाँतक हो सकेगा, कोई बात उठा न रखूँगा।

अकसक्काल जेलसे बाहर आ कुदरतके समावारखाने (चाय खाने)मे गया, यसावुल भी वहाँ मौजूद था। उसने पूछा—शेर बने या बिल्ली ?

—आप और जनाब मीरकी बदौलत मै कब बिल्ली बना, कि इस वक्त बनूँगा। अभी खिदमताना आ रहा है। कल मुकदमा भी खतम करेगे। लेकिन कल आप भी मेरे साथ जेलखानामे रह जरा सिपाहियाना हाथ दिखलाये।

—कल नही तो परसो। जितना ही अधिक दिन वहाँ रहेगा, मेरा खिदमताना भी उतना ही बढेगा।

अकसक्कालने कुदरतको बुलाया और खुद बीचमे पड़ यादगारके नामसे पाँच तकावर एक तका हररोज सूदपर पचीस तका कर्ज लिया। उसमसे बास तका यसावुलको दे पाँच तका अपने खीसेमे डाल लिया। दूसरे दिन अकसक्काल और यसावुल दोनो जेलमे पहुँचे। कुन्दामे कसकर बँधे रहनेसे यादगारके हाथ पैर फूल आये थे। अकसक्कालने "अफसोस"

करते यसावुलसे कहा—इस नवानकी जानपर दया करके कुन्देको जरा ढीला करवाइये।

—बहुत अच्छा, आपकी खातिर मै इसे करवाता हूँ, लेकिन जेल-दारोगाको कुछ देना चाहिये।

—यह सेवामे खुद दिलोजानसे करूँगा।

यसावुलने जेल-दारोगाको बुला कुन्दा ढीला करनेको कहा, दारोगाने अकसक्कालकी तरफ नजर लगायी। अकसक्कालने जेबसे पाँच तका निकालकर उसके हाथमे रखते हुए कहा—इस लड़केके बापकी आत्माको शान्त कीजिये।

दारोगा कुन्दाको ढीला कर अपने कामपर चला गया। अक़सक्कालने यादगारसे कहा—तेरी ओरसे यसावुल साहबसे निवेदन, किया कि जनाब मीरसे कहकर तेरे कसूरको माफ कराये। लेकिन शर्त यह है, कि तू अपने मालिकके पास दस साल चाकरी करे, उसके बाद तेरी मर्जी, जहाँ चाहे वहाँ जा।

यादगार—मै कलतक इस बातपर सोचना चाहता हूँ।

—हर रोज क्या हर घटा जो बीत रहा है, वह तेरे बोझको भारी कर रहा है। कल कुदरत समावारचीसे सूदपर पचीस तका तेरे नामपर कर्ज लिया। आज पाँच तका सूदके साथ तीस तका हो चुका है। कल पैतीस होगा और आगे इसी तरह बढता जायगा। तूने अभी देखा, पाँच तका मैने दारोगाको दिया। यसावुल साहबसे भी "मै जानता मेरा बाप जानता" कहकर इनकारी नही हो सकता था। जितना ही जल्दी झगड़ा मिटे, उतना ही अच्छा। तेरी भी जान छूटेगा और बायको भी अपना हक मिलेगा।

यसावुलने बीचमे बोलते हुए कहा—अक़सक्कालकी बातपर तू राजी भी हो, तो भी यह मालूम नहीं कि मीर साहब राजी होंगे या नहीं। हाँ, तेरे मालिक सचमुच बड़े दयालु पुरुष हैं। कल उन्होंने मेरे

पास आकर कहा "मैने यादगारके कसूरको माफ कर दिया, आप भी उसके कसूरको माफ करके उसको छोड़ दे, जिसमे वह आकर मेरे घरमे बापकी जगह काम करे"। मीर साहब तो कह रहे हैं, कि इस लडकोको बुखारा जनाबआलीके हाथमे भेज देना चाहिये, वहाँ शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)के अनुसार चाहे दार (शूली)पर खीचेगे या मीनारके नीचे गिरायेंगे या यदि जान बख्शा तो आजन्म बन्दी बना बन्दीखानेमे डाल देगे। मीर साहब बहुत हठ कर रहे हैं, लेकिन तू यदि अकसक्कालकी सलाह माननेके लिये तैयार है, तो मै, अकसक्काल और तेरे मालिक मिलकर किसी तरह मीरको राजी कर लेगे।

यादगारको दार, मीनार और आजन्म बन्दीखानासे कोई भय न था, लेकिन एक बात थी जो उसे मुक्त होनेके लिये मजबूर कर रही थी, वह थी गुलनारके लिये कुछ करना और उसको एक बार फिर देखना। यादगार यदि पहले अपनी खातिर गुलनारको देखना चाहता था, तो अब खुद गुलनारके खातिर ऐसा करना जरूरी था। गिरिफ्तारीके दिन गुलनारने सिद्ध कर दिया, कि वह यादगारके साथ सच्चा प्रेम रखती है। यादगारने अपने मनमे सोचा—"यह नामर्दी होगी, यदि मै उसकी खातिर मुक्त होनेकी कोशिश न करूँ। आगे जब भी मन होगा, अज़ीमशाहकी गुलामीसे भाग निकलना मेरे हाथमे है।

यादगार राजी हो गया। यसावुल और अकसक्कालने जाकर उसके नामसे डेढ सौ तका और कर्ज लिया, जो हाकिम, जेलदारोगा, यसावुल, अकसक्काल और इमामके अन्दर बाँटा गया। यादगार जेलसे निकल अजीमशाहकी गुलामीमे पड़ा। कुदरतका पैसा सूदके साथ दो सौ तका हो चुका था। इस रकमको पुराने कर्ज़के साथ जोड़ एक हजार तकाका करारनामा उसने बायके नाम लिख दिया, जिसमे शर्त यह थी कि वह पूरे दस चान्द्र वर्ष काम करके हर साल सौ सौ तकाके हिसाबसे मालिकका कर्ज़ बेबाक कर देगा।

बायने बुखारा जानेके लिये भेड़ें जमाकर रखी थीं। दूसरे दिन वह यादगारसे भेड़ें हँकवा बुखाराके लिये रवाना हो गया।

६

दो मँगनियाँ

—फीरोजा! तुझे क्या हो गया है? तेरे मेहमान आ रहे हैं—कहती सलामत बीबी रुस्तमके घरमे दाखिल हुई। गुलनारके सिरहाने बैठी फीरोजा आँसू बहाते बोल रही थी—बच्चीका सारा शरीर आशमे पडे लोहेकी तरह जल रहा है। ऐसी हालतमें उसकी मगनीका विधि-विधान करना बिल्कुल उचित नही। ददश (पति) एकबग्गा आदमी है। अकसक्कालने हमराह बायकी ओरसे मँगनी माँगी, उसने 'हाँ, कह दिया और अब बच्चीकी बीमारीका कुछ भी न ख्यालकर काम करनेको तैयार है। मै इस समय रोगीकी शुश्रूषा करूँ या मेहमानोकी खातिरदारी?

सलामत बीबीने गुलनारके माथेपर हाथ रखकर कहा—कुछ नही हुआ है, सिर्फ उस दाढ़ीजार यसावुलसे डर गयी है। मै कल एक अलस (टोना) कर छोडती हूँ, फिर "तूने देखा मैने न देखा" हो इसकी बीमारीका कही पता न रह जायेगा। जल्दी आ, आश (मास-खिचड़ी) तैयार करे। मँगनीवाले आना ही चाहते हे।—सलामत बीबी उठकर चूल्हे और देगकी ओर चली गयी।

× ^ ×

रुस्तम देवदारके नीचे पानी छिड़ककर कम्बल बिछा रहा था, इसी वक्त इमाम, अकसक्काल और दर्रेके कुछ दूसरे बडे-बूढे आये। रुस्तमने मेहमानोको स्वागतम् कह फर्शपर बिठाया। अभी दस्तरखान नहीं फैलाया गया था, कि शहरकी ओरसे एक गदहसवार आता दिखलाई पड़ा। पोलात मेहमानोंके जूतोको ठीकसे रख रुस्तमके पास खड़ा था। सबसे पहले

उसकी नज़र सवारपर पड़ी। वह बोल उठा—आका कुदरत जैसा मालूम होता है।

—कौन कुदरत?—अकसक्कालने पूछा।

—वही कुदरत, समावारची—कहकर पोलातने खूब गौरसे देखकर कहा—हाँ वही हैं।

इमाम—खुदा बढावे। कहते हैं, कुदरत बड़ा बाय हो गया है। जब दर्रासे गया था, तो उसके पास कुछ भी न था।

अकसक्काल—काज़ीखानामें पाँच तकापर एक तका सूदका व्यवहार और हाकिम-खानामें चप्पी लगाना हर आदमीको बाय बना देता है।

कुदरत आ पहुँचा। सबने खड़े हो बगलमें ले उससे सलाम-दुआ की और गद्देपर लेजाकर बैठाया।

इसी बीच दस्तरखान भी बिछ गया। रोटियाँ तोड़ी गयीं। मिठाई जगह जगह रखी गयी और प्यालोंमें चाय डाली जाने लगी।

इमाम—कुदरत बाय! बहुत अच्छे समय पहुँचे, यज्ञके शुरू होते ही आये। भगवान् करे तुम्हारा कदम मुबारक हो।

कुदरत—किस तरह का यज्ञ?

—रुस्तम बाय हमराह बायके पुत्रको अपना दामाद बनाने जा रहे हैं—कहकर अकसक्कालने जवाब दिया।

कुदरतके चेहरेका रंग बदलने लगा, लेकिन उसने बाहरसे हर्ष प्रकट करते हुए कहा—ओहो, खुदा मुबारक और भला करे।

अक़सक्कालने कुदरतके चेहरेको बदला देखकर उससे कहा—कुदरत! कुछ चिन्तितसे मालूम होते हो, खुदा न करे, क्या किसी खास कामसे आये हो। कुदरतने अकसक्कालके शकको दूर करनेकी कोशिश करते हुए कहा—नहीं, कोई बात नहीं है।

अक़सक्कालकी बातसे दूसरोंका भी ध्यान उधर गया और उन्होंने भी कुदरतकी परिवर्तित अवस्थाको देखा।

दस्तरखानपर भोजन आनेसे पहले ही कुदरत फातिहा पढ़ आराम करनेके बहाने उठकर एक ओर चला गया और रुस्तमको भी पास आनेका इशारा किया। दोनों आगे पीछे मेहमानोसे दूर जा एक गढेसी जगहमे बैठे। कुदरतने बात आरम्भ की—आका रुस्तम! तेरे घरपर सौभाग्य सूर्य उदय होना चाहता है, उसका सवाद लेकर मै तेरे पास आया। लेकिन ऐसे समय पहुँचा, कि सौभाग्य-सूर्य तुझे वचित रखकर चला जाता। तो भी भगवान्‌की दयासे अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। अभी उसे लौटा लानेका अधिकार तेरे हाथमे है। लेकिन मालूम नही तू सौभाग्यको स्वागत करना चाहता है या ठुकराना।

रुस्तम—एक ओर मेरी बच्ची बीमार है। दूसरी ओर अपनी इकलौती सतानको दूसरेके घर देनेका काम, दोनोने मुझे बहुत परेशान कर रक्खा है। ऐसी अवस्थामे तेरी पहेली बूझनेकी मुझमे शक्ति नहीं। भगवान्‌के लिये अपनी बात ताजिकी (सीधी-सादी) बनाकर कह, कि मै भी समझूँ। बुखाराके व्यापारियोकी तरह जबानबाजी करना छोड़।

—सीधे-सादे तौरपर बात यह है, कि पिछले सताह अलीमर्दो बेक यसावुल अपने कामसे यहाँ आया था। उसने तेरी कन्या देखी। बातचीतके बीच उसने उसके सौंदर्यकी प्रशसा हाकिमसे की। हाकिमकी दो बीबियाँ मौजूद हैं, लेकिन बड़ी बीबी बूढी और बेकार है। छोटी जवान होनेपर भी सदा बीमार रहती है। इसलिये हाकिमकी इच्छा पहले हीसे थी, कि पर्वतस्थलकी एक स्वस्थ एव सुन्दर लड़कीसे विवाह करे। यसावुलके मुखसे तेरी कन्याकी प्रशसा सुनी, तो उसकी इच्छा और बढ गई। उसने यह काम यसावुलको सुपुर्द करते कहा—'इस कामके लिये कन्याको जबर्दस्ती पकड़ मँगाना बिल्कुल उचित नहीं, क्योकि मै यह काम वासनाके लिये नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मै एक जीवन-सगिनी नारीको स्वीकार करना चाहता हूँ। इसलिये दर्राके किसी निवासीको ढूँढ, जो बीचमे पड़कर माँ-बापकी स्वीकृति हासिल करे, हम महर (बधू धन) और यज्ञ-खर्च दे

बड़े ठाट-बाटसे रीति-रिवाजके अनुसार ब्याह करेगे।' यसावुलके साथ मेरी पुरानी दोस्ती है। उसने इस कामके लिये मुझे तेरे पास भेजा। मैं स्वयं यहाँ आकर इस जमावड़ेको देखकर हैरान हूँ। नहीं मालूम तू क्या सोचता है।

रुस्तम—प्रथम तो मै एक गरीब आदमी हूँ। कहाँ मै और कहाँ बिलायतके हाकिम (गवर्नर) के साथ शादी-सबध? दूसरे यह कि मेरे घरमे केवल एक ही सतान है। अगर उसे भी आँखोंसे दूर भेज दूँ, तो मेरी और उसकी माँकी क्या हालत होगी? तीसरे यह कि हमराह बाय उसपर नजर गड़ाये हुए है और अकसक्काल बीचमे पड़ा है। उन्होने चीजे भी तैयार कर ली हैं। आज वह मँगनीके लिये आये हैं। अब किस मुँहसे कहूँ, कि मै तुम्हे अपनी लडकी नही दूँगा? तू स्वय जानता है कि इस दर्राके लोग नाखून और माँसकी तरह एक-दूसरेमे घुले-मिले हैं। अब तू बतला कि मै क्या करूँ?

कुदरत—गरीबकी लड़की हाकिमके घर जाय, इसमे कोई दोष नहीं, यह तो बल्कि गर्वकी बात है। लडकीके दूर जानेके लिये भी डरनेकी जरूरत नही। हाकिम तेरा दामाद होगा, तो तेरे पास घोडा और सवारी होगी। जिस दिन चाहेगा जाके लडकीको देख सकेगा। यदि चाहेगा तो शहरमें अपना घर-स्थान बना लेगा। रही बाय और अकसक्कालकी बात, इसकी दवा मेरे पास है। यदि तूने अपनी लड़कीकी मँगनी किसी गरीबके साथ की होती तो मुश्किल होता, क्योकि वह न तो आसमानसे भय खाते हैं न जमीनसे। हाकिमो-काजियोको वह एक पैसेपर भी खरीदनेको तैयार नहीं। लेकिन अर्बाब-अकसक्काल धनी-मानी हाकिमसे अलग नही हो सकते। उनकी सारी दौलत-व-इज्जत हाकिमकी मेहरबानीसे है। जब हाकिम उनपर अनुग्रह करता है, तो फिर वह हाकिमकी एक बातको दो कैसे कर सकते हैं? बाय और अकसक्काल उसकी बातपर राजी न होकर कहाँ रहेंगे? अपने काममे उन्हें हर वक्त हाकिमकी सहायता आवश्यक

होती है। फिर वह कैसे हाकिमको रुष्ट कर सकते हैं ? इस काममे सिर्फ तेरी स्वीकृति चाहिए।

—बहुत अच्छा, कुदरत ! मै और कुछ नहीं जानता। तू ही सब ठीक-ठाक कर। लेकिन ऐसा उपाय कर कि बाय और अकसक्काल मुझपर नाराज न हों।

—इसके लिये खातिरजमा रह 'सिपाहगरीके तीस पैर होते हैं', नहीं सुना ? मै खुद सिपाही नही हूँ, लेकिन चन्द सालोंसे सिपाहियोंकी पत्तल चाटता रहा हूँ। ऐसी उपाय करूँगा कि 'लाल भी हाथ आये और यार भी नाराज न हो।'

रुस्तम और कुदरतके वार्तालापको बढते देख मेहमानोके दिलमे तरह-तरहके सदेह पैदा होने लगे। अकसक्कालको पहिले ही कुदरतके रग-ढगसे शक पैदा हो गया था। वह हाल जाननेके लिये मेहमानोंके पाससे उठकर उनके पास आ मज़ाक करते हुए बोला—हॉ क्या बात है ? तुम लोग यहॉ अडा देकर चूजा निकाल मेहमानोके लिये कबाब तैयार करनेके प्रयत्नमें तो नही हो ?

कुदरतने सारी बात अकसक्कालसे कहकर उपसहार करते हुए कहा—यदि लड़कीका भाग्य और नसीबा हाकिमके घर जानेका है, तो तुझे भी हाकिमके अनुरूप ही भेट-उपहार मिलेगा।

अकसक्कालने उत्तरमे कहा—जो भी हो, इस बातको इस जलसेमें खोलना ठीक नही है, क्योकि बात सर्व-साधारणमे फैल जायगी और आश्चर्य नही कि 'हाकिमको क्या हुआ है, कि हमारे दर्रासे लड़की निकालकर ले जाना चाहता है' कहकर उपद्रव करनेके लिये तैयार हो जायॅ। फिर तो रुस्तम, हमराह बाय और बड़े बूढोको एक तरफ छोड़ दर कि भुक्खड़ इज्जत मानके नामपर उठ खड़े होंगे। तब हाकिम भी हमसे नाराज होगा। हमारे शिरपर डडे टूटेंगे और बदनामी अलग होगी। इसकी दवा यही है कि लड़कीकी बीमारीका बहाना करके इस

मगनीकी मजलिसको स्थगित कर दिया जाय। इसके बाद अँधेरी कोठरीमें हमराह बाय और ग्राम-ज्येष्ठकों (बड़े-बूढ़ों)के साथ बात करके सारा काम ठीक कर लें। तब किसीको शिकायत नहीं रहेगी। और सर्वसाधारणमें भी गौगा नहीं फैलने पायेगा। हमराह बाय भी इस बात पर राजी हो जायगा। अगर उसे अपने लड़केकी मँगनी करनी है, तो उसके लिये यहाँ लड़कियोंका अकाल नही है। उसके पास पैसा है, फिर कौन उसे अपनी लड़की नही देगा। नही सुना है "पैसा हो तो जँगल मे भी शोरबा।"

७

ब्याह (निकाह)

सरेजूयमें कुदरत समावारचीकी हवेली कालीन, गेलम्, अदरस और शाहीके गद्दोंसे सुसज्जित थी। कुदरत इस सारे सामानका मालिक न था। हाकिमखाना (गवर्नर-भवन)से इन सब चीजोंको लाकर कुदरतकी हवेलीको प्रासादमें परिणत कर दिया गया था। यसावुल हाकिमके सिपाहियोंके साथ हाथ-बाँधे सेवाके लिये तैयार थे। स्वय कुदरत भी आज हाकिमके दिये हिसारी रेशमी जामाको पहने दुलहिनके बापकी तरह कभी भीतर और कभी बाहर जा सिपाहियों और यसावुलोंको कामके लिये हुक्म दे रहा था।

इससे साफ है, कि कुदरत अपने प्रयत्नमें सफल हुआ। हमराह बायने गुलनारको बहू बनानेका विचार छोड़ दिया। ग्राम-ज्येष्ठकोंने गुलनारको हाकिमके हाथोंमें सौंप उसे अपना सम्बन्धी बनाना पसद किया। उसके बाद कुदरत अकसक्कालके साथ सरेजूय आ भोजके सारे सामान ले दर्राके लोगोंको एक बड़ी दावत दी। माँ-बाप और दूसरे सम्बन्धियोंके साथ गुलनारको सरेजूय लाया। असली यज्ञ और निकाह

यहाँ होनेवाला था। रुस्तमका सरेजूयमे कोई घर न था। इसलिये निकाहका प्रबध कुदरतके घरमे किया गया था। इसीलिये आज वहाँ इतनी चहल-पहल थी।

गुलनारको कुछ समझ न आ रहा था, कि यह देना-लेना, आना-जाना, चीजोका इधरसे उधर उधरसे इधर फेरना-फारना क्या है। यादगारके पकड़े जाने और हमराह बायके लड़केके साथ अपनी सगाईकी बात सुनकर उसके हृदयको बहुत आघात लगा और वह बीमार पड़ गई थी। वह न समझ सकी, कि किस भाग्यने पलटा खाया और यह यज्ञ उठ खड़ा हुआ, जिसके लिये वह सरेजूय लाई गई। यह अवश्य उसके लिये सौभाग्यकी बात थी। क्योकि उसे मालूम था, कि यादगार भी सरजूयमे है, यद्यपि जेलमे है लेकिन है सरजूयमे। कहा जाता है, कि वह स्वय अपनी भावी पत्नीको हाकिमको दे रहा है, यह खेदजनक जरूर है, लेकिन गुलनारको आशा थी, कि जैसे वह हमराह बायके लडकेसे मुक्त हुई, उसी तरह शायद हाकिमके हाथसे भी छुट्टी पाये। गुलनार भय और खेदके समुद्रमे डूबती निराशा और बेबसीके भँवरमे चक्कर काटती अपनी इच्छाके विरुद्ध सरेजूय लाई गई थी।

आजकी रात निकाहकी रात थी। शामकी नमाजके बाद हाकिम-खानेके अमले, महल्लाके इमाम और बड़े-बूढे कुदरतकी हवेलीमे आये। जलपान हो चुकनेपर अलीमर्दाने इमामके सामने अपनेको निकाहमे हाकिमकी ओरसे वकील बनाया जाना दो गवाहो द्वारा सिद्ध किया। अब गुलनारकी ओरसे वकील बनाना जरूरी था। कुदरत गुलनारके बापकी ओरसे मुकर्रर हो दो गवाहोके साथ हवेलीके अदर आया, कि गुलनारसे इसके बारेमे स्वीकृति ले। घर एक छोरसे दूसरे छोर तक स्त्रियोसे खचाखच भरा था। आगे पीछे, सामने, पीठसे पीठ, जाँघसे जाँघ, कँधेसे कँधा मिलाये स्त्रियोका बैठना उस जमानेके

ख़ाराके ऐसे जलसोंका एक नमूना था, एक दूसरेकी बातको न सुनने दे उनका बराबर बोलते जाना भी उसीके अनुरूप था।

इसी समय दुलहिनकी पोशाकमे सुसज्जित गुलनारको ले आ दरवाजेके पास बैठा दिया गया। कुदरत दोनो गवाहोके साथ दरवाजेके पास पातित-जानु बैठा था। उसने गुलनारसे कहा—कह बेटी गुलनार! कि मुझे तूने अपनी ओरसे निकाहके लिये वकील बनाया।

गुलनार— .

—जल्दी कर, वकील बननेके लिये कह। मुहूर्त बीत रहा है।

गुलनार—...

औरते भी एक दूसरेसे 'चुप भी रहो, दम शी, चप शी, न दुलहिन-की बात सुनाई देती है न वकीलकी' कहती हल्ला कर रही थी। कुदरतने पहले स्त्रियोको डॉटकर कहा—'चुप रहिये, मै दुलहिनकी बात सुन रहा हूँ', और फिर गुलनारकी ओर—गुलनार! मै तुमसे बोल रहा हूँ, कहो कि मुझे निकाहके लिये वकील बनाया।

गुलनार—...

गवाहोमे एकने कहा—बेगम, बहुत प्रतीक्षा न करावे, कहे 'वकील' बनाया।

गुलनार— ..

कुदरतने ऊँची आवाजसे कहा—क्या इस घरमे कोई बर्रिन्दा-दर्रिन्दा (मारू-काटू) स्त्री नही है, कि लड़कीके मुँहसे बात निकलवाये? केबानी (कदबानू) कहाँ है?

कुदरतकी बीवी गुलनारकी पीठके पास बैठी हुई थी। उसने उसे दबाकर कहा—तेरा चचा ऊब गया है, जल्दी कह कि वकील बनाया।

गुलनार—...

केबानी 'ठहरो-ठहरो मै स्वय कन्याके पास आ रही हूँ' कहती औरतोंके बीचसे किसीकी जाँघ, किसीकी पीठ और किसीके शिरपर पैर

रखती गुलनारके पास पहुँची। उसने गुलनारकी बगलमे बैठी फीरोजा और सलामतको वहाँसे भगा 'मर जाय यह रवाज, तुम क्यो नही जोर देती, कि बच्ची जल्दी जवाब दे, दिल टुकड़े-टुकड़े होकर निकलनेवाला है। हाकिमकी छोटी बीबी, सरेजूयकी बेगम, यह कैसी बात' कहकर खुद बगलमे बैठी और दूसरी बगलमे कुदरतकी बीबीको बैठाकर बोली—जल्दी 'करो, केलिनपाशा (दुलहिन बादशाह)! कहो कि वकील बनाया!

गुलनार—...

—चक्की-चूल्हा, हाकिमकी सारी जायदाद तुम्हारी हुई, कहो, जल्दी कहो कि वकील बनाया।

गुलनार— .

—नाज-नखरा बस करो, कहो कि वकील बनाया।

गुलनार— .

केबानीने अपने हाथोको गुलनारके कपडेके भीतरकर उसके शरीरको जोरसे दबाके कहा—कहो कि वकील बनाया।

गुलनारको बहुत दर्द मालूम हो रहा था, तो भी वह चुप रही।

—ओ., यह गूँगी कहाँसे आई!

गवाहोमेसे एक, जो कि महल्लेका मुवज्जिन् था, बोला—कुदरत बाय! अब हो गया, ज्यादा जोर देनेकी जरूरत नही। कहा है, मौन स्वकृतिका लक्षण है।

गुलनारने देखा कि 'मौन स्वीकृतिका लक्षण' हो काम खराब होना चाहता है। वह एकाएक हिचकी बाँधके रोने लगी।

मुवज्जिन्—अब बात करनेकी जरूरत नही 'रोना बधूकी स्वीकृतिका चिह्न है।'

कुदरत—अगर मुँह खोलकर कह दे, तो और अच्छा।

मुवज्जिन्—यदि मेरी बातपर विश्वास नहीं तो, आओ चलकर दमुल्ला इमामसे पूछें।

कुदरतके साथ गवाह मेहमानखाना (बैठक)में पहुँचे और मुवज्जिन्ने इमामसे कहा—तक़सीर ! दुलहिनने पहिले मौन धारण किया, फिर वह रोई। मै इन्हें स्वीकृतिका चिह्न कहता हूँ, लेकिन कुदरत बाय इसे स्वीकार नहीं करते।

इमाम—"सकूतुल् बक्र अलामतुर्रज़ा" दुलहिनका मौन स्वीकृतिका चिह्न है, यह किताबमे आया है। दुलहिन कन्या लजाती है और साफ जवाब नही देती, इसलिये मौन धारण करती है। नही तो वह स्वय चाहती है। इसीलिये मौनको शरीयतमे स्वीकृतिका चिह्न कहा गया है। और निकाहके वक्त जो दुलहिन रोदन करती है, वह हर्षका रोदन है, हर्षके साथ रोना राजी होनेका चिह्न है। वस्तुतः दुल्हा जनाब मीर (गवर्नर साहब)को दुलहिनके साथ शादी करनेका अधिकार है। अच्छा, आप लोग गवाही दीजिये, शरीयतके अनुसार सब ठीक है।

पहले मुवज्जिन्ने 'अऊज बिल्लाह' (भगवानकी शरण) कहकर गवाही शुरू की—लालचके लिये नही बल्कि खुदाके लिये मै गवाही देता हूँ, कि बीबी गुलनार पुत्री .

कुदरत—रुस्तम बाय।

—पुत्री रुस्तम बायको वकील ..

—नही 'पुत्री रुस्तम बाय, कुदरत बायको निकाहके लिये वकील बनाती है'—कह।

मुवज्जिन्—पुत्री रुस्तम बाय, कुदरत बायको निकाहके लिये वकील बनाती है।

इमामने 'नही इस तरह नहीं, तुझे क्या हो गया है, होशकर' कहकर गवाहीके वाक्यको फिर दुहराया। मुवज्जिन्ने इमामके मुहसे वाक्यको सुनकर शब्दश. दुहराते 'पुत्री रुस्तम बाय, कुदरत बायको निकाहके लिये वकील बनाती है' कहकर आस्तीनसे शिर और मुँहपरके पसीनेको पोछा।

दूसरा गवाह भी 'अऊज़ बिल्लाह' कहकर रुक गया। इमामने गवाही-

के हर वाक्यको गवाहको सिखलाया। फिर उसीके अनुसार दोहराकर 'खुदाई गवाही'की विधि पूरी की गई।

नौकरने पानीके भरे एक कटोरेको लाकर इमामके सामने रक्खा। इमामने 'अऊज़ बिस्मिल्लाह'के साथ आरभ करके अरबीमे निकाहका खुतबा (उपदेश) एक खास स्वरमे पढा। अरबी खुतबा खत्म करके इमामने कुदरतकी तरफ निगाह करके ताजिकी (स्थानीय) भाषामे कहा—तुम जो कि माननीया बीबी गुलनार सुपुत्री रुस्तम बायकी ओरसे वकील, सच्चे वकील बनाये गये हो, क्या तुम उनकी शुभात्माको मुसलमानी निकाहके लिये अमारतपनाह ईशान तुकसाबाको पत्नीके तौरपर प्रदान करते हो?

कुदरत—प्रदान किया।

इमामने—अलीमर्दां की तरफ निगाह करके कहा—अमारत-पनाहकी ओरसे क्या इन्हे पत्नीके तौरपर तुम स्वीकार करते हो?

—स्वीकार करता हूँ।

अविवाहित नौजवानोने मगलके विचारसे निकाहवाले कटोरेके पानीको इमामके आगेसे लेकर थोड़ा-थोड़ा पान किया।

अलीमर्दां बेकने इमाम और अर्बाब (चौधरी)को निकाहाना (ब्याहकी दक्षिणा) और 'लालचके लिये नही बल्कि खुदाके लियें' गवाही देनेवाले गवाहोको भी दो-दो तका इनाम दिया। अब गुलनार हाकिमकी माल थी।

उसी रातके सबेरे बहुमूल्य सुनहले चारजामेसे सुसज्जित घोड़ेपर सलामत बीबीके पीछे गुलनारको चढा बड़ी चहल-पहलसे हाकिमके महलको ले चले। उसके आगे-पीछे बहुतसी दूसरी स्त्रियाँ भी चल रही थीं, जिससे दुलहिनकी शान-शौकत दुगुनी हो गई थी। साधारण दर्शकोके लिये यह बरातकी चहल-पहल थी, लेकिन गुलनारके लिये यह इज्जतदार मुर्देकी कब्रिस्तान-यात्रा थी।

८

मदरसा (महाविद्यालय)

बुखारा नगरमे हौज-काज़ियानके सामने दक्खिनकी ओर मुल्ला महम्मद शरीफ-मदरसा है। इस मदरसेकी इमारत पक्की ईटोकी है। इसके सामने दो प्रासाद और बाहरकी ओर दो-तला कोठिरियोकी पॉतियॉ हैं। मदरसेके सामनेका फाटक बहुत ऊँचा है। उसके अदर नीचे-ऊपर छः और पॉतियॉ हैं। फाटकके अदर नीचेवाली बिचली जगहमे लकड़ीका दोपल्ला भारी किवाड़ लगा हुआ है। जिसपर छः, बारह, सोलह कोनोकी आकृतियाँ खुदी हुई हैं। फाटकके किवाड़के अदर और बाहरकी ओर मज़बूत कीले लगी हैं, जिनके नीचे लाल रगकी छकोनी पत्तियॉ हैं। दोनो किवाड़ोंमे एक-एक बड़े-बड़े छल्ले लगे हैं, जो बद करते वक्त हैंडल-का काम देते हैं और ताला लगाते वक्त सॉकलका। दाहिनी ओरके छल्लेके नीचे घटीकी जजीर लटकती है। दरवाजा बद हो जानेपर, इसे हिलाकर मुबज्जिन्को खबर दी जा सकती है।

दरवाजेके अदर घुसनेपर बीचकी ड्योढीम आइये, यह मीनाकारी किये हुए तीन गुबदोंकी पॉतीसे बनी हुई है। यह गुबद मेहराबी गर्दनों द्वारा एक दूसरेसे सबद्ध हो और छतकी तरह मालूम होते हैं। फाटकके सामने लोहेके जगलोवाली एक पॉती है, जो कि गर्मीकी मस्जिदके हातेको बिचली ड्योढ़ीसे अलग करती है। दाहिनी ओर बिचली ड्योढ़ीका दूसरा भाग है, जिसके सामने सर्दीवाली मस्जिद है। मस्जिदके सामने बॉई ओर एक बड़ा रास्ता है, जिससे होकर मदरसेके भीतरी ऑगनमे जाया जाता है। बॉई ओर बिचली ड्योढ़ीका तीसरा भाग है, जहॉ सामने पाठालय है। पाठालयके सामनेसे भी एक रास्ता ऑगनके अदर जाता है।

अगर आप मदरसेके फाटकके अदर आकर बॉये पाठालयकी ओर

मुड़े, तो पाठालय तक पहुँचनेसे पहिले आपके बाँये एक सँकरी अँधेरी सीढी मिलेगी। यदि इस घुमौआ सीढीसे ऊपर चढे, तो अतमे एक द्वार मिलेगा, जो कि फाटकके ऊपर वाले कमरेका द्वार है। लेकिन कमरेके इस द्वार तक पहुँचनेसे पहिले अँधेरेमें टटोलकर बाँई ओर मुड़े, तो वहाँ एक और कोठरीका द्वार मिलेगा। अनजान आदमीको इस जगह किसी कोठरीके होनेका सदेह भी नही हो सकता। आप भी यदि हाथसे न टटोलें या दियासलाई न जलाये, तो नही मालूम कर सकते कि यहाँ कोई द्वार है।

× × ×

अक्तूबरका अत था। अभी कड़ी सर्दी शुरू नहीं हुई थी। उक्त कमरेमे एक चालीस साला हिसारवाला मुल्ला अपने रुईदार जामेसे मुँहको ढाँके लेटा हुआ था। इसी वक्त एक दूसरा तीससाला हिसारी मुल्ला मदरसे के रिवाजके विरुद्ध बिना किवाड़ खटखटाये द्वार खोलकर अदर आ खड़ा हुआ। मुल्लाके शिरपर बुखाराकी एक कुदली टोपी थी और तनपर एक लबा साटनका जामा। उसने 'हाजित्! ओ हाजित्!' कहकर आवाज दी। सोनेवालेको जरा भी न सुगबुगाते देख उसने और ऊँची आवाजसे कहा—'हाजित्! मै बोलता हूँ ओ गुर्ग (भेड़िये)! जिदा है या मुर्दा!' कोठरी वाला आदमी जिसे आगतुकने 'हाजित्' और गुर्ग (भेड़िया)'के नामसे पुकारा, शिरको उठाना तो दूर मुँहको भी खोले बिना बोला—क्या कहता है? मुझे अपनी हालतपर नही छोड़ेगा क्या?

—आज आश (खिचड़ी) नहीं पकाया? मेरा पेट भूखसे तबूरा बजा रहा है।

—आश किस चीजसे पकाऊँ? कल घीके मटकेको धूपमे रक्खा और एक प्याला घी बचाकर रक्खा था, उसे भी कल तेरे 'नकबत खोजा' (नेकवख्त खवाजा' सुभग स्वामी) के आशमे खत्म कर दिया। अब आशकी जगह मटकेको तोड़कर उसके ठीकरेको खा।

आगतुक जूतेको निकाल द्वारके पास रख हाजित्के पास आकर बैठा और उसने उसके शिरसे जामाको खींचकर दूर फेक 'उठ-उठ' कहते उसकी बाँहको पकड़कर जोरसे उठाना चाहा।

—मखदूम ! अपने बापकी आत्माओंके लिये मुझे अपने हालपर छोड़ दे। वल्लाह (भगवानकी शपथ) मै न उठूँगा।

—उठ, मै कहता हूँ उठ। किसी तरह भी आश पकाये बिना नही रहा जा सकता।

हाजित उठकर बैठ गया और अपने साथीसे बोला—अच्छा, ले उठ बैठा। बतला क्या कहता है ?

—शराफ कसाईके पास जा, थोड़ा गोश्त और थोड़ा घी ला। चावल हमारे पास है। आश तैयार कर ले।

—ऊँहु ! 'अपने स्वप्नको पानीसे कह', कल शराफ कसाईने कहा कि यदि पिछले उधारको न दिया तो एक बोटी गोश्त भी उधार न दूँगा।

—यदि तूने पहिले मीठी-मीठी बात की, तो देखा न 'उधार नह दूँगा' कहता है। अरे कोई बहाना करके लड़ जा, गर्दन पकड़कर जमीनपर पटक। मै भी तेरे साथ आ रहा हूँ। दोनों मिलकर खूब कूटकूटकर भर्ता बना दें। इस तरह कसाई और बनियेको जो कुछ चाहो उधार देनेके लिये तैयार कर सकते हो।

—बाज़ार-ग़ाज़ियानमें कोई नहीं है, जिसने इन पिछले दस सालोंमें तगादा न किया हो, या उधार देनेसे इन्कार करनेपर मार न खाई हो। लेकिन अब अवस्था इस हद तक पहुँच गई है, कि अब वे मारसे भी नही डरते। उधार लौटा देना दरकार है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

—खैर, आजके दिन किसी तरह बिता देंगे। पुलाव न सही भात पका लेगे। लेकिन अभी वसतके आनेमें तीन मास हैं। कोई रास्ता निकालना है। जामाको शिरपर ढाँककर सोनेसे काम नहीं चलेगा।

—यह आसान है—हाजितने कहा—कल चलो, कराकुल चलें।

वहाँ काज़ीसे खत लेकर दोनों दो मस्जिदोंके इमाम बन जायँ। एक सप्ताह रहनेके बाद इमामकी आमदनीके अतिरिक्त इधर-उधरसे उधार लेकर बसतमें लौटनेका वादा करके चल दे। यही काम खैराबाद और बाबकदके तूमानो (परगनो) मे भी करे। इन जगहोंमेंसे हर स्थानमें एक-एक आदमी पचाससे डेढ सौ तकके तक बना सकता है। यह रकम हमारे लिये बसत तकके लिये काफी होगी। गर्मी आनेपर फिर उन्हीं इमामतोंपर चलें और हर जगहसे दो सौसे छः सौ तक हाथ लगायँ। यह रकम दोनोंके आगेके खर्चके लिये काफी हो सकती है, लेकिन यह तेरा 'नकबत खोजा' बेदवाकी बीमारी है। अगर तू हर रोज उसे लाकर भोज देता रहा, तो यह सारी मिली रकम भी कुछ नही। अगर तू उसकी इतनी दावत न करता, तो हमारी यह हालत न होती। हमारा चावल और घी कन्या (अक्तूबर) मास तक पहुँचता। चावल और घीकी बातको छोड़, मेरा दिल तो उस पुरानी मुसल्लसी (मदिरा) की ठिलियाके लिये जल रहा है। अगर यह 'नकबत' अपने मुर्देको हमारे ऊपर न पटकता, तो हमारी मुसल्लिसी भी कन्यामास तक आती, और इमामतके लिये जाते वक्त दस सेर दाख मटकेमे डाल जाते, जो अगली वसूलीके समय तक एक दाँत तोड़ मदिरा बन जाती।

मखदूम—हाजित्! तू सदा उस 'खोजा' (सैयद या स्वामी)की शिकायत करता रहता है। जब उसके पास धन-दौलत थी, तो तू, 'ईशान जान' 'ईशान जान' (परमप्रिय स्वामी) कहते खुशामदसे उसके जूतो तकको चूमता था। रात-दिन उसके घरपर सोता रहता था। उसके पुलाव, दो-गोश्ता, कलिया, नवजात मेमनेका तन्दूरमें पका शाही कबाब, ससारमे दुर्लभ मदिराओके साथ खाता-पीता था। तूने अतिश्रेष्ठ सुन्दरियोंको उसके घरपर देखा। सुकठ गायकोको वहाँ सुना। उस समय यदि तू एक बार 'ईशान जान' कहता, तो तेरे मुँहसे सौ 'ईशान जान' टपकता। यदि वह तुझे 'हाजित् गुर्ग' कहता, तो तू 'लब्बैक' (जी सरकार) कहता। आज जब वह बुरी हालतमें है, उसका जेब पैसेसे और प्याला मदिरासे खाली है,

तो 'वह नकबत् खोजा' हो गया ! अब यदि वह 'दमुल्ला हाजित' कहते घरके अंदर आता है, तो तू लेटा रहता है, यह मनुष्यता नहीं है।

हाजित्—मुझसे और तुझसे मनुष्यताका क्या सम्बन्ध ? कहावत है "मुल्ला दस्तरखानका झाड़ूदार", यद्यपि इसे परिहासमे कहा गया है, लेकिन बात सच और अर्थपूर्ण है। मै और तू मुल्ला हैं। हमारा कर्तव्य है लोगोके दस्तरखानको चुनकर खाना, न कि जो कुछ पास है, उसे भी लोगोकी दावतमे उड़ा देना। कुन्दलीकी टोपी सिरपर रखे "एक पैसा खीसामे नही, और दिमाग आसमानपर" बने क्या हम भूखे पेटसे तम्बूरा बजाते मारे-मारे फिरे ?

मखदूम—अच्छा, मनुष्यताको एक ओर रख, लेकिन इसे न भूल कि एक धनी खानदानका आदमी सदा निर्धन नही रह सकता। मासका पन्द्रह दिन अँधेरा और पन्द्रह दिन उजाला होता है। यह आदमी आज जो 'नकबत' बना हुआ है, कल उसका भाग्य-सूर्य मध्याह्नपर चढ सकता है। वह मास्कोवाला बडा व्यापारी बन सकता है। उसकी जान-पहिचान बड़ी-बड़ी जगहो तक है। काजी, रईस, कुशबेगी, बेगी ही नही, अमीर तक उसको जानते हैं। उसके सम्बन्धी धनी हैं, जिनकी कोठियाँ मास्कोतकमे हैं। कोई नही मानेगा, कि यह आदमी सदा इसी स्थितिमे रहेगा ? चन्द दिनो बाद देखेगा, कि वह 'ईशानतुरा' (माननीय राजकुमार) हो गया और तू 'हाजित् गुर्ग (भेड़िया)' ही बना रहेगा। एक शेरका मुर्दा सौ गिद्धोका पेट भरता है। अब भी उसकी स्थिति मुझसे और तुझसे अच्छी है। कल ही हाजी अमनबाय सड़कसे आ रहा था। देखा, कि खुद माता है और हाथमे एक बोतल शराबकी है। मेरा हाथ पकड़कर हवेलीमे ले गया। मेहमानखानेमे बैठकर हम दोनोने बोतलको चबेनाके साथ पिया। उसका नशा और बढा, मै उठना चाहा। "पॉच मिनट बैठो, मै हवेलीके अदरसे आता हूँ फिर जहॉ चाहो जाना" कहकर भीतर गया और दश

मिनट बाद इस (दिखलाते हुए) टोपी और जामाको लाकर मुझे पहिना दिया।

६

दैवी दान

इसी समय द्वारसे आई 'खटखट'की आवाजने मखदूमकी बातको काट दिया। हाजित्ने "खाश" कहा, जिसका अर्थ था, खटखटाने वाला अदर आये। दूसरी बार फिर खटखटकी आवाज़ आई। अबकी बार हाजित्ने और जोरसे "खाश कृपा कीजिये, आइये" कहा।

—मुल्ला हाजित्का कमरा यही है ?—किसीने पूछा।

हाजित्ने कहा—हाँ, यही है। कृपा कीजिये, अदर आइये।

—मुल्ला असामुद्दीन मखदूमी हिसारी भी यहाँ हैं ?

—यही हैं। अदर आइये।

हाजित्ने मखदूमकी ओर निगाहकर आहिस्तेसे कहा "यह कौन जङ्गली गुलाब है ? न अदर आता है न हमारी जान छोड़ता है ?"

आदमीने पहिले एक किवाड़को खोल सिरको अदरकर बैठे लोगोपर नजर डाली, फिर वह 'बिसमिल्ला' कहते अपने पैरोको अदर रख कोठरीमे आया। मखदूमकी निगाह उसपर पड़ी और उसने उठकर "ऐ, मुल्ला अजीमशाह !" कहकर बगलमे आ सलाम-दुआ की। हाजित्ने भी उठकर 'साहब सलामी' की। दोनोने अजीमशाहको बिस्तरेपर ऊपरकी ओर बैठा 'स्वागत' कहा। अज़ीमशाहने मखदूमकी ओर निगाह करके कहा—क्या आप इसी कमरेमे निवास करते हैं ?

—नही, मै नीचेके कमरेमे रहता हूँ, किन्तु यह कमरा भी अपना हीसा है शायद आप इन्हे (हाजित्की ओर इशारा करके) नहीं पहिचानते ? यह भी हिसारके ही हैं। सोलह सालकी उम्रमे विद्याध्ययनके लिये बुखारा आकर फिर हिसार नही गये। आपने शायद पहिले इन्हे नही देखा ?

—देखा भी हो, तो याद नहीं, लेकिन इनके हिसारी होनेको इनके रूपरंगसे ही मैंने समझ लिया।

हाजित् चायदानिकमें चाय डाल गरम करके लाने के लिये कमरेसे बाहर चला गया।

मखदूम—हम दोनों स्वदेशी और पुराने मित्र हैं। मेरा कमरा दूसरा है, तो भी चूल्हा एक है। विद्यार्थी-अवस्थामें अध्ययन करते समय यदि आदमी अपने एक घनिष्ठ मित्रके साथ एक चूल्हावाला हो जाय, तो उसे अधिक कष्ट नहीं होता। हर रोज सात-आठ पाठ लेते, आधी-आधी रात तक किताब पढ़ते, शास्त्रार्थ करते हैं। ऊपरसे वज़ू (हस्त-पाद-मुख प्रक्षालन) पाँच वक्तकी नमाज और जप-तप भी करना होता है। सिर खुजलानेकी भी छुट्टी नहीं मिलती, रोज-रोज खाना पकानेकी तो बात ही क्या ? इसीलिये मुझे जो कुछ मिलता है, इन्हींके हाथमें दे देता हूँ। पढ़ाई इनकी मुझसे कम है। हर रोज यह भोजन बना लेते हैं, और हम दोनों खाते हैं।

मुल्ला हाजित् चाय गरम करके दो रोटी लिये आया। दस्तरखान फैला रोटी तोड़ी गई। दस्तरखान पर कुछ मिठाई और हलवा-नूर भी रख फिर मेहमानसे खानेकी प्रार्थना की गई। अजीमशाहने एक कौर रोटीके साथ एक टुकड़ा मिठाई मुँहमें डाली, लेकिन मिठाई बहुत कड़ी और पुरानी थी, वह उसे खा नहीं सके। आतिथिक देख न ले, इसलिये उसे बहुत धीरेसे निकालकर दस्तरखानके एक कोनेमें छिपा दिया। फिर हलवा नूरका एक लोंदा मुँहमें डाला और चाहा कि उसे काटकर खायें, लेकिन दाँत भला उसे क्या तोड़ेंगे ? करीब था कि वही दाँतको तोड़ डाले। अजीमशाहको कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था, खाना संभव नहीं था और उसको मुँहसे निकालना सभ्यताके विरुद्ध। असामुद्दीन देख रहा था, उसने लज्जा दूर करनेके ख्यालसे हाजित्से कहा—'ईशान तूरेम् (शाहजादा गुरु)का प्रसाद हलवा और मिठाई अभी भी बची हुई है ?'

हाजित्—अगर खा लिया होता या सब किसीके सामने रखता, तो इसका चूरा भी न बचा होता। यह इशान तूरेमका प्रसाद है। इसलिये इसे अपने प्रिय अतिथिके सामने रखा।

अजीमशाह—क्या यह ईशान तूरा बुखाराके बड़े शेखों मे है?

मखदूम—प्रसिद्ध मठाधीश (खानकाहनशीन) शेखोमेसे नही हैं, लेकिन एक बड़े बुजुर्ग एकान्तवासी महात्मा हैं। पहिले आप एक बड़े धनी-मानी पुरुष थे, परन्तु सभी वस्तुओंको खुदाकी राहमे खर्चकर ससारको त्याग दिया। हम दोनो इन महात्माके भक्त हैं। हरवक्त उनका आशीर्वाद लेते रहते हैं।

अजीमशाह—उनकी पवित्र पद-रज शिरपर! बुखारा-शरीफकी हर जगह सिद्ध-महात्माओसे भरी है। जब-जब मै बुखारा आता हूँ, ऐसे महात्माओंके चरणोंमें न जानेपर भी आप जैसे पुरुषोंकी दुआ लेकर मेरा दिल बहुत खुश होता है, और मेरा काम भी बन जाता है।

मखदूम—ठीक कहा "गुरुकी लाठी गुरुकी जगह"। अबकी बार क्यो इतनी देरसे बुखारा यात्रामे आये?

—शुक्र! काम सब अच्छा है। पहिलेका चरवाहा मर गया। चाहता था, कि उसके लड़केसे हँकवाकर भेड़ोको लाऊँ, लेकिन वह नमकहरामी करके भाग गया था। उसे फिर हाथमे करनेमे दो-तीन मास चले गये, इसलिये यात्रामे भी देर हुई।

—आपके पहिले चरवाहेका नाम बाज़ार न था? बेचारा कब मरा? आदमी अच्छा था।

—तीन माह मरे हुए।

—उसके लड़केका क्या नाम है?

—यादगार।

—और यह लड़का नालायक निकला?

—हाँ, बहुत सरकश, बुरा लड़का है। सौ बार बोलिये, कुछ नहीं

जवाब देता, और जमीनकी ओर नजर गड़ाये खड़ा रहता है। आँखोंसे जान पड़ता है, दिलमे गालियाँ दे रहा है।

—आप खुद दुनिया देखे-सुने हैं, नौकर देखनेका ढग बहुत अच्छा जानते हैं। कहावत है "या ज़ारी या ज़ोरी या ज़र" (साम-दड-दान) वक्तपर नर्मीसे काम लीजिये, बाज वक्त पैसा दीजिये, कभी मीठी-मीठी बाते करके खुशामद कीजिये। यह है काम लेनेका रास्ता।

—उसके बापके मरनेके बाद एक भी कड़ी बात नही कही। और पैसा ? आज भी उसपर मेरा हजार तका कर्ज है। मीठे बोलता हूँ। नसीहत करता हूँ। मुल्ला इमामने भी बहुत नसीहत की है, इसपर भी उसकी आँखोमे मुरव्वत नही। यदि वह मेरा कर्जदार न होता या हाकिम और काजी मेरे जान-पहिचानी न होते, तो कबका भाग गया होता। मै कल उसे आपके पास भेजूँगा। आप भी उसे थोड़ी नसीहत कर दे। शायद आपके प्रतापसे उसपर प्रभाव पड़े।

—बहुत अच्छा, भेज दीजियेगा। नसीहत और चमत्कारिक कथा हम उसे कह देगे।

अजीमशाहने कमरमे मजबूतीके साथ रस्सीसे बँधे और जेबमे रखे एक दोपेटी थैलीको खोलकर टटोलके उसके तग मुँहमे हाथ डाल कुछ तके गिने, फिर मखदूमकी ओर निगाह करके कहा—मै तुम्हारे लिये हिसारसे एक दुम्बा लाया था। बेचने मारनेमे तरद्दुद होता, इसलिये उसे अपने एक जान-पहिचानी कसाईको यह कहकर दे दिया कि चर्म और माँसको बेचकर दाम दे दे और चर्बीको रख छोड़े।

अजीमशाहने बात समाप्त करते हाथ को बाहर निकाला। उसमे तके थे। हाजित् और असामुद्दीन मखदूम अपनी गर्दनोको ऊँचा करके अजीमशाहकी हथेलीको उसी तरह आँख गड़ाकर देख रहे थे, जैसे अडेसे निकले बच्चे चारा लेकर आई माँकी ओर पख फड़फड़ा मुँह बाये बेकरार होते हैं।

अज़ीमशाहने "यह तका उसी चर्म और माँसका है" कहकर मखदूमके हाथमें उसे रख दुआ करनेकी प्रार्थना की। उस समय आँखोंके हथेलीपर गड़े होनेपर भी हाजित्का सिर और गर्दन मखदूमकी तरफ उसी तरह घूमा, जैसे सूर्यमुखी फूल सूर्यकी तरफ घूमता है या ध्रुवसूचक यत्र ध्रुवकी ओर।

दोनोने अज़ीमशाहकी प्रार्थना पूरी करनेके लिये यत्रवत् दुआ करके हाथोको मुँहपर फेरा। "अच्छा, अब मुझे छुट्टी दीजिये। कल इसी वक्त मैं लड़केको चर्बीके साथ भेजूँगा। नसीहत करना न भूलेगे" कहकर अज़ीमशाह उठे। इस पर मखदूमने कहा—क्या इतनी जल्दी पड़ी हुई है, आज हमारे अतिथि रहे।

अज़ीमशाहने मखदूमके हाथमे पड़े तकोकी ओर हसरत भरी निगाहसे देखते हुए कहा—आज रात फतहुल्ला भेड़-सौदागरके साथ हिसाब करना है। काम खतम कर लूँ, तो अवश्य एक रात आपका मेहमान रहूँगा—फिर एक बार हाथके तकों पर नज़र गड़ाते—खातिर जमा रहें, मदर्साका एक आश्-प्रसाद खाये बिना नही जाऊँगा।

जूता पहिनकर अज़ीमशाह कमरेसे बाहर निकले। असामुद्दीनने भी कमरेके द्वार तक जा "खैर खुश भले आये, सलामत रहे। हमे आनन्दित किया" कहकर अपने मेहमानको विदा किया, फिर लौटकर तकोको गिना। वह बीस थे। उन्हे दिखलाकर हाजित्से कहा—देखा गुर्ग (भेड़िये) इसे कहते हैं दैवी दान, जो "ईशानतूरा" या तेरे कथनानुसार "नकबत् खोजा"के पुनीत नामपर हमारे पास आये।

हाजित्—यह आदमी मुझे नही पहिचानता, लेकिन मैं इसे पहिचानता हूँ। यह सरेजूयके भारी मूज़ियोमेसे है और शैतान तककी आँखमे धूल झोक सकता है। यह तुझपर या तेरे "ईशान तूरा"पर पैसा भर भी श्रद्धा नहीं रखता। वह हज़ार 'ईशान' और दस हज़ार मुल्लोंको एक पैसेमें बेंच सकता है। लेकिन जब काम आ पड़ता है, पैसा भी देता

है। श्रद्धा भी प्रगट करता है। यदि तू चाहे तो तेरा मुरीद भी बन सकता है। संक्षेपमें, वह जो कुछ करता है, सब अपने मतलबसे।

मखदूम—कुछ भी हो, वह हमसे क्या लालच रखता है, बता तो?

—क्या लालच रखता है? उसने स्वयं नहीं कहा कि लड़केको भेजूँगा, उसे नसीहत कर दे। मालूम होता है, किसी गरीबको फँसाकर अपने काममें जोत रहा है। अब वह जानपर आया है और चाहता है कि भाग जाय या दूसरेके यहाँ चला जाय। यह चाहता है, कि मुझसे और तुझसे नसीहत करा लड़केको क्रीतदास बना उससे काम ले। यह शैतान और ताजिक जन-साधारण भी हमारे मुल्लों खासकर बुखारामें शिक्षा पाये मुल्लोंपर क्या श्रद्धा रख सकते हैं?

—अच्छा, मान लिया कि यही सच है, परन्तु इससे मेरा और तेरा क्या नुकसान है? हमारे लिये यह बीस तका गनीमत है। अगर हमारे हाथ लगें तो ताजिक गरीबोंमेंसे एक-एकको बीस-बीस तकेपर बेंच डालें। नहीं सुना, "कब्र जले और देग उबले"? खैर, उठ जाकर घी और गोश्त ले आ, आश तैयार कर, मेरा हाल बुरा है।

१०

मटकेवाला यहूदी

अजीमशाहने मदर्सा जानेके दूसरे दिन अपनी सारी भेड़े बेच डालीं और यादगारको "आ बेटे! तुझे बुखारा-शरीफ का दर्शन कराये" कहकर उसे साथ ले शहरके नमाज़गाह दर्वाजेमें गये। दर्वाजाके अंदर पैर रखते ही ऊँची आवाजसे 'बिस्मिल्लाह' कह यादगारको भी वैसा करनेके लिये प्रेरित करते बोले—बुखाराशरीफ बहुत ही पवित्र नगर है। यहाँ 'बिस्मिल्लाह' कहे बिना कदम रखना ठीक नहीं। इस शहरमें बहुत ज्यादा सिद्धोंकी समाधियाँ और बुजुर्गोंके पूज्य स्थान हैं। मै चाहता हूँ कि तुझे उनमेंसे कुछका दर्शन कराऊँ।

अज़ीमशाह इसी तरह कब्र और कथामतकी बाते करते तुर्कजिन्दीके मज़ार (समाधि) पर गया । मजारके सामने जो तहारतखाना (पाद्य-आचमन-स्थान) है, वहाँ आ खुद हाथ-पैर-मुँह धो यादगारसे भी वैसा कराया । फिर अपने जूतोंको हाथमें ले यादगारसे भी वैसा करा मज़ारके अदर गये । वहाँका पवित्र जल स्वय आचमन किया और यादगारसे भी कराया । लेकिन, पासमें हररोज दफन होनेवाले मुर्दोंकी तरावटने मिलकर जलको इतना दुःस्वादु और दुर्गन्ध बना दिया था, कि यादगारमे उसे घोंटने की हिम्मत न थी, और उसका चेहरा बिगड़ गया । अज़ीमशाहने यादगारकी हालत देखकर कहा—हर्गिज़ इस जलका अपमान और इसपर सन्देह न कर, नहीं तो तेरी जान और जवानीको नुकसान पहुँचेगा । दुनियामे सिर्फ तीन ही पवित्र कूप हैं । उनमेसे एक मक्काशरीफमें चाह-ज़मज़म है; दूसरा चाह-खोजा-अदवान है, जो कि बुखाराकी बालुका-भूमिमे जिन्दानाके तुमान (पर्गना)मे अवस्थित है, तीसरा यही पवित्र कूप है, जो सभी तरहके रोग दोषको दूर करता है । लेकिन शर्त है, कि आदमीके दिलमे श्रद्धा हो । यदि सशय करे तो भारी अनिष्ट भी होता है । इन तीनो कूपोके बीच जमीनके नीचे-नीचे राह है । एक बार एक आबखोरा (कटोरा) चाह-ज़मज़ममे गिर पड़ा, कुछ समय बाद वह चाह खोजा-अदवानमेसे निकला । वहाँसे दुबारा गुम हुआ, तो कुछ समय बाद यहाँ आकर उतराया । पुराने बूढ़ोके कथनानुसार वही यह आबखोरा है, जिससे तूने अभी-अभी आचमन किया है ।

मज़ारका दर्शन करनेके बाद बाहर आनेपर अज़ीमशाहने यादगारसे कहा—"आ, तुझे बुखारा-शरीफके मदर्सोंको दिखलाये" । और, उसे तुर्कजिन्दीके द्वारसे होते "हाजी अमनबाय सड़क" पर ले गया । देखा कि आदमियोंका एक झुड नमाज़गाह-दर्वाज़ासे हल्ला मचाते, बाजार-गाज़ियान-की ओर जा रहा है । अज़ीमशाह और यादगार इस विचित्र समारोहको देखते राहके किनारे खड़े हो गये । जन-समूह नज़दीक पहुँचा । वहाँ

आगे-आगे एक पचाससाला यहूदी चल रहा था। उसके सिरपर बुखाराके यहूदियोंके लिये निर्धारित एक चारतही टोपी थी, तनपर नीले रंगका जामा और कमरमे रस्सीका कमरबंद बँधा था—अर्थात् उसकी वही पोशाक थी जिसे पहिनने के लिये बुखाराके मुल्लों और अमीरोंने उन्हें बाध्य कर रखा था। यहूदीके पीछे-पीछे एक मुसलमान आ रहा था, जिसके हाथमे छः गोलियोंका एक तमंचा था। अँगुली तमंचेके घोड़ेपर थी, यानी गोली चलनेमें सिर्फ अँगुली दबानेकी देर थी। वह यहूदीको जल्दी-जल्दी चलनेको कह रहा था। जब लोग भीड़ लगाकर रास्तेको रोक देते, तो वह तमंचेको उनकी ओर घुमा देता, भीड़ हटकर यहूदीको रास्ता दे देती। जनसमूह चलते-चलते अज़ीमशाहके पास पहुँचा। जैसे ही अज़ीमशाहकी नजर यहूदीपर पड़ी, वह "ओहो! तू यूसुफ गुर्ग (भेड़िया) कहाँसे?" कहकर चकित हो चिल्ला उठा। यहूदीको जवाबदेने या दम मारने की हिम्मत नही थी, लेकिन यादगारने पूछा—मालिक! आप इसे पहिचानते हैं?

अज़ीमशाह—अरे, पहचानता हूँ। यह यूसुफ गुर्ग नामक यहूदी कसाई है। वह मुझसे भेड़ें खरीदा करता है। कल भी दो दुम्बे खरीदे हैं और अभी दाम भी नही दिया है।

यादगार—उसे कहाँ और किस लिये ले जा रहे हैं?

—बुखारा शरीफमें मुल्ला बहुत ज़्यादा रहते हैं। यहाँ शरीयत (धर्म-शास्त्र)का हर हुकुम जारी है। जान पड़ता है, यहूदीके पास शराब पकड़ी गई है। अब इसे दंड देने दिलाने काजीखाना या रईसखानामे ले जा रहे हैं।

झुंड बाजार-गाजियाँ पहुँचा। यहाँ चौरस्तेपर इतनी ज़बर्दस्त भीड़ ज़मा हो गई, कि कहीं पैर रखने का ठौर नहीं था। यहूदी बुड्ढा बहुत भारी कठिनाईमें पड़ा था। उसकी पीठपर एक मशक जल भरने लायक मटका और पीछे तमंचा लिये एक आदमी तेज़ चलनेके लिये हुकुम दे

रहा था। तीन तरफको तमाशबीनो की भीड़ने बढकर रखा था। इसी समय तमचे वालेने यहूदीकी मदद की। उसने अपनी काली पुतलियोको ऊपर चढा तमचाको दिखलाते हुए "हटो हटो" कहकर बायेका रास्ता साफकर रूसी भाषाकी फौजी कमान दिया "नालेवा, मार्श" (बाई ओर, चल)।

यहूदीने भी बुखाराके सिपाहियोकी तरह दाहिनी ओर कदम बढाकर कमानकी पाबन्दी की। तमचे वालेने भी अमीरी सेनाके अफसरो-की तरह उसकी बाँह पकड़ बाई तरफ घुमा "इस तरफ घूमनेको कह रहा हूँ" कहकर कमानकी पाबदी कराई। इसी तरह दोनो मुल्ला मुहम्मद मदर्सा पहुँचे। तमचा वालेने फिर एक बार लोगोको आँगनसे भगाया और वह यहूदीको मदर्साके अदरकर फाटकको भीतरसे बद करके गायब हो गया।

मदर्साके बाहरी आँगनमे सड़कतक लोग भरे हुए थे। तमाशबीनोकी सख्या बढती ही जा रही थी। इसी समय काज़ीकलाँ (महान्यायाधीश)का एक नौकर और मीरशब (कोतवाल)का आदमी वहाँ पहुँचे और चाहा फाटक खुलवाकर देखे कि क्या बात है। तब तक तमचेवाला यहूदीके साथ बाहर निकल आया। अब यहूदीकी पीठपर मटका न था। तमंचेवाला जल्दी-जल्दी कदम रख रहा था। हर कदम पर लड़खड़ाते दीवारसे टकराकर फिर आगे बढता। काज़ीके आदमीने पीछे जा एक झपट्टेमे उसके हाथसे तमचा छीन लिया और उसी तमचेसे उसे डरा यहूदीके साथ आगे बढाया। मीरशबका आदमी भी साथ-साथ था।

× × ×

भीड़के तितर-बितर हो जानेपर अज़ीमशाह यादगारको मदर्सामें ले गया और फाटकके हर छल्ले, पल्ले, डडेको दिखलाकर बोले—यह मुराद पूरी करनेवाला छल्ला है, यह सौभाग्यका पल्ला है, यह शैतान भगानेवाला डडा है। और हरेकको चुम्बन दे आँखोंसे मल यादगारसे भी वैसा ही

कराया। अतमे यादगारसे कहा—आ, ताकशूर कसाईसे लेकर तुझे एक दुम्बेकी चर्बी देता हूँ, तू उसे लेकर मदर्सेके इस दर्वाजेके भीतर जाना और मुल्ला असामुद्दीन मखदूमीका पता पूछकर चर्बी उन्हें दे उनसे दुआ लेना। फिर मेरे पास फतहुल्ला मेड़-सौदागरकी हवेलीमे आ जाना। लेकिन, मुल्लाके पास पहुँचनेपर पहले किवाड़को खटखटा लेना, खटखटाये बिना अदर न जाना।

अजीमशाह मदर्सेकी इमारतों और गृहपक्तियोको दिखला यादगारको लिये तकियाशूरी-बुखाराकी तरफ चले।

११

मौजका दिन

आज दो दिनसे हाजित् गुर्ग (भेड़िया)के कमरेमे पोलावकी देग बराबर गरम होती है। आगेके लिये भी बड़ी आशा है। जिस भाग्यने "मरनेके सिवा कोई चारा नहीं"के समय बीस तंका नक़द पहुँचाया और एक दुम्बा चर्बी पहुँचानेका वादा किया, आश्चर्य क्या यदि वह आगे भी जीवन-पथ प्रशस्त करनेमे इसी प्रकार सहायक हो। कमी थी तो सिर्फ एक चीजकी, यानी पासमे शराब नही थी। यद्यपि कुछ माल-मसाला लाकर मटकेमे डाला जा सकता था, लेकिन उसके तैयार होनेके लिये चालीस दिनोकी आवश्यकता थी। हाजित गुर्गके अफसोस करते वक्त नक़बत खोजाका ज़िक्र आ गया, जिसपर उसने मखदूमसे कहा—नकबत खोजाके सारे काम एक ओर और मेरी साल-पुराने मुसल्लसी (मदिरा)का मटका एक ओर। यदि आज वह होती, तो हमारे मौज-मेलेमे कोई कमी न होती!

असामुद्दीन—यदि इस समय खुदा एक मटका मदिरा भेज देता तो क्या तू नकबतके ऊपरसे हाथ खींच लेता?

—एक मटका नही, एक बोतल भी अगर भेज देता, तो नकबत खोजाकी शिकायत न करता।

इसी वक्त सीढ़ीसे क्रमहीन पड़ते पैरोंकी आहट सुनाई दी। आनेवाले सीधे कोठरीके द्वारपर पहुँचे और उनमेंसे एकने कहा—"पीठको द्वारकी ओर करके सीढ़ीपर बैठ।" दरवाजेके पास कान लगाये असामुद्दीनने आवाज सुनकर कहा—यह आवाज तो 'ईशान तूरा' जैसी है।

हाजित्—इन बीस तकोंपर भी पानी फेरना चाहता है क्या?—इतना कहकर हाजित् आग बगूला हो गया।

दर्वाजा बिना खटखटाये ही खोला और आगतुकने सिरको अदर करके कहा—हाजित् गुर्ग! इस मदिराके मटकेको ले और मेरे लिये दुआ कर।

हाजित्ने देखा कि सचमुच कमरेके द्वारपर एक मटका रखा हुआ है। वह एकाएक खड़ा होकर बोल उठा—ईशान जान! भगवान् दया करे, थाल भेट करता हूँ।

—यह तुम्हारे लिये निछावर है। मै फिर भी यूसुफके घर जा डटकर पियूँगा। वह कबाब भी बनाकर देगा।

आगन्तुकने "आगे आगे चल यूसुफ गुर्ग" कहकर हुकुम दिया और दोनो सीढीसे नीचीके ओर उतरने लगे।

मटकेको कमरेमे लाकर जब देखा कि वह शाबिरगानवाली शराब है, तो उनके आनन्दकी सीमा न रही।

असामुद्दीनने कहा—एक मटका शराबकी जगह एक मटका अशर्फी मैने खुदासे माँगी थी, लेकिन देवदूतने "आमीन" बोल दिया, जिससे मुँहसे निकलते वक्तकी हमारी अभिलाषा ही स्वीकृत हुई।

—मेरे नजदीक एक मटका मदिरा एक मटका अशर्फीसे तो क्या एक मटका मोतीसे भी बढ़कर है। कविने गलत नही कहा है—

ऐ वर्षाके बादल! सीच वसन्ते मदिरालय
जिसमे बूँद बने मदिरा है मोतीसे क्या लेना?

मखदूम—गुर्ग! गजल पढ़ना रहने दे। उठ जल्दी कर। आश तैयार हो कि भगवत्प्रेषित इस मदिराका आस्वाद ले शान्ति प्राप्त करें।

—तैयार ईंधन कम है, तू ईंधन ला। मैं आशके लिये घी तपाता हूँ।

आशके लिये माँस तला जाने लगा। तबतक दोनों दोस्तोंने दो-तीन प्याला निकालकर चखा। मदिरा पुरानी और जोरदार थी। असामुद्दीनने कहा—हाजित! गुर्ग (भेड़िया) की उपाधि हाथसे गई न?

—क्यो?

—जब तेरी शराब यूसुफ गुर्गकी शराबसे खूबी और जोरदारीमे बराबर होती थी, तब ईशान तूराने तुझे यूसुफवाली उपाधि प्रदान की थी। अब यूसुफकी शराब तेरी शराबसे आगे बढ गई। मुझे डर है, कि कही यह उपाधि छीनकर वह तुझे गीदड़ (शगाल) की उपाधि न दे दे।

—गीदड़ होना भी बुरा नही, क्योकि वह भेड़के माँसकी जगह मुर्गेका माँस खाता है।

उन्होंने तले माँसमे चावल डालकर पकाया। इस समय भी दो-तीन बार प्याला हाथोंसे गुजरा। फिर आशको निकालकर पेट भर खाया। उसके साथ भी पानीकी जगह मदिराका दौर चला। इसी वक्त द्वार खटखटानेकी आवाज आई।

हाजित्—फुर्सत नही, परहेज।

—मै सूफी (मुवज्जिन्) हूँ। दरवाजेपर एक दाखुदा (पहाड़ी) आया है, वह असामुद्दीन मखदूमके बारेमे पूछ रहा था। उसे साथ लाया हूँ।

—अच्छा, उसे यहाँ छोड़कर तू चला जा। फुर्सत नहीं, परहेज़।

हाजित्ने सूफीके चले जानेपर द्वार खोलकर "आ बच्चा" कह मेहमानको कमरेके अदर कर लिया और दुम्बेकी चर्बीको उसके हाथसे ले एक कोनेमे रख दिया। फिर आशका थाल उसके सामने रखते पूछा—तेरा नाम यादगार है न?

—हाँ, यादगार है!

यादगार आश खाने लगा। असामुद्दीनको नसीहतकी बात याद आई

और उसने जोर-जोरसे उपदेश देना आरंभ किया। ओजपर चढनेके समय हाजित्ने भी साथ दिया। अन्तमें दोनोंने एक साथ हो मुल्लाखानी पद पढे।

आश और नसीहतके समाप्त होनेके बाद यादगारको बिदाकर दोनोंने गजल गाना आरम्भ किया—

स्वर्ग तुझे दें, तो धोखेमे मत तू पड़ना
पैर मदर्सेसे बाहर न रख, क्योंकि है आशियाना।

इस पदको उन दोनोंने आशिकोंकी तरह दुहरा-दुहराकर गाया, लेकिन नशेका जोर इतना अधिक था, कि 'पैर न मदिरालयके बाहर" की जगह "मदर्सेसे बाहर पैर न रख" कहके गाया।

१२

नृत्योत्सव

सूर्यास्त हुए दो घटे हो चुके थे। दोनों मित्रोका नशा भी कुछ कम हो चला था, लेकिन चित्त-वैकल्य और विलासिताने उन्हें शान्तिसे बैठने या सोने न दिया, इसलिये वे कोठरीसे निकल सैर करने और ताज़ी हवा खाकर अपनी खुमारी दूर करनेके लिये तैयार हुए। बुखाराकी सकरी अँधेरी गलियाँ उन्हे अच्छी न लगी और हाजित्ने कहा—वल्लाह (भगवान्की शपथ)! बुखाराकी गलियोंसे कब्रे अच्छी हैं।

—ऐसा न कह, यह अँधेरी गलियाँ ही हैं, जिन्होंने मेरे और तेरे पापोको ढाक रखा है। यदि ये प्रभासित और जनसकुल होतीं, तो हम कबके ना बेइज्जत और बदनाम हो गये होते।

हाजित्ने सहमति प्रकट करते हुए कहा—ठीक, चलो लेकिन किस ओर?

—यदि बड़ी सड़ककी ओरसे चलें तो कैसा?

—बहुत अच्छा चलो चलें।

दोनों "विद्यार्थी" सड़ककी ओर किसी अति-अज्ञात वस्तुकी चाहमे चले। मीरकान-सड़क तक कहींसे दादरा (नाच-गाने)की आवाज नही सुनाई पड़ी। जब ख़ानकाह-मीरकानसे दाहिनी ओर मुड़े, तो बाज़ार-ख़याबानकी तरफसे दायरेकी ध्वनि अरङ्-अरङ् आने लगी। जितना ही वे बाजारके समीप पहुँचे, दायरेकी आवाज उतनी ही ऊँची होने लगी। बाजारमें पहुँचे। शबगर्द(पहरेदार सिपाही) से—जो अपनी ढोलको सिरके नीचे रखे एक किनारे लेटा हुआ था—असामुद्दीनने पूछा—"आक़ा शबगर्द! यह मजलिस कहाँ है?

शबगर्द शिरको उठाये बिना "ईशान-अमला सड़क पर" कहकर कुर-कुराने भनभनाने लगा, जिससे जान पड़ा कि वह आराममे बाधा पड़नेसे नाराज़ है।

थोड़ी देर चलनेके बाद दोनो दोस्त मजलिसवाले घरके द्वारपर पहुँचे। घरका द्वार बहुत तग था। वहाँ जमीनमे खोदे चूल्हों पर अधमने हण्डे रखे थे और अगले दिन आश पकानेके लिये ईंधनकी लकड़ियाँ चारो ओर फैली हुई थी। एक तरफ एक-मशकी बड़े-बड़े समावार उबल रहे थे। नौकर लगातार घरके अन्दरसे आकर खाली चायनिकोंको रख खौलती चायनिके उठाकर अन्दर ले जा रहे थे। समावारची खाली चाय-निकोमे नयी चाय और गरम पानी डालकर बारह छेदवाले चूल्हेपर उबलनेके लिये रखता जा रहा था।

बेबुलाये मेहमान ईधनके ढेरोंपर सभलकर पैर रखते किवाड़के पास पहुँचे और शिरको अन्दर डालकर तमाशा देखने लगे। मजलिस एक बड़ी दालानमें हो रही थी। आदमी एक दूसरेसे इतने चिपके-दबे बैठे थे, कि सूई रखनेकी भी जगह न थी। सिर्फ थोड़ीसी जगह खाली थी, जहाँ नीचेकी ओर आगसे भरी तीन अँगीठियाँ जल रही थी। उनके आगे चारदायरावाले बैठे दायरों और गज़लोंको एक खास तर्ज़से गा रहे थे। मजलिसके बीचमे एक काकुलदार (ज़ुल्फीवाला) निमोछिया लड़का

नाच रहा था, जो बीच-बीचमे दायरावालों (समाजियों)के साथ गाता भी था। एक पचीस-साला जवान कमरबन्द बाँधे हरा कुर्ता पहने बैठा था, जिसने दोस्तोंको खुश करनेके लिये मुँह पर अँगीठीकी राख मल रखी थी। जवानके हाथमें एक बड़ी मशाल थी, जिसे वह नर्तक लड़केके मुँहकी ओर किये था। लड़का जिस तरफ घूमता मशालची भी एक ठेहुनेको जमीनपर रख दूसरेको खड़ा किये मशालको लड़केके मुँहकी ओर से बिना हटाये खुद घूम जाता था। मसालसे टपका तेल नीचेके नम्देपर गिरता, जो सैकड़ो ऐसे जलसोको देख चुका था, और इसीलिये तेलसे भरा था। रोशनी कम होनेपर मशालची जवान तेलदानकी टोटीसे और तेल डाल देता और रोशनी तेज हो जाती।

बिना बुलाये मेहमान थोड़ी देर तक द्वारपर खड़े तमाशा देखते आँख मार भौ हिला बात करते मजा लेते रहे। वहाँ बैठे एक आदमी-को उनके मुल्ला होनेका पता लग गया और उसने अपनी जगहसे उठकर "आका कारी—(वेदपाठी)! भीतर तशरीफ लाइये" कहकर बुलाया। माननीय मेहमान इतने ही इशारेकी प्रतीक्षा कर रहे थे और मनमे "दोस्तकी ओरसे एक इशारा और मेरा शिरके बल दौड़ना" कहते जूतेको पैरसे निकाले बिना लोगोकी पीठों और जाँघोको रौदते मजलिसके अन्दर पहुँच गये। बुलानेवाले आदमीने लोगोको थोडा खिसकाकर उनके लिये आगे नम्देपर जगह खाली करवा दी। मेहमान उस तेलसे काले नम्देपर इतने सन्तोषके साथ पातित-जानु बैठे, मानो वह अतलसका बिछौना है।

असामुद्दीनने हाजित्के कानमे कहा—यह बड़े भले और मुल्ला-प्रेमी लोग हैं। आँखबाजी करनेपर भी हमारा इतना सम्मान करते हैं।

—पाया न भले आदमियोको? अरे "डडेकी चोटसे भालू भी मुल्ला हो जाता है"। इन्होने भी शरीफ कचरीकी हवेलीकी घटनासे शिक्षा ली है। पिछले सप्ताह उसकी दावतकी मजलिसमे कुछ दायरा-प्रेमी मुल्ला-बच्चे (विद्यार्थी) पहुँच गये, उसने उन्हें भीतर आने न दिया। एक

बंटेमें जैसे मुर्देके किनारे गीध जमा हो जायें, बहुतसे मुल्ला-बच्चे जमा होगये। और उन्होंने धावा बोल दिया। छतसे लटकते झाड़ों और लालटेनोंको तोड़ दिया, दसगजी कालीनों और मखमलोंको जला दिया। यदि दर्शकोंने आग बुझानेमें हाथ न बटाया होता, तो सारी हवेली ही जल गयी होती। और क्या भूल गया पिछले साल ऐसी ही घटना खुद हमारी गुजरगाह-गाजियान (गाजीपथ)मे भी हुई थी।

हाजित्ने गाजियानके एक यजमें गुजरी दुर्घटनाका वर्णन शुरू किया। वहाँ हवेलीका दर्वाजा बन्द देख मुल्ला-बच्चो (विद्यार्थियों)ने भारी तूफान मचाया और टेलीफोनके तार तक काट दिये। काजीकलाँके आदमीने अन्तमे पहुँचकर दो-तीनको गिरफ्तार करना चाहा परन्तु "बहादुर मुला-बच्चोंने" भी—यह कहते हाजित्ने जोशमें आके अपनी आवाज कुछ ऊची की, लेकिन पाससे किसीने "चुप रहो" कह दिया और हाज़ितको चुप रह जाना पड़ा।

मजलिस समाप्त हुई। नौकेर अँगीठियोंको उठा ले गये। मशाल बुझा दी गयी। छतसे लटकती लालटेनोंकी रोशनी भी कम कर दी गयी, लेकिन हमारे मेहवान अब भी डटे थे। गद्दे पर बैठे आदमीने कहा—मेहमान भले आये, कल दोपहरको भोज करना है, इसलिये जल्द सोना जरूरी है।

असामुद्दीनने हाजितसे कहा—इतना ही सम्मान बहुत है। आ नाम पुकारनेसे पहिले ही चले चलें। रात भी आधी बीत गयी है।

जब वह अपनी जगहसे उठ रहे थे, तो एक आदमीने कहा—भले आये तकसीर! आपका हर क़दम आँखोंपर।

एक दूसरी आवाज़ आयी—इनके ऊपर एक पत्थर फेक।

इन सारे अपमानोंको सुनकर भी हमारे मेहमान अनजान बने हुए थे और उन्होंने उन लोगोंके इन अन्तिम अपराधोंको पहिलेके सम्मान-प्रदर्शनसे माफ कर दिया।

१३

बेवक्तकी अज़ान

मजलिस समाप्त होनेपर मख़दूम और हाजित् मदर्सा-कौशकी ओरसे रवाना हुए । हाजित्ने कहा—वल्लाह, भूखके मारे मेरे लिये चलना मुश्किल हो रहा है ।

—चाय भी प्यालापर प्याला पी रहे थे, लेकिन उससे क्या बनता ? जो कही घरमे खानेकी बनी चीज होती—कहकर मख़दूमने भी अपनी भूखको प्रकट किया ।

भूखे होनेपर भी दोनो दोस्त बिना दम मारे चलते रहे। वह मदर्सा कौश बाजारमे पहुँचे । देखाकी दहबाशी (दस सिपाहियोका अफसर) अँगीठी जला अपने शबगर्दोके साथ बैठा चखचख कर रहा है । दोस्तोंने जाकर हुक्का माँगा । दहबाशीके कहनेपर एक शबगर्दने हुक्का दिया । दोनोने दो-दो फूँक लगायी, इसी वक्त वहाँ एक कोनेसे आवाज आयी "तकसीरजान ! मुझे छुड़ाइये" । असामुद्दीनने पास जाकर पूछा :

—तू कौन है ?

—क्या मुझे नही पहिचानते ? आज ही तो मैने मदरसा जाकर आपको चर्बी दी ।

—हाँ हाँ, अजीमशाहका आदमी । तू यहाँ क्या कर रहा है ?

—मदर्सेसे निकलकर मै बाहर आया, तीन-चार कदम ही चला था, कि रास्ता भूल गया । बहुत कोशिश की, मगर रास्ता न मिला । फतहुल्ला बायकी हवेली पूछी, किन्तु किसीने न बतलाया । रात आयी, अँधेरा हो गया । कूचेमे आदमियोंका आना जाना भी बन्द हुआ । रास्ता न पा इधरसे उधर दौड़ता रहा । अन्तमे इन लोगोमेसे एकने मुझे गिरफ्तारकर यहाँ बैठाया । मैंने बहुत बिन्ती की, कि मुझे फतहुल्लाके पास पहुँचा दे, मेरा मालिक वहाँ है, यदि मै इस रातको न गया, तो मुझे बहुत

बुरा-भला कहेगा। किन्तु, किसीने न सुना और यहाँ बन्दी बनाकर रख दिया।

असामुद्दीनने दहबाशीसे कहा—दहबाशी! इसे छोड़ दो, यह मेरा मेहमान है।

—अच्छा, आपकी बात शिर आँखोपर। जब इस लड़केने कहा, कि मेरा मालिक फतहुल्ला बायका मेहमान है, तो मुझे आशा हुई, कि कल पतीली गरम करनेके लिये मुझे कुछ पैसे मिलेगे, लेकिन मालिकके धनमे हिस्सा न बदा था और आप यहाँ आ गये।

—खैर, हरज नही। खुदा इसका बदला दूसरी जगह देगा। यदि ईशान अमलाके मजलिसोंका रास्ता लो, तो एक नही कितने ही पतीलियोके गरम करनेके लिये पैसा मिल जाय—यह कह असामुद्दीनने यादगारसे कहा "उठ बच्चा! इधर आ!"

दोनों दोस्तोने निश्चय किया, कि यादगारको फतहुल्लाकी हवेली तक पहुँचा आएँ। रेगिस्तान और बादशाही आर्क (किला)की चारो तरफ सरबाज (सैनिक) रखवाली कर रहे थे, जो अनजाने आदमीको जाने नही देते थे। इसलिये उन्होंने मजबूर हो बाला-हौजके पीछेसे उस्तारूखी, असकरबी और काफिररबातका चक्कर काटते वह गुजरगाह (सड़क) मिर्जागफूरपर पहुँचे। मिर्जागफूरसे आगे मसजिद अर्बान-यादगारके सामनेके कूचेसे उन्होने लड़केको फतहुल्लाकी हवेलीमे पहुँचा दिया और स्वय बड़ी सड़कसे हौज (तालाब)चोबबाजार होते अपने घरके रास्तेको पकड़ा।

हाजित्ने कहा—इस भूखमे इतना बड़ा रास्ता तेरे अजीमशाहकी गन्दगीके लिये चलना "मुर्देके ऊपर सौ डडा" है।

—हाजित्! सचमुच तू गुर्ग (भेड़िया) है। अज़ीमशाहके दुम्बेकी चर्बी अच्छी, किन्तु उसके आदमीको दस कदम पहुँचाना बुरा!

वस्तुत: दोनो दोस्त अत्यन्त भूखे थे। नशेके बाद एकके बाद एक

फीकी चायने पेटको धोकर साफ कर दिया था, खाली पेटमे आग लगी हुई थी, जिसने अँतड़ियोंको जलाकर आँखोमें अँधेरा पैदा कर दिया था। रास्तेमे हर नानवाईखाने (रोटीकी दूकान)के पाससे जाते वक्त गरम रोटीकी सुगन्ध भूखको और बढा देती थी। हाजित्ने कहा—पैसा है तो ला, एक रोटी खरीदकर खाये।

—पैसा मेरे पास नही है, लेकिन मुफ्त रोटी पानेका एक ढग मेरे पास है।

—कौनसा ढग ? चोरी करे या भिखमगी ?

—नही, चोरी करनेकी जरूरत नही, एक सम्मानित भिखमगी करे।

—सम्मानित भिखमगी कैसी ? जल्दी जो कुछ कहना है कर, यहाँ जान निकलना चाहती है।

—धीरज धर, पहले मेरी बात सुन। आजकल शहरमे महामारी फैली हुई है। ईशान काजीकलाँ (महान्यायाधीश)ने मुवाज्जिनोको हुकुम दे रखा है, कि महामारी रोकनेके लिये रातको कूचोमे जाकर बेवक्त अजानकी बाँग दे। कल रात मै मदर्सेके मैदानमे था, देखा दो मुवज्जिन राहमे खड़े अज़ान दे रहे हैं, फिर देखा कि उस्ता-हमराहके एक नानवाई-खानेसे एक नौकरने लाकर उन्हें दो रोटियाँ दी। हम भी मिर्जा मुख्तारजानके नानवाईखाने (रोटीकी दूकान)के सामने एक अज़ान दे, आशा है हमे भी लाकर रोटी देगे।

—असामुद्दीन ! तदबीर तो तूने भाई गजबकी सोच निकाली। अब जरा जल्दी जल्दी क़दम बढा, कही रोटीके पेटमे जानेसे पहिले ही जान न निकल जाये।

दोनो यारोने ज़ल्दी-जल्दी पहुँचकर नानवाईखानेके सामने ऊँची आवाजमे अजान खतमकर रास्तेमे दोनों पैरोपर बैठ ऊँची आवाजसे अजान की दुआ पढनी शुरू की। इसी वक्त नानवाईखानेका दर्वाजा खुला और एक नौकर हाथमे दो गरमागरम रोटियाँ लेके वहाँ पहुँचा। दुआ अभी

खतम नहीं हो पायी थी। हाजित्‌ने धीरेसे कहा "बस कर, मतलब पूरा हो गया, तेरी दुआ अल्लाहकी दर्गाहमें कबकी स्वीकृत हो चुकी ?" यारोंने जल्दी दुआ खतमकर हाथोंको मुँहपर फेरा। नौकरने हाथ-जलाती गरम रोटियोंको दे दुआ करनेके लिये प्रार्थना की। यारोंने उसके लिये छोटी सी दुआ पढकर अपना रास्ता लिया और एक रोटीको तोड़कर दो मिनटमें खतम किया। अब दूसरी रोटीकी बारी आयी, तो हाजित्‌ने कहा—अगर चार रोटियाँ दिये होता, तो कुछ काम भी चलता, इन दो रोटियोंसे क्या बनता है ? ओटोने कहा "आई," मुँहने कहा "भीतर आई," पेटने कहा "ऊपर क्या चीज थी जो नीचे नहीं पहुँची"।

—हाजित्‌ ! अगर तू चार पैर वाला गुर्ग (भेड़िया) होता, तो दुनियामें एक भी भेड नहीं बची रहती। एक आदमी श्रद्धा करके तुझे रोटी देता है और तू कृतघ्न बन और ज्यादा माँगता है। ये बेचारे सीधे-सादे हैं, जो कि मुझे और तुझे रोटी देते हैं, यदि हमारे सच्चे रूपको जानते, तो पत्थर देकर हमारे शिरको तोड़ देते।

—ये मूर्ख हैं।

—नमकहराम ! गाली न दे। ये लोग मूर्ख हों, तो भी मेरा और तेरा पेट यही भरते हैं। दुनियाकी आबादी इन्हींके ऊपर अवलम्बित है, इसलिये पुराने आलिमोंने कहा है "लौ लल्‌-हिमाक वल्‌-अज्रबद्‌दुनिया" (यदि मूर्ख न हो, तो दुनिया बरबाद हो जाय)।

इस तरह फिलसफाबाज़ी और मसखरी करते दोनों यार मदर्से पहुँचे और रोटीके ऊपर एक गिलास ठंडा पानी पीकर दोनों सो गये।

दूसरे दिन आठ बजे सबेरे ही नकबत्‌ खोजाने किवाड़को टकटक करके उन्हें जगाया। हाजित्‌ने कहा—ईशान जान ! सुना था कि कल तुम्हें उन्होंने बन्दी बनाया था, फिर कैसे छूटे ?

—मुझे बन्दी बनानेवाला अभी तक माँके पेटसे नहीं जनमा।

—और सूसुफका क्या हुआ ?

—हम दोनोंको काज़ीखाना ले गये। ईशान काजीकलाँने मुझे देखा। फिर वह यूसुफसे बोले "तेरा शिर कत्रमे पड़े! तू इस्लामी बादशाहकी छत्र-छायामे जीवन बिताते शराब-फरोशी करता है? (फिर अपने आदमियों की ओर निगाह करके) "इस काफिरको ले जाकर ज़िन्दान (जेल) में छोड़ आओ और कह दो कि इसे तबतक बन्द रखें, जबतक जनाबआलीसे प्रार्थना करके शरियतके अनुसार फैसला नहीं हो जाता"। फिर नौकर को इशारा किया, कि मुझे ले जाकर काजीखानेके ज़ीनखानेमें रखे। शाम होनेपर काजीकलाँके मीर अखुरबाशी (अफसर)ने एक आदमीको साथ दे मुझे सही-सलामत घर भेज दिया।

हाजित्ने कहा—"बड़ेकी रहने दे छोटेको काट" की कहावत सचमुच ठीक है।

—यदि मेरे जैसे बड़ोंको काटने लगे, तो तेरे जैसे छोटे मर जायँ। आखिर ईशान काजीकलाँका पेट भी हमारे जैसोंके ही धनसे भरता है। जाने दे इन बातोको, जल्दी आश तैयार कर—कहते नकबत खोजा जामा उतार बिस्तरेपर पालथी मारकर बैठ गया।

१४

सैनिक (सरबाज़)

बुखाराकी शान-शौकतने शहरमें पहले-पहल आये पहाड़ीको न आश्चर्यमे डाला, न कोई आकर्षण पैदा किया। मजारो (समाधियों) और मदरसोंने भी अधिक प्रभाव न डाला। यादगारका ख्याल केवल एक जगह—दर्रानिहाँमे था, उसका दिल केवल गुलनारके साथ बँधा था। गिरफ़्तारीके समय गुलनारने जैसा प्रेम और सहानुभूति दिखलाई थी, उसने उसकी मुहब्बतको सौ गुना बढा दिया था। इस बेगानी दुनियामे उसने एक व्यक्तिको पाया था, जिसके दिलमे उसके लिये दर्द था। उसे अफसोस

होता था, कि आज वह उससे दूर पड़ा है। वह यह भी नहीं जानता था, कि गुलनारको फिर देख सकेगा या नहीं! "दुनिया आशाकी ठौर," "जब तक जड़ पानीमें तब तक फलकी आश" कहा गया है। यदि प्रयत्न करे, तो मनुष्य अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। उसकी यही अभिलाषा थी कि एक बार फिर गुलनारके नयनाभिराम सौन्दर्यको देखे, एक बार फिर उन अधरोंसे मधु-मिश्रित अक्षरोंको सुने, जिनपर गिरफ्तारीके समयको छोड़ सदा मुस्कुराहट रहती थी।

यादगार अपने दिलसे कह रहा था—गुलनारकी चेष्टा और क्रियासे स्पष्ट है, कि वह मुझसे प्रेम करती है, वह कभी किसी दूसरेको अपना दिल न देगी। उसने अंतिम दिन कहा था "तुझे छोड़ मै किसीसे ब्याह न करूँगी"। यसावलकी बन्दूकके सामने उसने जो बहादुरी दिखलाई थी, उससे साफ है, कि वह किसी दूसरेकी बीबी आसानीसे न बन सकेगी। स्त्री होते भी उसने इस तरहकी मर्दानगी और वफादारी दिखलाई, लेकिन अफसोस, मैने उसके पास पहुँचने तककी कोई कोशिश न की।

लेकिन कोशिश तभी की जा सकती थी, यदि अजीमशाहके हाथसे मुक्त होनेका कोई रास्ता ढूँढे। और रास्ता क्या है? भागना! कहाँ और किसके दर्वाजेपर, इस प्रश्नका उत्तर अनुभवहीन, अल्पवयस्क तरुणके पास न था।

यादगार फतहुल्ला बायकी हवेलीवाले कूचेकी छोरपर पुश्त-आर्क नामक मार्गमें दीवारसे पीठ लगाये इन्हीं विचारोंमे मग्न था, इसी वक्त किसीकी आवाज आयी—दाखुन्दा! तू कहाँका है?

आवाज सुनकर यादगार जैसे सोतेसे जाग उठा। उसने उस तरफ निगाह करके देखा कि वहाँ अमीर का एक सरबाज (सैनिक) उत्तरकी प्रतीक्षा में है।

यादगारने कहा—हिसारका।

—खास हिसारका।



"अगर मैं सरबाज़ (सिपाही) बनना चाहूँ तो" पृष्ठ १८६

—नहीं, असली निवासी मैं कूलाबका हूँ, लेकिन इस वक्त सरेजूय हिसारमे रहता हूँ।

—वहाँकी जगहे आबाद हैं ?

—आबाद जगहें भी हैं और ना-आबाद भी।

—अगूर, खरबूजा (सरदा) और दूसरे मेवे वहाँ होते हैं ?

—हाँ, हर तरहके मेवे वहाँ होते हैं।

—मै वहाँ जा रहा हूँ, इसलिये तुझसे पूछ रहा हूँ।

—व्यापारके लिये जा रहे हैं, या नौकरीके लिये ?

—दोनोंमेसे किसीके लिये नहीं, हम जनाबआलीके सरबाज़ हैं, सदा उनकी सेवा करते हैं। जनाबआलीका फर्मान (आज्ञा) है, कि मेरा दस्ता (पल्टन) कोहिस्तान (पर्वतभूमि)की तरफ जाय। कायदेके मुताबिक वहाँ शायद दो साल रहना पड़े। यह पहिली बार है, कि मै उस तरफ जा रहा हूँ।

"आदमी कैसे जनाबआलीका सरबाज बनता है" एकाएक यादगार पूछ उठा। अभी पहलेके विचार-मालासे उसका सम्बन्ध टूटा न था। उसने सोचा शायद सरबाज बनकर कोहिस्तान जानेमें आसानी हो।

—जो भी चाहे, हर वक्त अमीरका सरबाज़ बन सकता है।

—अगर मै सरबाज बनना चाहूँ तो ?

—तू भी बन सकता है।

—यदि मेरा मालिक न बनने दे तो ?

—अगर तू चाहे, तो फिर तेरा बाप, माँ, मालिक या दूसरा रोक नही सकता है।

—यदि मैं कोहिस्तान जाने वाले दस्तेमे भर्ती होना चाहूँ, तो क्या भरती हो सकती है ?

—हाँ, भरती हो सकती है।

—मैं तुम्हारे दस्ते (पल्टन)में आना चाहता हूँ, मुझे उपाय बताओ।

—इस वक्त मै यहाँ ड्यूटीपर हूँ, एक घटा बाद मेरी जगह दूसरा आदमी आयेगा और मुझे छुट्टी मिलेगी, फिर हम दोनो जुजबाशी (कप्तान) के पास चलेंगे, वह तुझे शाही सरबाज बना देंगे।

—बहुत अच्छा। मै इस जगहसे ही नही टलूँगा।

एक घटा बाद सरबाज ड्यूटीसे छुट्टी पा यादगारको साथ लिये काफिर राबत सड़कसे होते जुजबाशीके मकानपर पहुँचा। दरवाजेके पास यादगारको रहनेके लिये कहते बोला—मै अन्दर जुजबाशीसे निवेदन करता हूँ, जबतक मैं आऊँ तब तक तू यहाँ बैठ।

सरबाज अन्दर गया। वहाँ जीनखानेमे एक चालिससाला आदमी—जिसके पैरोंमे बेड़ियाँ पड़ी थीं—बैठा आँसू बहा रहा था। सरबाजने उसकी तरफ देखकर कहा—कुर्बान! कब तक इस हालतमे बैठा रहेगा?

—जमीन कड़ी, आसमान ऊँचा, मेरे लिये उपाय क्या, बैठूँ नही तो क्या करूँ!

—जल्दी एक आदमीको खरीदकर दे और इस आफतसे छुट्टी पा जा। इस जगह आकर किसीने महीना नही देखा। जल्दी कर।

—मै कहाँसे आदमी खरीदकर लाऊँ? एक आदमीके लिये इतने तके चाहिये और मेरे पास क्या है?

—मेरी बात सुन। या तो अपने भाईको लाकर दे या उसकी जगह एक आदमीको दे, या खुद सरबाज बन। यह छोड़ मुक्तिका दूसरा उपाय नहीं है।

—काश! यदि वह जवाँमर्द मेरा असली भाई होता! मेरे बापने सिर्फ उसकी माँ से शादी की थी। बाप और अपनी माँके मरनेके बाद वह चला गया, फिर खुद आकर सरबाज बना और खुद ही भाग गया। मेरा क्या कसूर है, कि मैं उसकी जगह आदमी खरीद कर दूँ।

—जो कुछ भी हो, वह तेरा दाहार (भाई) कहा जाता था, यदि तू न होता तो उसकी जगह उसके गाँववाले एक आदमीको पकड़कर सरबाज (सैनिक) बनाते। बादशाही काम हँसी-ठट्ठा नहीं है। एक बार सरबाज बन जिसने जनाबआली की तनख्वाह खायी, वह मरते दम तकके लिये सरबाज बन गया। अगर वह भागे, तो उसके घरवाले, घरवालों नहीं तो पड़ोसियों या गाँवघालोंको सरबाज बनना पड़ेगा। यदि आदमी खरीदकर नहीं दे सकता, तो खुद सरबाज बन, दूसरा रास्ता नहीं।

—मेरे ऊपर दया कीजिये। मेरे तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं और एक काले बालोंवाली परी सी स्त्री है। घरमें दो तनाब (एकड़) जमीन और इन हाथोंके सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। यदि एक दिन न हिलूँ-डोलूँ, तो बच्चे भूखे मर जायँ। यदि मैं सरबाज बनूँ, तो उनकी क्या हालत होगी ?

—तेरे बच्चोंकी कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता। बादमें वह जिन्दा रहेंगे या मरेंगे यह दूसरी बात है।

—कुर्बान ! तू चाहता है कि इस रोने-धोनेसे मुक्त हो जाय, लेकिन अच्छी तरह समझ ले, कि रोने-धोनेसे जनाबआली की रोटी नहीं हजम हो सकती। यदि तू धोखेबाज नहीं है, तो क्यों तीन सौ तका जमाकर एक आदमी नहीं दे सकता ?

—तीन सौ पर कोई आदमी सरबाजीके लिये राजी नहीं हो सकता, कमसे कम हज़ार तका माँगते हैं। यदि तीन सौ तकेसे काम चल जाता, तो कब न आपनी जमीनको किसी सूदखोरके हाथमें गिरौं रख आदमी खरीदकर ला देता और इस आफतसे अपनेको छुड़ा लेता !

—तीन सौ तका लाकर देनेकी करारकर, मैं अभी आदमी ढूँढ़ लाता हूँ।

—मैं हजार बार राजी हूँ, आप आदमी लाइये।

—मै आज ही आदमी लाकर तेरी जगह देता हूँ, जब तू पैसा दे देगा, तो मुक्त हो जायगा।

—आज मेरे गाँवका अर्बाब (चौधरी) आनेवाला है, मैं उससे कहता हूँ, कि किसी सूदखोरके पास मेरी जमीन गिरौ रखनेका प्रबन्ध करे। लेकिन इसके बाद भी मेरा काम न हुआ और मुझे मुक्ति न मिली, तो फिर मुफ्त ही मे कर्जदार बनकर रहना पड़ेगा।

—"खुदा एक, बात एक" कह कर सरबाज साईसखानेसे निकलकर मेहमानखानेमे जुजबाशीके पास पहुँचा। जुजबाशी अपनी घरू पोशाक—सीना खुले एकहरे कुर्त्ते—को पहने गद्देपर बैठा एक सोलह-सत्रहसाला सरबाज लड़केके साथ ताश खेल रहा था। जुजबाशीने ताशोसे आँखको बिना हटाये "क्या बात है दहबाशी !" कहकर सरबाजसे पूछा।

—कोई बात नही, आपकी मेहरबानी। कुर्बानका काम भी मैंने ठीक कर दिया।

जुजबाशीने पहिले ही की तरह बे-परवाहीसे कहा—किस तरह ठीक कर दिया ?

—तीन सौ तका भी देगा और खरीदकर आदमी भी।

जुजबाशीने एकाएक ताशको हाथसे फेंककर आश्चर्यके साथ कहा—पैसा भी देगा और आदमी भी ! यह तुमने क्या जादू किया ? सच कहो।

—मैने आजतक कभी आपके सामने झूठ नही कहा, अब बतलाइये कि इन तीन सौमेंसे मुझे कितना दीजियेगा।

—यदि आदमी भी लाकर दो, तो तुम्हें पचास तके मिलेंगे।

—यह कम है, कुछ और ज्यादा होना चाहिये ?

—पचास तका भी बहुत होता है। सरकर्दा (करनल)को कुछ दिये बिना इस रक्कमका आश नहीं पकाया जा सकता। कमसे कम सौ तका वहाँ चला जायगा। फिर मेरे लिये क्या रह जायेगा ? जल्द बताओ, क्या ढग निकाला ? अब भी मुझे विश्वास नहीं होता।

—मुझे एक जवान मिला, वह सरबाज बनना चाहता है। बिना उसे बताये मैने कुर्बानके हाथो उसे तीन सौ तकेमें बेच दिया। अब बात यह है, कि आप रजिस्टरमें कुर्बानकी जगह उसका नाम दर्ज कर दीजिये। जब कुर्बान तका लाकर दे दे, तो उसे मुक्त कर देंगे।

—जवान कितने सालका है?

दहबाशीने नीची निगाह करके बैठे ताश खेलनेवाले लड़केकी ओर देखकर कहा—यही बीस साल या कुछ ज्यादा, लेकिन इतना सुन्दर नही है।

—बहुत अच्छा, कबतक सब काम ठीक हो जायगा!

—काम सब ठीक हुआ-हवाया है। जवान भी आपकी हवेलीके फाटकपर मौजूद है।

—नमूर नौरोज! व्यर्थ ही तुम्हें नौरोज़ ज़ोर नही पुकारते। हर जोर (कठिनाई)के कामको तुम बड़ी आसानीसे ठीक कर देते हो। (लड़केकी ओर इशारा करके) उठ, अपने आका (स्वामी)को हुक्का भरकर दे।

लड़केने चिलममे तम्बाकू और आग डाल हुक्कापर रख, पहिले जुजबाशी (कप्तान)के आगे रखा। उसने दो-एक फूंक खींचकर लड़केसे कहा—"हुक्काको जगाकर दहबाशीको दे। इस पैसेमेंसे तेरे लिये भी एक तासी टोपी खरीद देंगे"। लड़केने दो-चार दम लगा हुक्केको चलताकर नौरोज़के सामने किया। नौरोज़ हुक्का पीकर बाहर गया और जरा सी देरमें यादगारको लिये फिर हाजिर हुआ। जुजबाशीने यादगारसे नाम और पता पूछकर नौरोजसे कहा—इसे सरकर्दा (कर्नल)के मिर्ज़ाखाने (क्लर्कखाने)में ले जा नाम रजिस्टरमें लिखवा आओ। जामा और पैजामा भी लेकर दो। फिर यहाँ लाओ, जिसमें काम शुरू करने तक हमारे घरमे खिदमत करे।

× × ×

अब यादगार सरबाज़ (सैनिक) था और बहुत ही प्रसन्न सरबाज़। अमीरके बारह हजार सरबाजोंमे अमलदारो (अफसरों)को छोड़ शायद ही कोई इतना प्रसन्न था। उसके मनमे तरह-तरहके विचार पैदा हो रहे थे—मै जल्दी ही कोहिस्तान जाऊँगा। अज़ीमशाह मुझसे कुछ नही कह सकता, क्योकि मै अमीरका सरबाज हूँ। कोहिस्तान पहुँच जानेपर आगेका काम आसान है। या तो गुलनार मेरे पास आयेगी या मै गुलनारके पास।

एक दासके लिये मुक्ति और एक प्रेमीके लिये मिलनसे बढ़कर प्रिय और क्या चीज हो सकती है ? यादगार दास भी था और प्रेमी भी। वह अब दासतासे मुक्त था और कोहिस्तानकी यात्राके बाद जल्दी ही उसे मिलनका भी सौभाग्य प्राप्त होगा।

इसके बदले सप्ताहमे तीन दिन उसे दो-दो घटा परेड और एक दिन चाँदमारी करनी पड़ती। प्रतिमास खजानेसे बीस तका पाता, जो कि उसके लिये बड़ी दौलत था। यदि छुट्टाके दिनोमे कोई और काम करके चार-पाँच तका और पैदा कर लेता, तो वह "नूरके ऊपर नूर" था।

दस्ते (पल्टन)के सफरका दिन निश्चित हुआ। सफरके लिये लोगोके अरावे (घोड़े, ताँगे) और ऊँट बेगारमे पकड़े जाने लगे। अपने बन्धु-बान्धवसे मिलने-जुलनेके लिये सरबाजोंको परेडसे एक हफ्तेकी छुट्टा मिली। इसी समय सरकर्दा (कर्नल)के नाम लश्करबाशी (प्रधान-सेनापति)का फर्मान आया—"अपने दस्तेमे पता लगाओ कि कौन-कौन ऐसे सरबाज हैं, जिनका घर चकचकी बुज़गल्लाके उस तरफ है। ऐसे सरबाजोंको दूसरे दस्तेमे बदल दे, उस दस्तेसे आपको दूसरे सरबाज मिलेंगे।"

इस फर्मानके अनुसार यादगारको अपना दस्ता छोड़ दूसरे दस्तेमे जाना पड़ा। यादगारके दिलको भारी आघात लगा, उसकी सारी आशायें मिट्टीमें मिल गयी।

१५

नया संगीत (१९१०)

यादगार अब दूसरे दस्तेमें था। कोहिस्तानका जाना अब खतम हो गया था। भाग्यपर सन्तोष करनेके सिवाय और क्या उपाय था? मदरसा-कोकलताशके उत्तर ताक-शूरकी सरायमें दूसरे सरबाजोंकी तरह उसने भी पाँच तका माहवारपर एक कोठरी किराया ली थी। अब उसे बुखारामें रहना था। अभी भी अजीमशाहके पीछा करनेका भय उसके दिलसे हटा न था। एक भेड़-सौदागर बाजारके बाद प्रतिदिन इस सरायमें आ हिसाब करके जाया करता था। उससे यादगारको मालूम हुआ, कि उसके भाग आनेपर अजीमशाहने कुछ दिन इधर-उधर पूछ-ताछ की। सरबाज हो जानेकी बात सुनकर चाहा, कि फिर उसे हाथमें लानेकी कोशिश करे, लेकिन फतहुल्लाने मना करते कहा—"यदि जुजबाशी या सरकर्दाने जान लिया, कि तुम यादगारके मालिक हो, तो वह उससे तुम्हारे ऊपर वेतन रोक रखनेका दावा करा देगे। यदि कही वह सरबाजी छोड़ भागा, तो तुम्हे उसके बदले आदमी देना होगा। तुम्हारे लिये अच्छा यही है, कि इस तरहके नौकरसे नाता तोड़ लो।" मालिकने भी इस सलाहको मानना ही बुद्धि-सगत समझा।

कोहिस्तान जानेकी आशा तो टूट गयी, लेकिन सरबाज़ीकी कृपासे अज़ीमशाहके चगुलसे छूट निकलना यादगारके लिये कम सन्तोष-प्रद न था। अब वह दिल खोलकर परेड और चाँदमारी सीखनेमें लग गया।

एक रोज बृहस्पतिके दिन परेड समाप्त होनेके वक्त जुज़बाशीने सारे सरबाजोंको एक जगह जमा करके कहा—आज तुम लोगोंको छुट्टी है। कल सूर्यके उदय होते ही मेरी हवेलीपर आ जाओ। जनाब लश्करबाशी (प्रधान-सेनापति) एक चार-बाग (मेवाबाग) लगाना चाहते हैं।

तुम लोगोको वहाँ वेगारमे काम करने जाना होगा। जो कोई इस कामसे आनाकानी करेगा, उसे परेडसे आज्ञा-भग करने जैसा कड़ा दड मिलेगा।

दूसरे दिन यादगार जुज़बाशीकी हवेलीपर गया। दूसरे सरबाज़ भी एक-एक, दो-दो करके आने लगे। उनमें कोई आदमी खाली हाथ न था।—किसीके पास एक बोरा सर्दा, किसीके हाथमे दो टोकरी अगूर, किसीके हाथमे एक बोरा जौ तो किसीके हाथमे एक बोरा बादाम, किसीके पास एक मटकी गायका पीला घी था। अपनी-अपनी चीजे जुज़बाशीको भेटकर बेगारसे मुक्त हो सबने अपना रास्ता लिया। यादगार और कुछ दूसरे खाली हाथ आये सरबाज बेगारपर काम करनेके लिये भेज दिये गये।

बेगार महीनों चली, किन्तु चारबागका काम कब खतम होगा इसका कुछ पता नही। चारबाग कुछ छोटा-मोटा नही, बल्कि प्रायः सौ तनाब (बीघा) ऊँची-नीची जमीनमे बनाया जा रहा था। इस जमीनको अकरम् बेगी तोपचीबाशी (तोपखानेका जनरल) हाथमे करके चाहता था, कि वहाँ जोर (जबर्दस्ती)के साथ एक चारबाग तैयार करे। चारबागका नाम भी उसने **ज़ोराबाद** रखा, किन्तु वहाँ काम करनेवाले सरबाज इसे जुल्माबाद (अत्याचार-बस्ती) कहते थे, और यही नाम पीछे सर्व-साधारणने स्वीकृत किया।

यादगारके पास बीस तंका मासिकके अतिरिक्त और कोई आय न थी। इसमें पाँच तंका कोठरीका चला जाता, एक तंका मिर्जा (क्लर्क)को कातिबाना देना पड़ता, बाकी पैसा खुराक-पोशाकके लिये काफी नही पड़ता था। इसलिये यादगार बाध्य हुआ, कि एक सप्ताह बेगारीमें न जाय, और पल्लेदारी या कुलीका काम करके अपनी कमीको पूरा करे।

× × ×

लश्करबाशी (प्रधान-सेनापति) की बेगारमे अनुपस्थित होना भारी अपराध था। मगलका दिन था। इस अपराधमें यादगारको पकड़कर

परेडके मैदानमे ले गये। उसके बदनका कपड़ा उतार लिया गया। एक फौजी कम्बल बिछाकर उसे उसपर लिटा दिया गया। एक सरबाज उसके दोनों हाथों और दूसरेने उसके दोनो पैरोंको दबा रक्खा। बिगुल द्वारा कमान दी गयी। तमाम पल्टन सलामी देनेकी तरह बदूक लिये खड़ी हो गई। सैनिक बाजेवालोमेसे एक ढोलको गर्दनमें डाले यादगार के सिरके पास खड़ा हुआ और यसावुल हाथमे बेत ले यादगारके दोनों तरफ। जुज़बाशीने "सावधान" कहकर कमान दिया। बेत हवामे उठे। ढोलची भी ढोल और लकड़ी ले तैयार हुआ। जुजबाशीने भी "मार" कहा। ढोलचीने भी ढोलपर लकड़ी मारनी शुरू की, जिसकी आवाज-के साथ यादगारकी नगी पीठपर बेत सटासट पड़ने लगे। सरकर्दा (कर्नल) जुज़बाशी और दूसरे अफसरोके मुहपर हर्षके चिह्न दिखलाई पड़ने लगे, लेकिन उस जगहकी ओर किसीने नही देखा, जहाँ यादगारका मुँह था, कि वहाँ हर्ष है या विषाद। उसकी आवाज सुनाई नहीं दी। इस 'नये सगीत'के साथ वह बेहोश हो चुका था। नगारे की 'गुम्-बुर गुम्-बुर' आवाज़मे यादगारका हृदयविदारक क्रन्दन छिप गया था।

यह सगीत-अनुष्ठान देरतक होता रहा। सरकर्दा और अफसर अभी उसके सुननेसे तृप्त नही हुए थे, लेकिन यसावुलोके हाथ दुखने लगे थे और वह बार-बार सरकर्दाकी ओर निहार रहे थे। सरकर्दाने समझ लिया और उसने जुजबाशीको इशारा किया। जुज़बाशीने 'इस्मेनो' (ठहरो) कहा। नगारा बद हो गया और साथ ही बेतकी सटसट आवाज भी। जुज़बाशीने 'मुक्त हो' की कमान दी। सरबाज़ अपनी जगह छोड़कर इधर-उधर बिखर गये, लेकिन यादगार क़बकारी (भेड़ नोचनेकी घुड़दौड़) के मैदानमे गिरी मेड़की लाशकी तरह शरीरके अग-अगमे खूनसे लहूलुहान वही पड़ा रहा।

सरकर्दा और अफसरोंके चले जानेपर सराय-ताकशूरके रहनेवाले

सहवासी सरबाज खटोला लाये और उसमे डालकर यादगारको रहनेकी जगह ले गये।

× × ×

सराय-ताकशूर प्रायः बीस वर्ग-गज लम्बी चौड़ी थी। उसके नीचेकी कोठरियाँ गलीके धरातलसे दो हाथ नीचे थी। शहरमें आनेवाले किसान यहाँ अपने घोड़ो और गधोको बाँधा करते, इसलिये वहाँ चारो ओर लीद भरी रहती थी। इसी गदगीके बीच कोठरियोकी पाँती थी, जिनमें यादगार और दूसरे सरबाज रहा करते। यादगार पहाड़के स्वच्छ और विशुद्ध जलवायुका आदी था। उसके लिये यह स्थान स्वास्थ्यवर्धक नही हो सकता था, लेकिन अब बेतकी सजासे घायल होनेके बाद तो और बुरा प्रभाव पड़ने लगा और उसकी स्थिति दिन-दिन बिगड़ने लगी। सरायका ठीकेदार रहीम रोगनगर (तेली) तनखाहसे खरच काट लेनेकी करारपर यादगारकी दवाके लिये अशूर जर्राहको बुला लाया। अधिक मोटा और चर्बीवाला होनेकी वजहसे अशूर अपने पेटसे एक हाथ पीछे-पीछे चलता था। खैर, यह कोई बात नही, लेकिन जब अशूर यादगारकी कोठरीमें जानेके लिये सीढियोपर चढने लगा, तो मालूम हुआ कि ऐसा होना असभव है। अशूरके पेटको छोटा नही बनाया जा सकता था इसलिये वह अन्दर नही जा सका "गधेको भारके पास नही ले जा सकते, तो भारको गधेके पास लाया जा सकता है" के अनुसार यादगारको जर्राहके पास लाया गया। अशूरने लिटाकर घावको देखा, फिर मलहम बनानेके लिये देग और चूल्हा तैयार करनेको कहा। रहीम रोगनगरने अपनी भातवाली देगको लोहेके चूल्हेपर रखकर मलहमकी सामग्रीको जमा कर दिया। जर्राहने देगमें पावभर तेल डालकर गर्म किया। फिर उसमें खास परिमाणमें बगदाना, जकरकोल, कनगुलाबी, दहनफिरग और कम्बुलको डालकर लेईकी तरह नरम और गाढी हो जाने तक उबाला। सहने लायक हो जानेपर इस "लुक़मानी मलहम"को यादगारके सारे घावोंपर लगा

दिया। यादगारकी पुरानी, बहुत गंदी अस्तरकी रुईसे ढॉककर दर्रा-निहाँमें हाथ बाँधनेके काम आये पुराने साफेसे खूब जकड़कर बाँध दिया और "यह मेरा नहीं, लुकमान हकीमका हाथ है, यदि आयु अवशिष्ट है, तो जरूर अच्छा हो जायगा" कहकर रहीमसे फीस लेकर चला गया।

पाँच मिनट बाद यादगारको रोने चिल्लानेकी भी शक्ति नहीं रही। उसने 'हाय-हाय' करते हुए रहीमसे कहा—भगवानके वास्ते घावको खोलकर शरीरको पोछ दो। रहीम नसीहत देकर भी आध घंटेसे ज्यादा नहीं रोक सका और पट्टी खोलकर मलहमको पोछना पड़ा। सब जगह दानेदाने निकल आये थे।

कहावत है "आदमी गुलाबसे भी कोमल और पत्थरसे भी कड़ा है"। कभी हवाका एक ठंडा झोंका जीवन-प्रदीपको बुझा देता है और कभी असह्य यातनाये भी अधमरे पुरुषको नहीं मार सकती। यादगार भी भारी सासतमें एक मास काटनेके बाद कुछ अच्छा हो पैरों पर खड़ा होने लगा। लेकिन अभी भी बंदूक उठानेकी उसमें शक्ति न थी, तो भी वह कार्तूसी पेटीको लगाये रेगिस्तानमें माहवारी तनखाह लेनेके लिये सरबाजोंकी पाँतमें जा खड़ा हुआ। कुशबेगी (मंत्री)के सामने वेतन तो उसे मिल गया, किन्तु एक माहतक वह परेड और चाँदमारीमें अनुपस्थित रहा, इसलिये जुजबाशीने दहबाशीको पीछे लगा दिया। तख्तपुलसे जब यादगार रेगिस्तान पहुँचा, तो दहबाशीने तनखाह माँग ली। यादगार खाली हाथ लौटा। रहीम रोगनगरकी आशा पर भी पानी फिर गया।

१६

हिन्दूका कर्ज

यादगारके लिये जिन्दगी बिताना दूभर हो गया। भूख बहुत तेज थी, लेकिन खानेके लिये कुछ न था। शरीरमें शक्ति न थी, कि पल्लादारी-मजूरी करता। इसके अतिरिक्त रहीम रोगनगरके पैसोंको भी लौटाना था। क्या

करे, यादगारको कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था। उसने अपने पड़ोसी सरब्राजसे राय माँगी। पड़ोसीने कहा—यह बहुत आसान है। ऐसा कौन सरब्राज है जो पैसोंकी दिक्कतमें न पड़ा हो। ऐसी स्थितिमें हमारे सहायक सूदखोर हिन्दू हुआ करते हैं। यदि चाहता है, तो आ मेरे साथ, मै तुझे एक हिन्दूके पास ले चलता हूँ। मेरी उससे जान-पहचान है। मैंने कई बार उससे उधार लिया है।

"चलो चले" कहकर यादगार अपने साथीके साथ सराय-हिन्दूमें भाई मोती (ब्रायमुत्ती)के कमरेमें गया। भाई मोतीने अपने पूर्व परिचितको देखकर बड़े जोशके साथ कहा—क्या किसी आफतमें पड़ा नियामत! जो मेरे पास आया?

नियामतने यादगारका नाम, दस्ता, और रहनेकी जगह बतलाकर कर्ज देनेको कहा।

भाई मोती—हम जनाबआलीके सरब्राजोंके साथ बड़ी रियायत करते हैं। बिना जमानत या गिरोके और बिना काजीके कागदके पैसा देते हैं। लेकिन जो सरब्राज अपना वादा पूरा नहीं करता, उसे दुबारा करज (कर्ज) नहीं देते। यादगार ब्राय! यदि तुम हमारे कायदे (कायदे)को भल न जाओ, तो हमारी सनदूक (सन्दूक) तुम्हारे लिये सदा खुली है। अच्छा कितना तका चाहिये?

—बीस तका।

—नहीं ऐसा नहीं। आपकी सारी तनखाह बीस तका माहब्रार है। यदि बीस तका करज लोगे, तो मेरे पैसेका सूद कहाँसे दोगे? पद्रह तका लो, प्रति सप्ताह पाँच तकाके हिसाबसे बीस तका देना होगा, जिसमे पाँच तका सूदका है। इस तरह हिसाब बराबर हो जायेगा।

यादगार चाहता था, कि प्रतिसप्ताह पाँच तंका न दे महीनेमें एक ही बार बीस तंका देना पड़े, लेकिन नियामतने यह कहकर उसे राजी कर दिया, कि कोई रास्ता निकाल लेंगे। भाई मोतीने ताकमेंसे एक चौकोर

लकड़ीकी पट्टी निकाली। उसकी एक ओर यादगारका नाम, कर्जकी रकम, तारीख, मियाद आदिको हिंदी अक्षरोंमें लिख लिया, फिर सन्दूक खोलकर पाँच तके सफेद (चाँदीके) और दस तकोंके ताँबेके पूल (पैसे) यादगारके ऊपर लाद दिये।

भाई मोतीके कमरेसे निकलनेपर नियामतने कहा—यदि उसकी शर्तोंको कबूल नहीं करता, तो वह पैसा न देता। आज पैसेको हाथमें लेकर अपने दर्दकी दवा कर, कल अदा करनेके बारेमें सोचनेका बहुत समय है।

× × ×

अगले सप्ताहके आरम्भमें बहुत सबेरे जब अभी यादगार जगा भी नहीं था, उसकी किवाड़पर 'टक टक' हुई। यादगारने बिस्तरेपर बैठकर किवाड़की दरारसे देखा, कि कोई आदमी बाहर खड़ा है, जिसके शरीरपर बुखाराका साफा काला जामा और कमरमें रस्सीका कमरबंद है। उसने खड़ा होकर दरवाजा खोल दिया। सामने भाई मोती खड़ा था। उसके ललाटपर लगा लाल टीका अभी सूखा नहीं था, जिससे स्पष्ट था कि सबेरे स्नान करके बिना कुछ खाये ही पैसा उगाहने आया है। यादगारको देखते ही लकड़ीकी पट्टियोंसे भरे थैलेमेंसे यादगारका 'काष्ठपत्र' निकाला। यादगार उसके कुछ कहनेसे पहले ही बोल उठा—मालिक! मै पैसा नहीं पास का। आज तैयार करूँगा, कल आकर ले जाना।

—जनाबआलीका सरबाज होनेकी खातिर आज मान जाता हूँ, लेकिन वादा पूरा करना होगा। यादगारने 'हाँ' कहा और हिन्दू चला गया।

दूसरे दिन बहुत भोर ही फिर हिन्दू हाजिर हुआ, लेकिन यादगार आज भी पैसा न जुटा सका था। उसने फिर अगले दिनकी मुहलत चाही, किन्तु हिन्दूने आपेसे बाहर हो "कल भी बाकी (बाक़ी) आज बाकी, अगले कल भी बाकी। कब तक बाकी मानूँ? मेरे पैसेको ला" कहकर यादगारके गलेको पकड़कर खींचा। झगड़ा उठ खड़ा हुआ। दूसरे सरबाज भी जागकर आ पहुँचे और रहीम रोगनगर भी। "क्या बात क्या बात"

पूछकर सरबाजी और रहीमने खुशामद की, धमकी भी दी और किसी तरह हिन्दूको राजी किया, कि वह दूसरे सप्ताह तक सब्र करे। उसके बाद हर सप्ताह उसे पाँच तके मिला करेंगे। रहीम रोगनगरने "यदि वह न देगा तो मै दूँगा" कहकर जिम्मेवारी ली।

यादगारने प्रतिदिन परेडके बाद पल्लादारी-मजूरी करके हर सप्ताहके शुरूमे वादाके अनुसार कर्ज अदा किया और तनखाह मिलनेके दिन तक पन्द्रह तका बेबाक हो गया।

१७

सल्लावाला हिन्दू

एक दिन यादगारके परेडसे लौटनेपर रहीम रोगनगर (तेली)ने कहा—यादगार! खुशखबरी नही सुनी?

—क्या खुशखबरी?

—भाई मोती मर गया!

—नही?

—क्यो नही? अभी उसके मुर्देको जलानेके लिये शहरसे बाहर ले जाने वाले हैं।

—कल ही मुझसे मिला था और बाकी पाँच तकोंके लिये ताकीद की थी। क्या हुआ जो एक ही रातमे मर गया? मजाक न कर।

—मौतके बारेमें मजाक करनेकी जरूरत नही। खुदा काफिरोको बीमार करके नही मारता, जिसमें कि पहलेसे जानकर तोबा (पश्चात्ताप) करके मुसलमान बन जायँ, फिर उनके सारे पाप बिना दड हीके माफ हो जायँ और वे मुफ्त ही 'जन्नत' (स्वर्ग)में दाखिल हो जायँ।

"मैं जब तक अपनी आँखोंसे न देख लूँ, नहीं मानूँगा" कहकर

यादगार हिन्दुओंकी सरायकी ओर दौड़ गया। सरायके दरवाजेपर बच्चे हाथों-मे डॉडियॉ लिये "रामराम सत्, बेगुनाह रफ्त" गाते नाच रहे थे। वह गानेके तालपर डाँडियाँ भी बजाते जा रहा थे। यादगार जरा देर बच्चोंका खेल देख सरायके अदर गया। हिन्दुओंकी सारी कोठरियॉ बंद थीं। सारे हिन्दू बुखारी काला जामा पहने, रस्सीका कमरबंद बॉधे, सिरपर नई पगड़ियॉ और टोपियॉ रखे, माथेपर टीका लगाये भाई मोतीके द्वारके सामने खड़े थे। यादगारने कभी किसी हिन्दूको 'काष्ठ पत्र' रखनेवाले थैलेके बिना नहीं देखा था, किन्तु आज वह उसके बिना थे। यादगार कुछ देर तक इस विचित्र तमाशाको देखता रहा। इच्छा रहते भी उसने अपने महाजनके जिन्दा या मुर्दा होनेकी बात किसीसे न पूछी। इसी वक्त एक हिन्दू भाई मोतीके कमरेसे बाहर निकला। उसके सिरपर बिखरे बाल थे, एक लुगी कमरसे बँधी थी और दूसरी दाहिने कन्धेसे बाये बगलके नीचेसे सीनापर होते पीठकी ओर पड़ी हुई थी। उस हिन्दूके पास दो लुगीके सिवाय कोई पोशाक न थी। पाँतीमे खड़े हिन्दुओंने उसको विशेष सम्मानकी दृष्टिसे देखा। थोड़ी देर चुप रहकर उसने दूसरे हिन्दुओकी तरफ निगाह करके हिन्दी भाषामे कुछ पढ़ा। उसके बाद सारे एक स्वरमे बोल उठे—"राम राम सत्त।" फिर उक्त हिन्दूने भाई मोतीके कमरेमे बोरेमे रखी डाँडियोंमेसे दो-दो हरेक हिन्दूके हाथमे थमाई और फौजी बैन्ड वाले फरमान-दाताकी तरह हाथ उठाकर इशारा किया। सारे हिन्दू अपनी अपनी डाँड़ियोंको एक खास तालमें बजाते बोलने लगे—'राम राम सत्त'। इसी समय चार दूसरे केशधारी हिन्दू अरथीपर लिटाई कपड़ोंमे लिपटी किसी चीजको कन्धेपर रखे, कमरेसे बाहर आ सड़कपर पहुँचे। हिन्दू कुछ पढता आगे आगे चला। दूसरे उसके पीछे "राम राम सत्त" कहते हुए चले। सरायसे निकलकर जत्था राहपर इस प्रकार चल रहा था, जैसे हमारे यहॉ वरको वधूके घर या वधूको वरके घर ले जाते हैं। यादगार तमाशा देख रहा था, किन्तु अब भी उसे मालूम नही हो सका, कि भाई

मोती मरा है या ज़िन्दा। वह इतना ही जान सका, कि इन हिन्दुओंमें भाई मोतीका कहीं पता नहीं।

इसी वक्त सरायबानने आकर यादगारका कपड़ा पकड़ दरवाजेकी ओर घसीटते हुए कहा—सरायमें इस वक्त तू क्या कर रहा है, जब कि यहाँ कोई नहीं है?

यादगार उसकी धमकी और तोहमतसे घबड़ाकर बोल उठा—म्-म्-मुझे भाई मोतीसे काम था।

—भाई मोती उस दुनियामे गया। यदि उससे काम है, तो तू भी जल्द उसके पास चला जा।

यह कहकर सरायबानने यादगारको ढकेल दिया।

अब यादगारको कोई सन्देह नहीं रह गया, कि भाई मोती मर गया। पहले सरायबानपर उसे गुस्सा आया था, लेकिन उसके मुँहसे यह खुशखबरी सुनकर उसे अपार हर्ष हुआ।

× × ×

यादगार वस्तुतः अति प्रसन्न था। उसे पाँच तका देनेसे ही मुक्ति नहीं मिल गई, बल्कि उससे बढ़कर मुक्ति यह मिली, कि अब उसे 'काष्ठपत्र' वाला मनहूस थैला देखनेको नहीं मिलेगा। और, सबसे बढ़कर "कल भी बाकी, आज भी बाकी" जैसा कान पकाने वाला भ्रष्ट उच्चारण सुननेको नहीं मिलेगा और इस महीनेकी सारी तनखाह भी अपने जेबमे रहेगी। इसी आनन्द और आकस्मिक सौभाग्यके आनन्दमे निमग्न हो उसने सारा दिन गुजारा। रातमें भी सुखकी निश्चिन्त नींद सोया और दूसरी रातोंकी तरह "कल भी बाकी आज भी बाकी" की मनहूस आवाज स्वप्नमे सुनाई नहीं पड़ी।

दूसरे दिन परेडमें वह शौकसे गया। लौटनेपर बंदूकको कोठरीमें खूँटीपर टाँग सरबाजीकी वर्दी उतारकर उसे झाड़नेके लिये द्वारपर गया। देखा कि एक बड़ा रोबदार आदमी बनारसी जामा और बड़ा सल्ला

(पगड़ी) डॉटे सरायके अंदर आया। चकित हो यादगारने अपने मनमें कहा—इस सरायमें अब तक किरायादार सरबाजो और किसानोके गधोके सिवा और किसी प्राणीको आते देखा नहीं गया, फिर यह रोबीला आदमी कैसे यहाँ पहुँचा। इस आश्चर्यमें उसे वर्दी झाड़नेका ख्याल भूल गया और उसने आगन्तुकपर गौरसे नजर डालकर देखा कि उसकी बगलमें हिन्दुओ का 'काष्ठपत्र' वाला थैला लटक रहा था। यादगारका आश्चर्य और बढा। वह सोचने लगा—भाई मोती मर चुका है। यदि जिन्दा भी होता तो इस तड़क-भड़ककी मुल्लाई पोशाकमें नही घूम सकता था। मुल्लाकी पोशाककी तो बात ही क्या बुखारामें कभी नहीं देखा गया, कि हिन्दू सिरपर सल्ला पहने। दूसरे यह कि भाई मोतीकी आँखे काली, चेहरा साँवला-सा, ओठ मोटे और दाढी छोटी थी, और इस आदमीकी आँखे नीली, चेहरा सफेद, ओठ रक्तहीन पतले और दाढ़ी लम्बी। इसके चेहरेपर थोड़ा-थोड़ा चेचकका दाग भी है।

यादगार सोचने लगा—हो सकता है, बिना बीमारी भाई मोतीके मरने-के समय खुदाने उसके तालेको खोल दिया, फिर वह इमामको बुला ईमान लाकर मुसलमान बन गया। तब खुदाने खुश हो उसको मुसलमान मुल्लाओकी शकल-सूरत प्रदान की और अब वह इस सूरतमें दुनियामें लौटा है। आखिर वह भाई मोतीके मरनेके दिन बच्चोको "बेगुनाह रफ्त" (निष्पाप सिधारा) कहते भी तो सुन चुका था। मानो खुदाने ही बच्चोके मुँहमे यह वाक्य डाल दिया था, नहीं तो कोई मुसलमान पुत्र 'बेगुनाह रफ्त' कैसे कह सकता था ?

इस सोच विचारने यादगारपर प्रभाव डालना शुरू किया। उसे सल्ला वाले हिन्दूको और देखनेकी हिम्मत नहीं रही, और कोठरीके अदर चला गया। सल्ला वाला 'हिन्दू' जरा देर खड़ा रहनेके बाद आगे बढ़कर बोला —रहीम, जल्दी आकर मुझे पता दे।

रहीम रोगनगरने "जी, तकसीर ! हाजिर हुआ" कहकर, उसके साथ

आ यादगारकी कोठरीके द्वारपर खड़ा हो "यही है भाई मोतीका कर्जदार" कहते यादगारकी ओर इशारा किया। सल्ला वाले 'हिन्दू'ने बगलके थैलेमेंसे 'काष्ठपत्रों'को एक-एककर देख उनमेंसे एकको निकालकर यादगारकी ओर देखते हुए कहा—तूने भाई मोतीसे बीस तका कर्ज लिया था न ? उस कजको कब देगा ?

—मैने उससे पन्द्रह तका लिया था, जिसपर मुझे पॉच तका सूद देना था। मूल मै दे चुका हूँ, सिर्फ सूदका पॉच तका बाकी है।

—बात बनानेसे काम नही चलेगा। अगर तूने कुछ दिया होता, तो इस 'काष्ठपत्र'पर चिह्न होता, किन्तु यहॉ कुछ नही है।

—सभव है, यह काष्ठपत्र किसी दूसरेका हो और मेरा पत्र दूसरे चिह्न किये पत्रोंमें हो।

—यह सभव नहीं। हरेक काष्ठपत्रपर अलग-अलग नाम भाई मोतीने खुद अपने हाथसे हिन्दी हरफमें लिखा है। मैने बाय अरजी (भाई अर्जुन) हिन्दूसे, जो कि मुसलमानी हरफ (फारसी) भी खूब जानता है, इसका अनुवाद करके लिखा लिया है। यह बिना चिह्नका काष्ठपत्र यादगारका है। तेरा नाम यादगार है न ?

—उसकी कब्र जले ! मोतीने चिह्न नही लगाया, इसलिये मुझे न जलाइये तकसीर !

—कब्रकी बात अलग, खुद मोती भी जलकर खतम हो गया। उसकी सारी जायदाद और रुपया-पैसा अब बादशाही माल हो जनाबआलीके हाथ चला आया। अब तेरा महाजन मोती नहीं है कि इन्कारी हो अँगूठा दिखा छुट्टी पा जायगा। जनाबआलीकी ओरसे ईशान काजीकलॉ (महान्यायाधीश) इस रकमको तुझसे मॉग रहे हैं। जनाबआलीका माल आज तक न कभी किसीके यहॉ डूबा न डूबेगा। पैसा इधर ला, वस्सलाम, बात बढ़ानेकी जरूरत नहीं।

इस वक्त तक और भी कितने सरताज आकर जमा हो गये थे।

यादगारने सरबाजों और रहीम रोगनगरकी तरफ इशारा करके कहा—मैंने भाईको पैसा अँधेरेमे नहीं दिया। मेरे हर बारके देनेको ये लोग भ जानते हैं।

लोगोंने भी "सच कहता है" कहकर यादगारकी बातका समर्थन किया।

सल्ला वाले 'हिन्दू'ने आग-बगूला होकर कहा—है-है, तुम लोग शरीयतकी बात जानते हो, तो भी इतना तक नहीं जानते कि तुम्हारे जैसे बेनमाजियोंकी गवाही शरीयतमे कोई मूल्य नहीं रखती। मालूम होता है, तुम सब मिलकर चाहते हो, कि जनाबआलीके मालको हड़प जाओ। यह झूठी गवाही देनेके लिये तुमको सजा मिलनी चाहिये।

रहीमने देखा कि उसकी भी गर्दन फँस रही है। उसने यादगारसे कहा—आ, राजी हो जा। एक मासकी तनखाह चली जायगी, इसकी पर्वाह न कर। यदि देह-जॉगर बाकी रहा, तो पैसा फिर आ जायगा (फिर सल्ला वाले 'हिन्दू'से कहा) अच्छा, तकसीर ! तनखाह पानेके दिन दे देगा।

—बहुत खूब ! मै तुझे जानता हूँ रहीम ! लेकिन यदि तनखाहके दिन नही दिया, तो तेरी सरायको बादशाही माल बना जनाबआलीके हाथोंमे सौंप दूँगा।

रहीमने हँसते हुए कहा—कोई हर्ज नही, लेकिन यह सराय तो खुद ईशान काज़ीकलॉकी मिल्कियत है। मै तो एक सरायबानकी तरह इसे ठीकेपर चलाता हूँ।

—सराय न सही, तेरा घर, घरका असबाब या जो कुछ भी तेरे पास होगा, सबको जनाबआलीका माल बनाऊँगा, यदि यादगारने उस दिन अपना कर्ज बेबाक नहीं किया।

सल्ला वाला 'हिन्दू' चला गया। यादगारने रहीमसे पूछा—लेकिन क्या भाई मोतीका कोई वारिस नहीं है, जिससे बात करके मै कर्जसे छुटकारा पा जाऊँ ?

—वारिस हो भी, तो वह अपने देश हिन्दुस्तानमें होगा। जो भी हिन्दू बुखारामें मरता है, उसकी जायदाद शाही हो जाती है। शरीयतके अनुसार दाय-भाग (मीरास) मुसल्मानाबाद (मुस्लिम-देश)से काफिराबाद (काफिर-देश)को देना विहित नहीं है। यदि तेरे भाग्यसे उगाहनेके कामपर कोई दूसरा आदमी आया होता, तो इतनी कड़ाई न होती। हम सब नहो तो कुछ पैसा कम करा लेते, लेकिन इस आदमीके साथ बात करना बेफायदा है। इस आदमीका नाम इबादुल्ला मखदूमी तरक्की है। यह भारी जालिम है। यतीमों (अनाथों)की जायदादको इन्तिजाम करनेके बहाने सब हजम कर जाता है। यदि कोई आदमी नाबालिग लड़का छोड़कर मर जाता है तो "वारिस प्रमाणित नहीं हुआ" कहकर सारी जायदादको बादशाही माल बना देता है। यदि कोई बीचमें रोड़ा अटकाये, तो अभियोग लगाकर उसे बलामे फँसा देता है। नहीं देखा, अभी वह मुझे और सरबाजो पर तुहमत लगाकर तेरे साथ काजीखाना तक घसीटना चाहता था।

—ईशान काजीकलाँ क्यों ऐसा अन्याय करनेका हुकुम देते हैं?

—ऐ दाखुन्दा! अभी तू बहुत भोला है। नहीं जानता, कि पार्न कीचडके ऊपर होता है। ऐसा काम कलानो (बड़ो)को बहुत पसन्द है। इसीसे उनकी आमदनी है।

यादगारको बात समझमे आ गई और एक महीनेकी तनखाह मुफ्त ही हाथसे निकल जानेका बहुत अफसोस नहीं हुआ।

१८

ज़िन्दान

तरक्कीको सारे महीनेकी तनखाह देकर "सब कुछ हार आये जुआरी" की तरह यादगार कोठरीके कोनेमें बैठा चिन्तामग्न हो सोचने

लगा—मैं किन-किन आशाओंके साथ सरबाज बना था और यहाँ आकर कैसी-कैसी बलाओंमे फँसता गया। "बर्षासे भगा नाबदानमें गिरा" की तरह मै अज़ीमशाहके हाथसे भागकर अमीरके जालमें फँसा। समझा था सरबाजीकी बीस तका तनखाहसे दिन अच्छे कटेगे, पल्टनके साथ कोहिस्तान जाऊगा, और किसी तरह अपनी प्रेयसीसे मिलूँगा। अफसोस, कीचड़से निकलकर कीचड़खानेमें आ गिरा।

इन चिन्ताओं और निराशाओंपर विचार करते बन्द राहको खोलनेका विचार करते उसे फिर वही राह—भागना—दिखाई पड़ी। सरबाजीसे यह फायदा जरूर हुआ, कि अब वह बदूक चला सकता था। सोचा, क्यों न बदूकको भी साथ ले चलूँ, शायद काम आये। वह वर्दीको कोठरीमे छोड़ बदूक लिये सरायसे निकला। बुखाराके सल्लाहखाना दरवाजेसे बाहर निकलकर से.पूला, कफ्तरखाना, फासून, खूमीनके गाँवोंसे ऊपर-ऊपर करशीकी ओर चला। सरायसे निकलते वक्त दूसरे सरबाज (सिपाही) घरपर न थे। एक दूसरा सिपाही-साथी यादगारकी चिन्ताके बारेमें जानने आया। यादगारको न देखकर उसने रहीम रोगनगरसे उसके सम्बन्धमे पूछा।

रहीमने कहा—सबेरे बिना वर्दीके बदूक लिये जाते देखकर मैंने पूछा, तो उसने कहा—मिस्त्रीके पास बदूक मरम्मत कराने जा रहा हूँ। और यह भी कहा कि सारे महीनेकी तनखाह तो भाई मोतीके हिसाबमे चली गई, अब इस मरम्मतके लिये भी कमसे कम दो तकेका मिस्त्रीका कर्जदार बनूँगा, यह जलेपर नमक है।

सबको विश्वास था, कि वह मिस्त्रीके यहाँ गया है। रात हुई, लेकिन अब भी यादगारका कही पता न था। रहीमको सदेह होने लगा, कि कहीं बेवकूफी करके भाग न गया हो; यदि बदूक छोड़ जाता, तब भी बुरा था, किन्तु बदूकके साथ भागना तो बहुत ही बुरा है। उसने दूसरे सरबाजोंसे कहा—यादगारके साथ हम भी आफतमें पड़ेंगे, इसलिये जरूरी है कि इस बातकी खबर जुज़बाशीको दी जाय।

रहीमकी राय लोगोंको पसन्द आई और यादगारका पड़ोसी सरबाज खबर देने ज़ुज़बाशीके पास भेजा गया। घटा बीतते-बीतते कुशबेगीके सवार यादगारको गिरफ्तार करनेके बारेमे काजियो और हाकिमोंके नाम खुला आज्ञापत्र लेकर घोड़ोपर चढ चारो ओर दौड़ पड़े। अभी यादगार करशीके बयाबान (निर्जन स्थान)मे करावुलके पड़ाव तक नही पहुँच पाया था, कि एक सवारने वहाँ पड़ी पल्टनके सरकर्दा (कर्नल)के हाथमें आदेश-पत्र दिया। सरकर्दाके आदमी भी दो-दो चार-चार करके चूल (बयाबान)मे फैल गये। यादगारका दो बदूक वाले सिपाहियोसे सामना हुआ। उसने बच निकलनेके लिये बदूक दागी, लेकिन दूसरे कार्तूसको भरनेसे पहिले ही वह उनके काबूमे था। यादगारके हाथोको पीठकी ओर बाँध चोरीकी बदूकको उसकी गर्दनमे लटका सरकर्दाके समक्ष उन्होंने पेश किया। सरकर्दाने यादगारको बुखारा भेज दिया।

× × ×

अगले दिन यादगार बुखारामे था। उसे कुशबेगीके यहाँ ले चले। क़न्दलत-फरोश (हलवाई) बाजारके रास्तेसे—जहाँ कि आजकल बिजलीका स्टेशन है—होते मदर्सा-अयाज़के सामने बाई ओर घूमे। जब उसे क़ाज़ी-उर्दा सड़कसे ले चले, तो यादगारको फतहुल्ला भेड़-सौदागरकी हवेलीमे भागकर अपनेको दुबारा अज़ीमशाहके हाथोंमे सौंपनेका विचार आया, लेकिन वहाँ तक पहुँचनेका मौका ही न मिला और कूचा मीरशबखाना (कोतवाली) पर पहुँचते ही दाहिनी ओर घूमकर एक टीलेपर पहुँचे। दो किवाड़ोंवाले दरवाजे पर—जिसके बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे—लेजा अदरकर एक छोटी कोठरीमे रोक उसके हाथ-पैरमे जजीर और गर्दनमें जेल (तौक़ या तख्ती) डलवा दिया। यहाँसे लानेवाले सिपाही लौट गये। अब जंजीर और जेल डालनेवाले दो आदमी सँकरे और अँधेरे रास्तेसे यादगारको एक ऐसे अँधेरे घरमें ले गये, जहाँ एक दूसरेकी सूरत दिखलाई नहीं पड़ती थी।

वहाँ जेल और जजीरकी आवाज ज्यादा थी, जिससे मालूम होता था, कि वहाँ बहुत अधिक बदी हैं। लानेवाले नये कैदीको एक कोनेमें छोड़ दरवाजेमे ताला लगा चले गये।

कुछ क्षणके बाद यादगारकी आँखे उस अधकार स्थानसे अभ्यस्त हो गईं और उसने वहाँके निवासियोको देखा। उनमेसे कुछ जेलके साथ कुछ जज़ीरके साथ और कुछ यादगारकी भाँति जेल और जजीर दोनोके साथ लेटे थे। कुछके हाथो और पैरोको काठमे डाल कुन्दा किया हुआ था, कुछके हाथ-पैर खुले भी थे। वह इस घर या जीवितोकी कब्रमे—जहाँ कुछ बारीक छिद्रोसे विधवाके दीपककी भाँति हलकी रोशनी आ रही थी—घेरकर बैठे थे। उनमेसे कुछ तलवारका मियान सी रहे थे, कुछ मोज़ा बुन रहे थे और कुछ दस्तकारीके किसी दूसरे काममे लगे हुए थे। करीब-करीब सभीके कपड़े फटे और गदे थे। किसीके नीचे बैठनेके लिये बिस्तरा या चटाई न थी। उनके लम्बे बढे बाल बतला रहे थे, कि सालोंसे उन्होने हज्जामका मुँह नहीं देखा।

यादगार कुछ देर तक एक-एकको ध्यानसे देखता रहा, फिर उसने अपने पास लेटे बदीसे पूछा—यह कौनसा स्थान है?

बदीने आश्चर्यके साथ उसे पैरसे सिर तक देखते कहा—क्या तू दाखुन्दा (बुद्धू) है और पहाड़से अभी-अभी आया है, कि स्वय बदी होते हुए भी नही जानता कि यह कौन स्थान है? इस जगहको लोग ज़िन्दान कहते हैं। यह अमीरके बदीखानोंमेसे एक है।

—क्या अमीरके और भी बदीखाने हैं?

—अमीरके पास असख्य चीजे हैं। उसके पास दार (शूली) है, मीनार है, नक्कारखाना है: ज़िन्दान, आबखाना और कानाखानाके कारागार हैं। आदमीको मरवानेके लिये दारपर चढ़वाता है, मीनार या नक्कारखानेसे गिरवाता है, कि भूमिपर पहुँचते-पहुँचते पानीसे भरी मशककी तरह चिंदी-चिंदी उड़ जाय। या आबखानामे डलवाता है, जो

कि यथानाम बिलकुल पायखाना जैसा ही है। या कानाखानामे रखवाता है, जहाँ कि कानो (खटमलों)को पालकर रखा गया है। ये काने आदमीको काटकर जल्द ही मौतके घाट पहुँचा देते हैं। या यहाँ डलवाता है, जिसका नाम जिन्दान—गोरे-जिन्दाँ—ज़िन्दोकी कब्र है।

दिन बीता शाम आई, लेकिन जिन्दानके लिये दोनों ही बराबर थे, सूर्यकी किरणे वहाँ तक नही पहुँच सकती थी। दरवाजा खुला, दो सिपाहियोने आकर तैयार दस्तकारीकी चीजोको एकत्रित किया और हर-एकके हाथमे एक-एक सूखी रोटी दे दर्वाजेपर ताला मार दिया। रोटी खानेके बाद सब सो गये, लेकिन यादगार ने घटेमे सौ बार इधरसे उधर करवट बदलते भविष्यकी चिन्ता करते "क्या है जो नहीं बीत जाता" कहकर मनको सन्तोष दिया।

रात बीत गयी। छेदोंसे रोशनीकी चमक देखकर बन्दी भी नींदसे जागे, और उन्होने सोनेकी जगहके पास ही जाकर गढ्ढोंमे पाखाना-पेशाब किया। दस्तकार फिर अपने कामोमे लगे। जेलके सिपाहियो का अभी पता नही था। पेटमे भूखकी आग जोरसे जल रही थी और सबकी दृष्टि रोटीकी ओर लगी हुई थी। एक बन्दीने कहा—आधा दिन बीत चला और इस खुदासे बेपरवा सिपाहीका कही पता नही।

दूसरेने कहा—किवाड़ खटखटाना चाहिये, नही तो जब उसकी मर्जी होगी तब आयेगा। मेरे तेरे जैसे भूखोकी उसे क्या "भर पेटेको भुख पेटेकी क्या परवा"?

—आरे! किवाड़ खटखटाना जरूरी है।

आदमियोने जाकर किवाड़ खटखटाना शुरू किया। जेल-दारोगाने आकर दर्वाजा खोला "नाश्ता तक धीरज भी नही धर सकते" कहकर उसने आदमियोको हुकुम दे कुछ बन्दियोको लम्बी जजीरमे बँधवा दिया।

एक आदमीने स्वय आकर कहा—मुझे भी बाँध दो।

—नहीं, तू कल ही आया है, दो दिन और ठहर, फिर तेरी भी बारा आयेगी।

जेल-दारोगाने लंबी जजीरमें बँधे बंदियोको जिन्दानसे बाहर टीलेसे नीचे ला सड़कके किनारे पाँतीसे खड़ा कर दिया, और जंजीरके छोरको कुछ और जजीरोंसे जोड़कर दर्वाजेसे घुसा जिन्दानके अदर बाँध दिया। बदी खड़े हुए आने-जाने वालोसे दुआ देकर भीख माँगने लगे। लोग औकातके अनुसार रोटी या पैसा देते। दो घटा बाद दारोगाने आकर बदियोके सामने पड़े पैसो और रोटियोंको इकट्ठाकर उन्हें फिर जिन्दानके अदर पहुँचा दिया और आजकी मिली रोटियोंमेसे कुछ उनमे बाँट दीं। एक बदीने मुँह-फट हो कह दिया—

—नगद पैसा तो खैर तुम्हारा माल है, किंतु रोटियोमेसे तो कुछ और हमे पेट भरनेके लिये देते।

—रातकी रोटी क्या तुम्हारे बापके घरसे लाकर दूँगा? अभी भी आधीसे अधिक रोटियाँ दे चुका, और क्या चाहता है?—कहकर दारोगाने बाहर निकलकर द्वारमे ताला लगा दिया।

१६

"मुक्तिकी तावीज"

"आज मैने स्वप्न देखा, कि हम सभी ज़िन्दानसे मुक्त हो गये" कहकर एक बदीने दूसरे बंदीको जगाया। लेकिन दूसरेने सिरको उठाये बिना हँसी उड़ाते कहा—"मुक्तिका स्वप्न देखा, तो उसे पानीसे कह।"

तीसरा बदी—लेकिन पैसा हो, तो मुक्त होना बहुत आसान है, सारी बात पैसेकी है।

चौथेने ठठाकर हँसते हुए कहा—बहुत आसान दवा खोज निकाली। यदि पासमें पैसा होता, तो हम और तुम बदी ही न होते! यही पैसा

सहायक नही था, इसलिये बदीखानेमे पड़े और इस जीवितोंकी कब्रमे लम्बे पड़े हैं। गिज्दुवानवाले अब्दुल्ला बाय-बच्चा (बायपुत्र)को नहीं देखा? उसने कितने घरोको बर्बाद किया, गिज्दुवानके चर्मगरान (चमार) गॉवमे लोगोके सामने तलवारसे एक आदमीका पेट चीरकर मार दिया। लेकिन उसके पास पैसा था, इसलिये गिरफ्तार होनेपर भी बहुत जल्द मुक्त होकर चला गया। मैने और तुमने क्या पाप किया? मेरा पाप यही है, कि दस साल चाकरी करके एक पैसा मजूरी भी न पाई, तो गिज्दुवानवाले जलालुद्दीन अमीनीके घरसे भाग गया। इस घर-जलेके काज़ी, हाकिम सभी दोस्त हैं। उसने चोरीका अपराध लगाकर मुझे यहॉ पहुँचा दिया। काश! कही थोड़ा मोड़ा पैसा मिलता, कि यहॉसे मुक्ति पाता।

—मैने एक उपाय सोच निकाला है, और बहुत थोड़ेसे पैसेसे काम...

अभी वह अपनी बातको पूरा नही करने पाया था, कि दूसरे बदीने कहा—कह फर्मान! कौनसा ऐसा सस्ता उपाय खोज-निकाला है?

फर्मानने कहा—खोजा-अस्पगर्दा सड़कपर दमुल्ला कुतुबुद्दीन नामके एक जतर-मतर जाननेवाले ईशान रहते हैं। वह मेरे गॉव दिल-कुशा-बैरूनमे आया-जाया करते हैं। एक दिन जब वह वहॉ थे, तो मेरी मॉने उनसे मेरी हालत बतलाकर दुआ और तावीज (जतर) मॉगी—यह मेरे कुर्तेके नीचे बॉहपर उन्हींका दिया तावीज बँधा है। मॉने कृतज्ञताके तौरपर दो तका भेट चढाई। ईशानने स्वीकार किया और प्रसन्न होकर कहा—"यह भी न देती, तो हर्ज न था, जब लड़का छूटकर आता, तो खुद देता। अपने लड़केको खबर कर दे, कि बदीखानेके दूसरे बदी भी दुआ और जतर चाहते हो, तो मैं दे दूँगा। उसकी भेट इस वक्त हो सके तो देवे, नही तो छूट जानके बाद भी देनेमें कोई हर्ज नहीं, मैने सेवा करनेका व्रत लिया है। यदि बदी चाहें तो मैं खुद जिन्दान (जेल)मे आ जतर लिखकर उन्हे दे सकता हूँ। कुशबेगी (युद्ध मत्री)

मीरशब् (कोतवाल) मेरे मुरीद (चेला) हैं, इसलिये मेरे जिन्दानमें आनेमे कोई रुकावट नही।" तुम लोगोंका ईशानकी दुआ जतरपर विश्वास है या नही, यह न जानते मैने यह बात तुमसे नहीं कही। आज बात चल पड़ी, तो कह दिया। अगर चाहते हो, तो मॉको कह दूँ, वह मुझे देखनेके वक्त अपने साथ ईशानको भी लेती आयेगी।

एक बदी—मॉको कह दे, कि ईशानको लेती आये। जब पैसा नहीं देना है, तो हमारा क्या बिगडता है "यदि लालची न हुआ तो पानी होगा," यदि दुआ ने फायदा न किया, तो हम कुछ न देगे।

दूसरा—सूखे और खाली हाथ भी नही होना चाहिये। ज्यादा नहीं तो थोड़ा भी सगुनियोंके सामने रखना चाहिये।

—जेल-दारोगासे छिपाकर बचकानी एक दो टोपी, जूता या दूसरी चीजे तैयार करके रख छोड़े, जब ईशान आये, तो इन्ही चीजोंको सगुन विचारते वक्त भेट कर दे। यदि दो चीज ईशान को दे दिया, तो हमारी क्या हानि? हमको एक सूखी रोटी थमा सारी चीजोको बेचकर दारोगा खा जाता है—कहकर दूसरे बदीने भी ईशानको लानेपर जोर दिया।

× ×

ईशानने तावीजके प्रभावसे चालीस दिनके अन्दर जेलसे छूटनेका वादा किया था, लेकिन छ माह हो गये, और मुक्तिका कही पता न था। बदियोने ईशानको गाली देना शुरू किया। यादगारने भी उनका साथ देते कहा—जतर-मतर वाले मुल्लापर मेरा कभी विश्वास न था, लेकिन यारोकी पॉतीमे हो मैने भी एक तावीज लेकर अपनी टोपीमे टॉक ली है। यदि मेरी मानो, तो मुक्तिका रास्ता है, मौतके लिये तैयार हो जाना।

जरगरवाले कलन्दरने क्रुद्ध होकर कहा—तूने कैसे जाना दाखुन्दा! कि हम मौतसे डरते हैं। पहले बदियोमे आधे बुखाराके आस-पास के हैं, दूसरे आधे शिज्दुवान तूमान (पर्गने)के। मौतसे न डरनेकी वजहसे ही तो आज हम इस हालत (जेल-जजीरको हिलाते)में पहुँचे। हम

गिज्दुवानियोंको "अराबा-सवार ज़नबार-नशीन" कहा जाता है। जानता है, इसका अर्थ क्या है? हम काजियोंके फंदेमे नहीं पड़ते, हाकिमोंसे धोखा नहीं खाते, बाय और ईशानका रोब नहीं मानते, यदि ज्यादा बढ़-बढ़ करते तो चार हाकिमके आदमियोंको पकड़कर पीट देते हैं। हाँ यह जरूर है, कि एक न एक दिन हाकिम हमें पकड़कर हाथ-गर्दन बाँध अराबा (ताँगा)मे सवार करा बुखारा भेज देते हैं। यहाँ अमीर हमें मरवाता है, फिर हमारे घरवाले आकर हमारी लाशको जन-बार (डोली)मे रखकर ले जाते हैं। इसीलिये हमको "अराबा-सवार ज़नबार-नशीन" कहते हैं। मौतसे हम कितने निर्भय हैं, इसका पता इसीसे मालूम होता है, कि आज हममेंसे कुछपर ऐसी बीतती है, और उसी कामको कल दूसरे करते हैं। तू दाखुन्दा! यदि हममेंसे होता, तो मौतके भय और अगर-मगरकी बात छोड़ अपनी बात सीधे तौरसे कहता। बतला, तुझे क्या मुक्तिका उपाय सूझा है?

दाखुन्दा—यदि मुझे एक आरा, कुल्हाड़ा, छिन्नी और सुआ ला दो, तो मै सबको छुड़ा सकता हूँ। गुस्सा न करो आका कलन्दर! सबको अपने या गिज्दुवानियो जैसा न समझो। बहुतसे हैं जो मौतको स्वप्नमे भी देखकर डरके मारे काँपते हैं। डरके मारे उन्होने हमारे कामकी खबर पहिलेसे जाकर यदि कर दी, तो हमारा जीना और कठिन हो जायेगा।

कलन्दर—तेरी यह बात ठीक है दाखुन्दा! लेकिन हम सावधानी रखेंगे। यहाँ हमारे बीस पक्के दोस्त हैं, जो "सर दे देंगे, किन्तु सिर (भेद) न देगे"। दूसरे जो डरपोक या कच्चे हैं, वह प्राणके भयसे स्वय हमारे साथ होंगे। यदि एक बार हम धमका दें, तो वह स्वप्नमे भी इस भेदको मुँहपर लानेकी हिम्मत नहीं करेंगे। तू क्या कहेगा, हम सब अपने सिरोंको दावपर रख चुके हैं। मैं तेरी बात मानता हूँ और आरा वगैरह लाकर तुझे दूँगा।

सब इस रायपर सहमत हुए।

× × ×

एक दिन सूर्यास्तके समय जिन्दानके पीछेवाले कूचेसे पश्चिमवाली सड़कसे आकर एक अज्ञात आदमीने बदूकधारी पहरेदारसे पूछा—आका दहवाशी ! मालिबखाना कहाँ है ?

पहरेदारने बदूक पकडे हाथ उठानेकी जगह सिरको सूर्यकी ओर घुमाकर कहना चाहा, कि वह सामने रहा, लेकिन इससे पहले ही अज्ञात पुरुष उसके हाथसे बंदूक छीनकर रफूचक्कर हो गया। पहरेदार-ने—"चोर ! पकड़ो-पकड़ो" कहकर हल्ला मचाते हुए पीछा किया। जगह-जगह खड़े दूसरे सिपाही भी पीछे दौड़े। करीब था कि पकड़ा जाता, इसी वक्त आदमी बदूक फेककर टेढी-मेढी गलियोंमे गायब हो गया। सिपाहियोने देखा, बदूक मिल गई और चोर भाग गया, इसलिये पहरा छोड़ पीछा करना उचित न समझ वह अपनी जगह लौट गये।

जिस समय पहरेदार अपनी जगह छोड़ चोरका पीछा कर रहे थे, उसी समय एक दूसरा अपरिचित पुरुष गड्ढेकी तरफसे आया। राहको बिना पहरेदारकी देख एक छलाँगमे पुश्ता (खाँवा) पारकर कोनेमें दुबक रहा। वह पहर रात तक अपनी जगहसे नहीं हिला। जब रात बहुत बीत गई और पहरेदार पिनक लेने लगे, तो अपनी जगहसे निकलकर ज़िन्दानकी छतपर चढ गया। हवा और रोशनीके लिये बनाये सूराखसे एक घासकी लूँड़ी फेंक सूराखपर कान लगा प्रतीक्षा करने लगा। इसी समय "सफरू !" कहकर किसीने जिन्दानके अन्दरसे पुकारा। अज्ञात पुरुषने जवाबमें कहा—हाँ, मैं ही हूँ।

—एक-एक करके गिरा।

अज्ञात पुरुषने 'अच्छा' कहकर पहले सुभा, फिर आरा, बादमें दूसरी चीजें गिरा दीं।

—सफदर ! सब गिरा दिया ?

—गिरा दिया।

—अपने लिये भी सावधानी रखना।

'खातिर जमा रह' कहकर अपरिचित पुरुष वहाँसे हटकर छतसे नीचे उतरा और उसी कोनेमें जा छिपा। पासके हम्माम (स्नानगृह)से धुँआँ निकलने लगा और कूचेमें लोगोंकी आवाजाही शुरू हुई। 'भोर' समझ पहरेदार भी निश्चिन्त सो रहे। अपरिचित पुरुष भी धीरेसे कूचेमें पहुँच साधारण राहीकी तरह पहरेदारोंके पाससे होता चला गया।

× × ×

काम शुरू हुआ। प्रतिदिन शामसे सुबह तक बदी सेध मारनेमे लगे रहते। अधिकतर बदियोंके पैरोंमे बेड़ी थी, लेकिन मिट्टी फेकनेमे उससे कोई बाधा न थी। बदी सेधके मुँहसे पुराने जमानेमे आदमियोंके रखनेके लिये बनाये गये कुएँके किनारे तक पाँतीसे बैठ जाते। सेधसे निकली मिट्टीको एक जामामे रख हाथों हाथ उसे कुएँके अन्दर गिरा देते। यादगारका अदाज बहुत गलत नही सिद्ध हुआ और बीस दिन बाद सुरगका मुँह जिन्दानके पिछवाड़ेके कूचेके करीब पहुँच गया। अब दीवारसे कान लगाकर लेटनेपर आने-जाने वाले घोड़ों गधोके खुरोंकी खट-खट सुनाई पड़ती। इस वक्त काम रोक दिया गया, और कूचेकी हालत देखनेके लिये सिर्फ एक छोटा-सा झरोखा काटकर वे उचित अवसरकी प्रतीक्षा करने लगे। यादगारने हर्ष प्रगट करते हुए अपने दोस्त फर्मानसे कहा—यह है मेरी ओरसे मुक्ति की दुआ।

२०

इफ़्तार (रोज़ा खोलना)

रमजानका दिन था। सूर्यास्तमे एक घड़ी बाकी थी। बुखाराके रोजादारोंके कानोंमे न कोई दूसरी बात, न दिलोंमें कोई दूसरे विचार थे।

उनका सारा ध्यान, सारी वृत्तियाँ एक विन्दुपर केन्द्रित थीं, यानी कब शामकी नमाज होगी और इफ्तार (पारणा)मे क्या-क्या खायेगे। इसलिये मिनट-मिनटपर घड़ीकी सुइयाँ देखी और नई-नई न्यामते खरीदी जा रही थीं। ज़िन्दानके पिछले कूचेमे पहरा देनेवाले दहा (दस आदमी)के सिपाही भी इस आम बीमारीसे मुक्त न थे। दहबाशी (दसका अफसर) अपने आदमियोंसे इफ्तारके खर्चके लिये पैसा जमाकर रेगिस्तान गया और वहाँसे दो कटोरा निसल्ला (शर्बत) दो खमीरी रोटियाँ, दस दाना खजूर, एक पुड़िया सामी नस, एक पुड़िया करशीका दुखतरपेची तम्बाकू खरीदकर लौट आया।

सूर्यास्त होनेमे अब आधी घड़ी बाकी रह गई थी। सिपाहियोके कोनेमे अपनी साँसोंके सिवा कुछ सुनाई न देता था। उनकी आँखोके गिर्द स्याही दौड़ गई थी। सोलह घटेका उपवास और पहरेदारीकी जगाहट विशेषकर सुँघनी और चिलमकी खूमारीके बीच, यह आसान काम नहीं था। इस सारी तकलीफ और परेशानीमे सिर्फ एक चीज देखनेकी थी—इफ्तार। उन्हें विश्वास था, कि सोलह घटेकी यह तकलीफ पन्द्रह मिनटके इफ्तारसे दूर हो जायेगी।

कूचेकी एक तरफ एक अनुकूल और समतल स्थानको साफकर वहाँ करशीकी लोई बिछाई गई थी, जिसपर दस्तरखान फैला रोटी, निसल्ला और खजूर रक्खी थी। दहबाशी हुक्का ताजा करते बोल उठा—'आज छुट्टीपर तम्बाकू लाया हूँ। हुक्का भी खुद ताजा कर रहा हूँ। फिर मालूम होगा कि करशीका दुखतरपेची तम्बाकू कैसा होता है।' उसके सिपाहियोंकी नज़र भी शामी हुक्केकी तरफ खिच गई थी।

दक्खिनकी ओर ज़िन्दानके फाटकके पास भी यही हाल था। वहाँ जेल-रक्षकों (वार्डरो)ने पहरेवाले सिपाहियोसे मिलकर अपने रमजानी दस्तरखानको और भी अधिक सजाया था। लेकिन जिन्दानके भीतरकी हालत और ही थी। वह आज बीस रोज सेंध लगानेके परिश्रमका फायदा

उठाना चाहते थे, इसलिये उन्होंने हाथों और पैरोके कुन्दोंको आरेसे काट डाला था। जेल और जजीरको रेतीसे रेत रेतकर सड़ी रस्सीकी तरह अलग कर दिया था। आगे खड़े बदियोकी आँखे रोजादार सिपाहियोंके दस्तरखानपर पड़ रही थीं।

शामकी नमाजकी अजान सबसे पहिले आर्क (किला)के दर्वाजेके नक्कारखानेसे बुलद हुई। एक सेकड बाद मीनारके भी सात मुवज्जिन एक ही साथ आर्कके मुवज्जिनसे आवाज मिलाते बाँग देने लगे। एक सेकड और बाद बुखाराके सारे मदर्सों और मस्जिदोंके मुवज्जिनोंने फरियाद शुरू की। शहरमें एक विचित्र हल्ला-गुल्ला मचा, लेकिन उसके खतम होते ही श्मशानकी नीरवता छा गई। कूचोंमें कहीं आदमियोंके पद-सचारकी आहट सुनाई नहीं देती थी। कहीं भी बातचीत सुननेमें न आती थी। यहाँ तक कि जो दस्तरखानपर बैठे थे, वह भी मुँहसे कुछ न बोलते जबान बद किये सिर्फ अपने मुँह और हलकको खोले हुए थे। आर्क (किला)से अजानकी आवाज सुनकर दहबाशीने हुक्केको हाथमें ले बड़े जोरसे दो तीन दम खींचा और वह वहीं अचेत पड़ रहा। दूसरे सिपाही भी उसके हाथसे हुक्का ले दम लगाकर उसी स्थितिमें पहुँचे। दस मिनटमें ही सरबाज (सिपाही) मुर्देके मानिन्द पड़ रहे और अन्तमें अन्तिम दम लगाने वालेके हाथसे हुक्का एक ओर गिरा और खुद गिरकर उसने गिरने वालोंकी संख्या ग्यारह कर दी।

इसी समय कलन्दर जरंगगीने एक चोटमें सुरगके अन्तिम पर्देको तोड़ डाला। पिंजड़ेके चिड़ियोंकी तरह बदी बड़ी फुर्तीसे सुरगके बाहर निकल आये और कबूतरोके झुडपर बाजकी तरह वह रोज़ादार सरबाजोंपर टूट पड़े; उन्हींकी कमरपेटियोंसे हाथ-पैर बाँधकर उन्हें जमीनपर डाल दिया। फिर उनकी बन्दूकें हाथमें ले कूचों और गलियोंसे होते किलेकी दीवारको फाँद दर्वाजा-इमाम और दर्वाजा-समरकदके बीचकी तरफसे भागे।

जबतक इस खबरको पाकर कुशबेगी (युद्ध-मन्त्री)के आदमी पिंजड़ा ोर, जंजीर तोड़ निकल भगे इन शेरोके पीछे दौड़े, तबतक वे शहरसे ाहर दूर जा चुके थे। एक ओर और एक जगह जाना या एक जगह हरना उन्होंने ठीक नहीं समझा, इसलिये सभी बिखर गये। रातके ंधेरेसे फायदा उठा एक-एक दो-दो करके जाकर शहरसे दूरके नरकट-ारियोमे छिप गये।

अमीरके जिन्दानमे सिर्फ वही थोड़ेसे बदी बचे रहे, जिन्हें भागनेकी हेम्मत नही हुई या किलेकी दीवार फाँदते वक्त जिनके हाथ-पैर टूट गये थे, इसलिये कुशबेगीके आदमी उनपर काबू पा सके।

२१

मुक्तिकाका कारण या बन्धनका ?

"बर् मुहम्मद सलवात्" (नमो मुहम्मदाय) जनाब-आलीका फर्मान ..

धनी-गरीब जो कोई भी हो, पीछे तुम न कहना कि मैने (ढिंढोरा) नही सुना ! ज़िन्दानसे भगा कोई भी बदी अगर किसीके हाथ पड़े या कोई अज्ञात आदमी एकाएक दिखाई पड़े, तो उसे तुरन्त पकड़कर कानीखाना या मीरशबखाना (कोतवाली)के सुपुर्द करे। जो आदमी इस फर्मानकी हुक्म-अदूली करेगा और अज्ञात आदमीको हाकिमखानामे नहीं पहुँचायेगा, उसका सिर बादशाही और माल जब्त होगा।

बर् मुहम्मद सलवात्"

बदियोंके भागनेके दो रोज बाद बुखाराराज्यके सभी बाजारों और मुमानोंमें दंढोरचियोंने उक्त प्रकारसे ढिंढोरा पीटा। अपरिचित और

संदिग्ध आदमियोंसे काजीखाने और मीरशबखाने भर गये। हर रोज हाथ-गर्दन बँधे उनके गिरोहके गिरोह शहर बुखाराकी तरफ भेजे जाने लगे।

× × ×

यदि आप बुखारासे निकलकर तुमान (परगना) वाबकदकी तरफ जाये, तो वाबकन्द-बजरियाके नजदीक पाव मीलपर बड़ी सड़कसे एक छोटा रास्ता अलग होता है। इस रास्तेसे हजार कदम आगे बढ़नेपर सामने नहरके किनारे एक आबाद गाँव है, जिसका नाम है काफिररबात। एक अँधेरी रातको पह फटनेसे कुछ पहले नहरके किनारेवाले एक घरके फाटकसे एक आदमी बाहर निकला। आदमीका सिर बुर्क़ा (फरजा) वाली औरतोकी तरह ढँका और सारा शरीर भी जामेसे खूब आच्छादित था। आदमी नहरके किनारे आया। वहाँ किसी प्राणीकी छाया देखकर चौंक पड़ा और एक कदम पीछे हटा। फिर हिम्मत बाँध किन्तु काँपती आवाजमे बोला—तू कौन है?

—...—जवाब कुछ नही।

—कह, कौन है तू मुये!

—...

—पराया या अपना, क्यों नहीं मुँह खोलता मुये?

—...

आदमी लौटकर मकानके अदर गया और एक बड़ी लाठी ले तुरन्त बाहर आया। एक बार प्राणीकी छायाके और समीप जा, लाठीको एक हाथमें लिये, दूसरे हाथसे जामाको पहिलेसे भी ज्यादा मुँहपर खींचकर बोला—तू कौन है? बतलायेगा या नहीं? अगर नहीं बतलायेगा तो इतनी मार मारूँगा, कि तेरा नाम-निशान भी न रह जायेगा!

—'बटोही' कहकर छायाने जवाब दिया।

—कहाँका रहनेवाला है और क्या काम करता है?

—...

—कहाँका रहनेवाला है, पूछता हूँ, सुनता है या नहीं ?

—वाबकन्दी ।

—मै सात सालसे सत्तर साल तकके हरेक वाबकदीको पहिचानता हूँ । तू कौन है, मालूम हो गया । आ मेरे साथ ।

जिस वृद्धके सहारे बैठी थी उसे पकड़कर छायाने उठना चाहा, लेकिन वह वैसा न कर सकी । पर्दादार आदमीने लाठीसे एक-दो बार अपरिचित व्यक्तिको टटोलकर जामासे अपना मुँह ढाँक, बायें हाथमें लाठी थाम, दाहिने हाथसे अपरिचित व्यक्तिको उठनेमें मदद दी । फिर उसे बाँह पकड़े हवेलीके अदर ले जा साईसखानेमें बैठाया । घरके अदरसे चिराग जलाकर वहाँ ला मुर्दा जैसे चेहरेको देखकर बोला—क्यो साफ-साफ नही बतलाता कि तू कौन है ?

—मै बीमार भी हूँ और भूखा भी । कोई बात याद नही आती कि बतलाऊँ ।

आदमीने घरके अदर जा 'आचेश' कहकर बीबीको आवाज दी । लब्बेक क्या कहते हो ?—कहकर बीबीने जवाब दिया ।

—एक कटोरा पानी और एक रोटी दे । असमय एक अभ्यागत आया है ।

बीबी रोटी और पानी लेकर पास आई । देखा कि पतिके सिरपर अब भी जामाका घूँघट है । आधी हँसी और आधी गुस्सासे वह बोली—तुम्हारा मुँह सूखे ! तुमने अब भी मुँह नहीं धोया और रोटी थामना चाहते हो ? क्या हो गया है तुम्हें ? और मुँह अपना ढाँक लो कि कोई देख न ले ।

मर्दने अपने सिरको और भी ज्यादा ढाँककर कहा—बहुत बात न मार । बातोंके लिये समय नहीं । रोटीको एक लत्तेसे बाँधकर दे, कि मेरे हाथसे न छू जाय ।

रोटी और पानी लाकर मर्दने अभ्यागतको खिलाया । पूछकर और कुछ पता न पा सका, लेकिन पीठपर गिरे लम्बे बाल और शकल-सूरतसे

जान गया, कि आदमी भगोड़ोंमेसे है। इसलिये नहरमे हाथ-मुँह धोनेके बाद अपरिचित आदमीके हाथोको बाँध, घोड़ेपर सवारकर बाबकदकी ओर रवाना हुआ।

× × ×

बड़े भोर ही बाबकदके काजीखानाके दरवाजेपर छिड़काव हुआ था और मुलाजिम पाँतीसे खडे थे। काजी भी मुलाजिमोसे सलामी ले रास्तेकी ओर देखता बैठा था। एक मुलाजिमने बाहरसे आकर काजीसे निवेदन किया—काफिररबातका अकसक्काल किसीको बाँधकर लाया है। यदि आज्ञा हो तो उसे शरीयतपनाह (धर्मरक्षक)के सम्मुख ले आऊँ ?

—ले आ—काजीने कहा

अकसक्काल बदीको आगे किये अदर आया।

बदीको काजीके सामने बिठाकर कहा—फर्मानेआलीके अनुसार इस अपरिचित व्यक्तिको मैने गिरफ्तार किया। गिरिफ्तार करते वक्त मुझे मारकर भाग जानेकी इसने कोशिश की, लेकिन खुदाकी मेहरबानी, दौलते आलीके प्रताप और शरीयतपनाह (काजी)की अनुकम्पासे मुझे कोई भी हानि नही पहुँचा सका।

काजीने जवानकी ओर कड़ी निगाहसे देखते कहा—तू जिन्दानके भगोड़ोंमेसे है ?

—नहीं, मैं एक गरीब आदमी हूँ।

—कहाँका रहने वाला है ?

—गिज्दुवानका।

अकसक्कालने झुककर सलाम करते कहा—रात मुझसे अपनेको बाबकदी बतलाता था।

काजी—रातको काफिर रबातमे क्या करता था ?

—मजदूरी खोजने शहर जा रहा था। रातको राह भूलकर उस गाँवमें

जा पड़ा। चाहता था, सुबह तक वहाँ सो रहूँ। इसी बीच इस आदमीने मुझे गिरफ़्तार कर लिया।

—तेरा और तेरे बापका नाम क्या है?

—मेरा नाम हसन और बापका महमूद है।

काजीने सामने पड़े एक कागजको उठाकर नीचेसे ऊपर तक देख बंदीसे पूछा—सच बतला, तेरा नाम क्या है?

—सच कहता हूँ, मेरा नाम हसन है।

काजीने बदीके पीछे खड़े एक नौकरसे कहा—पीट इस झूठेको।

मुलाजिमने हाथको खीचकर हाथ-बँधे जवानकी गर्दनपर जोरसे मारा। चोटसे जवानका सिर एक ओर झुक गया और उसकी टोपी उछलकर काजीके सामने जा गिरी। काजीकी नजर उसपर पड़ी। हाथ बढाकर काजीने टोपीको उठा लिया और वहाँ सिली तावीजको देखा। फाड़कर तावीजके अदरके कागजको पढने लगा। पढनेके बाद वह जोरसे बोल उठा—"यह तावीज यादगार वल्द बाजारके नाम कारागृहसे मुक्ति पानेके लिये लिखी गई थी," और फिर जवानकी तरफ निगाह करके कहा—"अब बता।"

—आपका अख्तियार है, मेरा भाग्य ही ऐसा!

यद्यपि तावीज मुक्तिके लिये लिखी गई थी, किन्तु वह गिरफ्तारीका कारण हुई—कहकर काजीने जवानपर कड़ी निगाह रखनेका हुकुम दिया।



तृतीय खण्ड

अमीरी राजकी अंतिम साँस

१६१७—२० ई०

१

स्वच्छन्दता

(मार्च-अप्रेल १९१७)

एक माससे ज़िन्दानमे तरह तरह की विचित्र बाते उड़ रही थीं।

—स्वच्छन्दता (हुर्रियत) हो गई है।

—स्वच्छन्दता क्या हुई है ?

—स्वच्छन्दता यही हुई है, कि कोई किसीको "इस जगहसे उठो, उस जगह बैठो" नहीं कह सकता।

—यदि ऐसा है, तो हम भी जिन्दान (जेल)से स्वच्छन्द हो चल दे क्या ?

—अवश्य !

—लेकिन मुसल्मानी भी हाथसे निकल रही है।

—क्यों ?

—क्योकि स्त्रियॉ फरजा (बुर्का) फेककर स्वच्छन्द हो रही हैं। यहूदी भी तेल्पाकी टोपी और रस्सीके कमरबन्द फेककर मुसलमानोंके बराबर हो गये हैं।

—खाक़ ! अब क्या मेरी और तेरी औरते स्वच्छन्द नही हैं ? हम कितने सालोंसे यहॉ पड़े हैं, कौन जानता है, हमारी स्त्रियॉ अपने स्वच्छन्द मार्गपर नहीं गई होगी ? क्या हमारा यह जीवन यहूदियोंसे बेहतर है ? मैं और तू बन्धनसे आज़ाद हो जायॅ, चाहे जो भी होता रहे ! "जबतक शहर नही जलता, तबतक दर्वेश (साधू) का कबाब नहीं पकता।"

—मेरी समझमे अमीरके इस कामसे उसके अमलदार (अफसर) और मुल्ला राजी न होंगे, क्योकि यदि हरेक आदमी स्वच्छन्द हो जायेगा, तो अमीरको पैसा कौन देगा ? वह इस तरह ऐश-जैश किसके ऊपर करेगा ? अमीरके अफसर "जनाब आलीकी आज्ञा" से लोगोंका घर लूट ले जाते हैं। स्वच्छन्द होनेपर लोग कहेगे, हमें न तेरी जरूरत न तेरे अमीरकी। मुल्ला आजकल अमीर और वजीरके बलपर सबके ऊपर साहबी करते हैं। वह काजी बनते हैं, रईस बनते हैं, मुफ्ती और मुदर्रिस बनते हैं, हर तरहसे पैसा जमाकर खाते-पीते मौज करते हैं। यदि कुछ ज्यादा बोलो तो 'सब्ब-नबी' (पैगम्बरका निन्दक) होनेका अभियोग लगाकर काजीखाने (अदालत)मे पकड़ ले जाते हैं। पथराव कराकर मरवाते हैं। कुछ साल पहिलेकी बात है, कुदरत अराबाकस (ताँगेवाला) किरायेके लिये झगड़ पड़ा। इसके लिये उसे काजीखाना घसीट ले गये और अमीरसे हुकुम दिलवा ऊँटपर सवार कर "सब्ब-नबी हुआ है" कह शहरसे बाहर ले जाकर उसे सगसार (पथराव) कर दिया। हर आदमी यदि स्वच्छन्द हो जाय, तो इन मुल्लोकी गप्पे कौन सुनैगा ? कौन उनकी शान-शौकत बर्दाश्त करेगा ? हर आदमी यदि स्वच्छन्द हो जाय, तो ये भूखे मर जायेगे। इनके हाथसे कोई काम नही हो सकता। ये न मजदूरी कर सकते हैं, न पल्लादारी, न किसानी। यदि लोग भी इन्हें पैसा न देंगे, तो इनकी क्या हालत होगी ? इसलिये जबतक जानमे जान है, तबतक ये मुल्ला-मुजावर (पडा-पुजारी) इस बात पर राजी न होंगे।

—हॉ, ठीक। लेकिन यदि यह काम अमीर, वजीर, मुल्ला और सैनिकोंके हाथमे हो तब न ? यह काम तो कर रहे हैं जदीद (नवीन)।

—जदीद कौन हैं ?

—यहूदी जो मुसलमान हो गये हैं, उन्हींको जदीद कहते हैं क्या ?

—नहीं, वह नही है। कल दारोगा अपने सिपाहियोंसे जदीदोंके बारेमें

बात कर रहा था। मैंने किवाड़के पीछेसे सुना। दारोगाके कथनानुसार गजेट (अखबार) पढ़कर काफ़िर हुए मुसलमान, ईरानी (शिया), और कुछ यहूदी एक हो अपनेको जदीद कहते हैं। वही स्वच्छन्दताकी बात करते हैं।

—बेकारकी बात है। वह कुछ नहीं कर सकते। उनके पास न तोप है न तुफग, न सरबाज। उनसे क्या बन सकता है? कैसे वह अपनी बात अमीर और वजीरसे मनवा सकते हैं? अमीर सबको एक दिन पड़ककर शूलीपर चढ़वा देगा, मीनारसे गिराकर मरवा डालेगा या बदरक्का (देशनिर्वासित) बना इनके सिरपर पानी डाल देगा।

—नहीं, जदीद अकेले नहीं है। रूसी मजूर और सिपाही भी उनकी पीठपर हैं।

—रूसी मजूरो और सैनिकोका ज़ोर अमीरपर नहीं चल सकता।

—निकोला जैसे चार बादशाहोंमेंसे एकको उन्होंने तख्तसे उतार दिया, फिर तेरा अमीर उनके सामने क्या है? वह तो एक गुबर्नातर् (गवर्नर)के बराबर भी हैसियत नहीं रखता। बछड़ा खूँटेके बलपर फाँदता है। कुन्सुर (कौन्सिल, रूसी रेजीडेट) निकोलाके बलपर फाँदता था। अब उसकी बातको कौन पूछता है?

× × ×

—स्वच्छन्दता हो गई है।

—सच?

—अभी-अभी दर्वाजेके पीछे खड़ा होकर मैंने दारोगाको सिपाहियोंसे कहते सुना—"अमीरने अख्तियार छोड़ा, स्वछन्दताको स्वीकार किया। सम्भव है कि वह सारे बदियोको मुक्त कर दे। इसलिये मुक्त होते वक्त ख्याल रखना, कहीं यह हमारे सामानको न खराब कर दे।"

आज रात भर स्वच्छन्दताकी खुशीमे बदियोंको नींद तक न आई। सबेरा हुआ। अभी भी स्वच्छन्दताका कहीं पता नहीं। नौ-दस बजनेको

आये, किन्तु अभी भी कोई खबर नहीं। किवाड़की आड़से सुननेवालेने फिर लोगोंको "हम अभी आजाद होने जा रहे हैं" कहकर विश्वास दिलाया। ग्यारह बजे दर्वाजा एकाएक खुला। "मैंने कहा था न, कि अभी हम आज़ाद होने जा रहे हैं ?" कह वह आदमी खुशीके मारे फूला न समाया। दूसरे बंदी भी अपनी चीजे समेटने लगे।

अपने सिपाहियोंके साथ अदर आकर दारोगाने द्वारमे भीतरसे ताला लगा दिया। इसपर एक बदी ने कहा—"क्या आजाद करनेके लिये द्वारको और मजबूतीसे बद करनेकी भी जरूरत होती है ?" दारोगाने बदियोंके तौक़ और जजीरको एक-एक करके देखा, फिर उनकी गर्दनो और पैरोंमे भी तौक और जजीरे डलवा दीं, जो उनके बिना थे।

दारोगा अपने सिपाहियोंके साथ बाहर चला गया। बदियोंने स्वच्छन्दताका अच्छा मजा चखा। एक कह रहा था, "मैंने कहा न कि इन जदीदोंसे कुछ होने-हवानेवाला नहीं"। दूसरा बोल उठा, "क्या मैने नही कहा था, कि कुन्सुर (कौन्सल) अमीरका दोस्त है। वह अपनी जानको जब्बारके हाथोमें देकर उसकी मदद करेगा ?" तीसरा बोला, "मैने भी कहा था कि बे-तोप-तुफगवाले जदीदोको अमीर एक दिनमे नेस्तनाबूदकर देगा ?" पीछे बोलनेवाले बदीने कहा :

—आजके बाद कल भी होता है। यदि निकोलाका हटाया जाना सच है, यदि जदीद निकोलाको तख्तसे उतारनेवाले रूसी मजदूरोके साथ एक हुए हैं, तो वह काम यहाँ भी होकर रहेगा और आज न सही कल किंतु वह अमीर और उसके वजीरकी भी जड़ खोदकर रख देंगे।

इसके उत्तरमें एक बंदी ने कहा—तो कोई चमत्कार तू भी दिखा दाखुन्दा !

× × ×

एक मास बाद बदी आजाद होने लगे, लेकिन स्वतत्र होनेके लिये नहीं, बल्कि चोरों डाकुओंसे बने "शेर-बच्चा" नाम वाले दस्ते (पल्टन)में

भर्ती होनेके लिये। यादगार एक बार सरबाजीका मज़ा चख चुका था; इसलिये वह इस तरहकी 'आजादी'के लिये राजी न हुआ। उसने सैनिक वर्दीसे जेलकी पोशाकको ही बेहतर समझा। लेकिन, यादगार जेलमे अकेला नही रहा। 'आजाद' हुए बंदियोकी जगह नये बंदी—ज़दीद—लाकर भर दिये गये।

२

कसाईखाना

(मार्च १९१८)

जिन्दान दुबारा खाली होने लगा। जिनपर जदीद (नवीन) होनेका आरोप था, वह जिन्दानके कुएँमे डाल दिये गये। कुछ बंदियोको अमीरके खास अफसर "सेवा"के लिये ले गये। जेलमे यादगार और लगड़े-अपाहिज रह गये। एक दिन खास अफसरने जेलमे आ एक-एकको देखकर दारोगासे कहा—यह नही हो सकते।

दारोगाने यादगारकी ओर इशारा करके कहा—और यह ?

"यह ठीक है, लेकिन दब्बू सा मालूम पड़ता है" कह यादगारके समीप जाकर पूछा "सेवा करेगा दाखुन्दा ?"

—कैसी सेवा ?

—कैसी सेवा इसे पीछे समझेगा जब कि उसके प्रतापसे आजाद हो जायगा।

—अच्छा, क्या सेवा है, बतलाइये, यदि कर सकूँगा तो करके आज़ाद हो जाऊँगा।

अफसरके इशारेपर यादगारके हाथ-पैरके बधन खोल दिये गये। वह उसे जेलसे बाहर ले चला। पीछे-पीछे चार सैनिक चल रहे थे।

पाँच सालकी कैदके बाद यादगारने आज दिनकी रोशनी देखी।

शहरकी अवस्था बदली हुई थी। दूकानें बंद थीं। झुडके झुड आदमी इधरसे उधर दौड़ रहे थे। उनके हाथोंमें तलवार, माँस काटनेका छूरा, भाला और लाठी जैसे हथियार थे। अफसर यादगारको साथ लिये रेगिस्तानमें पहुँचा। आदमियोकी भीड़के मारे वहाँ सुई रखनेकी भी जगह नही थी। रेगिस्तानका मैदान ही नहीं बल्कि मस्जिद पायन्दा और मदर्सा दारुशफाकी छते तक लोगोंसे भरी थी। अफसरने यादगारसे कहा—देखा न गाजियोको ? ये सारे जनाब-आलीकी सेवामे अपने सिरको हथेलीपर लिये तैयार हैं। इसी समय सिपाहियोने हाथ-गर्दन बँधे एक आदमीको ला खड़ा किया। बदीका सिर कई जगहसे फटा, चेहरा लहूलहान और पोशाक चीथड़े-चीथड़े थी। उसमे हिलने-डोलनेकी शक्ति न थी, इसलिये उठाकर लाया गया था। वह क्या कह रहा है, इसे सुने बगैर आँधीपर भूकनेवाले कुत्तोकी तरह आदमियोने एक साथ 'उल्ला'का नारा बुलद किया। रक्षक-सेनाके सरदारोने हर तरफ घोड़ा दौड़ा आर्क (किला)की तरफका रास्ता साफ किया। खास अफसर भी उक्त बदीके पीछे-पीछे यादगारको अपने आगे किये आर्ककी ओर चला। आर्कके फाटकसे जामामस्जिदके आगे तक दर्बारके अफसर दोनो तरफ पाँतीसे खड़े थे। उनकी कमरोमे जरीवाला मीनाकारी कमरबन्द, ज़रबाफ़-आबरवाँके जामोंपर बँधे थे। आर्ककी जामामस्जिदकी दालानमे मुल्ला लोग कतारसे बैठे थे। बीचमें एक पातितजानु मुल्ला बैठा हुआ था, जिसके सिरपर एक बड़ा पग्गड़ था। उसकी दाढी बकरी सी, रग मटमैला और आयु पचासके करीब थी। मुल्लाकी जाँघके पास एक नगी तलवार और दोनो बगलोमे दो तमचे रखे हुए थे। यादगारको यह मुल्ला कही देखा सा मालूम पड़ा, लेकिन जोर देनेपर भी स्मृतिने सहायता न की। सिपाहियोने घायल बदीको ले जाकर उस मुल्लाके सामने खड़ा कर दिया।

पग्गड़वाले मुल्लाने "देखा न शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)की ताकत !" कह घायल बंदीको डपटकर अपने आजू-बाजू बैठे बड़े पग्गड़वाले

दो दूसरे मुल्लोंपर नज़र डाली। उन दोनोंने सिर हिलाकर समर्थन किया। नगी तलवारवाले मुल्लाने सिपाहियोंको हुकुम दिया—"ले जाओ, इस मुर्तिद (पतित) बागीको मीरगजब (जल्लादोंके अफ़सर)को सपुर्द करो, कि इसे इसके 'निश्चित स्थान'पर पहुँचा दे। "निश्चित स्थान" सुननेपर एक आदमी धीमे स्वरसे बोल उठा—'ऐ बेचारा" यादगारने देखा कि उसकी आँखोंसे आँसू गिर रहे हैं, जिन्हें छिपानेके लिये वह अपनी आँखें जल्दी-जल्दी पोंछ रहा है। यादगारने उससे पूछा—इस आदमीके लिये निश्चित स्थान क्या है?

उस व्यक्तिने आश्चर्यसे यादगारकी ओर निगाह डालकर कहा—दाखुन्दा! क्या आज ही पहाड़से आया है? इसका निश्चित स्थान कब्र है कब्र! इसे बध्य स्थानपर भेज रहे हैं।

यादगार अब भी तलवारवाले मुल्लाको पहचाननेकी कोशिश कर रहा था। एकाएक ख्याल आया "हाँ-हाँ, यह वही मुल्ला है, जिसने पाँच साल पहिले भाई मोतीका हिसाब दिखला मुझसे बीस तके वसूल किये"। फिर उसने आँसू बहानेवाले आदमीसे मुल्लाकी ओर इशारा करके पूछा—क्या यह मुल्ला वही नहीं है, जो पहिले हिन्दुओंका कर्ज़ उगाहता फिरता था? फिर क्या हुआ कि एकदम आदमियोंकी जान लेनेका हुकुम देनेवाला बन गया?

—दाखुन्दा! धीरेसे बाते कर, नही तो अपने सिरपर भी आफत लेगा और मेरे ऊपर भी। हिन्दुओंके करज उगाहनेकी बात मुझे नहीं मालूम, मुझे इतना ही मालूम है, कि इसका नाम इबादुल्ला मखदूमी तरक्की है और पहले काजीकलाँके यहाँ तरक्की (तरका या दायभागका काम करनेवाला) था। (यादगारके कानके पास मुँह ला कर) काजीकलाँके तरक्की होने और हिन्दुओंके करज उगाहनेमें कोई अन्तर नहीं है। यदि अन्तर है तो यही, कि हिन्दू सच्चा कर्ज़ या उसपर कुछ पैसा बढ़ाकर वसूल करता है, जब कि तरक्की मरे आदमियों विशेषकर

मजीद—"खुदा एक बात एक" जो सेवाकर चुके, वही बस, अब और ताकत नहीं है।

—बहुत अच्छा, कोई हर्ज नहीं। इस कठिनाई को ईशान काजीकलाँ ने आलिमोंकी रायसे हल कर डाला है। आलिमोंका कहना है, कि रेगखानाके कुएँ पर एक गड़गड़ा (चर्खी) बैठाया जाय। जिस किसीको जनाबआलीके लिये सदका (बलि) करना हो, उसे रेगखानामें ले जा गर्दनमें फन्दा डाल, रस्सेके दूसरे छोरको गड़गड़ेके ऊपरसे बाहरकी ओर रख देना चाहिये। बाहरकी ओरसे रस्सेको जब खींचा जायेगा, तो आदमी कुएँके अन्दर टँग जायगा और उसका दम घुट जायगा। इस तरह बिना खून निकले ही आदमी पलक मारते-मारते मर जायेगा। "न सीख जलेगी न कबाब" न खून गिरकर तुमपर पड़ेगा न अपराधी ज़िन्दा रहकर जनाबआलीके हुकुममें दखल देगा।

मजीद—ऐ वल्लाह! चमत्कार। ईशान काजीकलाँके बाप भी बड़े दिमागवाले आदमी थे। वैसे पिताका ऐसा पुत्र होना ही चाहिये। कहावत है "गोश्त अच्छा तो शोरबा भी अच्छा"।

बड़ी दाढ़ीवाला आदमी नर-घातके नये सिद्धान्तसे जल्लादोंको परिचित करा चला गया। मजीदने अपने सहकारियोंसे कहा—यह हिकमतबुज़ है, बड़ा अनुभवी आदमी है। इसीलिये तो काजीकलाँके मामूली सिपाहीसे तरक्की करते-करते बुखाराका मीरशब (कोतवाल) बन गया। नरघात कितना कठिन है, इसे वह खूब जानता है। इस स्थितिसे वह भी कई बार गुजरा है, इसलिये उसने हमारे उज़रको उचित बतला-कर ऊपरवालोंको समझाया और फिर यह नई तदबीर निकाली गयी।

सवाल हल हो चुका था। अब यादगारकी सेवाकी कोई जरूरत नहीं थी। इसलिये अफसरने 'सेवा'का शब्द मुँहसे निकाले बिना "उठ दाखुन्दा!" कह उसे ज़मीनसे उठनेको कहा और फिर उसे एक सिपाहीके साथमें दे रेगखानाके पास आबखाना दोयम नामके जेलमें भिजवा दिया।

३

आबखाना (पायखाना)

रेगिस्तानसे आर्क (किला)के फाटक तक की जमीन नीचेसे ऊपरकी ओर ऊँची होती भी समतल है। वह फाटकसे अमीरके गद्दीघर, उसके रनिवास और क़ुशबेगी (युद्धमन्त्री)का महल, पहले पूर्वोत्तरकी तरफ फिर पूर्वकी तरफ, तब वहाँसे दक्षिणकी तरफ बराबर नीचेसे ऊपर ऊँची होती जाती है। यह ऊँचाई इस प्रकार क्रमशः है, कि अमीरके साईसखानेका धरातल आर्कके फाटककी छतके बराबर है।

आर्कके फाटकके अन्दर आनेपर पचास क़दम लम्बी एक दालान आती है। अन्दर दाहिनी ओर दो हाथ ऊँचा एक चबूतरा है, जहाँ हर सुबह परेडके वक्त केवल क़ुशबेगी और सरकर्दा (जनरल) बैठते हैं। इसीके पास पचहत्तर बेंत मारनेका तख्तपूल है। जहाँ बेंत खानेवाले "अपराधी"के शरीरसे उड़ती माँसकी चिद्दियाँ क़ुशबेगी और अफसरोंके पास तक पहुँच सकती हैं। मृत्युदण्ड पाये आदमी भी यहाँ ही क़ुशबेगीके सामने तख्तपूल पर आगेकी ओर हाथ बँधवाये जनाबआलीके लिये दुआ कर बाज़ार रेसमा (डोरीबाज़ार)की तरफ सिर कटवानेके लिये भेजे जाते हैं। क़ुशबेगी इस चबूतरेपर बैठा-बैठा इसका भी तमाशा देखता सैनिकोंके परेड ख़तम होनेपर आर्कके फाटकका तोपचीबाशी (तोपखाना अफसर)—जो कि आर्कके द्वार-रक्षकों और अमीरके गुप्त-समाचार लेखकोंका सर्दार भी है। इसी चबूतरे पर बैठता है।

चबूतरेके पीछेसे दालानके छोरतक छोटे चबूतरों जैसी कोठरियोंकी पाँती हैं। यहीं द्वारपालोंके मीरगन (अफसर) रहते हैं। दालानमें बाईं ओर मीरगनों की चबूतरियों और कोठरियोंके सामने छोटे-छोटे घरोंकी एक और पाँती है, इसे ही आबखाना कहते हैं। यह अमीर-बुखाराका सबसे दृढ़ और कठोर बन्दीखाना है। आबखानाकी हर एक कोठरी चार

या पाँच वर्ग हाथ है, जिसमे हवा रोशनीके लिये एक छोटी-सी खिड़की है जो कि फाटकवाली अँधेरी दालानमें खुलती है। दालानमे प्रायः मोटा ताला लगा रहता है। आबखानाकी छत शाही साईसखानेके फर्शसे बराबर और उससे लगी है। इसीपर अमीरके घोड़ोंकी लीद और पेशाब जमा होती रहती है और कुछ दिनों बाद किलेकी दीवारके एक सूराखसे नीचे फेंक दी जाती है।

आबखानेका फर्श है केवल एक छोटा-सा बोरिया (टाट)। बेत लगानेके बाद खून टपकती पीठके बल बन्दियोंको इसी बोरिया पर लिटा देते हैं। दूसरे वक्त भी बन्दियोंके सोने-बैठनेके लिये वह बिस्तरेका काम देती है। हर एक कोठरीमें दो छोटे-छोटे ही गड्ढे हैं, जिनमे एक आग जलानेके लिये और दूसरा पेशाबखानेके लिये उपयुक्त होता है। पेशाबखानेका गढा इतना भरा रहता है, कि सारी कोठरीमें कीचड़ और गन्ध उछलती रहती है, जिसे कि हफ्ता या दस दिनमें साफ किया जाता है। कोठरियोंके छतके ऊपर पाखाना है, उससे भी गन्दा पानी छन-छनकर नीचे टपकता रहता है। आबखाना नाम पड़नेका यही कारण है कि यह आबखाना (पायखाना)की भाँति सदा दुर्गंध और गन्दे पानीके पिच-पिचसे भरा रहता है। खटमल, पिस्सू और जुएँ तो बन्दियोंकी तरह ही इस घरके वासी हैं। इस सहवासने दोनोंमें काफी स्नेह पैदा कर दिया है।

दालानके नीचेकी ओर तोपचीबाशीके मकानकी बगलमें आबखानेका अन्तिम भाग है, जिसको रेगखानाके नामसे पुकारते हैं। यहाँ हमेशा रेग जमाकरके रखते हैं। वर्षासे कीचड़ उठनेपर दालान और गद्दीभवनके रास्तेपर इसे डालकर सुखा देते हैं, जिसमे घोड़ेका पैर न फिसले और अमीर गिरकर अपनी गर्दन न तोड़ लें।

× × ×

यादगारको रेगखानेकी बगलमे इसी आबखानामे रखा गया। उसने

जीवनके सबसे कड़वे दिनों विशेषकर १९१८ के मार्च और अप्रैलके महीनोंको यहीं बिताया। यहाँ जीवित रहते क्षण-प्रतिक्षण जो दिल दहलाने वाली घटनायें घट रही थी, उनको देखनेकी शक्ति हर एक आदमीमें नहीं हो सकती थी। उस वक्त पहलेकी तरह बन्दी आबखानामें बराबर रहनेके लिये नहीं लाये जाते थे। हर बन्दीको दिनमें वहाँ लाते और रातको रेंगखनामें रख उसका गडगड़ा (फाँसी) खींचते। ऐसे बहुत कम बन्दी होते, जो दो-तीन दिन यहाँ जिन्दा रह पाते। पुराना और जिन्दा बच रहने वाला बन्दी वहाँ केवल यादगार था, जो मारे जानेवाले बन्दियोंके करुण-क्रन्दनको हसरतके साथ सुनता, उनके दर्दमें हमदर्दी दिखलाता उनकी हालत देख उसका हृदय विह्वल हो जाता। इससे ज्यादा उसके हाथमें क्या था? वह उनकी क्या सहायता कर सकता था। जरा उस अवस्थाकी तसवीर खींचिये। उसे ऐसे लोगोंके साथ रहना पड़ रहा था, जो एक घटा बाद अत्यन्त निकृष्ट ढगसे मारे—गड़गड़ापर खींचे—जाने वाले थे और इस बातको वे जानते थे। यादगार भी जानता था कि ये अभागे बेगुनाह हैं, फिर भी उसे दिलमें फड़फड़ानेके सिवा कुछ भी सहायता करनेकी आजादी नहीं थी। उसकी राते दिल मसोसने और अफसोस करनेमें बीतती।

कुछ रात गुजर गयी थी। इसी समय दो तीन आदमियोंके आनेके पैरोंकी आहट सुनाई पड़ी। बन्दी भेड़ियोंके घेरेमें पड़े हरिनोंकी तरह कान खड़े किये खड़े थे। आबखानेका दरवाजा खुला, किसीने कहा—हमीद खोजा!

—...

फिर दुबारा कड़कती आवाज़से कहा—हमीद खोजा कह रहा हूँ, ओ बदमाश, क्या जवाब न देनेसे तू समझता है कि मौतसे बच जायेगा? सौ जान भी पासमें हों, तो भी तुम मुर्तिदों (पतितों)की एक जान बचकर नहीं निकल सकती।

हमीद खोजाने लाचार हो जवाब दिया। एक सिपाहीने मुर्गेपर लोमड़ीकी तरह झपटकर हमीद खोजाकी गर्दनको पकड़ बाहर घसीटा। सारे बन्दी चुपचाप रोते जल्द-से जल्द मौत आनेकी इच्छा रखते थे, जिसमे फिर ऐसा दृश्य देखना न पड़े। पाँच मिनट बाद आबखानासे रेगखानामे पहुँचनेके छिद्रसे गड़गड़ा खींचनेकी आवाज आई। जिसके बाद आदमीके गला घूटनेकी खर-खर आवाज सुनाई दी। फिर जरा देरमें रेगखानाकी छतसे किसी भारी चीजके गिरनेकी धमसी आवाज आयी और किसीने पुकारा—दूसरेको ला।

पाँच मिनट बाद फिर आबखानेका द्वार खुला। अबकी हाजी अब्दुस्सत्तारको लाये और दूसरोंकी तरह उन्हे भी गड़गड़ेपर खीचा। बादमे यही बात मिर्जाशाह, हाजी सिराज [ग्रन्थकर्त्ता ऐनीके बड़े भाई], मिर्जा अहमद, मिर्ज़ा रहमतुल्ला, मिर्जा फयाज़, अजीमजान और दूसरोके साथ भी हुई।

दिनका वक्त था, रेगिस्तानका बड़ा मैदान ही नहीं मदर्सा और मसजिदकी छतो तक तमाशबीनोसे भरी थी। गाजियोंने उल्लास"के नारेसे आसमानको गुँजा दिया। हजारों मुखोंसे "ले आये"की आवाज़ निकली, जिसकी प्रतिध्वनि मदर्सा और मसज़िदोकी ताकों तथा गुम्बदोसे उठ शहर तक फैल गयी। रेगिस्तानकी तरफ खुले आबखानाके छिद्रपर आँख रखकर आदमियोंको हाथ बाँधकर लाते यादगार देख रहा था। एक "गाज़ी"ने कहा—मिर्जा शमशी और उसके बेटे मेहदीको ले आये। इसने बोलशेविकोंसे मिलकर जनाबआलीके विरुद्ध तलवार उठायी। औरोंको शिक्षा देनेके लिये लोगोके सामने इनका शिर भेड़की तरह काटना चाहिये।

सचमुच उन्हें आर्कको तरफसे कुछ दूर ले जाकर फिर लौटा बाजाररेसमाँमें ले गये और ऐसी जगह उनका शिर काटा, जहाँपर उसे अमीर अपने सलामखानेकी खिड़कीसे देख रहा था।

फिर हल्ला मचा—मुल्ला शरीफ क़र्बूनी, यह साठ साला बूढ़ा भी जदीद (नवीन) है ?

मुल्ला शरीफका भी शिर भी उसके चौदह और सोलह साला दो लड़कोंके साथ रेगिस्तानमे लोगोंके सामने काटा गया। यही बात फतहुल्ला खोजा और दूसरोंके साथ हुई।

दालानकी ओरसे कोई क्रोध-पूर्ण स्वरमें कह रहा था—जग और धर्म-युद्धमे बहादुरी दिखलानेवालोको पहिले जमानेके बादशाह दर्बारके बड़ेसे बड़े पद और इनाम देते थे। मैने अपनी की हुई सेवाओंको कुशबेगीसे अरज करना चाहा, लेकिन यसावुल-बाशीने आज्ञा न दी। ऐसा होनेपर कौन बहादुरी दिखलानेकी कोशिश करेगा,

जवाबमे दूसरी आवाज आयी—तूने क्या बहादुरी दिखलाई ?

—जब कोलेसोफ और जदीद हारकर भगे थे और प्रथम क्रान्तिमे पचहत्तर बेत खाकर मिर्ज़ा नजरुल्ला जदीद मर गया, तो उसके लिये जदीदोने कागान-कुहना और कागान-नोके बीच समाधि-गृह बनवाया था। मैंने उसे दाह दिया और उसकी नींव तक न छोड़ी।

—नहीं, झूठ बोल रहा है, इस कामको मैने मुल्लागाज़ियोके साथ किया। जब कागानसे कर्बूनको भगे मिर्ज़ा मुस्तफाकुलको हम लूटनेके लिये गये थे, उस समय यह आदमी हमारे साथ नहीं था, बल्कि मैंने सुना है कि जिस वक्त मीरशब (कोतवाल)के साथ मज़ारके नायबने मुस्तफा और उसके आदमियोंको मारा, उस वक्त मुस्तफाकी बहुत सी चीजें इस आदमीने धर दबाई। इसके बाद भी खैरख्वाही जतलाते दौलत-आलीसे इनाम लेना चाहता है। यदि मिर्ज़ा नजरुल्लाकी कब्र बर्बाद करनेके लिये सरकारी खजानेसे कुछ दिया जाय, तो वह हक मेरा है। मैंने इस जेहाद (धर्म-युद्ध)में अपना जान संकल्प करके काम किया। फजलदीन मखदूम और मिर्ज़ा शम्शके चारबागों (मेवाबागों)में मैंने आग लगाई। लेकिन इसके लिये एक भी पैसा न पाया।

—आग लगानेसे पहिले दूँढ़ क्यों न लिया, पहिले चीजोको लेकर पीछे आग लगानी चाहिये थी ?

—नहीं, खुदाकी कसम जो एक भी चीज मैंने ली हो। मैने चाहा कि मिर्जा शम्शके बागसे एक बोरा गेहूँ हाथ लगाऊँ, लेकिन मुल्लोने यह कहकर मना किया "जदीदोंका गेहूँ हराम है"। मेरे देखते-देखते तीन सौ मन गेहूँ जलकर राख हो गया।

× × ×

यादगार दो मासके दीर्घकाल तक इस तरहकी भीषण-घटनाओंको अपनी आँखोंसे देखता रहा।

यद्यपि नरघात कम हो चला था, किन्तु उसकी मानसिक विकलता दूर नही हुई थी। मारे जानेवाले बन्दियोंसे आबखाना कभी खाली न हुआ। कभी-कभी उसकी चार आदमीके रहनेवाली कोठरीमे बीस-तीस आदमी भर दिये जाते। हर रोज मीरगजब आकर उन्हे पीट-पीटकर अधमरा करके पूछते—"बुखारासे भगे जदीदो और रूसी-बोलशेविकोके साथ तू क्या लिखा-पढीकर रहा था ? उन्होने तेरे पास क्या हुकुम भेजा ? सच सच बता।" ये बन्दी मुँह नही खोलते। मीरगजब फिर उन्हे मारने लगते। उनके घुटनोमे लकड़ी बाँध जाँघोपर प्रत्थरसे मारते। मृत-प्राय हो जानेपर या तो रेगिस्तानमे लेजाकर उनका काम तमाम कर देते या इसी आबखानामे मरनेके लिये छोड़ जाते। बादशाही तरफसे इन बन्दियोको एक कौर रोटी देनेकी तो बात ही दूर, पानी देनेमे भी किफायत की जाती। जिन बन्दियोके सम्बन्धी बाहर होते, वे उनके लिये खाना भेजते; लेकिन इस खानेका भी अधिक हिस्सा बन्दीबान उड़ा लेते। जो कुछ अन्दर पहुँचता, उसे वे आपसमे बाँटकर खाते।

४

सुलगती आग

कुछ दिनोंसे आबखाना खाली था और यादगार अकेला रह गया था। इस डेढ महीनेके अन्दर उसने जो रोमाचक घटनाये देखी थीं, वह सिनेमाके फिल्मकी तरह एक-एक करके सामनेसे गुजरने लगीं। आँखोके सामने ये घूमती तसवीरे असली घटनासे भी अधिक भयावनी मालूम होती थीं, क्योंकि उस वक्त वह अकेला उनको नहीं देख रहा था और वह थोड़ी-थोड़ी करके सामने आती थीं, लेकिन अब इस एकान्त-वासमें वह उसके सामने बड़े विशाल रूपमे आती थी। वह जिधर भी ख्याल दौड़ाता, बीती घटनाये सौ गुना होकर उसके सामने आती। वहाँ कोई न था जो उसके दिलके भारको कम करनेमे सहायक होता।

आबखानेका दरवाजा खुला। जैसे कूबकारी (बकरी-नोचकी घुड़दौड़) मे नोचनोचकर मारी बकरीको लाकर पटकते हैं, उसी तरह एक आदमीको आबखानेके एक कोनेमे लाकर पटक दिया गया। सचमुच इस आदमीका शरीर भी कूबकारी वाली बकरी जैसा ही घायल, छिन्न-भिन्न और लहूलुहान था। अन्तर इतना ही था, कि इसमे उसके सर कटे साँपकी तरह छटपटाते जीवनका चिह्न दिखलाई पड़ता था। एक घटा बाद आदमीने आँख खोलकर चारो ओर निगाह डाली और यादगारको देखकर फिर आँखे मूँद लीं।

यादगार उसके साथ सहृदयता दिखलाने या अपने एकान्तवासकी वेदनाको हल्का करनेके लिये पास जाकर सोते आदमीको जगानेकी तरह बड़े कोमल स्वरमें "आका आका" कहकर बोला। आदमीने बेहोशी या नींदसे जागेकी तरह जवाब दिया—क्या कहते हो ?

—कुछ भी नहीं, हाल कैसा है ?

—धन्यवाद।

—किस लिये बन्दी हुऐ ?

—मरनेके लिये।

—बन्दी बननेका कारण क्या है, पूछता हूँ।

—खुद तू कौन है, और तेरे बन्दी बननेका कारण क्या है ?

यादगारने सक्षेपमे आपबीती कहनी शुरू की। उसे खतम करते करते बन्दी भी ताकत सभालकर अपनी जगह बैठ गया था। यादगारकी जीवनी सुनकर उसपर विचित्र प्रभाव पड़ा और एक घड़ी पहले उसकी वह मुर्दा-जैसी आँखे अँधेरे घरमे शुक्रताराकी तरह चमक रही थीं। उसने कुछ क्षण यादगारकी आँखोंकी तरफ देखकर कहा—मै मर रहा हूँ यानी वे मुझे मार डालेंगे, किन्तु तू आजाद होगा, अकेला तू ही नही बल्कि, वे सारे आज़ाद होगे, जो आज अपने घरोमे रहते भी बन्दी हैं। इसलिये मुझे अपने मारे जानेका तनिक भी अफसोस नहीं।

इसी वक्त पैरकी आहट आई और आबखानाके द्वारको खोल किसीने शिरको अन्दर करके कहा—अब्दुल्ला खोजा !

—क्या खिदमत—कहकर बन्दीने बड़ी निश्चिन्ताके साथ जवाब दिया, मानो अपने घरमे किसी दोस्तने आकर उसे आवाज दी हो।

—इधर आ—आदमीने कहा।

—किस लिये ? जो कुछ करना चाहते हो, यही कर डालो।

—इधर आ कह रहा हूँ, मादर ..

अब्दुल्ला खोजा उठा और आगन्तुकने उसे साथ ले द्वारको फिर बन्द कर दिया। घटा बाद फिर द्वार खुला और फिर किसीको बोरेकी तरह अन्दर फेंककर द्वार बन्दकर दिया गया, यह अब्दुल्ला खोजा ही था। लेकिन अब पहलेकी तरह वह शकित न था और पॉच मिनट जमीनपर पड़े रहनेके बाद उठ बैठा। उसने "दाखुन्दा !" कहकर बात शुरू की। —दाखुन्दा कहनेसे नाराज न हो, यह चाल चली आई है, कि कोहिस्तान (पर्वत)से आने-वाले हर गरीब मजदूरको बुखारावाले दाखुन्दा कहते हैं। दाखुन्दा कहकर

मैं तुझसे घृणा नहीं करना चाहता, बल्कि तुझे यह बतलाना चाहता हूँ, कि वह समय बहुत समीप है, जब कि दाखुन्दे—नंगे भूखे कमकर—विजयी होंगे और यह नाम जो आज निर्धनता और निस्सहायताका प्रकाशक होनेसे घृणाका कारण है, वह सम्मान-सूचक बनेगा।

यादगार समझ रहा था, मृत्युकी पहली घड़ीमें होनेसे वह अकबक बोल रहा है, इसीलिये उसकी बातोंको महत्त्व नहीं दे रहा था। अब्दुल्ला खोजाने मानो उसके भावोंको भाँपकर कहा—दाखुन्दा! जान पड़ता है, तू मेरी बातोंको समझ नहीं रहा है, इसलिये मैं चाहता हूँ, कि उन्हें और स्पष्ट करके बतलाऊँ। अभी यहाँसे ले जानेके वक्त मैंने कहा था, कि वे जल्दी ही मुझे मार डालेंगे। मारे जानेसे पहले मैं तुझे कुछ बातें बतला देना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि हाल ही में बीती और आनेवाली घटनाओंसे तुझे खबरदार कर दूँ, जिसमें पहले हीसे जानकर तू अपना आगेका रास्ता ठीक करे। पहली बात तेरे जाननेकी यह है, कि जो भीषण घटना तेरे शिरपर गुजरी, वह केवल तेरे ही शिरपर नहीं गुजरी, बुखारा रियासतके अधिकांश गरीब और खासकर कोहिस्तानके गरीब ऐसी आफतोंको हर दिन झेल रहे हैं। जिन लोगोंको तूने अपनी आँखोंके सामने निर्दयतासे मारे जाते देखा, वे वही आदमी हैं, जिन्होंने तुम्हारे जैसोंपर होते अत्याचारोंपर असन्तोष प्रकट करते अमीरसे शासनमें सुधार करनेके लिये कहा। अमीरने कोलीसोफकी चढाई को ले पकड़कर उनके साथ जो चाहा किया और समझा कि मैंने सारे असन्तोषको दबा दिया, इसके बाद निश्चिन्त हो शासन करूँगा। लेकिन अमीरका यह समझना गलत है। अमीरने जिस असन्तोषकी आगको बुझाना चाहा, वह बुझी नहीं। वस्तुतः वह भुसौलेके अन्दर ही अन्दर सुलगती आग जैसी है। यह छिपी आग क्षण-प्रतिक्षण बढ़ती जा रही है और वह समय समीप है, जब कि वह विकराल रूप ले अमीरके तख्त-ताज और उसके सहायकोंको भी जलाकर खाक कर दे।

अब्दुल्ला यह कहते-कहते नशेके अन्तमें आई नींदकी तरह एक क्षणके लिये चुप हो अपने विचारोंमें डूब गया। वह होशमें बोल रहा है या अक-बक कर रहा है, यह जाननेके लिये उससे यादगारने पूछा—एक सालसे ज्यादासे मैं यहाँ देख रहा हूँ, कि अमीर लोगोंको मरवा रहा है। बन्दियोकी बातोसे यह भी मालूम होता है, कि अमीरके राज्यमे दूसरी जगहोमे भी नर-हत्याका बाजार गर्म है। फिर कौनसी ऐसी जबर्दस्त ताकत है, जो कि अमीरके साथ मुकाबिला करनेकी हिम्मत करे ?

विचारमग्न अब्दुल्ला खोजाने आँखे खोलकर यादगारकी तरफ तेज निगाहसे देखा, मानो वह जानना चाहता था, कि यादगार उसकी बातोंको समझ रहा है या नही। उसने देखा कि वह पहलेकी तरह बेपरवाही नही दिखला रहा है, और बातोको समझना चाहता है।

अब उसने समझानेकी कोशिश करते अपने सारे विचारोको एकत्र करके कहा—निस्सन्देह, यदि दुनिया पहलेकी दुनिया होती और बुखारा अब भी पुराना बुखारा बना रहता, तो इस काट-मारसे अमीरका काम बन जाता। लेकिन अब दुनिया बिल्कुल बदल चुकी है। क्या तूने सुना है, रूसमें क्रान्ति हो गयी और निकोलाको, जो कि अमीरका पृष्ट-पोषक और सहायक था—तख्तसे उतार दिया गया।

—हाँ, तीन साल हुआ, इस बातको मैने जिन्दानमें सुना था। उस वक्त बन्दियोंने "अमीरने आजादी दे दी, हम भी आजाद होनेवाले हैं" कहके बड़ी प्रसन्नता प्रकट की थी, लेकिन थोड़े ही समय बाद हमारी हालत पहलेसे भी बुरी हो गई।

—उस घटनाको सुना था, तो ले अब मेरी बातोंको भी अच्छी तरह सुन। निकोलाको हटाने भरसे रूसमे काम समाप्त नही हुआ। रूसके कारखानों मिलोंके मजदूरो, और किसानो तथा सिपाहियोंने विद्रोह किया, जिसके बलपर निकोलाको तख्तसे उतार दिया गया। लेकिन उन्होने सिर्फ निकोलाको हटाये जानेपर ही सन्तोष नहीं किया, बल्कि बोलशेविक

(कम्युनिस्ट) पार्टीके नेतृत्वमें क्रान्तिके कामको आगे बढ़ाया; जिसका परिणाम यह हुआ, कि २५ अक्तूबर (७ नवम्बर १९१७)को, यानी निकोलाके हटाये जानेके आठ महीने बाद उसके पिछलग्गुओंको भी निकाल बाहर किया गया। निकोलाके हटाने पर बाय, जमींदार, कारखानोंके मालिक शासनको हाथमें ले पहले ही के कामको जारी रखे हुए थे। मजदूरों और किसानोंने उन्हे निकालकर अपनी हुकूमत कायम की। उन्होने सिर्फ हुकूमत ही नही, बल्कि कारखानों, मिलों, बेङ्को और देशके सारे दूसरे सरकारी गैर-सरकारी कार्यालयोको अपने हाथमें ले, धनियोको बेदाँतका भेड़िया बे-चगुलका बाज बनाकर रख दिया। इस घटनाको अक्तूबर-क्रान्ति कहते हैं। अब रूसमें वह ताकत नहीं रह गयी है, जिसके बलपर अमीर अपने तख्त और ताजकी रक्षा कर सके। इसमें शक नही, कि पुराने युगके अवशेष अब भी रूसमें मौजूद हैं, लेकिन वे ऐसी अवस्थामें नही हैं, कि अमीरकी कोई बड़ी मदद कर सके।

—यानी तुम कहना चाहते हो कि अब जदीद (नवीन) खड़े होकर अमीरका मुकबिला कर सकते हैं ?

अब्दुल्ला खोजाने कुछ गरम होकर कहा—जदीद ! जदीद कोई काम नहीं कर सके और आगे भी कोई काम नहीं कर सकेगे। वस्तुतः उन्होने एक भी काम ठीकसे नहीं किया। "बिल्ली की दौड़ मुखौल तक", उनका सारा उद्देश्य तीन बातोंमें खतम हो जाता था—"मकतबो (प्रारम्भिक पाठशालाओ)का सुधार, मदरसो (विद्यापीठो)का सुधार और अमीरके शासनका सुधार"। सुधारका मतलब है उस चीज़को खतम नहीं, बल्कि उसे ठीक करके और मजबूत करना। यह ठीक है, कि अपनी छोटी माँगोंके लिये जदीदोने अमीरके हाथों बहुत जुल्म सहा और बड़ी यातनाओंके साथ मारे गये। वे अमीर और उसके

दरबारियोसे असन्तुष्ट थे, लेकिन इसका यह मतलब नही कि वे अमीरी (अमीरका राज्य)को खतम करना चाहते थे।

—पिछले साल सुना था कि जदीदोने बोलशेविकोसे मिलकर अमीरके विरुद्ध तलवार उठायी, क्या यह बात सच है ?

—सच है। यह सच है कि जदीदोने कोलीसोफसे मिलकर उसकी सहायतासे अमीरपर हमला किया। लेकिन इस काममे वह एक-दिला न थे। उन्होंने ख्याल किया था कि एक सैनिक घुड़कीसे अमीर डर जायगा, जदीदोके विरोधियोको दरबारसे निकाल देगा और स्वय जदीदोके प्रभावमे आ जायगा, इस तरह हुकूमत उनके हाथमे आ जायगी। फिर पूर्वोक्त त्रिविध-सुधारोको कार्य रूपमे परिणत करके वे अमीरकी शान-शौकातको और बढ़ायेगे। उनका यह उद्देश्य उनकी ओरसे छपी पुस्तिकासे मालूम होता है। यही वजह थी, कि कोलिसोफ-काण्डके वक्त एक कुशबेगी (वजीर) मिर्ज़ा उर्गजीको निकाल उसमान बेगके कुशबेगी बनाये जानेपर अपनी सफलता समझ जदीदियोने बड़ी खुशियाँ मनायी। लेकिन जब अमीर उनको घुड़कीसे भयभीत न हो लड़ाई पर उतर आया, तो भी कितने ही जदीदोकी दो-दिली दूर न हुई। एकने कहा कि गोली-गोला शहरपर नही आयेगा, 'अमीर ख्वाली तोपकी आवाजसे डराना चाहता है। दूसरे इस बातके लिये तैयार थे, कि अमीरके साथ बातचीत करके शान्तिसे काम कर ले। उनके दिलमे विद्रोह करनेका विचार भी न था। उन्होने लोगोंमे इसके बारेमे न कोई प्रचार किया और न शहरमे रहनेवाले जदीदो और उनके साथ सहानुभूति-रखनेवालोको ही इस बातकी खबर दी, कि कोलिसोफ-काण्ड जैसे एक भारी खतरेके समय किस ढगपर चला जाय। इसका परिणाम यह हुआ, कि शहरके जदीद, अमीर और उसके जल्लादोंके हाथमे पड़कर नेस्त-नाबूद हुए। ऐसी बेतैयारीके वक्त ही "तीस हजार हथियारबन्द इनक़लाबची (क्रान्तिकारी) बुखाराके अन्दर तैयार हैं" कहकर उन्होने कोलिसोफको धोखा दिया।

दाखुन्दाने बीचमें बोल दिया—मैंने कुछ बन्दियोंको "हम जवान" या "जवान बुखारी" कहकर आपसमें बात करते सुना, ये लोग कौन हैं ?

—ये भी जदीद हैं। वे अपनेको जवान-बुखारी भी कहते हैं। बुखाराके जदीदोंपर तुर्कों और तातारोंका असर ज्यादा है। उसमानी (तुर्कीके) तुर्क अपने जदीदोंको "जन्तुर्क" कहकर पुकारते हैं, जिसका अर्थ है "जवान तुर्क"। तातार अपने जदीदोको "युशलर" कहते हैं, इसका भी अर्थ है जवान। बुखाराके जदीद उन्हींकी नकल करते और अपनेको "जवान बुखारी" या "जवान" कहते हैं।

—अच्छा यह तो मालूम हुआ कि जदीद या जवान-बुखारी क्या करना चाहते हैं, लेकिन यह बतलाओ कि अमीरके साथ सघर्ष करनेमे इनके कामोंका नेतृत्व और सरदारी कौन करता है ?

—मैंने पहले कहा था, कि रूसी मजदूरोंने बोलशेविक पार्टीके नेतृत्वमे रूसी क्रान्तिको पूर्णतापर पहुँचाया। कोलिसोफ काण्डके बाद बुखारासे भगे कुछ जदीद ताशकन्द और समरकन्द पहुँचे और कम्युनिस्ट पार्टीमे शामिल हो बोलशेविक बन गये। उन्होने **कमेटी मर्कज़ी कमूनिस्तान बुखारा** (बुखाराके कम्युनिस्टोकी केन्द्रीय समिति) कायम की। उसकी शाखाये समरकन्द, कागान और चारजूय आदिमे खोली गयी। बुखारा शहरके अन्दर भी कम्युनिस्टोके गुप्त गरोह बने। कमीटी मर्कज़ी कमूनिस्तान बुखारा रूसी कम्युनिस्ट पार्टीके नेतृत्वमे अमीरके खिलाफ क्रान्तिकारी आन्दोलन कर रही है और सभी विरोधियो—खासकर मजदूरो-को एकता-बद्धकर अमीरके मुकाबलेमे खड़ा कर रही है। अब जब कि बुखाराके क्रान्तिका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी जैसे एक फ़ौलादी पार्टी—जिसने रूसी क्रान्तिको सफल बनाया—कर रही है, तब जदीदोकी दो-दिलीसे कोई भय नही। मुझे आशा है, कि अबकी बार हम सफल होंगे और अमीर तथा अमीरीको खतम करके रहेंगे। सिर्फ अमीर और

अमीरीको ही नहीं बल्कि उन परिस्थितियों और व्यवस्थाओंको भी खतम कर देगे, जो कि अमीर और अमीरीको पैदा करते हैं।

अब यादगारकी नजरोमे अब्दुल्ला खोजा मरणासन्न अकबक बड़बड़ानेवाला आदमी नही मालूम होता था, बल्कि वह ऐसा नर-सिह था, जिसके रोएँ-रोएँ से उस अवस्थामें भी वीरताकी अग्निज्वाला निकल रही थी। ऐसे नरसिहके इस लोहेके पिजरेमे पड़नेसे उसे अफसोस हुआ, और उसने उसकी होशियारीपर सन्देह करते पूछ दिया—तो तुम खुद समरकन्द या ताशकन्दकी तरफ न भागकर क्यो इस जालमें आ फँसे ?

—मै कम्युनिस्ट हूँ, ताशकन्दकी मर्कज़ी कमेटी (केन्द्रीय-समिति)से सम्बन्ध जोड़कर अब काम करनेके लिये बुखारा आया था और शहरके अन्दर बहुत काम किया, प्रचार किया, सेल (प्रारम्भिक सगठन) कायम किये। अन्तमे भेद खुल गया और मै गिरफ्तार हुआ। अब ये चाहते हैं कि मुझसे सारे भेद ले। यही वजह है कि आज दो बार इन्होने सासत दे-देकर मुझसे पूछा, लेकिन वे मुझसे कुछ नहीं पा सकते। वे शायद एक दो दिन और मुझे घोर यन्त्रणा दे। इसी बीचमे चाहे मै चोटसे मर जाऊँगा, या मुझसे निराश हो वही मार डालेगे। हर हालतमे मेरा जीवन अब अन्तको पहुँच गया है, और मेरे दिन इने-गिने हैं। लेकिन तू सावधान रहना। ऐसा करना कि सही सलामत उस दिवस—विजय दिवस—को पहुँच जाये जिसे हम न देख सकें, और क्रान्तिके लिये काम करनेवालोके साथ मिलकर काम करना। यदि उस मगल-दिवसतक जिन्दा रह जाना, तो कम्युनिस्ट पार्टीमे दाखिल हो जाना, जिसमे पार्टीके नेतृत्वमें क्रान्तिके मागमे महत्त्वपूर्ण भाग ले सके। मै मरता हूँ तो क्या ? जिन्दाबाद इनकलाब।

यह कहते अब्दुल्ला खोजाने अपनी बात खतम की। बेतोंकी मारसे उसके शरीरके मासकी चिंदी-चिंदी उड़ गयी थी और घावमें

जामाका कपड़ा चिपककर सूख गया था, जिससे जरा भी हिलने-डुलनेसे भारी कष्ट होता था। तो भी वह हिम्मत करके यादगारकी मददसे बोरिया पर लेट गया।

× × ×

अब्दुल्ला खोजाकी बात ठीक निकली। दूसरे रोज उसे ले गये और वह फिर लौटकर नहीं आया। लेकिन उस दिनके दो रोज बाद ही रेग़ाखानाकी तरफके सूराखोंसे "जिन्दाबाद इनकलाब"की पहले-पहल आवाज आयी, फिर गड़गड़ा खींचनेकी खरखराहट, फिर गला घुँटनेकी खिरखिराहट और अन्तमें एक भारी चीजका धमसे गिरना सुनाई दिया।

यहा था अब्दुल्ला खोजाका अन्तिम दिन।

५

दबदबा और तैयारी

(अगस्त १९२०)

१९२०के अगस्तका महीना था। अमीरके दरबारमें बहुत जोश-खरोश था। यादगार आबखानामें अब अकेला रह गया था। वह अपना बहुत सा समय रेगिस्तानके तरफवाले छेदसे बाहर देखनेमें लगाता था। एक दिन भोरमें सूर्योदयसे पहले ही चार-चार की पाँतीमें हो बाजार सावनी रेगिस्तान और मसजिद-पायन्दाके पच्छिमसे लोग आते दिखाई पड़े। उनके पीछे-पीछे एक सवार था। जिसके बदनपर जर्दोजी (फूलपत्तेवाला) जामा और सिरपर जरीके कुल्लेके ऊपर बड़ा पग्गड़ था। सवारके ओठ मोटे, नाक चौड़ी, रग सफेद, चेहरा मासल, शरीर मोटा और आँखे छोटी थी। आँखें जन्मना छोटी नहीं थीं, बल्कि चेहरेपर अधिक मास हो जानेसे यह शकल हो गयी थी। उसकी मूछे बिल्ली जैसी और दाढ़ी कम और थोड़ीदूर तक थी। मांससे भरे चेहरेके

बीचमे छोटी आँखे और नीचे छोटी दाढ़ी उसे कुरूप-शिरोमणि बना रही थीं। उसका घोड़ा बड़ा, स्याह मुश्की रगका था, जिसपर मखमली चारजामा और ज़रीके बेल-बूटेवाला ज़ीनपोश था। घोड़ेकी लगाम भी सुनहली अगाड़ी-पिछाड़ी भी सुनहली याक़ूत-जटित और कलाबत्तू-वाली थी।

सवारके पीछे-पीछे दो पियादे दौड़ रहे थे, जिनकी शकल-सूरत बुखारियो जैसी नही मालूम होती थी। उनके पैरोमें सोनेके कामवाले काबुली चप्पल, तनपर सटा हुआ अदरसी जामा और शिरपर नोकदार टोपी—नोक आध बित्ता ऊँची पीठकी तरफ झुकी हुई थी। उनकी कमरमे शालका कमरबन्द था, जिसकी दोनो ओरसे घुँघरू लटक रहे थ और जाँघोमे भी घुँघरूकी पट्टियाँ बँधी थीं। उनके दौड़ते वक्त आवाज, होती, मालूम होता था, कि ऊँटोंकी पाँती आ रही है।

उस गिरोहके पीछे एक सौ आदमियोका एक और गिरोह आया, इसके पीछे भी एक दब-दबेवाला सवार था। यह सवार यद्यपि अपनी पगड़ी, पोशाक और घोड़ेकी सजावटमे पहलेसे अधिक अन्तर नहीं रखता था, तो भी शरीरकी बनावटमें बहुत अन्तर रखता था। इसके शरीरपर मास कम दाढी बकरी जैसी और रग साँवला था। दूसरा अन्तर यह था कि इसकी अगल-बगलमे घुँघरू बाँधकर दौड़नेवाले आदमी न थे। उनकी जगह चार सवार आदमियोंकी पाँतीके आगे-आगे और चार पीछे-पीछ अपने घोड़ोंको दौड़ा रहे थे। सवारोंकी बगलसे एक-एक दर्रा (कोड़ा) लटक रहा था—जो कि एक गज लम्बा ऊपर कड़े चमड़ेसे बखिया किया हुआ था और मुठिया एक हाथ लम्बी अखरोटकी लकड़ीकी थी।

जिस समय ये दोनों सवार अपने-अपने गिरोहके साथ आगे पीछे चलते आर्कके तख्तपूलके पास आ घोड़ेसे उतरे, उस वक्त आर्कके फाटकसे आवाज आई—दौड़, मीर कुशबेगी (महामन्त्री)के पास खबर दे, कि ईशान काज़ीकलाँ और ईशान रईसकलाँ पधारे हैं। आवाज़ सुनकर

एक आदमी ऊपरकी ओर दौड़ा। इन सवारोंके बाद और कुछ दबदबावाले बड़े अफसर दिखलाई दिये, जिनमेंसे कोई-कोई जर्दोजीके ज़ामो, सलवार पहने हुए थे और उनके पैरोंमे अमरीकन बूट थे। किसीके शिरपर सोसारी टोपी, किसीके शिरपर कलाबत्तूवाला पगान और छातीपर अमीर तथा इम्पेरातर (जार)के तमगे थे। कुछ थे जिनके जामे कुन्दल और कमखाबके थे, सिरपर जर्दोजी कुलाहके साथ पगड़ी और पैरोंमे बूट थे। कुछ और लोग भी इसी पोशाकमे थे किन्तु उनके पैरोंमे बूटकी जगह देशी जूते थे। लेकिन इन सभी सर्दारोंके घोड़ोकी सजावट, डोरी, जीनपोश, जुल्फीदार लगाम, अगाड़ी, गर्दनबन्द एक दूसरेसे बहुत कम अन्तर रखते थे।

बादमें कुछ और लोग प्रगट हुए। इनकी पगड़ियाँ कुछ बड़ी थीं। इनके घोड़ोंपर और सजावटके साथ एक-एक जायनमाज (नमाज पढनेका कालीन) भी लटक रही थी। हरेकके पीछे दो-दो प्यादे दौड़ रहे थे, जिनके देखनेसे डर लगता था कि अपने लम्बे जामेके घिरावेमें फँसकर कहीं गिर न पड़े। इनकी पगड़ियोंमे स्वामियोंसे इतना ही अन्तर था, कि वह कुछ छोटी थीं।

बादमे एक जमात फिर आई। इनके जामे क़रशी, हिसार या कज़ाकके बने शाहीके थे। इनकी पगड़ियाँ शलगमी और पहलेवालोसे कुछ छोटी थी। घोड़े सजावटमे कुछ कम किन्तु मोटे-ताजे और सुडौल थे। सर्दारोंके घोड़ोसे उतरनेपर साईस घोड़ोपर सवार हो मदर्सा दारुशशाफाके सामने दीवारकी तरफ पीठ किये पाँतीसे खड़े होते गये और अतमें यह पाँती बढ़ते बढ़ते बालायहौज़ तक पहुँच गयी।

इसके बाद सवार-सैनिकोंके दस्ते आने लगे। हर दस्तेने रेगिस्तानमे आकर थोड़ा परेड करके नगाड़ेके साथ सलामी दी। आर्कके ऊपरसे जर्दोजीके जामा-सलवारवाला आदमी—जो सबेरे आर्कमें आया था—दस्ताके सामने आ, रेगिस्तानसे बाहर चला गया। सैनिकोंमेंसे कुछ

पन्द्रहसे सत्रह साल तकके थे, जिनकी ओर देखनेवालेकी नज़र अधिक आकृष्ट होती थी। उनकी पोशाक ऐसे कपड़ो और काटसे सिली थी, कि वह सैनिककी अपेक्षा सरकसकी लड़कियोसे अधिक समानता रखते थे।

सवार सैनिकोंके बाद प्यादा और तोपखानाके सैनिक भी उसी तरह परेड करके सलामी दे अपने अफसरोके साथ चले गये। उनके बाद कुछ दस्ते नौकरोके आये। ये मामूली साफा और जामामे लेकिन कुत्तोके नीचे भेड़की खालोंकी पोस्तीन डाल लेनेसे बहुत मोटे-ताजे मालूम दे रहे थे। इनके हाथके हथियार चित्र-विचित्र थे। किसीके हाथमें अंग्रेजी कार्तूस वाली बदूक, किसीके पास टोपीवाली बदूक और किसीके पास पलीता-वाली शाखदार पुरानी बदूक थी। किन्तु जिस वक्त वे रेगिस्तानमें आये, म्यानसे तलवारोंको निकालकर हर तरफ हवामें चला रहे थे, मानो किसीपर वार कर रहे हो। उनकी सरदारी करनेके लिये आर्कसे जरबफ्ती जामा और पगड़ीवाला आदमी आया और वह उन्हे रेगिस्तानसे अपने साथ ले गया।

इसके बाद पाँच सौ सवार और आये, जिनकी आयु सोलहसे सतरह सालकी थी। हरेकके बदनपर जामा और पगड़ी थी, और हाथमें फिरंगी कारतूसी बदूक। वह रेगिस्तानमे आर्क (किला)के सामने पाँतीसे खड़े हुए। ऊपर (आर्क)से एक पचीस-सताइस-साला आदमी आया, जिसके तनपर कुदली जामा, शिरपर ज़रदोजी कुलाहके ऊपर छोटी पगड़ी थी। वह घोड़ेपर सवार हो आगे आया। उसकी दोनो बगलोमे किंतु एक कदम पीछे चार-पाँच मध्य वयस्क-सवार थे, जो कि हर निगाहपर शिरको घोड़ेके शिरकी तरफ इतना झुकाकर सलाम करते, कि उनका शिर और सीना घोड़ेकी जान तक पहुँच जाता था। उनकी तरफ देखने हीसे मालूम पड़ जाता था, कि वे बुखाराके सौदागर हैं, और उनका सरदार भी एक सौदागर है।'

उस दस्तेके चले जानेपर आदमियोंकी एक बड़ी भारी भीड़ आई

जिसने बालाय-हौज़से आर्क दरवाजा तक सारे रेगिस्तानको भर दिया। उनका रग उड़ा, आँखे फीकी, दाढी जगलसी और शरीर निर्बल था। उनका लबा जामा जमीन तक लटकता, ऊल-जलूल साफा गर्दनपर कुलावाकी मानिंद था। कमरमें उन्होने रूमाल बाँध रखा था। हरेकके हाथमे ग्यारह गोलियोकी अग्रेजी कारतूसी बदूके थी। पैरोमे बगर तस्मेवाले जूते थे, जिनके पास तक नाड़ा लटक रहा था।

इनकी सरदारीके लिये एक व्यक्ति आर्कसे आया, जिसकी दाढी बड़ी, जामा किमखाबका और कमरबद सफेद था। कमरबदसे तलवार लटक रही थी। अपने दस्तेके पास खड़ा हो उसने हाथोंको उठा दुआ पढी और मुँहपर हाथ फेरा।

इसके बाद कुशबेगीके आदमियोंने थैलोंमे मसहियो (ताँबेके सिक्कों) को ला उन भुक्खड़ोमेसे हरेकके हाथमे एक-एक मसही दे तख्तपूलपर बैठे कुशबेगीके सामनेसे गुजारा। इस रसमके पूरा होनेके बाद तलवार-धारी कमखाबपोश आदमीने कहा—हम मुल्ला जनाबआलीकी सलामती और शरीअत (इस्लाम)की रक्षाके लिये अपनी जानको न्योछावर करेगे। उमीद है कि जनाबआलीके प्रतापसे हम जदीद (नवीन) और बोलिशेविकका नाम तक दुनियासे नेस्त-नाबूद कर देगे—यह कह वह जायनमाजसे ढकी जीनवाले घोड़ेपर सवार हो दस्तेके आगे-आगे रेगिस्तानसे चला गया।

कुशबेगीके एक आदमीने कहा—जनाबआलीके सारे फौजी अफसरोमे दमुल्ला कुतुबुद्दीन बहुत बहादुर हैं। भगवानने चाहा, तो अब बुखारापर किसी मुसीबतके आनेकी आशका नही है।

सबके चले जानेपर आर्कसे उतरकर जिस दबदबेसे आये थे उसी दबदबसे काज़ीकलाँ और रईसकलाँ भी चले गये। काजी अपनी हवेलीकी तरफ रवाना हो गया और रईस इतिजामके लिये खानकाह बालाय-हौज़में जा खानकाह (मठ)के सहनमें बैठा। उसके दरें (कोड़े) वाले आदमियोंने बाजार-रेगिस्तानमे जा दो किसानोंको पकड़ा। एक

खरबूजा कच्चा निकल जानेसे खरबूजाफरोशको भी सारे खरबूजोंके साथ वह रईसके सामने ले गये। रईसने किसानोसे इस्लामी नित्य-कर्मके बारेमें पूछा। वह न जानते थे। इसपर हुक्म दिया, कि उनकी पीठ नगीकर उनतालीस दर्रे मारे जायँ। फिर खरबूजाफरोशको भी उनतालीस दर्रे लगवाये। अंतमें जनाबआलीके लिये दुआ करवा उन्हे छुट्टी दी।

६

फौजी परेड

बाहर चाहे जितनी चहल-पहल हो रही हो, किंतु आबखानामे अब कोई बंदी न रह गया था, जिससे कि यादगार बातचीत करता। छेदसे कुछ देर बाहरका तमाशा देख वह बोरियापर पड़ रहा—उसी बोरियापर जिसपर पचहत्तर बेत खाये बंदियोके शरीरका रक्त-मांस चिपककर सूख गया था। कुछ देर बाद उसने आँखे खोली, तो एक बीस-साला जवानको आबखानेके कोनेमें बैठे रोते देखा। यादगारने उसके पास जाके पूछा—तू कौन है?

—एक अभागा।

—शुक्र कर, तू अभागा नही है। मैने यहाँ तुझे ही पहला आदमी देखा, जिसका शरीर और शिर घायल नहीं है। फिर नाशुक्री क्यो करता है।

—इस देशमें सबसे अभागा आदमी वह है, जिसपर 'जदीद' या 'बोलशेविक' होनेकी तुहमत लगाई गई हो। मुझे जदीद कहकर यहाँ लाये, इसलिये मेरे दिन गिनतीके हैं। फिर मै किस बातका शुक्र करूँ?

यादगारने जवानकी विपदाको महसूस किया। फिर उसको तसल्ली देनेके लिये कहा—'दर्द दूसरा मौत दूसरी' शिरपर न आई मुसीबतके लिये चिंता

करना जिंदगीको बेकार खोना है। सच बता, किसीने तुझपर जदीद होनेकी तुहमत लगाई या तू सचमुच जदीद है ?

—नहीं, मैं हरगिज जदीद नहीं हूँ, लेकिन यूसुफ बाय और करशी बेक (गवर्नर)ने मुझपर यह तुहमत लगाई है।

—वह क्या काम करते हैं और क्यों तेरे साथ दुश्मनी रखते हैं ?

—यूसुफ बाय बाय (सौदागर) लोगोंके दस्ते (पलटन)का अफसर है। करशीबेक उसका सम्बन्धी और बायोंका मददगार है। वह अमीरका भी रिश्तेदार है। अब तक मेरे और उनके बीच कोई दुश्मनी न थी। मै एक मामूली दलाल हूँ, फिर उनसे दुश्मनी क्या करता ? लेकिन आज एक बात हुई और मै इस बलामे फँसा। आजकल बाय लोग अमीरके हुक्मसे जगकी तैयारीके लिये परेड कर रहे हैं। आज बायोका दस्ता दरवाज़ा-कराकुलसे निकल शहर-इस्लाम गाँवोमे जाकर परेड करनेवाला था। चाँदमारीके वक्त उन्होने मुझे यहकर खदकमे बिठा दिया, कि निशानपर लगनेवाली हर गोलीको बतलानेके लिये मै हाथकी झडीको झुका दूँ, जिससे सफल निशानचियोका नाम रजिस्टरपर लिखा जाय, और जनाब-आलीकी कृपाके वह पात्र बने। सभी बदूक हाथमे लिये पाँतीसे खड़े हुए। मै भी गोलीके रास्तेसे शिरको नीचे किये खदकमे जा बैठा। इसी समय करशीबेक घोड़ा दौड़ाते मेरे पास आया और बोला, कि हर आठवी आवाज़पर चाहे गोली निशानपर लगे या न लगे झडीको गिरा दूँ। मैं इस बातका मेतलब नहीं जानता था। किंतु मैं करशीबेककी आज्ञा-पालनको तैयार था। लेकिन बेकके मुँहसे निकले आठ (हश्त)को मैने सात (हफ्त) सुना, इसलिये मैं हर सातवीं आवाजपर झडी गिराता रहा। यद्यपि आठवीं आवाजकी गोली कभी निशानापर न लगी, लेकिन मैने झडी न गिराकर अपराध किया।

परेड खत्म होनेपर मालूम हुआ कि आठवाँ नंबर दस्ताके अफसर यूसुफ बायका था, और इसीलिये करशीबेकने मुझे वैसा करनेको कहा था।

बेक और बाय मुझपर बहुत नाराज हो गये और मुझे कुशबेगी सिपाहियाक हाथमे यह कहकर सौंप दिया—'जो कुछ हमने सुना है, उससे मालूम होता है, कि यह जदीदों और बोलशेविकोंकी ओरसे भेद लेने आया है। जब तक तहकीकात पूरी न हो, इसे आबखानामे ले जाकर बदकर दो।—अपनी बात खत्मकर जवानने फिर रोना शुरू किया।

लेकिन जवानका भय और यादगारकी आशका ठीक न निकली। थोड़ी ही देरमे बदी-बान (जेल सिपाही)ने आकर मुक्तिके लिये बधाई देते हुए कहा—कारवाबाशी (कारवाके नायक)ने तुम्हारा अपराध मीर कुशबेगीको समझाया। मैंने भी जोर लगाया। मेरे खिदमतानाको न भूलना, हॉ ?

जवान उसके साथ आबखानासे चला गया।

७

धर्म-युद्ध (जहाद) का निश्चय

(२० अगस्त १९२०)

आज अवस्था असाधारणसी दिखलाई पड़ रही थी। घटे-घटेपर गार्ड और यसावुल सितारा-मुखासा उद्यानसे, जहॉ कि अमीर उस वक्त ठहरा हुआ था, घोड़ा दौड़ाते कुशबेगी (मत्री)के पास आर्कके ऊपर आते और जवाब ले घोड़ा बदलकर लौट जाते। ऐल (स्वजातीय) नौकरोंने पलीतावाली बदूकोको आर्कमे जमाकर वहॉसे ग्यारह गोलियो वाली कारतूसी बदूके ले ली थी। अमीरकी खोकदी घोड़ागाड़ियोको तुरत-तुरत आर्कके ऊपर ले जा बोझ लादकर लौटा रहे थे। आर्कके फाटककी बॉई तरफ आबखानासे भी बाँये अवस्थित कूरखाना (अस्त्रागार)से नई अग्रेजी तोपोंके साथ-साथ मुँहसे भरी जानेवाली बड़ी-बड़ी तोपोको भी पचासो घोड़ोंसे बॉधकर दो ले जानेमें लगे थे।

आज यादगारके तमाशाका बाज़ार गर्म था। वह कभी छेदपर आँख रखकर रेगिस्तानकी तरफ देखता और कभी किवाड़की दरारोंपर कान रखकर आर्कके दालानसे आने जानेवालोंकी बातचीत सुनता। रात हुई। आर्कका फाटक बद हो गया। अमीरके आदमियोंकी दौड़-धूप भी बद हो गई। नक्कारखानेसे रातकी अज़ानके बाद फाटकके तोपचीबाशीने स्वय इमाम बनकर दालानमें जायनमाज (नमाजकी दरी) डाल द्वारपालोंको नमाज पढ़ाई। फिर अपने शयन-स्थान, दालानके पास वाले हातेमें चला गया। द्वारपाल भी अपने जूतों और पोशाकको उतार कोनेमे रख बिस्तर बदसे निकालकर गद्दा और तकिया बिछा सोनेके लिये तैयार थे। इसी समय सुनाई दिया—गुम्-गुम्-गुम्-गुम् गुम्-गुम्-गुम्-गुम्-तिड्-गुम्-तिड्-तिड्-गुम्-गुम्। यह खतरेके ढोलकी आवाज थी, जो कि तख्तपूलके सामनेसे आई और उसने सिपाहियोंमे खलबली मचा दी। सब तुरत खड़े हो दुबारा पोशाक पहन कमरबद बाँध ड्यूटीके लिये हाजिर हुए। अधिक समय नही बीता, कि तोपचीबाशी भी फाटकके पीछे जाकर बोला—कौन है ?

—मै मीरशब् (कोतवाल), खुलवाये।

फाटककी खिड़की खोली गई और मीरशब्के अन्दर आनेपर फिर बद कर दी गई।

—अस्सलाम् अलेकुम्।

—व अलेकुमुस्सलाम।

आपके आदमी तैयार हैं ?—मीरशब्ने तोपचीबाशीसे पूछा।

—दोको कल शाफिरकामके काज़ीने भिजवाया था, उन्हें ठीककर रखा है।

इसी समय कुशबेगीके महलकी ओरसे लंबी दाढ़ी, श्वेत-केश, दीर्घाकार स्वर्णकटिबध बाँधे एक आदमी सामने आया।

मीरशब्—सलाम अलेकुम्, यसावुलबाशी ! आप पुराने अनुभवी हैं। आपके लोगोमें कितने तैयार हैं ?

—दो आदमी पुराने काम करनेवाले हैं। वह सदा जनाबआलीके चरणोंके साथ चलनेको तैयार हैं। लेकिन दो आदमी जिन्हे जनाब शरीअत-पनाह ईशान काजीकलॉ (श्रीमान् धर्म-रक्षक महामान्य महान्यायाधीश) ने भेजा था, बड़े डर गये हैं। चौबीस घटेसे उन्होंने रोना नही छोड़ा। स्वय पाशा बीबी (राजमाता) ने बहुत समझाया-बुझाया तो थोड़ा सा शान्त हुए। शामके बाद हम्माम (स्नान) करवा उन्हें खास पोशाक पहनवाई।

खोकदी घोड़ागाड़ी—जिसके ऊपर छत और आगे-पीछे नमदा सीकर पर्दा किया गया था—ऊपर आ फाटकके पीछे खड़ी हुई। दो सिपाहियोंने तोपचीबाशीकी हवेलीसे पन्द्रह-सोलह साला दो लडकोको लाकर गाड़ीके सामने खड़ा किया। अब आज्ञाकी प्रतीक्षा थी।

मीरशब्ने यसावुलबाशीसे पूछा—लड़कोकी गाड़ी कहाँ है ?

—शाही गाड़ीखानेमे इन्हें छोड़ और गाड़ियाँ नही रह गई हैं। सभी गाड़ियोंको लादनेके लिये सैनिक अस्त्रागार ले गये। दससे अधिक ऊपरसे ढँकी उर्दाकशी (रानियोंको ले जानेवाली) गाड़ियाँ थीं। उन्हें भी कल गोला-बारूद लादकर कागान-कुहना ले गये।

मीरशब्—इबी ! अब क्या करूँ ? लड़कोंको कहाँ लादूँ ?

गाड़ीवानने बीचमें बोलते हुए कहा—मीरशबेक ! आप ठीक नहीं समझ रहे हैं। यह भी (गाड़ीके अदरकी ओर इशारा करके) उर्दा (रानियाँ) हैं और यह (बच्चोंकी ओर इशारा करके) भी उर्दा हैं। इन्हें भी यदि इसी गाड़ीमे सवार कर दूँ, तो क्या हर्ज है ?

मीरशब—मसखरी मत कर कलेकुल !

यसावुलबाशी—कले कुरबान सच तो कह रहा है। इस समय जब कि धर्मयुद्धके लिये अस्त्र-शस्त्र जुलाई जैसा एक शरई (धार्मिक) प्रश्न

उठ खड़ा हुआ है, एक गाड़ीमें मर्द-औरतको सवार करानेमें हर्ज क्या है ? यदि आपका दिल इस बातको स्वीकार नहीं करता, तो ईशान आलिम (पडित महाशय)से पूछ लें ।

इसी वक्त गाड़ीके अदरसे आवाज आई—हर्ज नहीं । सितारा-मुखासा पहुँचते तक हम इन्हे 'हजरत सलामत रहे' वाली गजल भी याद करा देगी । यदि सगीत-महोत्सवका हुक्म होगा, तो हम एक साथ गाकर पार्श्वालिंगित हो हजरतके समयको बहुत आनदसे कटा देगी ।

मीरशब—बेगम ! यदि आप राजी हैं, तो हम भी राजी हैं । कुछ भी हो पीछे जनाबआलीसे 'मीरशबने हमे मिलनानुचितोंके साथ एक गाड़ीमे चढाकर भेजा' कहकर मुझे बरबाद न करवाइयेगा ।

—खातिरजमा रहें—भीतरसे जवाब आया ।

पीछेसे नमदेको हटाकर लड़कोको भी बेगमोंके साथ चढा दिया गया ।

कोचवान हाँकते हुए बोल उठा—'बघाड़नेका मतलब है मास खाना'—किसी तरह भारको लेकर सितारा मुखासा पहुँचा देना । ऐसा हो कि बेड़ा पार लग जाय ।

—हाँ, अभागे कल्ले ! मुझे दलाल कह रहा है—कहकर मीरशबने मजाक किया ।

गाड़ीवान—खुदा न करे, मैं आपका गुलाम हूँ । आपकी ओरसे सेवा करता हूँ ।

बड़ा फाटक खुला । मीरशबने तख्तपूल (राजचत्वर)के पास खड़े अपने सवार सैनिकोंसे कहा—इमाम दरवाजा तक सड़कको आदमियोंसे खाली करवाओ, चिरागोंको बुझवा दो और रास्ताको बद कर दो ।

सवारोंने घोड़े दौड़ाये । महाढोलक भी—गुम्-गुम्-गुम्-गुम् तिङ्-तिङ्-गुम्-गुम्' करता रास्ते पर चला । उसके पीछे मीरशब (कोतवाल) और मीरशबके पीछे 'माननीय उर्दा' की गाड़ी रवाना हुई ।

८

भय और आशा

उर्दाकी गाड़ीके चले जाने और फाटकके बद होनेके बाद कुशबेगी (महामत्री)का यसावुलबाशी और तोपचीबाशी दालानकी ऊपरकी ओर चले, लेकिन लबी बात करनेके लिये रेगखानेके सामनेके चबूतरे पर जा बैठे। तोपचीबाशीने आशकित-हृदयसे कहा—आखिर क्या होने वाला है ?

—पक्की खबरे जो मेरे पास हर रोज आ रही हैं, उनसे मालूम होता है, कि हमारा काम उतना अच्छा नही है। सबसे बुरी बात तो यह है, कि सैनिकोकी आँखे बदल गई हैं। इन चद महीनोमे बहुतसे सैनिक अपनी बदूके लिये भागकर ताशकद और समरकदमे जा बोलशेविक हो गये। गुप्त चिट्ठियो और सदेशोके द्वारा वह दूसरे सैनिकोंको भी फोड़ रहे हैं। लोग भी हमसे स्नेह नहीं रखते। किसान पिछले दो सालोमे और भी तग हुए हैं। यदि इस अवस्थामे जदीद और बोलशेविक रूसी बोलशेविकोंके साथ एक हो चढ आयें, तो हमारे लिये अच्छा न होगा। इन थोड़े पेटू बायों और चापलूस मुल्लाओंसे क्या बननेवाला है ? तुम्हे एक विश्वासपात्र अनुभवी वृद्ध पुरुष और अपने बाप जैसा जानकर इन बातोंको बतला रहा हूँ, नहीं तो यह बातें किसी और से कहने लायक नहीं हैं। निराश न हो जायं, इस विचारमे इन बातोंको हजरतके पास भी नहीं लिखता। नहीं मालूम आखिरमे क्या होनेवाला है ?

—क्या होनेवाला है पूछते हैं ? हजरत बहाउद्दीन।* (पीर नक्शबंद) यार और दूसरे पीर मददगार रहें, फिर बुखाराके ऊपर कोई आफत नहीं आ सकती है। कल हजरत बहाउद्दीनकी भविष्यवाणीको

---

*अजमेरके पीरकी तरह बुखाराके सबसे प्रतिष्ठित और पुराने पीर।

मुल्ला कुतुबुद्दीनने मीर कुशबेगीको पढ़कर सुनाया। हजरतने अपनी किताबमें लिखा है—'जबतक मेरे कब्रकी एक ईंट भी बाकी है, बुखाराके किलेकी एक मुट्ठी मिट्टी भी खराब न होगी'। आप मत समझें कि आज जो बातें हो रही हैं, उनसे जनाबआली और दूसरे बड़े लोग अनभिज्ञ हैं। रोजके समाचारोंको चाहे आप न भी लिख भेजें, किंतु सारी बातें हमारे हजरतके लिये सूर्यकी तरह प्रकाशमान हैं। कहावत है 'बादशाहोंका दिल सत्यका दर्शन-स्थान है', साथ ही ताशकंद और समरकंदके समाचार-को मीरबाबा और दूसरे वकायानवीस (समाचार लेखक) लिखकर भेज रहे हैं। जनाबआलीकी सर्वदर्शी आँखोंसे नगर और वनकी कोई बात छिपी नहीं है। काम आगे बढ़ रहा है। अपनी बहादुरीके लिये प्रसिद्ध बड़े-बड़े डाकुओंसे बनी "शेर-बच्चा" पलटन पर पूरी उमीद रखनी चाहिये। खासकर अफगानोंका दस्ता जिनमेंसे एक-एक आदमी अनुभवी और समर देखे हुए हैं, उनका हरेक आदमी सौ बोलशेविक मूज़िकों (रूसी-किसानों)को पीस सकता है। इनके अतिरिक्त दुआ-पाठी दुआ पढ़नेमें, शेख और तांत्रिक अपनी ऋद्धि-सिद्धि दिखलानेमें लगे हुए हैं। कुछ ही दिन हुए ईशान काज़ीकलाँने जनाबआलीसे निवेदन किया था—'सही परपराओंसे मालूम होता है कि सही-बुखारी (प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक) को शिर पर लेकर चलना दुश्मनके आक्रमणसे रक्षा करता है। इसलिये मैंने सही-बुखारीकी कुछ प्रतियोंको लेकर चंद मुल्लोंको तैयार किया है। यदि जनाबआलीकी आज्ञा हो, तो वह सही-बुखारीकी एक-एक प्रतिको शिरपर रख शहरकी चारों ओर और सितारा मुखासाके भी गिर्दा-गिर्द परिक्रमा करें। भगवानने चाहा तो हजरतकी सरकारको कोई भी आँच न आयेगी।' जनाबआलीने भी आज्ञा दे दी है। कितने ही दिनोंसे मुल्ला लोग इसी काममें लगे हुए हैं। इतने महाप्रयत्नके बाद भी दिलमें यदि भय और संदेह आवे, तो यह ईमान (धर्म-विश्वास)की कमजोरी है। आप तोड़फोड़वाली इस तरहकी शंका दिलमें न लायें। इस बीचमें एक

और भी बड़ा काम हुआ है। जनाबआलीने मास्कोमें एलची (राजदूत) भेजे हैं। एलचियोंमें एक है नौरोज़ ज़ोर। है तो वह निरक्षर, लेकिन बड़ों-बड़ोंके कान काटता है। वह मास्कोसे खाली हाथ नहीं लौटेगा। जो कुछ उपद्रव यहाँ हो रहे हैं, वह सब बुखाराके बेदीन जदीद और बोलशेविक समरकद-ताशकदके रूसी-मूजिकों (भुक्खड़ किसानों)से एक होकर कर रहे हैं। लेकिन मास्कोमें जनाबआलीकी बड़ी इज्जत करते हैं और नहीं चाहते कि थोडेसे जदीदों और बोलशेविकोंके कहनेपर एक बादशाह—जो कि तैमूरका उत्तराधिकारी है—के साथ बिगाड़ करे।

यसावुलबाशी और तोपचीबाशीके चले जाने पर द्वारपाल भी सो गये। यादगार भी—जो अब तक कान लगाये दोनोंकी बाते सुन रहा था—अपनी बोरिया पर आ लेटा, लेकिन नीद न आ रही थी। कभी-कभी स्वप्नकी तरह देखता—जग हो रही है, वह जगके मैदानमें है, लेकिन कहाँ जाय यह नहीं जानता। एक बार उसने देखा कि अमीरके आदमी भगे, वह भी बदीसे आजाद हो दर्रानिहाँ पहुँच गया, और उसी चट्टान पर बैठा पहाड़से आती धाराके कलरवको सुन रहा है। उसकी नजर कभी-कभी गुलनारकी झोपड़ीकी तरफ लग जाती है। फिर सारे ख्यालोंको दूर हटाकर वह इरादा करता है, कि यदि वह शुभ दिन आये और वह अमीरसे लड़नेवालोंके पास पहुँचे, तो उनके साथ मिलकर अमीरके शासन रूपी जेलखानेको नष्ट करनेमें हाथ बटाये और बोलशेविक बनकर क्रातिको अतिम स्थानपर पहुँचाये।

६

महाप्रस्थानका दिन

एक बड़ी ही भयानक "गुबुर-गुंबुर"की आवाजने यादगारको जगा दिया। पहले इतनी भीषण आवाज उसने नहीं सुनी थी। परेडके वक्त

अमीरके तोपचियोंके तोप दागनेकी आवाज अनेक बार उसने सुनी थी। इस आवाजमें उससे कुछ समानता अवश्य थी, परन्तु भीषणतामे यह कई गुना अधिक थी। जब-जब आवाज निकलती, आबखानाकी दीवारें काँप उठतीं। यादगारको डर लगने लगा, कि कहीं आर्क (किला) अपने कगूरों और गुम्बदोंके साथ जमीनपर न आ गिरे। आर्कके निवासी किंकर्तव्य विमूढ हुए इधरसे उधर दौड़ते हाथ मल रहे थे।

दिन हुआ, "गुबुर-गुबुर" की आवाज और तेज हुई। आज रेगिस्तानमें परेड न हुई, लेकिन सैनिकों और गाजियोंके दस्ते आ-आकर आर्कके फाटकपर हाजिरी दे चले गये। घड़ी-घड़ी शहरवालोंकी परेशानी बढ़ती जा रही थी। कभी-कभी तोपका गोला आर्क पर गिरता और आस-पास धुआँ और धूलका तूफान वर्षा कर देता। धुआँ और धूलके साफ होनेके पहले दूसरा गोला आ गिरता। तोपोंकी गड़गड़ाहट और गोलोंके धमाकेसे ऐसा भीषण भूकम्प पैदा होता, जिससे आर्क अपनी सारी शानोशौकतके साथ तूफानमे पड़ी नावकी तरह काँप रहा था। खिड़कियोंकी किवाड़ियाँ टूट रही थी, जालियाँ गिर रही थी। इमारत के चित्र और पच्चीकारियाँ उड़ रही थी। आर्कके कगूरे और बुर्ज ढह रहे थे।

एकाएक कुछ चिड़ियाँ हवामें उड़ने लगी, जिन्हें इससे पहले यादगारने कभी देखा न था। उसने आबखानाके छेदसे उनपर नज़र डाली। पहले उसने उन्हें चिड़ियाँ ख्याल किया था। जरा देर बाद उनमेंसे एक लोटन-कबूतरकी तरह कलाबाजी करती नजदीक आ गई। यह पक्षी यद्यपि पंखोंमे चिड़ियों जैसा थी, लेकिन पूँछ इसकी मछली जैसी थी। सबसे बढ़-कर यह कि उसका आकार यादगारकी देखी चिड़ियों और मछलियोंकी अपेक्षा बहुत ही बड़ा था और उसकी जैसी आवाज उसने किसी पक्षी या मछलीकी न सुनी थी। तुलनाके लिये उसको दर्रानिहाँकी धाराकी आवाज याद आई, जिसको आज ही स्वप्नमें सुना था। एकाएक उस पंछीके छोटे-छोटे पर जमीनपर गिरने लगे। यादगारको अफसोस हुआ

कि यह सुदर उड़नेवाला पछी बेपख हो जमीनपर गिरनेवाला है। लेकिन जब वह पङ्ख भूमिके समीप पहुँचे, तो मालूम हुआ कि वह पङ्ख नही बल्कि कागजके पत्ते हैं। तख्तफूल (राजचत्वर)के आगे खड़ा हो तमाशा देखनेवाले एक द्वारपालके हाथमें एक कागज आया और वह उसे लेकर आर्कके ऊपरकी ओर दौड़ा। दालानमे उसके हाथमे कागज देखकर कुशबेगीके यसावुलबाशीने पूछा—यह क्या है ?

—कागज।

—मै देख रहा हूँ, कागज है। पूछ रहा हूँ, कैसा कागज है ? तेरे सिरसे मेरा सिर बड़ा है।

—मै नहीं जानता। एरोप्लानसे गिरा।

यसावुलबाशीने झपटकर उसके हाथसे कागज छीन लिया और "जा अपना काम कर" कह उसे फाटककी तरफ खदेड़ आबखानाकी सीढ़ियोंपर बैठकर कागज पढने लगा :—

"ऐ बुखाराके मेहनतकशो ! ऐ बुखाराके किसानो ! तुम्हारा स्वत-त्रता-दिवस, सौभाग्य-दिवस, विजय-दिवस और आनन्द दिवस आ पहुँचा। जल्दी ही तुम शताब्दियोके अत्याचारसे मुक्त हो रहे हो। जल्दी ही अपने सक्षम हाथों अपने सामान अपने भाग्य अपने भविष्यके स्वय स्वामी बनोगे। रूसी मेहनतकश मजूर-किसानोंकी लाल-सेनाके साथ हम तुम्हारी सहायता करने, अमीर और उसके पिट्ठुओंके चगुलसे तुम्हें छुटकारा देनेके लिये, अमीरी सरकारके विरुद्ध मैदानमें उतरे हैं। तुम अमीरके आदमियों और मुल्लोंके बहकावेमें न पड़ो—इन मुल्लोंके, जिन्होंने सैकड़ों वर्षो से शरीयत (धर्म)के नामपर तुम्हारा खून बहाया, तुम्हारे धन-मालको लूटा, तुम्हारी इज्जत

आबरूको बरबाद किया। लाल फौजसे जरा भी भय न खाओ। वह तुम्हारे मेहबान भाई हैं।

ऐ बुखाराके सैनिको! ऐ बुखाराके मजदूरो व किसानोंके पुत्रो! समझो और सावधान हो जाओ, कि अमीरके महाप्रस्थानका दिन आ पहुँचा है। उसका महल ध्वस्त, आर्क धराशायी, नियति नत-शिर और उसका मुकुट तथा सिंहासन रुधिराप्लुत होनेवाला है। तुम हमारे मददगार बनो, लाल फौज पर गोली न चलाओ, क्योकि वह तुम्हारे मेहरबान भाई हैं, और इसलिये आये हैं कि तुम्हे निरवधि बदीजीवन—अमीरकी सरबाजी—से मुक्त करे। तुम निःशक हो अपने भाइयोकी ओर चले आओ।

जिन्दाबाद—बुखाराके मेहनतकश!
जिन्दाबाद—बोलशेविक पार्टी!
जिन्दाबाद—सोवियत सरकार!
नेस्तबाद—अमीर और उसकी सरकार!

यसावुलबाशीने कागजको आखिर तक पढ चुकनेके बाद अफसोस करते कहा—मै सोच रहा था, क्यो ये नमकहराम सिपाही जगके लिये नही जाते? क्यों ये दरबारी अमीरको बर्बाद कर रहे हैं?

यसावुलबाशीने कागजको जेबमे डाल खड़ा हो अपने हाथको माथेपर फेरा। एक क्षण बाद उसने अपनी लम्बी दाढी मरोड़ते हुए उसे मुँहमे डाल दाँतोसे चबाना शुरू किया, मुँहको फाटककी ओर करके दो कदम आगे बढ़ फिर मुड़कर ऊपरकी तरफ जाना चाहा। अभी तीन कदम भी आगे नहीं बढा था, कि तोपचीबाशी अपनी हवेलीसे निकल आया। यसावुलबाशी अपने विचारोमे इतना मग्न था, कि वह तबतक तोपचीबाशी को न देख सका, जबतक कि समीप आकर उसने उसे सलाम नहीं किया।

सलामकी आवाज सुनकर चिहुँक सा उठा और सलामका जवाब दिये बगैर बोला—सब खैरियत है न ? क्या खबर ?

—खबर उतनी अच्छी नहीं। इलाही उसे झूठ करे। पासमें आई खबरोंसे मालूम होता है, कि ताशबुकामे तुर्कदस्ताके सैनिकोंने—जिनपर हमारी सबसे ज्यादा उमीद थी—बायों और 'गाजियों'को नगा करके उनके कपड़ो, घोड़ो और हथियारोंको छीन लिया। बाय लोगोंके अफसर यूसुफ बाय तथा करशीबेक और हाजी आलम बाय सिरसे पैर तक नगे पैदल शहर की ओर भागे आ रहे थे। रास्तेमे ईशान काजीकलॉसे भेंट हो गई, और उन्होंने उन्हें एक-एक कपड़ा पहनाकर शहरमें भेजा। जारोवब्रन्दमे कुछ सैनिकोंने खुद ईशान काजीकलॉ और रईसकलॉ पर गोलियॉ चलाई। खैर, गोलियॉ खाली गई और वह जल्दी भागकर शहर चले आये। सबसे आश्चर्यकी बात यह है, कि यूसुफ बायने भागते वक्त करशीबेकसे कहा था—बोलशेविकोसे भयभीत होकर हमने अपनेको इस बलामे डाला। अच्छा हुआ होता, यदि हमने जदीदोसे झगड़ा न किया होता। अब भी मुझे उमीद है, यदि जनाबआलीने कही हार खाई, तो शासनकी बागडोर जदीदोके हाथमे जायगी; उस वक्त फिर एक-आध पद लेकर हम निश्चिन्त हो जिन्दगी बसर करेंगे।" यूसुफ बायकी इस बातचीतसे मालूम होता है, कि यद्यपि हमारे बाय लोग बोलशेविकोंके विरोधी हैं, किन्तु उतना ही विरोध उनका जदीदोंके साथ नहीं है। यही नहीं बल्कि उनसे वह पद और धनकी भी आशा रखते हैं।

यसावुलबाशी—नही।

तोपचीबाशी—'नहीं' न कहिये। यह बात एक पक्के विश्वासी समाचार-लेखकने अभी-अभी मेरे पास आकर बतलाई। उसे मैंने बायोंके दस्तेके अदर रख छोड़ा था।

—जो भी हो, ऐसी अनुत्साहवर्धक खबरें न दुहराते फिरे। यह कह यसावुलबाशी आर्कके ऊपर चला गया। यादगारने कागजके लेख

और यसावुलबाशी-तोपचीबाशीकी बातको कान लगाकर सुना था। अब उसे विश्वास होने लगा था, कि अमीर और उसके अफसरोंके महा-प्रस्थानका दिन अब आ पहुँचा।

१०

क्रान्ति और स्वतन्त्रा

—काम खराब हुआ। गुलाबियॉ गॉवके किसान बोलशेविकों और जदीदोंसे मिलकर **दर्वाजा-शेखजलालसे** अन्दर घुस शहरको घेरे हुए हैं।

—थोड़ेसे किसान क्या कर सकते हैं? उस दरवाजाकी मीरशब (कोतवाल) बड़ी तत्परतासे रक्षा कर रहा है। उसे हिकमत-बुज (बकरी) कहते हैं, क्योंकि वह अपनी बकरदाढ़ीकी एक हिलानसे सौ किसानोंको हवामे उड़ा सकता है।

—अभी तुझे दुनियाकी कोई खबर नहीं। तू यह भी नहीं जानता, कि आनेवालोंका सबसे पहले जिसने स्वागत किया, वह था हिकमत-बुज।

—क्या? क्या हिकमत-बुज दरवाजाको छोड़कर भाग गया?

—काश, भाग सका होता, तो शायद फिर कहीं काम आता। उसने उस दुनियाकी ओर नजर करके स्वागत किया। समझा? यानी मारा गया!

—किस तरह?

—जब किसानोंने आक्रमण किया, तो मीरशबने समझा "यह वही किसान हैं न, कि सौ किसानोंको एक कान्स्टेबुल अपने डंडेसे हॉंककर जेलमे पहुँचा देता है। यह क्या बेअदबी है, कि आज उन्होंने जनाबआलीके खिलाफ तलवार खींची और यहॉं आक्रमण करने आये, जहॉं कि मैं स्वय खड़ा हूँ!" यही सोच उसने तुच्छ समझकर मुँहसे गाली निकालनी चाही, पर इसी वक्त एक गोली आकर कठसे पार हो गई।

द्वारपाल इस तरह आपसमे बातचीत कर रहे थे, इसी समय शोर उठा "आ गये आ गये"। सभीकी आँखे उस तरफ लग गई। बाजारकाह (घासबाजार)की ओरसे हाथ-गर्दन बाँधे चार किसानोंको रेगिस्तानमे लाकर डडोसे मारने लगे। फिर उन्हें लाकर तखतपूलके नीचे खडा किया। पाँच मिनट न गुजरने पाया था कि कुशबेगीके यसावुलबार्शीने दौडा-दौड़ा जा तब तक दम न मारा, जब तक कि आर्कके बाहर निकल उनके पास न पहुँच गया। उसने तुरत हुकुम दिया—इन नमकहराम बागियोको बाजार-रेसमॉमे ले जाकर जनाबआलीके सिरके सदके करो।

दो जल्लाद मीरशबके आदमियोके साथ हुए और दर्वाजासे पचास कदम ले जाकर उनके शिरोको भुट्टेकी तरह काट दिया। मीरशबके आदमी "सेवा" बजा लानेके बाद दर्वाजापर आ सलाम करके यसावुल-बार्शीके सामने खड़े हो गये।

—मीरशबके कत्ल करनेवाले यही बाग थे न? यसावुलबार्शीने पूछा।

मीरशबके आदमियोंमेसे एकने जवाब दिया—नही, तक्सीर (क्षमानिधान!) गुलाबियाँके किसानोने बोलशेविक लश्करके साथ होकर एक बार आक्रमण किया था। उसीमे मीरशबको घातक गोली लगी। फिर पीछे वह गुलाबियाँकी तरफ लौट गये। हमने सावधानीके लिये किलेसे दर्वाजाकराकुल तक देख भाल की। दर्वाजा-कराकुलके पास ये चार किसान हाथ लगे, इन्हे हम गिरिफ्तार कर लाये।

—बहुत अच्छा किया। अगर इनके हाथमे भी हथियार होता और इन्हें अवसर मिलता तो शहरपर हमला करनेसे बाज न आते। कहावत है "दुश्मन सिरकटा बेहतर"

× × ×

सोमवार, मगल, बुध (३०,३१ अगस्त और १ सितम्बर १९२०) इन तीन दिनोमे सारा बुखारा उलट-पलट गया। शहरके कोने-कोनेमे

खाक और धुएँके बीचमेंसे आगकी लपट उठ रही थीं। झुंडके-झुंड नागरिक दरवाजा-इमाम उग़लानकी तरफ जा रहे थे। बुधके भोर ही कुशबेगीके यसावुलबाशीने आर्कके फाटकपर आ घोड़ा माँगा और तोपचीबाशीको ताकीद की—आप दरवाजेकी खूब देख-भाल करें। खुद मै जगमे शामिल न होऊँ, यह कैसे हो सकता है?—यह कह घोडेपर सवार हो वह दर्वाजा-इमामकी ओर रवाना हुआ।

—ओ यसावुलबाशी! जग इस तरफ है—कहकर तोपचीबाशीने दरवाजा-कवालाकी ओर इशारा किया।

यसावुलबाशी घोड़ेको बिना रोके या मुँहको बिना उस तरफ फेरे सिरको ऊँचे-नीचे हिलाते "जानता हूँ जानता हूँ" कहता अपने रास्तेपर चला गया।

बुधकी शामको आर्कके बाकी बचे निवासी भी "अमीर भाग गया, अब हम यहाँ रहकर क्या करेगे? जल्दी अपना रास्ता लेना ही ठीक है" सोचकर दो-दो चार-चार करके आर्क छोड़कर चले गये।

× × ×

आज गुरुवार और सितम्बरकी दूसरी तारीख थी। दालानमे आने-जानेवाले पैरोकी आहट सुनाई देती थी, लेकिन रेगिस्तानकी चारो ओरके बाजारो 'आर्कके चक्करकी सड़को' और उसके नीचेकी हवेली—जहाँ कि अमीरका माल-महकमा था—आर्कके अन्दर हर जगह खासकर अमीरके गद्दीघर और रनिवासमे आगकी ज्वालाये लपलपा रही थी।

यादगारने देखा कि सारी बाते बदल चुकी हैं, लेकिन अब भी आबखानाके द्वारमे मोटा ताला लगा हुआ है। अब तक उसे बदी होनेका भय नही था, लेकिन अब आगमे जलकर बिना नामोनिशानके दुनियासे उठ जानेका भय सामने आया। इस आगके समुद्रसे अपनेको उबारनेके बारेमें उसने बहुत सोचा, लेकिन कोई रास्ता नहीं सूझा। लोहेके पिंजड़ेमें

बद शेरकी तरह वह व्यर्थ ही चारों ओर नजर डालता और सारी शक्ति लगाकर किवाड़ोंको धक्का दे रहा था। उसने बहुत कोशिश की, कि छतके नीचेके छेदको बडा करे, लेकिन बेकार। दीवारकी ईटोको हटानेका प्रयत्न किया, लेकिन नाखूनोको तुड़ा डालनेके सिवा कोई लाभ नही हुआ। और जोरसे चिल्लाया, पर किसीने नही सुना। वस्तुतः वहाँ उसकी चीख-पुकारको सुननेवाला कोई प्राणधारी रह नही गया था।

दालानसे फिर पैरकी आहट आई। यादगारने दौड़कर किवाड़के दरारोसे देखा एक बूढा जिसके हाथमे बड़ी-बड़ी कुजियोका गुच्छा है, नीचेकी ओर जा रहा था। यादगारने चिल्लाकर कहा—"ओ चचा! भगवानके वास्ते मुझे निकाल दो। इस समय मै यहाँ किसके हाथ और अधिकारमे बदी रहूँ?" लेकिन सत्तर-साला बूढेने शायद बुढापेसे या बदहवासीसे यादगारकी आवाज न सुनी या सुनकर भी एक बदीको आगसे बचानेकी आवश्यकता नही महसूस की। आबखानाकी तरफ उसने निगाह-तक नही डाली और चला गया।

मिनट-मिनट बीतते जा रहे थे और आगकी ज्वाला आबखानाके नजदीक आ रही थी। छेदसे धूल और धुआँ भरी हवा अदर आ रही थी। यादगारको विश्वास होने लगा, कि चद मिनट या घटेमे उसके प्राण जानेवाले है। वह हसरतके साथ सोचने लगा—"हा अफसोस! सद अफसोस! स्वतन्त्रताके दिनके नजदीक आनेपर भी मै उस देखे बिना ही जलने जा रहा हूँ! अब्दुल्ला खोजाकी वसीयतको पूरा न कर सका। दर्राहिहॉमे जा वफादार गुलनारको देखनेसे हमेशाके लिये महरूम हो रहा हूँ:

यदि यह भीषण अग्नि तन जलाये मेरा,
ले जा ऐ वायु, प्रियाके पास मेरी राख उड़ाकर।

कहते पूर्वी कवियोकी तरह हवाको दूत बना उसके हाथमे वसीयत की। इसी वक्त किसीने "चिन्ता न कर, तुझे जीवित और अक्षत तेरे

इच्छित स्थानपर पहुँचाता हूँ" कह कुल्हाड़ेकी एक चोटसे आबखानाके द्वारकी जञ्जीरको तोड़ फेका और फिर अदर आकर "जिन्दाबाद इन्किलाब और आजादी"का नारा लगाया। एक मिनटके अदर ही उसने यादगारको पीठपर उठा बाहर रख दिया।

कुछ मिनट पहले यादगारको छोड़कर चले गये बुड्ढेको—जिसके हाथमे अब भी कुजियाँ मौजूद थी—दो आदमियोने गिरिफ्तार कर रखा था। यादगारको मुक्त करनेवाले आदमियोने बुड्ढेकी ओर निगाह करके "मीर कुशबेगी ! खजानेकी कुजीको इधर मुझे दे दीजिये और कृपा करके इस घरमे आ इस बदीका स्थान लीजिये। जीवनको अन्तमे कमसे कम एक दिन तो अपने बनाये इस प्रासादकी हवाका तजर्बा करके देखिये, जिसम कि दुनियासे हताश होकर न जाना पड़े"—कह कर उसे आबखानामें बद कर दिया।

यह थे बुखाराके बोलशेविक जो लाल फौजके साथ सबसे पहले अमीरके आर्कमे दाखिल हुए।

११

पुराने मित्र

यादगार अब स्वतन्त्र था और स्वतन्त्रतापूर्वक हर जगह जा सकता था। लेकिन कहाँ जाय इसका उसे पता न था, खासकर बेगाना शहरम, जिसकी अवस्था इन चन्द दिनोमे बिल्कुल दूसरी हो गयी थी। वहाँ अब भी जगह-जगह आग जल रही थी, जिससे गलियोमे चलना मुश्किल था। वहाँ सैनिकोको छोड़ हर अपरिचित आदमीकी बहुत खोज-पूछ होती थी, लेकिन यादगारके हाथमे एक पास था, जिसपर लिखा था "इस पासको रखनेवाला यादगार बाजारज़ादा अमीरके जेलसे मुक्त किया गया है, हर सैनिक या नागरिक सिपाहीको चाहिये, कि इसकी गति-विधिमे रुकावट

न डालें और आवश्यकता पड़नेपर किसी तरह की सहायता देनेमें उठा न रखें"। पासपर महकमेंकी मुहर और हस्ताक्षर थे। यदि यह पास न होता, तो यादगार अवश्य पकड़ा जाता।

दिन तो यादगारने किसी तरह घूमते-फिरते काट दिया, सध्या आयी, किन्तु शिर रखनेके लिये कही जगह न थी। घूमते-फिरते वह दरवाजासे बाहर गया। नगरके बाहरकी कब्रे उसके सामनेसे गुजरी। फिर लौट कर शहरमे आना चाहा, लेकिन दरवाजेके पासबानने रोक दिया। यादगारने जेबसे पास निकालकर दिखलाया। पासवानने अच्छी तरहसे हस्ताक्षर और मुहरको देखा और फिर कहा—साथी! तुम जहाँ चाहो जा सकते हो।

यादगार पासको जेबमे रख सड़कपर जा रहा था, कि इसी समय कानोमे आवाज आई "हाँ-हाँ, दाखुन्दा! अभी तू जीवित है?" आवाज सुनकर यादगारने पीछे फिरकर देखा। एक आदमी अपना पास पासबानको दिखला रहा था और उसकी नजर यादगारकी तरफ थी। यादगार पहिचान न पाया, इसपर उस आदमीने फिर कहा—क्या मुझे नही पहिचानता, दाखुन्दा?

—पहिचाना सा मालूम होता है, किन्तु कहाँ, याद नही आता।

—क्या जिन्दान और वहाँसे भागनेको भूल गया?

—हाँ-हाँ, अब याद आया, तू फरमान तो नही है?

—हाँ वही (पासबानसे पास लेकर) आ घर चले।

—घर कहाँ है?

—यहाँ ही नज़दीक, दिलकुशा, बैरून गाँवमे।

—खूब, चलो चलें।

दोनों शहरके दरवाजेसे बाहर निकल बायी तरफ घूमकर उस मैदानके किनारेसे निकले, जहाँ दस साल पहिले यादगारने परेड की थी और बेंत खाये थे। मैदानके बाद वे गाँवमें पहुँचे। बादशाही चारबागके

सामने एक छोटी हवेली मिली, जिसके आगे फाटक और हौज था। यह फरमानकी हवेली थी। दोनो अन्दर दाखिल हुए। फरमानने हौजके किनारे कालीन बिछा अपने पुराने मित्रको बैठाया, फिर भोजन, जल ले आ भूखसे तड़फड़ाते यादगारके पेटको तृप्त किया। अन्नने शक्ति दी और यादगारका मुँह खुलने लगा। पहिले उसने माँके बारेमें पूछा।

—बेचारी डोकरी मर गयी—फरमानने कहा।

—ऐ वाय! कब मरी—कहकर यादगारने शोक प्रकट किया।

—उन्ही दिनो मरी, जब तुम लोगोके साथ भागनेका दिल न कर मै जेलमे बैठा रहा। इस वफादारीके बदलेमे मुक्त करनेकी बात तो दूर उन्होने ले जाकर मुझे कानाखानामे डाल दिया।

—कानाखाना क्या?

—रेगिस्तानसे आकर तख्तपूल होते आर्क जाते है। इसी तख्त-पूलके नीचे एक बन्दीखाना है, जिसका नाम है कानाखाना। इसका द्वार पुराने कूरखाना (अस्त्रागार)—जिसे आज कल कब्तूनखाना कहते है—की ओर खुलता है। इस कोठरीमे न हवाका रास्ता है, न रोशनीका। सीड इतनी, कि एक घटामे हड्डी पार कर जाती। ज़िन्दान और आबखानामे पिस्सू हैं, इसमे जितने उतने ही काना (खटमल) हैं।

—कानोने तुझे नोचा नही?

—क्यो नही नोचा, एक रातमे शिरसे पैरतक काटकर शरीरको चींटीका घर बना दिया। गर्दन, शिर और चेहरा फूलकर पेट और कधेसे एक हो गया।

—कब तक वहाँ रहा?

—बहुत देर नही रहा। यदि वहाँ एक सप्ताह भी रह जाता, तो जीता न निकलता।

—तो फिर कैसे वहाँसे छुट्टी मिली?

—वहाँसे उन्होंने मेरी माँको खबर देकर डरवाया—"अगर तुमने

लडकेको जल्दी न छुड़ाया तो मर जायगा"। माँ चारों ओर दौड़ी, लेकिन बिना पैसेका काम कैसे चलता? लाचार इस चारबाग (मेवाबाग)का आधा एक काजीके हाथमे बेचकर पैसेको यसावुलबाशी, तोपचीबाशी, मीरशब और मीरगजबमे बाँटकर मुझे छुडाया।

—खूब, और माँ मरी कब?

—जब मै छूटकर घर आया तो माँ की अवस्था ऐसी खराब थी, कि वह मुझे पहचान न सकी। मेरी हालतको सुनकर वह अफसोसमे बीमार पड़ गयी थी और उससे जिन्दा न उठ सकी। नही जानता, मेरी मुक्तिसे उसे शादी-मर्ग (अतिहर्षकी मृत्यु), या मुझे बुरी हालतमे देखकर गुस्सा-मर्ग (चिन्ताकी मृत्यु) हुई।

—और वह धोखेबाज जतर-मतरवाला क्या हुआ?

—पीछे उस शैतानकी इतनी प्रसिद्धि हुई, कि अमीर, वजीर और दूसरे हाकिम उसके मुरीद और भक्त बन गये। गरीब अजान आदमियोमे भी उसकी इज्जत बडी बढी। जिस किसीके शिरमे दर्द होता या माल चोरी जाता, वह उसके पास दौडता। नर-नारियोको वह लूटता, बाँझ औरतोको सन्तानके लिये जतर देता। क्या बतलाऊँ, उसने अमीरके बड़े हाकिमो और मास्को जानेवाले सौदागरोकी तरह बहुत धन जमा कर लिया। जदीदोके झगडे और क्रातिके आरम्भ होनेपर उसका प्रभाव और बढा। वह मुल्लाओका मुखिया बन गया। अगर उसे मालूम हो जाता, कि तुम जदीदो और बोलशेविकोके बारेमे अच्छा ख्याल रखते हो, तो अमीरसे कहकर मरवाता। अगर किसीको देखता, कि उसके पास धन-दौलत है, तो उसपर जदीद और बोलशेविक होनेकी तुहमत लगाकर उसकी सम्पत्तिको अपने हाथमे करता। जब अवस्था और गम्भीर हो गयी, तो "मै ऐसी तावीज लिखकर दूँगा कि बोलशेविकोकी तोप और तुफगका कोई असर न होगा" कहकर, अमीरके दिलको भी भर दिया। खुद कमरमे तलवार बाँधकर चापलूस मुल्लोको अपने पीछे दौड़ाते जगी

परेड भी कराता फिरा। कल सुना कि वह अमीरके भागनेपर हजारों धोखोसे जोड़ी दौलतको हसरतके साथ छोड़ शिर-पैरसे नगा शहरसे भाग गया।

—उसका नाम क्या था?

—मुल्ला कुतुबुद्दीन।

× × ×

"भाइयो! आइये चलिये, शहरमे चलनेकी जरूरत है। शहरमे कई जगह ताजा आग लगी हुई है। नई सरकार हर आदमीसे आग बुझानेमे सहायताके लिये पुकार करती है" इस आवाजको सुनकर यादगार और फर्मान जाग उठे। यह आवाज गाँवके चौकीदार (पायकी)की थी।

यादगारने पूछा—कल तोपके गोलोसे जगह जगह आग लग गयी थी, आज यह ताजा आग कैसी?

—क्या तू समझता है, कि अमीर भाग गया, तो उसके सारे पिट्ठू भी खतम हो गये? नही, अब भी अमीरके कितने ही पिट्ठू और पक्षपाती फटे कपडे पहन, गरीबो जैसा बन शहरमे हर जगह आग लगाते फिर रहे हैं।

—तो आओ, हम भी आग बुझानेके लिये चले—यादगारने कहा।

—पहले हाथ-मुँह धोकर चाय पीते हैं, तब तक लोग भी जमा हो जाते हैं, फिर उनके साथ हम भी चलेगे।

एक घटा बाद कुर्बून और सगसब्जका रास्ता आग बुझानेके लिये जानेवालोसे भर गया।

कुर्बून, मुर्गासून, जबाजकागज, सगसब्जा, बुलामखोरान और दूसरे गाँवोसे आये किसान शहरकी ओर जा रहे थे। यादगार और फरमान भी दिलकुशावालोके साथ आग बुझाने गये।

१२

जनताका बदला

साधारण क्रान्तिकारियो, लालसेना और खासकर शहरके पड़ोसके मजूरों-किसानोंके सम्मिलित श्रमसे आग बुझा दी गयी। नये और पुराने ससारके सघर्ष और भयानक अगलग्गीके बाद बुखारा नगरने ध्वसावशेषका रूप धारण किया था, तो भी स्वतन्त्रताके आनन्दोत्साहने शहरमे विजयोत्सवका रग लिया था। हर मकानके ऊपर एक लाल झडी लगी थी और हर कूचेके छोर पर नारे लिखे कपडे लटक रहे थे। पाँती पाँती और झुण्ड-झुण्डमे लोग "जिन्दाबाद आजादी" "पायन्दाबाद सोवियत-सरकार", "नैस्तबाद अमार व अमीरा' क नारे लगाते हर तरफ घूम रहे थे। हरेक आदमीकी बाँहमे एक टुकडा लाल कपडा और हरएककी छातीके ऊपर एक लाल गुलाब—स्वतन्त्रताका प्रतीक लगा हुआ था और इस तरह शहर लाल और लालाजार हो गया था। हाँ, बुखारा शहर लालाजार बना था और आँधी बिजलीके समाप्त होते ही वह खिल उठा था।

यादगार बहुत खुश था। उस खुशीमे और वृद्धि हुई थी—स्वतन्त्रता-दिवसमे जन कोषसे उसे पोशाक और जूता दिया गया था। वह प्रसन्न हो चारो तरफ घूम और हर चीजसे आनन्द-अनुभव ले रहा था। यादगारको इस विजय-दिवसकी खुशी मनानेका सबसे अधिक हक था। उसने अपनी उम्र दासता, अत्याचार और अपमानमे बिताई थी। अपनी मेहनतकी कमाईको वह कभी न पा सका था। आज उसके लिये सभी चीजे खुली थी, उसे आज सबसे अधिक खुशी करनेका हक था। उसने अपनी जिन्दगीकी हरियाली और यौवन-बसन्तके इन पिछले दस सालोको हवा और दरवाजासे रहित जिन्दान और प्रकाशहीन आबखानामे गुजारे थे। उसे सबसे ज्यादा हक था, कि स्वतन्त्रताके स्वच्छ प्रातः समीरका

आनन्द ले। आखिर खानेका मजा भूखके बाद और पानीका रस प्यासके पश्चात् मालूम होता है।

× × ×

"दौड़ो-दौडो, काज़ीकलॉ और रईसकलॉको गिरफ्तार करके लाये हैं" इस आवाजको सुनकर शहरकी गलियॉ और सडके भर गयी और जन-समुद्र रेगिस्तानकी ओर उमड पडा। याद्गार आबखानामे रहते वक्त काजी और रईसके रोब और दबदबेको खुद देख चुका था, उनकी निर्दय हत्याओ और पाशविक अत्याचारोको क्रान्तिकारी बन्दियोके मुखसे सुन चुका था। उसकी इच्छा हुई, कि आज उनके गिरफ्तारीको भी ऑखोसे देखे, इसलिये वह भी आगे-आगे दौड चला। फिर आवाज आई "यह ला रहे हैं"। दौडनेवालोने कदम रोक दिया। यदि रेगिस्तानके आस पासके मकानोको जलाकर आगने मैदानको विशाल न कर दिया होता, तो तमाशबीनोकी भीडमे कुछकी मौत हुए बिना न रहती। रेगिस्तानके मैदानमे सूई रखनेकी जगह न थी।

पुलिसने नर्मी लेकिन चतुराईसे रास्ता बनाया। लोग दोनो ओर दोहरी पॉतीमे खडे हो गये। अगली पॉतीमे बूढे और अत्याचार-पीडित लोग खडे थे, जिनमे अधिकतर वेवाये, यतीम बच्चे, पुत्रोको खोये माता-पिता थे। एक बेवा स्त्रीने कहा—इन्होने मेरे पतिको कत्ल किया, घर और मालको छीनकर छोटे बच्चोके साथ मुझे बाटकी भिखारिन बना दिया।

एक सत्तर साला बुढा कह रहा था—ये मनुष्यके रूपमे वही भेडिये हैं, जिन्होने मेरे तरुण पुत्रको मारा और खिदमताना कहकर मेरा सारा माल हडप लिया।

इसी तरह दूसरे भी उनके अत्याचारोकी करुण-गाथा सुना रहे थे।

"यह है काजीकलॉ बुरहानुद्दीन"—कहकर किसीने उसकी ओर अगुली उठायी।

यादगारको अपनी आँखोपर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि उसने काजीकलाँको जरबफ्तके ज़ामामें जरदोजीके ज़ीन और चौदह जुल्फोंवाली सुनहली लगाम लगाये स्याह मुश्की घोड़ेपर सवार देखा था। और अब वह सिर-पैरसे नंगा पगडी गर्दनमें लटकाये पैदल चल रहा था। हाँ, आज भी काजीकलाँने अपने पद और दर्जेकी मर्यादा अपने हाथमें रखी थी। वैभवके जमानेमें भी वह दूसरोंके आगे आगे चला करता था और आज हिसाब और इन्साफके दिन भी गिरिफ्तार करनेवालोंके आगे-आगे चल रहा था।

"यह है रईसकलाँ मुसन्निफ"—किसीने कहा।

—ईशान रईस ! तेरे नायब और दर्रा (चाबुक) वाले कहाँ हैं ? अब क्यों नहीं लोगोंको पिटवाता ?—यह आवाज एक दस बरसके बच्चेके मुँहसे आ रही थी, जो मानो उस दिन जनताके भावोंको प्रकट कर रही थी।

"यह है यूसुफ बाय ! यह करशीबेक, यह मिर्जा उस्मान" कहकर लोगोंने बन्दियोंकी ओर इशारा किया। आज बुखाराके लोग अन्तिम बार शहरके मैदानों और "मनु पुत्रोंके स्वामियों" की अगवानीके लिये आये हुए थे, लेकिन अबकी बार वह पहलेकी तरह सीनापर हाथ बाँधे डरते-काँपते सलाम और कोरनिश नहीं कर रहे थे, बल्कि सलामकी जगह घृणा और कोरनिशकी जगह अपमान प्रकट कर रहे थे। यदि हथियारबन्द सैनिक अपराधियोंको चारों ओर घेरकर न बचाते, तो जनताकी बदलेकी आग एक क्षणमें उन्हें जलाकर खाक कर दिये होती।

१३

लोभ

"काजीकलाँ, रईसकलाँ, अमीरके दूसरे बड़े दरबारी और सरकारी

अफसरोकी पूछ ताछ खतम हुई। आज या कल फैसला और सजा होगी" यह आवाज लोगोको उस हवेलीसे दूर करनेमे सफल न हुई, जहाँ कि काज़ीकलाँ और उसके साथी कैद थे। सभी अधीर हो प्रतीक्षा कर रहे थे, कि जल्दी इन जालिमोका बेड़ा गर्क हो, जिन्होने कि हजारों बेगुनाहोंका खून बहाया, खान्दानोको बरबाद, घरोको उजाड़ और घरवालोको आश्रय-हीन कर दिया। वह उन्हे अदालतके द्वारपर हाथ बँधे परेशान देखना चाहते थे और ये चाहनेवाले वही अत्याचार पीड़ित नर-नारी थे, जो चन्द रोज पहिले मनाया करते थे "हे भगवान्! यह काजी और मुफ्ती, शाह और वजीर हाथ बधे कब अदालतके सामने परेशान देखे जॉयगे।" आज उनकी यह अभिलाषा आखिर कमकरोके प्रयत्न और वीरतासे पूरी हुई।

काजीकलाँको बन्द रखनेकी जगहसे निकाल सीधे उसकी हवेलीमे ले गये—उसी हवेलीमे जहाँसे वह और उसके बाप-दादा शासन करते आये थे। लोगोको ख्याल आया, कि उसे उस जगह ले जाकर साबित कराना चाहते हैं, जहाँसे उसने हजारो बेगुनाहोको मारनेका हुक्म दिया था। लोगोने उस हवेलीको घेर लिया। सिपाही लोगोंके भीतर आनेमे बड़ी कड़ी रुकावट डाल रहे थे, तो भी कुछ तमाशबीन अन्दर घुस गये, जिनमे एक यादगार भी था।

लेकिन वहाँ कोई अदालत या कचहरीका इजलास नही था। सिर्फ थोडेसे नई हुकूमत—हुकूमत शोराई—के अधिकारी थे, जो कि हवेलीकी चीजोका नाम कागजपर दर्ज करनेमे लगे थे। उनमेसे एकने—जो कि उनका सरदारसा मालूम होता था—कुञ्जियोका एक गुच्छा काजीकलाँके सामने रखते हुए कहा—लीजिये, सन्दूको और खजानोको अपने हाथसे खोलकर पचास सालसे यहाँ जमा होती बहुमूल्य-वस्तुओको एका-एक करके बतलाइये।

काज़ीने कार्य-आरम्भ करनेसे पहिले निवेदन करते हुए कहा—दादर (भैया)! यदि एक सिगरेट हो, तो दया कीजिये।

सरदारने एक सिगरेट दे दिया। क़ाज़ीकलाँने लेकर पीना शुरू किया और सरदारकी ओर निगाह करके कहा—दादर! आपने अपनी आँखों देखा, कि मैं सिगरेट पीता हूँ। अब मेरे जदीद (नवीन) होनेमें कोई शक-सुबहा नहीं हो सकता। भगवानको देखता-सुनता जानकर सच्चाईपर पर्दा न डालियेगा और ऊपरके अधिकारियोंको बतलाइयेगा, कि मै जदीद हूँ, सिगरेट पीता हूँ। शायद इससे मेरी सजा कुछ हल्की हो जाय। इलाही सलामत बाशीद!

सरदारने काज़ीकलाँके निवेदनके जवाब मे "बहुत अच्छा" कहते यह भी कहा—आगे आइये, किवाड़ोको खोलिये।

काज़ीकलाँने छोटे मेहमानखानाकी देहलीके द्वारका ताला खोला। सरदारके भीतर जानेके बाद खुद पहुँचकर देखा कि एक ओर एक जोड़ा पुराना जूता पड़ा है। उसने सरदारसे कहा—दादर! भगवान आपकी दौलतको इससे भी ज्यादा बढाये। इस जूतेको बख्श दीजिये। देख रहे हैं न, मेरा जूता चिंदी-चिंदी उड गया है, राह चलते पैरसे निकलकर मुझसे भी एक कदम आगे चलता है।

सरदारने देखा कि उसका जूता सचमुच फट गया है और उसके पजे जूतेकी नोकसे निकले हुए हैं, "खूब पहन लीजिये" कहकर उसने इजाजत दी। काजीने अशर्फी भरा घड़ा पाये भिखारीकी तरह अत्यन्त प्रसन्न हो जूतेको पहिना और फटे जूतेको भी अपनी बगलमे दबाकर दोनों हाथोको ऊपर उठा सरदार और उसके बच्चोको दुआ की।

पहिले गजीना (निधि)को खुलवाया। इसका द्वार देहली के अन्दर और पीठ मेहमानखानेके अन्दरसे लगी हुई थी। यहाँ सन्दूकोमे सोनेकी अशर्फियाँ, सिल्लियाँ, रेत और चाँदीकी ईटे भरी थी।

चीजोके कागजपर दर्ज कर लेनेके बाद सरदारने ताला बन्दकर अपने हाथसे मुहर की और फिर कुजीको क्रान्तिकारी सरकारके अनुसन्धानकके हाथमें दे दी।

इसके बाद बड़े मेहमानखाने (बैठक)से अन्दर घुसे। वहाँ जमीनपर बिछे बहुमूल्य कालीनों, गद्दों और मसनदोंके सिवा और चीजें न थीं, सिर्फ ऊपरी द्वारके पास सिरहाने एक लकड़ीकी लिखनेकी सन्दूक थी। काज़ी-कलाँने गुच्छेमेंसे एक छोटी कुञ्जी निकाल ताला खोलकर ड्रायरोंको बाहर खींचा। ऊपरी ड्रायरमें निकोलाकी सरकारके रूसी नोट भरे थे और निचलेमें बुखाराके तंके।

उपस्थित लोगोंमेंसे एक बोल उठा—यह वही सन्दूक है, जिसमेंसे होकर बुखाराके कमकरोंकी पसीनेकी कमाई पचीस साल तक अमीरके खजाने और काजीकलाँके गञ्जीने (निधि)में जमा होती रही।

—हाँ यही सन्दूक है, जिसपर बुखाराके गरीबोंके भाग्य, धन, प्राण, प्रतिष्ठा, मान, स्त्री और बच्चोंकी लूटपर हस्ताक्षर किया जाता, मुहर लगा करती—कहकर दूसरे आदमीने पहलेकी बातका समर्थन किया।

सन्दूककी चीजोंकी लिखा-पढी होने और मुहर लग जानेके बाद तहखानेका ताला खोला गया। यहाँ फर्शसे लेकर छत तक चमडेके सूट-केस और लोहेके ट्रक भरे हुए थे। इनमेंसे कुछमें सोने और चाँदीके थाल कटोरे, तश्तरी, प्याले और सुराहियाँ थी, जिनपर बुखाराके कारीगरोंने हीरा, पन्ना, पोखराज जैसे बहुमूल्य पत्थरोंको जड़कर अपनी आश्चर्यकर शिल्प-चातुरीका परिचय दिया था। उनमेंसे कुछपर लिखा था "यह सामान महाइम्पेरातोर (जार)के महादरबारमें जनाबआलीकी यात्राके लिये निर्मित"। कुछ सन्दूकोंमें सुन्दर छोटे-छोटे बक्सोंके अन्दर स्त्री-प्रसाधनके सामान थे, जिनपर लिखा था "सम्माननीय महाइम्पेरातोरकी गृहिणीके लिये"। एकपर लिखा था "बराय सैर व सियाहते-जनाबआली दर इशरतगाह यालूता वर्गसब्जगोयान् तैयार करदः"।

सूटकेसोंमें तरह तरहके बहुमूल्य जामे व पोशाकें थीं—हिसारवाले इलाचा अब्र, मुल्ला कर्शीवाले शाही, कज़ाकी लिबास, बुखारी और फिरंगी गुले-मखमल, मास्कोके कुन्दल और कमखाब इत्यादि इत्यादि, जिनकी

सख्या हजारसे भी ज्यादा थी। कुछ सूटकेसोंमें बारीक ढाका (मलमल) थे, जिनसे बधी एक पगड़ी भी तैयार थी। बधी पगड़ीको देखकर क़ाज़ीकलोने सरदारसे प्रार्थना की—हादर! मेरे साथ एक और नेकी कीजिये, इस बधी पगड़ीको देनेकी कृपा कीजिये, मेरा सल्ला बहुत मैला हो गया है।

सरदारने उसकी भी इजाजत देदी। काज़ी पगड़ीको शिरपर रख सल्ले (साफा)को भी कमरसे लपेटने लगा। वह बीस गजसे भी ज्यादा था, जिसको लपेटनेके लिये वह जल्दी-जल्दी चक्कर काटने लगा। नयी पगड़ी मिलने और सल्लाके भी हाथमे रहनेसे काजी इतना खुश होकर चक्कर काट रहा था, कि देखनेवाला समझता, वह नाच रहा है।

सारे कामक पूरा हो जानेपर रक्षक काजीकलाको हवालात-घरकी ओर ले चले। घरसे बाहर निकलनेपर काज़ीने फिर सरदारसे एक सिगरेट लेकर पिया और इसे अपने जदीद होनेके प्रमाणके तौरपर कलके इजलासमे कहनेके लिये सरदारसे अर्ज किया।

सरदारने चीजोकी सूची अपने लेखकके हाथमे दे उनमेंसे कुछको अलग रखनेके लिये कहा। लेखकने सूचीपर सरसरी तौरसे नजर दौड़ा चकित होते कहा—इस कूलाबी (कूलाबवाले)ने बहुत जखीरा जमा कर लिया था।

किसीने उसे टोकते हुए कहा—कूलाबी और जखीराका कोई सम्बन्ध नही। मै भी कूलाबका रहनेवाला है, लेकिन आजतक कभी पेटभर खानेको रोटी नहीं मिली।—यह कहनेकी अवश्यकता नही, कि यह टोकने वाला था यादगार या बुखारियोके कथनानुसार दाखुन्दा।

एक दूसरे आदमीने भी बातमे सम्मिलित होते कहा—जखीरा किया सो किया, जो भी हो, अब यह जखीरा असली मालिकके हाथमे गया; लेकिन मुझे आश्चर्य इस बातपर होता है, कि कल इसका मुकदमा है। कमकरोकी अदालतसे सौ जान होनेपर भी यह एक जानको भी नहीं

बचा सकता, यह वह खूब जानता है, फिर किस लिये यह जूता और पगड़ी ? और बगलमे दबाये पुराने जूते को क्या करेगा !

सरदारने जवाब दिया—"गाय मरे भी तो भी उसकी आँखकी मैल नही जाती", यह लोभ हिर्स है। इस हिर्सने काजीकलोंसे इतनी चीजे जमा करवायी। इसी हिर्सने उसे लोगोंके खून बहाने, उनके मालको लूटनेके लिये प्रेरित किया। इसी हिर्सने इसे आजका दुर्दिन दिखलाया और यही हिर्स है, जो इसे कब्रकी तरफ खीचे लिये जा रही है। फिर कैसे हो सकता है, कि यह उस हिर्ससे जुदा हो।

१४

वकील-मुख़्तारके कारवांके साथ (१९२१)

—किसके साथ तेरा काम है दाखुन्दा—गद्दे पर पल्थी मारे बैठे आदमीने दरवाजेके अन्दर और बाहर सिर करके झाँकते हुए दूसरे आदमी से पूछा।

—वकील-मुख्तारके साथ।

—क्या ! काम है ?

—मैंने सुना है, कि जो चाहे सो वकील-मुख्तारके साथ कोहिस्तान जा सकता है। मै भी कोहिस्तान जाना चाहता हूँ।

पल्थी मारे आदमीने दाहिने पैरको सीधाकर बायेपर बैठ एक कागजको बाये हाथमे ले दाहिनी जाघको लिखनेकी मेज बना हाथमे कलम लेकर पूछा—तेरा नाम क्या है ?

—यादगार।

—आपका नाम ?

—बाजार।

—कहाँका है ?

—कूलाबी।

—कितने सालोंसे यहाँ रहता है ?

—दस सालसे ज्यादा।

—क्या काम करता था ?

—सैनिक बना, भगा, जेलमें पड़ा, फिर भगा, फिर ज़िन्दान और आबखानामें डाला गया, अन्तमें क्रान्तिके दिन मुक्त हुआ।

—बहुत अच्छा, अक्षर लिख-पढ सकता है ?

—नहीं।

लेखकने अपने पासमें बैठे आदमीके कानोंमें आहिस्तासे कहा—अच्छा है जो लिख-पढ नही सकता, नही तो अपने इस हसब-नसबसे मेरे स्थानपर वकील-मुखतारका मिर्जा (कातिब) बन गया होता। मै और तुम सालों कुशबेगी और काज़ीकलॉके मिर्ज़ाखानोंमें चपत खाते-खाते इस जगह पहुँचे। अगर इन्होने काम सीख लिया, तो ये हमारे मुँहकी रोटी छीन लेंगे और ऊँटकी पूँछ जमीन तक पहुँच जायेगी। अपना काम करते चलो।

कातिबने फिर आदमीकी ओर मुँह करके पूछा—पार्टीमें दाखिल हुआ ?

—आपके कहनेका मतलब नही समझा, क्या कह रहे हैं ?

—कम्युनिस्ट पार्टीमें दाखिल हुआ कि नही ?

—हुआ हूँ, कम्युनिस्ट बोलशेविक हूँ।

कातिबने फिर अपने सहवासीके कानमें आहिस्तासे कहा—उस सारे "फज़्ल व हुनर"के बाद बोलशेविक भी हैं, इलाही तोबा !

सहवासीने कहा—पहिले तो यह, कि बुखारामें बोलशेविकोंकी इतनी चलती बनती नही है, दूसरे यदि सारे बोलशेविक बन जाये, तो फायदा क्या है ?

—नही, ऐसा न कहो शरीक ! तुम जदीदोंके रोबदाबका खयाल कर रहे

हो, उनके अब्री-जहकलानी-अस्तरशाही जामों, शाही पोस्तीनोंकी पोशाकों, टेढे-मेढे सँवारे बालो, सिरपर मलमली पगड़ियों या ताशकी टोपियोंके साथ शासक होनेके दावाको देख रहे हो; लेकिन यह बहुत दिन तक नहीं चलेगा। अन्तमे सारा काम बोलशेविकोंके ही हाथमे जायेगा, क्योंकि उन्हें क्रान्तिकारी कामोंका भारी अनुभव है। इस दाखुन्दाकी ओर अवहेलनाकी दृष्टिसे मत देखो। यह ठीक नहीं है। "तिनकाको तुच्छ न समझ, कही वह तेरी आँखोमे न गिरे"। असली बोलशेविक इन्ही भूखे-नगोंमेसे पैदा होते हैं। रूसियाको इन्ही भूखे नगोने तहोबाला किया। इन्होने ही निकोला जैसे बादशाहको तखतसे बेतखत किया, करेन्स्की और उसके अनुयायियोको मुल्कसे भगाया।

कातिबने फिर दाखुन्दाकी ओर निगाह करके कहा—तू क्या काम कर सकता है?

—जो भी देहकी मशक्कतका काम होगा, करूँगा।

—साईस या घसियारेका काम कर सकता है?

—कर सकता हूँ।

—दो-तीन दिन बाद आकर यहाँसे खबर ले जाना। मै तेरी बातको वकील मुखतारके कारपर्दाजसे कहकर जवाब ले रखूँगा।

× × ×

१६२१की जनवरीका आरम्भ था। मौसम बहुत सर्द था। बरफ पड़ रही थी। बरफकी ढेरने करशी शहरके घरोको छतों तक ढाँककर बरफकी पहाड़ी बना दिया था, लेकिन करशीके जिस मेहमानखानोमे हाकिम ठहरे हुए थे, वह इतना गर्म था कि वहाँ बैठे लोगोको बाहरकी सर्दीका कोई ख्याल नही हो सकता था। मेहमानखानाके सामने साईसों, ताँगाबालों और सवारोका एक गरोह था, जो गीले ईधनको फूफू करके जलाते उसके किनारे बैठ कर हाथ-पैर गरम करनेकी कोशिश कर रहे थे।

"उठ जाओ, जनाब आग़ालक़ आफन्दी आ रहे हैं"—यह आवाज़ मेहमानखानाके द्वारसे एक खिदमतगारके मुँहसे आई। वहाँ बैठे लोग घबड़ाकर सीनापर हाथ रखे "जनाब आग़ालक़ आफन्दी"के सम्मानमे खड़े हो गये। वहाँ सिर्फ एक आदमी था; जो नहीं खड़ा हुआ। वह पैरमे सर्दी लग जानेसे लेटा था। इसी वक्त और ज़ोरकी आवाज आई—ओ दाखुन्दा, आदमी है या जानवर! तुझसे कह रहा हूँ 'जनाब आगालक आफन्दी' आ रहे हैं, उठ।

खिदमतगारकी आवाज़पर दाखुन्दाने खड़ा होना चाहा, किन्तु पैरके दर्दके मारे गिर पड़ा। तब तक "जनाब आगालक़ आफन्दी" शेरकी पोस्तीन पहने दालानसे मेहमानखानाकी तरफ चले गये और खिदमतगारको फिर आवाज दुहरानेकी जरूरत न पड़ी।

एक साईसने दूसरेसे पूछा—यह "तरहून" कौन था?

—पहचाना नही? यह वही नूरदीन खोजा आगालक है जो अमीरके जमानेमे भी कशीके गरीबोके जीवन और मृत्युपर अधिकार रखता था।

—कहा जाता है अमीरके जमानेके कलानो (हाकिमो)के लिये इस हकूमतमे जगह नही, फिर इस आदमीको कैसे जगह मिल गई?—दाखुन्दाने पूछा।

—बात करनेमे बड़ी-बड़ी बाते मारते हैं, लेकिन बात और काममे बहुत अन्तर है। कहा जाता है, यह हुकूमत कमकरोकी है, किन्तु मेहमानखानामे पाल्थी मारकर बैठे इन आदमियोका कमकरोसे क्या सम्बन्ध?—कहकर तॉगावालेने दाखुन्दाको सन्तोषजनक उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद कुरगान (महल)के बावर्चीखानासे आश-पुलाव भरे थाल मेहमानखानाकी ओर आने शुरू हुए। साईस और तॉगावाले बहुत भूखे थे। मुर्ग-मॉसके गरम आश-पुलावसे निकलती भाप और सुगन्धिने उनकी भूखको और बढा दिया। एकने कहा—क्या हमको आश नही देंगे?

—बड़ोंका पेट भरना चाहिये, हमने भापका दर्शन कर लिया, यही बस—तॉगावालेने कहा।

—"पैसेवाला कबाब खाता है और बेपैसेवाला धुआँ"की कहावत सच है।

—सच्ची बात तूने कही—कहते तीसरेने समर्थन किया।

उनकी बात चलती रही। घटा भर बाद "यहॉ हमारी ओर भी निगाह हो" कहकर एक साईसने मेहमानखानाकी ओर इशारा किया। सबकी नजर उधर गयी। उन्होने देखा, सचमुच खिदमतगार खाकर छोड़े आशको उनकी ओर ला रहे हैं।

आश आया। यद्यपि वह ठडा था और ऊपर घी बरफ़की तरह जम गया था। तो भी साईसों और तॉगावालोंने पेटभरकर खाया "पेट भरा गम गया" कहकर उन्होने धन्यवाद दिया।

—पानी लेकर पीऊँ—कहकर उनमेसे एक खड़ा हुआ।

—हाथ धोनेके लिये मै पानी चाहता था, जब नही मिला तो अन्तमे बरफसे धोया, तू भी पानीकी जगह बरफ पी—कहकर दूसरेने रास्ता बतलाया।

—नही, ऐसी सर्दीमे बरफ आदमीको बीमार कर देती है। मेहमान-खानामे जा, वहॉ शायद पानी हो—कहकर तीसरेने सलाह दी।

प्यासा आदमी मेहमानखानाके द्वारपर गया, लेकिन उसे अन्दर जानेकी हिम्मत न हुई और वहॉ खड़ा रहा। अन्दर महफिल गरम थी—तूकसाबा आफन्दी! इन्तुखीन (इस तरह) आप भी हिसार और कुलाब वालोके बारेमे इन्तुखीन बहुत जानते हैं—मेहमानखानामे प्रमुख स्थानपर बैठे आदमीने कहा।

—खुश, आपके सिरकी कसम तकसीरजान आफन्दी, तुक़साबा न कहिये।

—लेकिन क्यों आप, इन्तुखीन, तुकसाबा कहे जानेसे इन्तुखीन रज होते हैं।

—तुकसाबासे रज नहीं होता, लेकिन जमाना बुरा है।" "अमीरके जमानेमे ईनाक था, तुकसाबा था, यसावुलबाशी था" यह कहकर पुराने अमलदारोंसे घृणा करते हैं, "जमीनको पानी और आदमीको गप बरबाद कर देती है"की मसल मशहूर है, यदि इस तरहकी बात चल गयी, तो खुद आप भी मुझे धत्ता बतलायेंगे।

—नहीं, खुदा न करे! शोरायबुखारा इन्तुखीन हकूमत खल्क-बुखारा इन्तुखीन है, इन्तुखीन बातोको इन्तुखीन अपने दिलमे जगह न दीजिये। हमारी हकूमत पुराने अमलदारो और बाय लोगोसे भी लाभ उठाना चाहती। है। जो कोई भी, इन्तुखीन, हकूमतकी सच्चे दिलसे सेवा करता है, इन्तुखीन सर्व-साधारण विशेषकर कमकरोके लाभको, इन्तुखीन, सामने रखता है, वह हमारी हकूमतका, इन्तुखीन, शिरोमणि होगा। इन्तुखीन मिर्जा इस्माइल दीवानबेगीको इन्तुखीन नहीं देखा। यद्यपि अमीरके जमानेमे वह दरबारका समीपी दरबारी था, इन्तुखीन अमीरका सारा आमद-खर्च उसके हाथो होता था, यहाँ तककी युद्धके समयमे भी इन्तुखीन सेनाके हथियारोका वही वकील था, लेकिन जब उसने अपनी साफदिलीका हमे सबूत दिया, तो उसे शहरसब्ज जैसी एक बड़ी विलायत (प्रदेश)का इन्तुखीन वकील (गवनर) बनाकर भेज दिया।

—हकूमत-शोराई-खल्क-बुखारा (बुखाराजन प्रजातन्त्रकी सरकार) पर हमको और आपको सन्देह नही होना चाहिये—कहकर एक दूसरे पुराने अमलदारने तोकसाबाको समझाना शुरू किया।

—दौलत शोराई खल्क बुखाराकी तरफसे हम पुराने अमलदारोको एक नई उपाधि दी गयी है। अमीरके जमानेमे हमको "तोक़साबा" "दीवानबेगी" "ईनाक़"की पदवियाँ मिलती थीं, लेकिन अब हमे "जनाब

तोक्तसाबा आफन्दी", "जनाब दीवानबेगी आफन्दी" और "जनाब ईनाक आफन्दी" कहकर पुकारा जाता है।

बैठकके अग्रस्थानसे कोई उठने लगा। दूसरे उससे पहले ही अपनी जगहसे उठ हाथ बाँधे अपनी जगह खडे हो गये। खिदमतगार झाड़ू हाथमे ले दौड़ा घरसे बाहर आया, वहाँ किसीको खड़ा देख बोला--हट जा दाखुन्दा, वकील आफन्दी आ रहे हैं।

—मै पानी पीने आया था, अगर हो तो एक गिलास दो।

—यहाँ बेकारका पानी नही है, एक मशक मीठा पानी है, लेकिन वह खास करके जनाब वकील-मुख्तार आफन्दी और उनके सहयात्रियोके लिये है। अगर तू प्यासा है, तो काजीकलाँके सामने सरदाबा अब्दुल्ला खाँके वहाँ जाकर पानी पी--खिदमतगारने कहा।

दाखुन्दा मेहमानखानाके द्वारसे जब दूर चला गया, तो खिदमतगारने फिर आवाज दी और आने पर उसके हाथमे झाड़ू देकर कहा—यहाँसे पाखानेके द्वार तक बर्फको बराबर कर, वकील आफन्दी शौचके लिये आनेवाले हैं।

वकील-मुख्तारके पाखानाकी तरफ जानेके बाद नूरदीन आगालिक करशी (भूतपूर्व करशी-बेक) ने मेहमानखानेसे बाहर आ अपना जूता पहना और अपने पुराने नौकर और आजकल खिदमतगारके कानमे धीरेसे कहा—जदीदोके बारेमे हमारा ख्याल गलत था। हमने नाहक मुफ्ती महमूद, खोजा वहबूदी और उनके साथियोंके पीछे पड़ उनको बर्बाद किया—कहकर प्रसन्न होते हुए लज्जा भी प्रगट की।

१५

कालीनवाला कमरा

शहर बाइसूनके गली-कूचे और हवेलियाँ नाना रूपके रग-बिरगा पोशाकवाले आदमियोसे भरे थे। बड़ी टोपीवाले कद्दावर एल-नौकर

(राजभृत्य) कार्वास पगड़ीवाले शाह-बच्चे, लकड़ीके खड़ाऊँवाले लाठी और कमानधारी दरवाजी, तलवार और पलीताकी बंदूकवाले हिसारी—इसी तरह कूलाब करातगिन आदिके अफ्सर वहाँ दिखाई पड़ रहे थे। इन पहाड़ी कबीलियोंके बीच अबरी जामा, सुनहरा, कमरबंद पहने बुखारी सैनिक, खासकर भगोड़े अमीरके दरबारी, ऐंठ और दिखलावमें दूसरोंसे बढ़ चढ़कर थे।

बाइसूनके हाकिम-मुख्तार जानी नानबाईने इतिहासकी बाजीसे लाभ उठा अमीरको अपना मेहमान बनाया था और उसकी प्रसन्ना प्राप्त कर अपना धन और दर्जा बढ़ानेकी कोशिश कर रहा था। वह सोच रहा था यदि खुदाने बुखाराके राजसिंहासन पर फिर अमीरको बैठा दिया, तो इस सेवाके लिये मुझे बाइसूनकी हाकिमीसे और बड़ा पद प्राप्त होगा। यद्यपि एक ओर उसे अमीरके पराजय और तख्तसे हाथ धोनेके लिये अफसोस था, लेकिन भविष्यकी आशासे प्रसन्न हो वह सेवामें लगा था। उसने पोशाक और नगदसे लेकर घोड़ा, लड़का, लड़की सबको नौ-नौकी संख्यामें अमीरके सामने भेंटकी थी। कुर्गान बाइसूनसे उत्तर अपने जलवायुके लिये प्रसिद्ध चारचिनार गाँवमें अमीरके विश्रामके लिये उसने विश्रान्तिगृह तैयार किया था और डेरा-शामियाना गाड़, चादर-चंदवा तानकर भारी दावतका प्रबन्ध किया था।

हाकिमने अपनी भेंट अमीरके सामने रखकर प्रधान दरबारी इमाम-कुलसे अर्ज किया—यदि हजरत सैर-गश्त और विश्राम करनेकी इच्छा रखते हैं, तो चारचिनार श्रीचरणोंकी प्रतीक्षामें है।

—अलबत्ता, जनाबआलीके दिलको बोलशेविकों और बेदीन जदीदोंकी अभद्रताके कारण बहुत दुःख और मलाल हुआ है। ऊपरसे बुखारासे यहाँ तक एक सवारीमें आनेसे रास्तेके कष्टने भी श्रीमान्‌को पीड़ा पहुँचाई है। ऐसी स्थितिमें सैर-व-सियाहत और विश्रामकी बड़ी आवश्य-

करता है, लेकिन विश्राम शुष्क नही होना चाहिये। बज्म (सगीतक) की भी तैयारी करो।

—लेकिन इस शहरमे श्रीचरणोके योग्य बज्म करनेके लिये गायक और तबूरी नही हैं। मेरी इस असमर्थताको श्रीचरणो तक पहुँचाइये। —हाकिमने बड़ी नम्रतासे निवेदन किया।

—मामूली बज्मकी जरूरत नही। मेरा मतलब कालीनवाले कमरेकी बज्म (बज्म, ताक-कूर्पगी)से है।

—इसके लिये यद्यपि सारी चीजे तैयार हैं, लेकिन मेरी समझमे अच्छा यह है, कि इसे शाम तक स्थगित रखा जाय। क्योंकि जहादके जमानेमे दिनको एक गाँवमे गाजियोकी आँखोके सामने इस तरहकी बज्म करना अच्छा न होगा।

इसी समय हिसार, कूलाब, बल्जुआन, दरबाज, और करातगिनके गाजियोको—जो कि अगवानी और सहायताके लिये आये हुए थे—कुरगान बायसूनमें उपस्थित रहनेका हुक्म दे अमीर घोडे पर सवार हो चार-चिनारकी ओर रवाना हुआ। इमामकुल और हाकिम भी 'बज्म-ताक-कूर्पगी' के बारेमे किसी निश्चय पर पहुँचे बिना अपने-अपने घोड़ो पर सवार हो हाकिम अमीरके आगे और इमामकुल पीछे रवाना हुए।

× × ×

फौजी अफसर, शाह-बच्चे, अमलदार, और एल-नौकर दस्तरखान पर बैठे खाना खा रहे थे। हिसारी सरकर्दो (फौजी अफसरों)मे से एक ने कहा—अफसोस कि जनाब-आली निराश हो हट आये। अगर हमारे पहुँचने तक रुके होते, तो अपनी तलवारसे अकेला सौ बोलशेविकों और जदीदोको जवाब देता।

दूसरे सरकर्दाने कहा—अकेले जनाब-आली क्या करे? दरबारके जितने नमकखार थे, सभी शरीर-पोषक और ऐशो-आरामके बदे निकले। अब जब कि हमारे हज़रत दरबारके सरकर्दो और अमलदारोके विश्वास-

घातसे इस तरफ आये हैं, तो हमें बहादुरी दिखानी चाहिये और बादशाही दबदबाको दुबारा कायम करके खुद सुरखुरू और दरबारमे प्रमुख बनना चाहिए।

अभी आशका थाल आधा भी न खत्म हुआ था, कि हल्ला हुआ 'जनाब-आली आये'। जहादके प्रेमी मेहमान चाहते थे, कि खाना छोड़ 'वली-नियामत'की अगवानीके लिये उठे। लेकिन हाकिमके दस्तरखानची (परोसक)ने 'श्रीचरणोकी आज्ञा है कि कोई अपनी जगहसे न हिले और सब निश्चित हो भोजनमे लगे रहे' कहकर उन्हे दस्तरखानसे उठने नही दिया।

अमीर अपने आदमियोके साथ आकर कुरगान (महल)मे उतरा, लेकिन उतरने और फिर चढनेमे देर न लगी। सिर्फ इतना ही समय मिला कि हाकिम बायसूनको पदच्युत कर उसकी सारी बहुमूल्य चीजो और नकद-असबाबको हाथमे कर साथ न चलने लायक कुरगानकी चीजोको जगह-जगह फेककर जल्द सवार हो जाय।

—मैने कहा नही कि (बज्म-ताक-कूर्पगी) जरूरी है? देखा न, तुम्हारी इस कमीसे जनाब-आलीकी तबीयत कितनी नाखुश हुई। खूब, कोई हरज नही। इस कामसे तुम्हे और दूसरोको भविष्यमे शिक्षा मिलेगी—कहकर इमामकुलने पदच्युत हाकिमको तसल्ली दी।

दस मिनट बाद कुरगानमे जहादी मेहमानोके सिवा कोई आदमी न रह गया। इसी समय बायसूनके पच्छिमकी ओरसे—कोहपा-सुर्खसे तत्तत्-तत्तत्की आवाज आनी शुरू हुई, इसलिये जहादी बहादुर भी खाना खानेकी इच्छा आधी ही पूरा करके उठे और अपने अमीरको मदद देनेके लिये उसके पीछे भागना चाहे। लेकिन उनके घोड़े और सवारियाँ वहाँ न रह गई थी, उन्हे अमीरके अमलदार—जिनके घोड़े मर या बेदम हो चुके थे—लेकर रवाना हो गये थे। इसलिये इन बहादुरोने अपनी तलवार, पलीतेवाली बदूक और तीर-कमानका जौहर

युद्ध-क्षेत्रमें बोलशेविकोंसे लड़नेमें दिखलानेकी जगह किसानोंपर दिखलाया और बेचारे गरीबोंके घोड़ोंको लेकर अमीरके पीछे-पीछे चले।

× × ×

लाल-सेनाके अस्सी जवान बंदूक और मशीनगनसे लैस कोहपा-सुर्ख से नीचे उतर शहरमें आये। किंतु वहाँ कोई प्राणी न मिला, और घर अपनी चीजोंके साथ सूने पड़े थे। यही नहीं, कितनी ही जगह दस्तरखान फैल, आश-पुलावसे भरे थाल और गरम आशसे भरे देग मौजूद थे। एक जगह अमीरके मध्याह्न-भोजनके लिये घी-पानी तैयार कर चावल डालनेके लिये पड़ा हुआ था।

लाल-सेनाने रसायनिक विश्लेषण द्वारा खानेकी चीजोंको खाने लायक समझ भोजन निमंत्रणको स्वीकार किया। फिर लोगोंकी खोजमें आदमी भेजे। बड़ी कठिनाईसे एक दो आदमी मिले। लाल सैनिकोंने मीठी और मैत्रीपूर्ण बातोंसे उनके दिलमें विश्वास पैदा कर उन्हें यह समझाया कि क्रांति क्या करना चाहती है, जनता क्यों अमीर और उसके अमलदारोंके खिलाफ खड़ी हुई है। समझानेमें उन्होंने बहुत सीधी-सादी भाषाका प्रयोग किया। समझाकर कुरगानमें मिली चीजोंमेंसे कितनी ही को 'यह तुम्हारा अपना माल है' कहकर उन्हें दिया और अंतमें बतलाया :

—हम सिर्फ अमीरका पीछा करनेके लिये आये हैं। किसानों और गरीबोंके हम दुश्मन नहीं हैं। हम तो उनके सहायक और मुक्तिकर्त्ता हैं। हम अब लौटकर अपने कैंपमें जाते हैं। तुम लोग जाकर गरीबोंको समझाओ कि शहरमें आकर अपनी चीजोंको सम्हाले और अपना काम देखें।

लाल सैनिक कैंपमें लौट गये। उनके भले बर्तावकी बातें सुनकर लोग भी शहरकी ओर लौटने लगे। लेकिन उनके आनेसे पहले ही डाकुओं और भगोड़े अमीरके अमलदारों (हाकिमों) ने शहरकी एक

एक चीजको लूट लिया था, और किसीके घरमे बोरियाका टुकड़ा भी न बच पाया था।

१६

पालकीवाला आदमी

बायसूनसे दोशंबे तक रास्तेके कस्बों और गावोमे कोई आदमी न रह गया था। अमीरके भागनेसे लोगोमे भारी आतक छाया था। और भागनेवालोने भी जहाँ तक हो सका माल-असबाबको नष्ट कर दिया था।

—दोशबे (आधुनिक स्तालिनाबाद)मे भी कोई नही रह गया। अमीर अफगानिस्तानकी ओर भागनेके लिये कुरगान-तप्पाकी ओर चला गया।

हिसार और दोशबेके इलाकोके शहरी और दीहाती लोग इसी तरहकी बाते करते देशके भविष्यके बारेमे चिंतित और भयभीत मालूम होते थे।

—देशकी शाति और अमीरके लुटेरोके हाथसे मुक्ति पानेके लिये जल्दी बोलशेविको और "जर्दादो"को अगवानी करके उन्हे यहाँ लाना चाहिए—यह बात मध्य वित्त किसानोकी ओरसे उठी, जिसे उपस्थित जनताने स्वीकार किया। उन्होने भेटके लिये कुछ चीजे और सफेद झडा भी तैयार कर लिया।

"महम्मद नजर कुछ-कुछ रूसी भाषा जानता है, उसीको इसके लिये आगे करना चाहिए"—यह बात भी स्वीकृत हुई और महम्मद नजरने भी कबूल किया।

"बोलशेविक इस वक्त कहाँ हैं?"—अगवानीमे जानेवालोंमेसे एकने पूछा।

—अमीरके आदमियोके कहे अनुसार सरे-आसियामें हैं।

—नहीं, मैंने सुना है कि देहलीमें हैं।

—यह झूठी बात है। अमीरके आदमी हमारी चीजोंको लूटनेके लिये लोगोंमे झूठी खबरे फैलाकर डरा रहे हैं। पक्की खबर यह है, कि लाल सैनिकोंका एक दस्ता बायसून आकर फिर दरबंद लौट गया।

—ठहरो ठहरो, देखो ये कौन लोग हैं—एक आदमीने कहा।

सब खड़े हो उस तरफ देखने लगे। वहाँ हथियारबद आदमियोंका एक दस्ता आ रहा था। उनके आगे-आगे दो घोड़ो पर एक पाल्की लदी हुई थी।

—सचमुच यह कौन हैं, और पालकीमे किसे सुला रक्खा है—दूसरे आदमियोने आश्चर्यसे पूछा।

—यह भी अमीरके गुडोमेसे हैं, और अपनी सरकारके अतिम दिनोमे एक बार फिर हमे लूटना चाहते हैं, अपनी गुडागर्दीसे मुल्कको भी पामाल करना चाहते हैं। यह पालकीवाला अवश्य या तो मुर्दा है या बीमार।

दस्ता नजदीक आया। उनका एक आदमी आकर इस बैठकका अभिप्राय पूछकर लौट गया। पाल्कीवालेने, जिसे लोग अभी भी न समझ सके थे कि वह मुर्दा है या जिदा, अपने शिरको बालिशसे हटाये बिना हाथ उठा कर इशारा किया। इशारा पाते ही हथियारबद दस्ता भेड़ोके रेवड़ पर भेड़ियोंकी तरह टूट पडा, और शाति-सुलहके इच्छुक उन लोगोंको मारने लगा। आध घटामे कुछ कत्ल, कुछ घायल हुए और बाकी इधर-उधर भाग गये। उनकी जमा की हुई चीजे पालकीवालेको भेट की गई।

१७

वसीयतनामा

"मिर्ज़ा उर्गन्जीकी ओरसे दूत आया है"—यह सूचना पाकर

कुरगानतप्पासे होकर अफगानिस्तान भागनेके लिये तैयार अमीर रुक गया। उसने खबर लानेवालेसे पूछा—मिज़ा उर्गन्जी कहाँ है।

—दरबदमे लालसेनाके सामनेसे पहाड़मे भागते वक्त घोड़ेसे गिर गया, जानकी काठ उसके पेटमे धँस गई और घायल हुआ। उसे पालकीपर लादकर दोशबा लाये हैं।

अमीरने मिर्ज़ा उर्गन्ज़ीके निवेदन-पत्रको लेकर पढ़ा:

"बोलशेविक बायसून आकर लौट गये। अब दरबदके उस तरफ हैं। सैनिकोंपर जरा भी विश्वास नही करना चाहिये। क्योंकि वह सदेहमे पड़े श्राचरणोंके साथ वफादारी नही कर सकते। गरीबोंपर भी विश्वास नही किया जा सकता। दोशबे और हिसारके गरीब श्राचरणोंसे नमकहरामी कर बोलशेविकोंकी अगवानी करना चाहते थे, किंतु मैंने पहुँचकर सबको भगा दिया। मुल्ला लोग श्रीचरणोंके आर्शीप-पाठक अवश्य हैं, लेकिन उनसे 'बलेगोई' (जी हाँ) छोड़कर और किसी चीजकी आशा नही। इस वक्त सिर्फ प्रसिद्ध डाकुओंपर ही भरोसा किया जा सकता है, जैसा कि बार-बार मैंने श्रीचरणोंमे निवेदन किया था। यदि उसकी कब्र जले, नसरुल्ला कुशबेगी मेरी बातोंको माने होता, तो मैंने १९१७ मे सारे जदीदोंको डाकुओंके द्वारा श्रीचरणोंकी बलि करा 'घास पाक दुनिया साफ' किया होता, फिर इतना फसाद न पैदा होता। बाहरी सरकारोंमें सिर्फ अँग्रेजोंसे आशा रखना ठीक है, क्योंकि वे हमेशासे रूसियोंके हाथसे तुर्किस्तानको छीनना चाहते हैं। अफगान सरकार भी है, किन्तु उसमे उतनी शक्ति नही है। जब श्रीचरणोंके बुरे दिन आये, तो उसने वादा की हुई चीजें भी नही दी और वह "पीछे मदद देगे" कहकर धोखा देती आ रही है। अमानुल्लाके जदीद (नवीन) होनेमे कोई शक-शुबहा नही। इसलिये जनाबआली

अपने मुल्कके नामी डाकुओंको जमाकर तथा फरगानाके बसमाचियों (डाकुओ)से भी मदद ले दोशम्बे लौट आवें और सल्तनतकी नींव कायम रखे। फिर हिन्दुस्तानमें अपना वकील भेज अगरेज सरकारसे जो चाहें, ले सकते हैं। इन्शा-अल्लाह (यदि भगवान्‌ने चाहा) ! दौलत-आलीपर कोई आफत न आयेगी। मै खुद भी इस्लामकी राहमे सख्त घायल हुआ हूँ, देर नही कि मर जाऊँ। श्रीचरणोंमे मेरी यह वसीयत है। बाकी बाद दौलत-आली (श्री सरकार बनी रहे)"

अमीरने निवेदन पत्र पढकर इमाम कुलसे कहा—लेकिन क्या खुद मिर्जा उर्गन्जीपर विश्वास करना ठीक है ? मै समझता हूँ, नही। बाप-दादोंसे मेरी हकूमतका नमकखार औलिया कुलबेकने क्या किया, जो यह करेगा ? औलिया कुलबेकने मुझे डरवाकर इधर खदेड़ दिया और खुद सारी चीजे लेकर कूलाबकी ओर चला गया। देर नही कि खुद उर्गन्जी धोखा दे, दोशम्बेमे लेजा मुझे पकड़कर बोलशेविकोके हाथमें दे दे। लेकिन यह बात उसकी ठीक है, कि सिर्फ डाकुओंपर ही भरोसा किया जा सकता है। डाकुओका पेशा चोरी है। यदि मेरे नामसे चोरी करेगे तो वह कृतज्ञ हो मेरी सेवा भी करेगे। डाकुओके बाद सौदागरोंपर भी विश्वास किया जा सक्ता है, क्योकि बोलशेविकोके सबसे कट्टर दुश्मन सौदागर हैं। इसलिए मिर्जा उर्गन्जीसे धोखा न खाने ठीक-ठीक बात जाननेके वास्ते पहले अलीम बाय सौदागरको दोशम्बे भेजना चाहिए।

अमीरने कुछ देर सोचकर फिर कहा—इस समय मिर्जा उर्गन्जीको भी नाराज नही करना चाहिये और उसके नाम "तुमको हिसार और दोशम्बेका हाकिम नियुक्त करते हैं, जबतक हम आते हैं तबतक देशका प्रबन्ध करके रखो" इस विषयका एक फर्मान लिखा जाय, यदि उसका धोखा मालूम हुआ तो उसे सजा देगे।

× × ×

हाजी अलीम बाय जब दोशम्बे पहुँचा, तबतक मिर्जा उर्गन्जी मर चुका था। उसने वहाँके बड़ोसे पूछा—यहाँ कौनसे नामी डाकू हैं।

—सबसे मशहूर डाकू हैं चक्कबाय तूक़साबा लाकैका बेटा इब्राहीम गल्लू और अब्दुल खालिक उसका दाहिना हाथ है—लोगोंने बतलाया।

× × ×

एक घटा बाद इब्राहिम गल्लू और अब्दुल खालिक बोलशेविकोंकी पक्की खबर जाननेके लिये बाइसूनकी ओर रवाना हुए और अलीम बाय दोशम्बेमें प्रतीक्षा करता रहा।

१८

दुबारा सल्तनत

"बूरी-बतासी डाकू और करशीवाला शराफ बाय हज़ार जंगी आदमियोंको जमाकर दरबदकी रखवाली कर रहे हैं। इसलिए दौलत-आलीके रास्तेमें कोई बाधा नहीं।" यह खबर हाजी अलीमने भेजी। अमीरने उस जवाब दोशम्बेमें दुबारा सल्तनतका प्रबन्ध करनेके लिये लिखते हुए कहा—"बूरी-बतासी डाकू और शराफ बाय करशीवाला दोनों दो वर्गों—डाकुओं और सौदागरों—के प्रतिनिधि हैं। उनपर विश्वास और भरोसा करना ठीक है। यह अच्छा सगुन है। अब दुबारा सल्तनत हासिल करनेकी उमीद होती है। अफसोस! इस हिकमतका निकालने वाला (मिर्जा उर्गन्जी) चल बसा। अच्छा, हर्ज नहीं "पीरकी जगह पीरका सोटा" उसकी जगह उसके लड़केको दोशम्बे और हिसारका हाकिम मुक़र्रर करते हैं।

× × ×

अमीर दोशम्बे लौटा। फिर चारों ओरसे एल-नौकर (राजपरिचारक) और सैनिक जमा होने लगे। अमीर उन्हें अमलदार बनाने लगा। सैनिकों और राजपुरुषोंकी तरफसे तारतिक (उपायन) पर तारतिक आये और अमीरकी ओरसे यारलिक (फर्मान) पर यारलिक निकलने लगे। यहाँ तक कि यारलिक लिखनेवाले और कागजी नोट छापनेवाले खरबन्चीमें होड़ लग गई। दोनों कागज खरच करनेमे एक दूसरेसे पीछे नहीं रहना चाहते थे।

उदेची, सजावल, मुहरम, यसावुल, मुन्शी, दफ्तरदार, दरबान, शखतदार सभी पदाधिकारी नियुक्त हुए और दोशम्बेके कुर्गान (महल) ने बुखाराका रग लिया।

—काम खूब इच्छाके अनुसार चल रहा है, अफसोस, तका और तिल्ला (अशर्फी) कम है—कहकर अमीरने खेद प्रगट किया।

—इसके लिए जनाबआली दिलमे जरा भी अन्देशा न करे। आपके इस दासने इस कमीकी भी दवा सोच ली है—इमाम कुलने तसल्ली दी।

—सचमुच तू मेरे लिये अद्वितीय जॉबाज है, बतला तो ज्यादा तका और तिल्ला प्राप्त करनेका क्या उपाय सोचा है?

—दोशम्बेमे यहूदियोंके अस्सी घर हैं। उनके नगद और जेवरको ले उन्हें हिसार भेजकर उन्हे जेलमे डाल दिया जाय। इस एक तीरसे कई निशाने लगेंगे। पहले यह कि तका, तिल्ला और जेवरका सिक्का ढालनेसे खजानेमे तका तिल्ला खूब हो जायगा। दूसरे यह कि उनके घर, जमीन और रोजगारके सामानको दरबारके लोगोमे बाँट दिया जायेगा, जिससे वह बेघरके न रह जायँगे। तीसरे यह कि दोशम्बे और हिसारके गरीबो भुक्खड़ो—जो हर वक्त बोलशेविकोकी बाट जोहते रहते हैं—को शिक्षा मिलेगी और वे चुपचाप जनाब-आलीके हर हुकुम और फर्मानको शिरोधार्य करेंगे। सल्तनतको दृढ़ हुई जान डरकर आवश्यकता

पड़नेपर बेरोक्टोक अपने माल-असबाब, लड़का-लड़की हमें सुपुर्द करेंगे।

एक दिन ये सारे उपाय कार्यरूपमें परिणत किए गए। यहूदी अपनी सारी चीजों, घर-जमीनसे वंचित हो नंगे सिर नंगे पैर छोटे बच्चोंको उठाये पैदल हिसारके जेलमें भेज दिये गये। इमामकुलने इस बातको उदाहरणके तौरपर जिक्र करते लोगोंसे कहा—जो कोई भी जनाबआलीके फरमानसे सरकशी करेगा, उसकी वही हालत होगी जो यहूदियोंकी हुई है। यदि प्राण और घरबारका मोह है, तो जो कुछ भी नकद और असबाब तुम्हारे पास है, चुपचाप सब सरकारी खजानेमें दाखिल कर दो; नहीं तो यदि कोई आफत सिरपर आये, तो उसके लिए जनाबआलीसे शिकायत न करना, उसे अपने दुष्कर्मोंका फल समझना।

यह काम भी चल पड़ा। लोग डर गये। समझने लगे कि यदि हुक्म-अदूली करेंगे तो दुबारा सल्तनतके अमलदार—जिन्होंने अपनी पलीतावली बदूकोंको कार्तूसी बदूकोंसे बदल लिया है—जबर्दस्ती हुकुम तामील करायेंगे।

अब खजानेमें काफी पैसा आ गया था और अमीरके भोग-विलासकी समस्या हल हो गई थी। औलिया कुलबेककी जवान बीबी पतिके भागनेके वक्त नवप्रसूता होनेसे खानकाह गाँवमें छूट गई थी। पतिने जाहिद मिंगबाशीके पास अमानतके तौरपर उसे रख दिया था। अमानतदारकी ओरसे अर्पित हो। अब वह नये केलिभवनको अलकृत करने लगी। कार्जा होलदिलसे मर गया देहनाके काजीकी बीबी—"बोलशेविक आये" की खबर पाकर अमीरके अन्तःपुरमें थी। तीसरी बेगम थी बुखाराके इब्राहीम खोजाकी लड़की और चौथी खानकाहवाले अलीमर्दाकी लड़की। इसके बाद तो एकके बाद एक सुन्दरियोंका ताँता लग गया और दोशम्बेकी हरमसरा (रनिवास) भी बुखाराके उर्दाके लगभग पहुँच गई अर्थात् भीतरी बाहरी दोनों तरफसे शाही व्यवस्था कायम हो गई।

अमीर नया महल बनवाने और दुबारा सल्तनतसे अधिक लाभ उठानेके विचारसे हिसार जानेके लिए घोड़ेपर चढ़ा। उस समय रिकाब पकड़े दोशम्बेके हाकिमसे कहा—इन स्त्रियों और लड़कियोंमें उतना मजा नहीं, एक अधिक जवान लड़कीको मेरे पीछे हिसार भेजो।

—"बहुत अच्छा तक्सीर (क्षमानिधान !)" कह हाकिमने करीब-करीब दण्डवत् (सिज्दा) करनेकी तरह झुककर तीन बार सलाम किया।

हाकिमके लिये उच्च पद पानेका अवसर हाथ आया था। उसने जरा भी देर किये कुटनियोसे मालूम किया कि तूदा-हिसारके तैमूरशाहकी लड़की बहुत सुन्दरी है। तुरन्त तैमूरशाहको बुलाकर लड़की भेजनेका हुक्म दिया।

—"मेरी लड़की अभी बहुत छोटी, सिर्फ आठ सालकी है।" कहकर तैमूरशाह बहुत गिड़गिड़ाया, लेकिन सब बेकार। "बादशाही काम हँसी-ठट्ठा नहीं है, चुपचाप बातको कबूल कर" कहकर हाकिमने अपने हथियारबन्द आदमीको हुकुम दे इस सवालको हल कर दिया। उसी रात आठसाला कन्या हिसारके महलमे अमीर आलमखाँके विलासभवनमें भेजी गई।

दूसरे ही दिन अमीरके हिसारसे दोशम्बे आनेपर हाकिमने खबर देनेवाले यसावुलसे पूछा—इतनी जल्दी क्यों ?

—तैमूरशाहकी कन्या शाहीप्रताप सह न सकी और श्रीचरणोंमे बलि हो गई। इस बातको सुनकर हिसारके नमकहरामोंने गड़बड़ मचानी चाही। यह श्रीहृदयको रुचा नहीं और जल्दी लौट आना पड़ा।

—अफसोस ! मेरी यह महासेवा व्यर्थ गई ! मैंने सोचा था, इस सेवाके फलस्वरूप दरगाहमें ऊँचा पद पाऊँगा, लेकिन शोक, भाग्यने सहायता न की। तैमूरशाह मादर·····ने अपनी लड़कीको भलीभाँति शिक्षित नहीं किया था।

अमीरने दोशम्बे लौट आनेपर "तेरे जुल्फ पर नहीं तो दूसरे हीके जुल्फ पर सही" कहते "अल्पवयस्कता"का बहाना करके राजी न हुए अब्दुल हफ़ीजको फौजका अफसर बनाकर वायसून भेज दिया और उसकी लड़कीको मँगाकर अपने मनके अवसादको दूर किया।

× × ×

"विजय-पर-विजय" हिसार और दोशम्बेके आदमियों और बुखाराके भगोड़ोंमेंसे छब्बीस आदमियोंको जदीद और बोल्शेविक होनेके गुनाहमे अमीरने कत्ल करवाया। इसी समय युद्ध-क्षेत्रसे भी दो लाल सिपाही बन्दी बनाकर लाये गये। अमीरने उन्हें अपने समक्ष बुलवा मँगवाया, धर्मयुद्ध (जिहाद)के पुण्यमें वैयक्तिक रूपसे भाग लेते अपने हाथसे एक काड़ा मारा और हुकुम दिया कि दोशम्बेकी बाजारमे दार (शूली) खड़ाकर उसपर उन्हे चढा दिया जाय।

इसी समय फरगानाके चार सौ बसमाची अमीरकी सहायताके लिए पहुँच गए, जिन्हें वायसून भेज दिया गया। यह भी विजयके सुदृढ़ होनेका चिन्ह समझा गया।

× × ×

अमीरने प्रसन्नता प्रकट करते हुए इमामकुलसे कहा—अब हमारा दोशम्बा भी बुखारासे कम नहीं। केवल इतनी ही कसर है, कि यहाँ सैर-सपाटेकी जगह कम है। लाचारी है, कि दो रात कुर्गानमे बिताऊँ और दो रात द्वारेत्स*मे। लेकिन बुखारामे एक रात सितारा-मुखासा तो दूसरी रात शेरबदनमे। वहाँसे दिल उकताता, तो चारबाग-गुल, तल्चा, नयमुचा या आर्कमे चला जाता। कभी-कभी शहरके भीतरी मुहल्लोंकी सैर करता। महीनेमे एक दिनकी भी बारी न आती।

---

*दोशम्बामें एक ही यूरोपीय ढगकी इमारत 'दोख्तरखाना' थी। अमीरने उसका रूसीनाम 'द्वारेत्स' (प्रासाद) रख लिया था।

काजीकलाँ और कुशबेगीकी दावतें, उनका लड़का-लड़की भेंटकर मेरे ऊपर तंकोंकी वर्षा करना—अफसोस ! इन बातोंकी स्मृतियाँ आज दुःसह मालूम होती हैं।

—खुदा चाहेगा तो जल्दी ही फिर वह नियामते मिल जायेंगी। जनाबआलीके चित्तको प्रसन्न करनेकेलिए यहाँके सारे दरबारी भी बारी-बारीसे दावत दे सकते हैं। लड़का-लड़कीका यहाँ भी अकाल नहीं। हाँ, तका लोगोंके हाथमें कम हैं, लेकिन यह कमी सरकारी खजाना पूरा कर सकता है—जो इस वक्त भरा पूरा है। यहाँ से दो-तीन सौ तका दे दिया जाय, कि दावत देनेवाले उन तकोंको सरे-मुबारक (श्रीशिर) पर बिखेरे।

अमीरको यह बात बहुत पसन्द आई और तुरन्त इसे कार्य रूपमें परिणत करनेकी आज्ञा दी। एक बार बारी यारमुहम्मद बीके सिर आई। अपनी हैसियतके मुताबिक तैयारी करके वह अमीरको अपनी हवेलीमे ले गया। खजानेसे मिले तीन सौ तकोंको हवेलीके फाटकसे मेहमानखानेके द्वारतक अमीरके सरेमुबारक पर बिखेरा। उन्हें राजभृत्यो और यसावुलोंने जमीनसे उठाकर फिर खजानेमे भेज दिया। अमीर भी खुश हुआ और दरबारी भी। लेकिन बिना लड़कीकी दावत, अमीर और दावतके प्रबन्धक इमामकुलको नापसन्द हुई। अतमे इमामकुलने मुँह खोलकर यार-मुहम्मदसे कहा—तुम्हारे यहाँ एक बहुत सुदर भाजी, है जो जनाब-आलीके ही योग्य है। श्रीहृदयको प्रसन्न करनेके लिये इसी कन्याको अर्पित करो।

—उसकी मेरे लड़केके साथ सगाई हुई है।

—हजरतको सलामत रहना चाहिये। तुम्हारा लड़का बिना स्त्रीके नहीं रहेगा। इस वक्त श्रीजीको खुश करना बहुत जरूरी है।

—यहाँ एक और भी बात है। इस लड़कीकी माँ—मेरी बहन—स्वर्गीय जनाबआली (अमीरके पिता)के द्वारा अनुगृहीत हुई थी,

बहुत संभव है, यह कन्या जनाबआलीकी बहन हो। ऐसी स्थितिमें यह काम शरीयतके विरुद्ध होगा।

"शरीयतकी दिक्कतको दूर करना बहुत आसान है"—कह इमामकुलने सल्तनतके सैनिक मुफ्ती हकीम सोलतको बुलवा फतवा तलब किया। मुफ्तीने "शरीयतसे कोई बाधा नहीं" लिख, मुहर करके दे दिया।

यारमुहम्मद इसपर भी राजी नहीं हुआ। अमीर उसके घरसे नाराज हो कुर्गान लौट गया और इस शरई (धर्मानुमोदित) कामको दर्बारी बहादुरो द्वारा पूरा करानेकी सोच रहा था किन्तु अफसोस, इसी समय खबर मिली, कि लाल सेना और बुखाराके क्रान्तिकारी दोशम्बेके नजदीक आ गये हैं। अमीरको मजबूर हो "अमीर हमदानी" के मजार (समाधि)के दर्शनके लिए कूलाबके सफरका निश्चय करना पड़ा।

१६

पगली

(फरवरी १६२१)

रात अंधेरी थी। बर्फ पड़ रही थी। बर्फ और यख मिली कीचड़ दोशम्बेके कूचोंमे आदमियो और घोड़ोंके कमर-कमर तक थी। अमीरकी दुबारा सल्तनतके दरबारियोमे अब हड़कम्प मची हुई थी। फर्राशों और राजपरिचारकोंसे लेकर सेनापति और स्वय अमीर तक काम कर रहे थे और बहुमूल्य वस्तुओंको अलगकर बोझ बाँध रहे थे। लेकिन यह सारा काम बड़ी सावधानीसे चुपचाप हो रहा था, जिसमे किसीको पता न लगे। सरकारी खज़ानेके नक़दी और बहुमूल्य वस्तुओके एक भागको घोड़ोंपर लादकर भेज दिया गया था। अब दूसरी वस्तुएँ बाँधी जा रही थीं। बाहर शहरमे भी हलचल कम न थी। तरह-तरहके

हथियारोंवाले झुंडके झुंड आदमी हिसारसे आकर हर तरफ बिखर रहे थे। ये लूटते ही नहीं थे, बल्कि लूटी चीजोंके बाँटनेमें रास्तेमें इनमें कभी-कभी मारपीट हो जाती थी। जिनके पास अपने साथियोंसे कम चीज होती, वह किसानोंके घरोंकी चीजें लूटकर अपनी कमी पूरा करते थे।

जहाजके मैदानसे भगे ढाईसौ बसमाचियों (डाकुओं)की अमीरके पहिले कारवाँसे भेंट हो गई। उन्होंने कहा—"यार घरमे और मैं दुनियामें मारा-मारा फिरूँ", "पानी सुराहीमे और मैं प्यासा मरूँ ?", हम क्यो पहाड़ो-पहाड़ो जगलो-जगलो लूटनेके लिये डोलते फिरे ? अमीरकी यह बँधी दौलत भगवानकी भेजी हमारे पास पहुँच गई हैं। इसको हाथमें करना हर तरहकी डकैतीसे बेहतर, और आसान है।

आध घटेके अदर इस विचारको कार्यरूपमे परिणत किया गया और "गदा पानी मोरीमे" कहावतके अनुसार अमीरका माल फरगानाके बसमाचियोके हाथमे चला गया। इसी समय लालसेनासे हारकर मैदानसे भगा इब्राहीम गल्लू अपने डाकुओंके साथ वहाँ पहुँचा। वह "जुकामकी दवा गरम पानी" कहकर फरगानाके बसमाचियोपर टूट पड़ा और उनसे अमीरका माल छीनकर कोकताश (नीलगिरि) ले गया। इसीसे उसके भविष्यकी "सल्तनत"के खजानेका आरभ हुआ। उसने "चोरको कमची मारा" कहते प्रसन्नता प्रकट की।

कुर्गानके अदर अब भी काम जारी था। अतिम भार रवाना करनेके बाद अमीर स्वय भी घोड़ेपर सवार हुआ। उसने अपने खास सिपाहियों और अफ़ग़ान मददगारोंको "आवाज़ न निकालो, खबरदार रहो, देखो तुम्हारे घोड़े न हिनहिनाये" कहकर ताकीद की।

एक भारी हल्ला हुआ, मानो हजारों आदमी एक साथ चिल्ला रहे हो। उसे सुनकर अमीर पत्थरकी मूर्तिकी तरह बिना सुगबुगाये घोड़ेपर बैठा रहा। हल्ला और नजदीक़ आता मालूम दिया। मूर्तिमें कुछ जान आती दिखाई पड़ी, किन्तु जीवन और मुक्तिका मार्ग ढूँढ़नेके लिये

नहीं, बल्कि घोड़ेसे जमीनपर आ पड़नेके लिये। इमामकुलने दौड़कर मदद की और बाँह पकड़कर रोकते हुए "डरिये नहीं, अपने लिये जरा भी भय न कीजिये। इन्शा-अल्लाह, दौलत बरकरार है" कहकर तसल्ली दी।

हल्ला करनेवालोंका गिरोह प्रलयकी बाढ़की तरह कुर्गानके समीप आ पहुँचा। उसके आगे-आगे एक स्त्री—जिसके कि बाल पागलोंकी तरह खुले बिखरे चारो तरफ उड़ रहे थे—अगुआ बनकर चिल्ला रही थी :

—न छोड़ो इस डाकूको! न छोड़ो! खूनसे हाथ रग मुल्कको बर्बाद और हमारी इज्जत-आबरूको पामाल करके यह यहाँसे सुरक्षित भाग जाना चाहता है। न छोड़ो! हमारी भलाई इस मनहूसको गिरिफ़्तार करनेमे ही है...

दूसरे भी न जाने क्या-क्या चिल्ला रहे थे। भीड़ कुर्गान पहुँची। पगलीने "चारो ओर कठघरा लगा दो, कि इस मुर्दारको भागनेका रास्ता न मिले" कहकर हुक्म दिया। एक आदमीने किनारेसे आकर "ओय पगली! ओय अहमक! ओय लम्बी चोटी अकल छोटी! कितनी बेशर्म बन गई है? क्यो मुझे बदनाम कर रही है? पीछे जा, नही तो अभी तुझे मारता हूँ" कहकर स्त्रीको धमकाया। लेकिन उसने कान न दिया, और फिर भी "न छोड़ो इस डाकूको" दुहरा रही थी।

अमीरकी जमातके एक आदमीने उक्त पुरुषके पास आकर कहा—अलीमर्दा! क्या यह तेरी औरत है? क्यो ऐसी बेशर्म औरतको बीबी बनाई? क्यो इसे घरसे निकलने दिया और वह बलवाइयोंके साथ हो गई! जल्दी कोई उपाय कर नही तो सब सत्यानाश होना चाहता है।"

—जब मैने इसे अपनी बीबी बनाया, उस वक्त बेशर्म नही थी, बल्कि दर्रानिहाँकी परमसुन्दरी कन्या थी; इतनी सुन्दरी कि सरेजूयके हाकिमने इसे अपनी बीबी बनाया, लेकिन हाकिमको इसने पसन्द न किया और नितप्रतिके लड़ाई-झगड़ेसे तंग आ तीन मास बाद उसने इसे मुझे

बख्श दिया। मेरे साथ भी वही बात, वही पागलपन शुरू किया। मैंने हाथ और पैर बाँधकर सिर्फ एक बार जबर्दस्ती सम्पर्क किया और इससे एक लड़की पैदा हुई। उसी लड़कीकी खातिर इसे नहीं भगाया। कुछ मास हुए, उस लड़कीको जनाबआलीने स्वीकार किया। तबसे इसका पागलपन और बढ़ गया। और "अमीरको जाकर मार डालूँगी" कहकर घरसे निकली। मैंने पैरोमे जजीर डालकर इसे तहखानेमे बद कर दिया था। मेरी अनुपस्थितिमे आज रातको न जाने कैसे निकलकर बाहर आ गई और इन नगों-भुक्खड़ोके साथ मिलकर अमीरके विरुद्ध शोर मचा रही है। इस काममे मेरा तनिक भी अपराध नही।

× × ×

अभी अलीमर्दाकी बात समाप्त भी न हो पाई थी, कि अमीरके सिपाहियो और अफगानोने गोलियाँ दागनी शुरू कर दी। गोलियोकी बारिशमे निहत्थे आदमी कैसे ठहर सकते थे? दस मिनटमे सब भाग गये और अमीरके भी भागनेका रास्ता खुल गया। पगली अब भी जमीनपर पड़ी चिल्ला रही थी "न छोड़ो . न छोड़ो न छोड़ो ."

२०

अवतारी पुरुष

बख्श (वक्षु) नदी के किनारे सरगज़ाँ गाँवमे कई प्रदेशोके पाँच सौ आदमी पड़े थे। उनमेसे एकने कहा :

—जनाबआलीके मुबारकनामा (पत्र)से मालूम होता है, कि हमारे हज़रत अमीर हमदानीकी जियारत (तीर्थ-दर्शन) और उनके आत्मतेजसे सहायता माँगनेके लिये कूलाब गये हैं, और हमे आज्ञा दे गये हैं, कि लालसेना और बुखाराके क्रान्तिकारियोका हर तरहसे

मुकाबिला करें। अब आप सब अपने विचार प्रकट करें, कि किस तरह और किस हिकमतसे जनाबआलीकी आज्ञाको पूरा किया जाये।

—शराफ बाय, अब काम हाथसे निकल चुका है। आबाद नगरों और प्रदेशों तथा दुर्गोंको क्रान्तिकारी ले चुके हैं। ऊपरसे बोलशेविकोंने गाँव-गाँवमें आदमी भेज उपदेश व्याख्यान द्वारा अपनेको भला बतला अमीरको बदनामकर लोगोंको हमारे विरुद्ध बहका दिया है। ऐसी अवस्थामे हमसे क्या हो सकता है? अच्छा यही है, कि इस समय इस काममे हाथ न डालकर अपनेको किसी कोनेमे समेट रखना चाहिये—दूसरे आदमीने कहा।

तीसरेने कहा—जनाबआलीने दुआ करनेवालोंकी कदर न की, सदा मुल्लोंसे अधिक सैनिकोंको माना। यदि सैनिकोंमेंसे सौ अमलदार (अफसर) बनाये, तो मुल्लोंमेंसे मुश्किलसे एकको। यदि सैनिकको बीस तन्खाह देते, तो मुल्लाको मुश्किलसे एक। इस तरह हर काममें मुल्लोंका अपमान शरीयत (धर्म)के अपमानका कारण बना। शरीयतके अपमानको, अऊज-बिल्लाह, किताबोंमे कुफ्र कहा गया है। परिणाम सामने ही है। अब डटकर इस कामको ठीक करनेके लिये खुदाके रास्तेमें युद्ध करना होगा, और रजा-बकजा (भगवानकी इच्छा) मानकर अवतारी व्यक्ति के आनेकी प्रतीक्षा करनी चाहिये।

शराफ बायने कहा—ईशान मुफ्ती, दूसरा आदमी जनाबआलीकी भले ही शिकायत करे, किंतु आपको तो कभी न करना चाहिये। आप एक गरीब मुल्ला-बच्चा (विद्यार्थी) थे, पासमे कोई चीज न थी। जनाब-आलीने आपको मुफ्ती बनाया, सदूर बनाया, तन्खाह (जागीर) दी, किर्गिजों (लकै)के परऊ सारे धार्मिक अधिकार दिये। फिर बताइये और क्या करते? क्या अपनी बादशाही आपके हाथमे सौंप देते? आप मुल्ला लोग बात और माल मारनेमें उस्ताद हैं; लेकिन जब कामका समय आता है, तो सीधे कधा हिलाना जानते हैं। कहावत है "दो स्त्री

एक पुरुषके बराबर, और दो मुल्ला एक स्त्रीके बराबर", जो गलत नहीं है। हम अपने सारे माल असबाबको छोड़कर मैदानमें आये, किंतु किसीसे गिला और शिकायत नहीं करते। उदाहरणार्थ खुद मेरी करशीमे इलाचाबाफी (कपड़ा बुनने) की एकसौ पचास दूकाने थीं, जिनमे कारीगर और उस्ताद लेकर तीनसौ आदमी काम करते थे। यदि बाग और खेतीके कामको भी ले ले, तो मेरे घरसे चार सौ आदमी भात-रोटी खाते थे। इन सभी चीजोको इस्लाम और जनाबआलीके रास्तेमें नौछावर करके मैदानमे निकला, और अब भी नीयत रखता हूँ, कि जब-तक शरीरमें प्राण है, इसी राहपर रहूँगा। "काम हाथसे निकल चुका" कहकर निराश होनेकी जरूरत नहीं। यदि मुट्ठीभर बुखारी अमीरके खिलाफ़ बोलशेविकोंसे एक हो बेसिर पैरके भुक्खड़ोंकी भीड़ इकट्ठाकर इतना काम कर सके, और आज प्रायः सारे देशपर प्रभुत्व करते हैं, तो यदि हम लोग मुल्कके सारे महान और ऐश्वर्यशाली व्यक्ति एक मन हो काम करें, तो क्यों जनाबआली—जो तैमूरकी सतान है—को फिर तख्त बुखारापर न बैठा सकेगे ? इसलिये दिलमे कोई शक-शुबहा न करे, और कूलाब चलकर जनाबआलीसे सलाह लेकर काम शुरू करे।

सभाके लोग करशीवाले शराफ बायकी बात मानकर कूलाबकी ओर रवाना हो गये।

× × ×

शहर कूलाब मुर्दासा पड़ा था। वहाँ जीवनका कोई चिन्ह न दिखाई पड़ता था। वह कब्रिस्तान था, जहाँसे कोई शब्द नहीं सुनाई पड़ता था। अधिकाश घरोंके द्वार खुले और कारबारकी अधिकाश चीज़े जहाँ-तहाँ पड़ी हुई थीं। इस बेजान शहर या नीरव श्मशानमें सिर्फ तीन आदमी दिखलाई पड़ते थे। वह एक कब्रसे दूसरी कब्र जाते कब्रिस्तान-

रखकोकी तरह एक हवेलीसे दूसरी हवेलीमे घूम रहे थे। एक हवेलीमे ताजा मारे गये कुछ मुर्दोंको देखकर एकने कहा—अमीरके आदमी अपना दिमाग इतना खो चुके हैं, कि इन जदीदोंको मारकर इनके मुर्दोंको एक ओर फेक देना तो अलग, इनके साफे और जामाको भी नहीं उतार सके!

तीनोने साफे और जामे निकाल मुर्दोंको हवेलीके कोनेमे ले जाकर कुएँमे डाल दिया और हवेलीको जहाँ-तहाँ खोदनेके बाद वह वहाँसे चले गये।

इसी समय शहरमे सवारोंका दूसरा झुड पहुँचा। वहाँ किसीको न देखकर उनमेसे एकने कहा—मैने कहा न, कि काम हाथसे निकल चुका है?

—अफगानिस्तान चलकर वहाँसे काम शुरू करना चाहिये।

—तुम्हारी इस बातसे मै भी सहमत हूँ, शराफ बाय! जो भी हो, आखिर वह इस्लामी देश है।

बातचीत लम्बी नही हुई और जब वह शहरसे बाहर निकल रहे थे, उस वक्त मुर्दोंकी हवेलीसे होकर आये तीनो आदमियोमेसे एकके हाथमे भारी कुल्हाडा देखा। उनमेसे एकने पुकारा—आ इब्राहीम, चले अफगानिस्तान।

—मेरा अफगानिस्तानमे क्या काम? अभी चौबीस कार्तूस हाथ आये, यदि एक बदूक भी हाथ लग जाय, तो बसमाची (डाकू) बन जाऊँ—इब्राहीमने कहा।

—अमीर अपने सारे तोप-तोपखानेसे क्या कर सका, कि इन चौबीस कार्तूसोंसे कर लेगा? अच्छा यही है कि अफगानिस्तान चले और अवतारी पुरुषके प्रगट होने तक बाट जोहें या यदि सभव हो तो अगरेज सरकारसे मदद लेकर लौटे।

—अजब नहीं कि वह "अवतारी पुरुष" खुद मै ही हूँ, ईशान मुफ्ती!—कहकर इब्राहीम दूसरी हवेलीमें चला गया।

२१

सदाकेलिये हिजरत (प्रयाण)

अमीर बड़े दबदबेके साथ, मानो आर्क बुखारासे चारबाग़ सितार-मुखासा जा रहा हो, चलकर पज-नदीके किनारे पहुँचा। दरक़दके घाटपर एक काले घरमे अँगीठी जला घोड़ोंके झूल और गद्दोंको बिछाकर शयन-स्थान तैयार किया गया था। शयनस्थानपर बैठते ही अमीरने आवाज दी—खजान्ची!

इमामकुल अभी अपने लिये सोनेकी व्यवस्था नही कर सका था। वह दौड़कर आ "खुश तक्सीर" कहते कमर दोहरी करके आदाब बजा खड़ा हो गया। अमीर दो सेकड उसकी आँखोकी ओर देखता रहा, फिर ठडी साँस लेकर बोला—बेगाना देशमे जा रहे हैं। मालूम नही, वहाँ हमारा क्या होवे?

इमामकुल—मेरे हजरत! चिन्ता न करे। इन्शा अल्ला, श्रीचरणोको कोई हानि नही पहुँचेगी।

अमीरने अपने सिरको ऊपर नीचे हिलाकर कहा—नही, मालूम नही, कि वहाँ अपनी रुचिके अनुसार जिन्दगी बसर कर सकूँगा या नही। अपने देशकी भूमिमे बीतनेवाले इस अन्तिम समयको गनीमत समझना चाहिये। आज रातको तुम घरके द्वारपर पहरेदार रहो और फैजीचा मवेज़फरोशको यहाँ भेजो, कि थोड़ी देरके लिये मै गमसे बेगम होऊँ। लेकिन, सावधानी रखना। अफगान इस भेदको जान न पाये। काले घरके पास किसीको आने न देना।

इमामकुल तीन बार कोर्निशकर बिना पीठ दिखाये लौटकर घरसे बाहर गया। पाँच मिनट बाद एक गोरा आँख-भौ-व काला सोलह-साला लड़का अमीरके पास पहुँचा।

× × ×

सूर्योदय समीप था, किन्तु अब भी ताजिक पर्वतोंके दच्छिन और पच्छिममें छाये बादलोंने दिनको आने नहीं दिया। अमीरके आदमी नींदसे उठकर नावोंपर भार लदवा रहे थे। इसी समय दूर घोड़ा दौड़ाकर आते कुछ आदमी दिखलाई पड़े। अमीरके वास-स्थानकी रक्षा करनेवाले अफगानोंने आगन्तुकोंपर अपनी बदूके सीधी कीं। इमामकुल—जो अब तक अमीरके कमरेके द्वारसे हिला तक न था—दौडकर रक्षक अफगानोंके पास गया और सवारोंके नजदीक आनेकी प्रतीक्षा करने लगा।

अमीरके भार और अमलदारोंका एक भाग पजनदी पार कर चुका था। काले बादल भी कुछ कटे-छुटे थे और ताजिकिस्तानके क्षितिजपर प्रकाशकी किरणें फैलने लगी थीं। सवारोंका गिरोह भी नजदीक आया। इमामकुलने उन्हें देखकर अफगानोंसे कहा—खातिर जमा रहो, ये अपने ही आदमी हैं।

अफगानोकी बदूके हथेलियोसे कन्धेपर चढ गई। इमामकुलने आगन्तुकोंके साथ इस तरह पार्श्वालिंगनपूर्वक सलाम और दुआ की और उनके सिर और मुँहको चपचप करके चूमा, मानो अपने बाप या दूरसे लौटे पुत्रसे भेंट हुई हो। भेंटकी रस्म खतम होनेके बाद आनेवालोंमेंसे एकने कहा—मालूम होता है, जनाबआली अब खाक अफगानिस्तानमें तशरीफ ल जाना चाहते हैं। आज तक श्रीचरणोंकी छायामें हम सुखी जीवन बिता रहे थे। इसके बाद अब हम क्या करें ? हम आये हैं कि जनाबआलीके भुवनमोहन सौन्दर्यको अपनी आँखोसे देखें और अपने भविष्यके लिये श्रीचरणोंकी राय लें।

इमामकुल लौटकर अमीरके द्वारपर आया और बिना अदर गये या पर्दा हटाये बोला—तक्सीर ! देशके बड़े बड़े लोग आये हैं। वह हजरतके जादू करनेवाले दृष्टिपातके पात्र हो, अब उन्हें कैसे रहना चाहिये इसके बारेमें वह श्री सम्मतिको मुक्तावर्धक मधुस्पन्दी श्रीमुखसे सुने।

अमीर—तुम स्वय जानते हो, कि इस समय मै ज्ञान-ध्यान पूजा-पाठमें

लगा हूँ (सहशायीकी तरफ मुँह करके) न घबड़ा फैजीचा ! (फिर बोला) इसलिये मैं अभी उनसे भेट नहीं कर सकता। लेकिन उनसे कहो कि हम अफगानिस्तान भाग नही रहे हैं, बल्कि हिजरत (प्रवास) कर रहे हैं। हिजरत हमारे पैगम्बरकी सुन्नत (सदाचार) है । यदि हमारी बात मानें और अपनी धन-दौलतको अपने हाथमें रखना चाहें, तो सारी चल-सम्पत्ति और रेवड़ो-गल्लोंको हाँके हमारे पीछे अफगानिस्तान आ जाये और सर्वसाधारणमे अफवाह फैलायें कि बोलशेविक सबको कत्ल कर डालते हैं, जिसमे दूसरे भी भाग आयें । पीछे जब साइत मुहूर्त आयेगी, तो हम फिर वापस आयेगे ।

इमामकुलने आकर महानोंको अमीरका सदेश कह सुनाया। जब इमामकुल दुहरा रहा था "हम हिजरत कर रहे हैं...हम फिर आयेंगे" तो एक भार ढोनेवालेने कहा—"इसके बाद इस देशको तू स्वप्नमे ही देखेगा, यह हिजरत सदाकी हिजरत है।"

२२

आतंक

—ऐ लोगो ! तुम कृतघ्न बने, इसलिये सुख-समृद्धि तुम्हें छोड गयी और आज तरह-तरहकी आफतोमे फँस गरीबीकी जिन्दगी काट रहे हो। तुमने जनाबआलीका गुण न जाना और उनके कामोपर जबान चलाते रहे। नही समझे कि बादशाहोका काम समझना आसान नही है "सलाहे मम्लकत व मुल्क खुशरवाँ दानन्द" (देश और राज्यकी व्यवस्था राजा ही जानते हैं)। यदि अम्लाकदारोंने तुमसे मालगुजारी माँगी, तो तुम नाराज हो गये; यदि जकातचियोंने धार्मिक ज़कात ली, तो तुम नाराज हो गये; यदि सरकदों (सैनिक अफसरों) और अमलदारो (नागरिक अफसरो) ने अपनी तनखाह (जागीर)की पैदावार...

जिस रात अमीर भागा उसके दूसरे दिन दोशम्बेमें तरह-तरहकी अफवाहें उड़ने लगीं—बोलशेविक, क्रान्तिकारी और रूसी आ रहे हैं। वे सबको मार डालेंगे। वे दुधमुंहे बच्चोंको सगीनोंपर टाँग देते हैं, लोगोंके धन-मालको लूट लेते हैं। जितना जल्दी हो सके भागकर अफगानिस्तान चलो या अपने परिवारके साथ ऊँचे पहाड़ोंकी गुफाओंमें जा छिपो।

इन बातोंको सुनकर अधिकाश आदमी भागनेकी फिक्रमे पड़े थे, इसी समय एक सरकर्दाने लोगोंके सामने उपरोक्त कृतघ्नतावाला व्याख्यान दिया था। अभी उसका व्याख्यान समाप्त न होने पाया था कि मुल्लाने "ठहरिये ठहरिये" कहकर उसकी बात काटकर खुद बोलना शुरू किया:

—जैसे पैगम्बर उम्मत (धर्मानुयायी)के बिना, और पीर मुरीदके बिना नही हो सकता, इसी तरह हाकिम भी बिना पेश-खिदमत (खिदमतगार छोकरा) और बादशाह बिना मुहरम (राज-परिचारक छोकरा)के नही हो सकता। हमारे लोगोने निर्लज्जतासे काम लिया, यदि हाकिम या जनाबआली अपने लिये पेश-खिदमत या मुहरम बच्चा रखते, तो उनपर बदचलन कहकर तुहमत लगाते। चाहिये तो यह था, कि यदि कोई दोष भी देखते, तो आँख बन्द करते। किताबोमे "हम्ल मोमिन बर-सलाह" (सलाहके ऊपर मुसलमानका बोझ) कहा है। हमारे लोगोने किताबकी बातको पैरों तले रौंदा और अपने गुमान (विचारो)के अनुसार बदनाम करना शुरू किया। कहा है, गुमान ईमानसे अलग करता है, इसलिये ये सारे लोग काफिर हो गये, आलिमो (पण्डितों) की इज्जत-हुर्मत करनी छोड़ दी, उनको ईदका सदका (भेट) कुर्बानीका चमड़ा, इमामत और दूसरी विहित भेटे समयपर देनी छोड़ दी, देते भी तो कम देते। इसका ही दड शिरपर आया

—तुम, कब्र-जले मुल्लाओने—कह एक बिखरे बालोवाली औरतने मुल्लाकी बात काटते कहना शुरू किया—अपने अमीरके हर कामको शरीयतके अनुसार और जनताके हर आन्दोलनको कुफ्र बतलाकर लोगोंको

गदाई, गरीबी, फकीरीके गड्ढेमें गिरा दिया। लोगोंकी इज्जत-आबरूको शरीयतका प्रमाण दे-दे बरबाद कराया। अमीरके भागनेपर अब फिर चाहते हो, कि उसके नामपर

लोगोंमे खलबली मच गयी और मुल्लाने हाथ उठा स्त्रीकी ओर इशारा करके कहा—"ओ बेहयाओ, फाहिशा ! इस बदचलनको शरीयतके अनुसार बोरामें बन्द करके मारना चाहिये"। मुल्ला-बच्चों (विद्यार्थियो) और बाय-बच्चोमेसे कुछ औरतकी तरफ दौड़े, लेकिन लोगोंने अपनेको बीचमे डालकर उसके ऊपर हाथ नही छोड़ने दिया। मार-मार धर-धरकी आवाज लोगोंमें उठ खड़ी हुई और वे लोग एक दूसरेपर टूट पड़े। इसी समय बन्दूककी "पर्त-पुर्त"की आवाज पहले अलग अलग, फिर एक साथ ही बहुत सी बन्दूकोंकी आवाज आई और मार-पीट रुक गयी।

"मैने कहा न था, तुम्हारी कृतघ्नताका यह दड है। लो बोलशेविक आ गये, जल्दी भागना चाहिये"—सरकर्दाने कहा। फिर मुल्लाने भी "खुदा और उसके रसूलकी बात झूठी नही हुआ करती। जनाबआलीके साथ तुमने जो बर्ताव किया, उसीका यह फल है" कहकर लोगोंके अन्दर गायब हो गया और एक घटा बाद दोशम्बा और उसके इलाकेमे वह आदमी फिर नही दिखाई दिया।

× × ×

चन्द बार और सौ दो सौ बन्दूकोंकी एक बार छूटनेकी आवाज आयी। फिर दोशम्बा शहरके दरियाबाद मुहल्लेकी ओरसे हथियारबन्द पॉच सौ सवार आते दिखाई पड़े। उनके हाथोमे तलवार, भाला, छुरा व खजरसे लेकर बन्दूक और तमचा तक तरह-तरहके हथियार थे। अधिकाश आदमियोके शरीरपर फर्गानाके रूईदार तग जामे, पैरोमे बूट और सलवार, शिरोंपर किर्गिजोकी नम्दावाली टोपियॉ, माथेपर शाही या आल-बानकी रुमाले बॅधी थी। सवार बन्दूकोको हाथोमे फायर करनेके लिये तैयार रखे शहरमे दाखिल हो कुर्गान (महल)के सामने आये। उन्होने

फिर एक बार एक साथ ही सारी बन्दूके खाली कीं। उनमेंसे एक साफे वाले आदमीने कुन्दली जामा और सुनहले कमरबन्दवाले दूसरे आदमीसे कहा :

—असगर, यह आदमियोसे खाली और मालसे भरा शहर तेरी भेट है। तू इब्राहिम गल्लूकी गलतीकी वजहसे हम सबको दोषी न बना।

दूसरेने कहा—मखदूम, हमारे उज्बेक कहते हैं—"कार निम ओचूँ पी गल्मे मन, कदरिम ओचूँ पी गले मन" (चीजके लिये नही बल्कि इज्जतके लिये मै रोता हूँ)। यद्यपि मै कारी शेरमतके नीचे हूँ, लेकिन आधे फर्गानाको हाथमे कर मै स्वय खान (बादशाह) और स्वय ही बेक (गवर्नर) हूँ। मै अपनी सारी इजत-हुर्मत और शान-शौकतको छोड़कर तेरी बात मान जेहादकी नीयतसे अमीरकी मदद करने आया। तेरा इब्राहिम गल्लू हमारी मेहमानी क्या करेगा, उसने हमारी बेइज्जती की।

—मै फिर कहता हूँ, कि एक इब्राहिम गल्लूके गुनाहको हम सबके ऊपर न डाल। जनाबआलीने तेरी बड़ी इज्जत की। तुझे एशिक-अकाबाशीका दर्जा, कुन्दली जामा और सुनहरा कमरबन्द बखशा, जिसके लिये कि दरबारमें सालो मेवा करनी पड़ती। यदि बात करनी है, तो बात यह है—कुर्गान (महल)से लेकर गरीबोके झोपड़े तक धन-मालसे भरे है, जो चाहे ले ले। यदि इससे भी सन्तोष नहीं होता, तो दोशम्बा तक सारे इलाकेका घोड़ोका गल्ला, भेड़ोका रेवड़ या घरका माल-असबाब, जो चाहे सब तेरा माल है। इस प्रदेशमे कौन है, कि इन बन्दूकोंके सामने मेरे और तेरे रास्तेमे बाधा डाले। गर्ममे खुद मेरा घर है। वहाँ मेरी बात और फर्मानको कोई नही टाल सकता। वहाँ दुधमुँहे बच्चोको भी "फूजैल मखदूम आया" कहकर डराने पर वह रोना छोड़ देते हैं। वहाँ तुझे चन्द रोज अपना मेहमान बनाऊँगा। तेरी खातिर-बात करूँगा। जब खातिर-बातसे पेट भर जायगा तो तुझे फरगाना भेज दूँगा।

अभी इन दोनों सरदारोंकी गिला-शिकायत और उजुर-माजुर खतम न हो पाया था, कि पाँच सवार घोड़ा दौड़ाते आ पहुँचे और "जल्दी करो, लाल सेना और क्रान्तिकारी हिसारसे इस ओर आ रहे हैं"—कहकर उन्होने हलचल डाल दी।

कुछ घटों बाद बोलशेविकोंकी लालसेना और जदीद दोशम्बा आ पहुँचे। उनके साथ बायसूनसे हिसार तकके स्वेच्छा-सेवक भी थे। इस वक्त शहरमे न कोई आदमी था न कोई चीज। कुर्गान, लोगोंकी हवेलियाँ, सराये और दूकाने ऐसी खाली पड़ी थी, जैसे झाँड़ू देकर वहाँकी एक-एक चीज़को चुन लिया गया हो।

२३
मीटिंग

शहर दोशम्बामे महोत्सव जैसी चहल-पहल थी। तरह-तरहके आदमियोसे भरे कूचोंमे चलना मुश्किल था। हवेलियोके अतिरिक्त दूरके गाँव और दीहातसे तमाशा देखनेके लिये आये लोग भी ठहरे हुए थे। वस्तुतः पूर्वीबुखारा (अब ताजिकिस्तान)के सभी किसानो-चरवाहो सभी कमकरोके लिये आज महोत्सव था। यह वह महोत्सव था, जब कि अमीर और अमीरीकी सालोकी सड़ी जालिम हकूमतको खतमकर दुनियाके नवीनतम राजनीतिक सिद्धान्तपर अवलम्बित सरकार अर्थात् प्रजातन्त्र सरकारने उसका स्थान ग्रहण किया था। आज प्रेम और भ्रातृभावका नया दिन था, जो इस बातका शुभ-सन्देश दे रहा था, कि अब अमीर और अमीरीके सारे आतङ्क और पाशविकता सदाके लिये समाप्त हो गये और सुख-समृद्धिका भविष्य आरम्भ हो गया। फटे लिबास और घासके जूतेवाले ताजिक, और यूरोपी पोशाक, टोपी और बूट पहने रूसी एक दूसरेसे गले मिल रहे थे। गाँवका एक किसान गदहे पर गेहूँ लादकर लाया था। वह उसके बदले चीनी, चाय और पैसा पाकर अपने गाँवके

दूसरे आदमीसे कह रहा था—अमीरके आदमी और मुल्ला कहते थे, कि बोलशेविक सबको मार डालते हैं, लूट लेते हैं। वह सब झूठ है। मुझे जिन्दगीमे याद नहीं, कि किसान हकूमतके दरवाजेपर अनाज लेकर आये हो और उसके बदलेमे कोई चीज मिली हो। आज मैं एक बोरा गेहूँ लाया था, उसके बदलेमें चीजे भी पायी और नगद भी।

—मै भी भेड़ लाया था और मुझे उसके बदलेमे चीजे और पैसे मिले। सब किसानोको खबर देनी चाहिये, कि खर्चसे ज्यादा गल्लाको शहरमे ले आयें और उसके बदलेमे आवश्यक चीजे ले जायें। अगर हम इस तरह करने लग जायें तो उन बर्बाद जगहोको फिर आबाद कर देगे जिन्हे अमीर और उसके डाकुओने नष्ट किया और घरके माल-असबाबको लूट ले गये।

—अवश्य ऐसा करना चाहिये—कहकर दूसरेने जवाब दिया।

"आइये मीटिङ्ग आरम्भ हुई, मीटिङ्ग!" कहकर एक बुखारीने लोगोको आवाज दी।

—मीटिङ्ग क्या चीज होती है—एक ताजिकने पूछा।

—हकूमते लोगोको एक जगह जमा करके उपदेश करती हैं और बतलाती हैं कि प्रजातन्त्र सरकार क्या है, इसीको मीटिङ्ग कहते हैं—कहकर बुखारीने जवाब दिया।

"आइये चले," "हाँ चलें" कहते लोगोंने आध घटाके अन्दर दोशम्बाके बाजारवाले मैदानको भर दिया। एक जदीदने मचपर आकर कहा—भाइयो! मीटिङ्ग आरम्भ होती है। मै वकील-मुखतारको व्याख्यान देनेके लिये प्रार्थना करता हूँ।

वकील-मुखतार अभी मच पर नही पहुँच पाये थे, कि तालियोकी आवाजसे आसमान गूँज उठा। एक पीले-मुँह कम-खून मैले रग वाला लम्बा आदमी मचपर पहुँचा। ताली दुबारा बजने लगी। वकील-मुखतारने दुबारा कहना शुरू किया। भाइयो! इन्तुखीन (इस तरह)

इमने लालसेनाकी सहायतासे अमीरको भगाया। इन्तुखीन, इसके बाद यह सरकार जनताकी सरकार है। इस सरकारमें अमीरके पिट्ठूओंके लिये इन्तुखीन जगह नहीं है...

खड़े लोगोंमेंसे एकने किसीकी ओर इशारा करके दूसरेसे कहा—इसको पहचानते हो।

—क्यों नहीं पहचानता हूँ, अबदुर्रहमान मिंगबाशी है?

—वह यहाँ क्या करता है?

—अब भी महान (कलाँ) आदमी है।।खुराक-मन्त्री है। मैंने इसे गेहूँ दिया था। इसने चाहा कि मुझे चीज-माल दिये बिना हटा दे। मैं लड़ पड़ा। उसी वक्त एक बुखारी आ गया। उसने इसे डाँटकर मुझे पैसे और चीजे दिलवाई। इसकी हक्की-बक्की बन्द हो गयी थी और उससे कुछ न बोल सका। यदि अमीरका जमाना होता, तो क्या करता, जानते हो न?

—लेकिन, क्या यह अमीरका पक्षपाती नही है? फिर कैसे इसे इस सरकारमे जगह मिली?

—मै क्या जानूँ, बड़े जाने।

वकील-मुखतार भाषण जारी रखते बोल रहा था—अमीरकी हुकूमतके जमानेमे उसके अमलदार इन्तुखीन लोगोपर जुल्म करते थे। उन्हे इन्तुखीन सख्त सजा दी जायगी..

फिर उन दोनो आदमियोमेसे एकने आँखे मिगबाशीकी ओर और कानोको वकील-मुखतारकी ओर लगाये अपने साथीसे कहा—देखो वकील-मुखतारकी इस बातसे मिंगबाशीका रग उतर गया है।

—रग क्यो न उतर जाय, अमीरके वक्त इसने कम जुल्म नही किया। खासकर इन पिछले पाँच महीनोंमे—जब कि अमीर यहाँ था—इसने उसके पाँच हजार फौजियों और दरबारियोका पेट गरीबोंके खूनसे भरता रहा। लोगोंके घरोमे एक दिनका भी भोजन न छोड़ उन्हें खिलाता रहा। अपने कियेके लिये, क्यों न भय खाये?

वकील-मुखतार कह रहा था—हम इन्तुखीम उन अमलदारोंके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे और वेतन-पारिश्रमिक भी देंगे, जो कि सच्चे दिलसे सेवा करेंगे।

वकीलकी इस बातको सुनकर अब्दुर्रहमानके चेहरेपर थोड़ा खून दौड़ गया, लेकिन शिर नीचा करके वह फिर विचारोमें डूब गया, जिससे जान पड़ता था, कि अब भी उसके मनको विश्वास नही।

वकील-मुखतार व्याख्यान समाप्तकर तालियोकी गूजमें मचसे उतरे। फिर एकके बाद एक कई बुखारियोंने मचपर जा प्राय: उसी विषयपर व्याख्यान दिया। मीटिङ्गके अन्तमे फटे फरजा (बुर्का)को ओढे एक बिखरे बालोंवाली स्त्री मच पर आई। व्याख्यान देते-देते बीचमे जोशमे आकर उसने फरजाको शिरसे उतारकर फेंक दिया। सभामे असाधारण हलचल मच गयी। एक आदमीने कहा—यह वही पगली औरत है जो कुछ दिन पहले यहाँ दिखाई पड़ी थी। दूसरेने कहा—यह अमीरी जमानाकी अत्याचार पीड़िता है, खुशी किसे कहते हैं इसका नाम भी इसे नही मालूम।

सचमुच बिखरे बालोंवाली औरत नहीं जानती थी, कि वह क्या कह रही है · "भाइयो ! मै शुक्र करती हूँ कि ..भाइयो ! मै बधाई देती हूँ .." कहते किसी बातको पूरा किये बिना बोल रही थी। जिस समय उसने फरजा फेंका, उस समय श्रोताओमेंसे एक दाढी-मूँछ-विहीन आदमी उसकी ओर गौरसे देखने लगा। अन्तमे उठकर धीरे-धीरे लोगोके बीचसे होके मचके पास पहुँचा और एक बार फिर ध्यानसे देखकर बोल उठा—आह, गुलनार ! तू यहाँ !!

इस बातको सुनकर औरत एक सेकेण्डके लिये बिना बोले पूछने वालेकी तरफ देखती रही। फिर एकाएक "वाह, तू मेरा यादगार !" कहकर मचसे कूदी। यदि पूछनेवालेने उसे हाथसे थामकर बगलमें न ले लिया होता, तो वह जमीनपर गिरकर अपने एकाध अगको तुड़ाये बिना न रहती।

चतुर्थ खण्ड

डाकुओंका राज

१९२०-२६

१

कारतूसोंवाला आदमी

अर्बाब नासिरकी सराय देरसे आनेजानेवालोंसे सूनी थी। कूलाब और बल्जुवानके हाकिमोंके यीसों सिपाहियोंकी पेट पूर्तिके लिये जो हण्डे-हर रात गरम हुआ करते थे, आजकल उन्होंने आगका मुँह तक न देखा। अर्बाब अपनी बीबीके साथ बैठा दुनियाका रोना रो रहा था। इसी समय किसीने दरवाजा खटखटाया। अर्बाब बड़ी निराशाके साथ उठते "क्या फिर कोई बोलशेविक सूखा-हाथ आया" कहते धीरे-धीरे दरवाजापर पहुँचकर बोला—कौन ?

—मित्र, खोल !

दरवाजा खोलनेपर एक सवार अन्दर आया। उसके कण्ठमे कारतूसोंकी माला थी। अर्बाब नासिरने जैसे ही इस आदमीको देखा, पहलेकी निराशा छोड़कर बड़ी गरमा-गरम अगवानी की और कुशल-मगल पूछा।

उसके घोड़ेको ले जाकर साईसखानामे बाँध दिया, फिर सवारको मेहमानखाना (बैठक)मे ला बुखारी (ढँकी अँगीठी)में आग जलाई। मकान गरम होने तक चाय और दस्तरखान भी पहुँच गया। कारतूसोवाले आदमीने अपनी जेबसे पाँच बुखारी तका देते हुए कहा "अर्बाब, मै एक घटे तक तेरा मेहमान हूँ। जल्दीसे एक थाल आश तैयार कर।"

अर्बाबने पहले हवेलीमे जा बीबीको आश (मासवाली खिचड़ी) पकानेके लिये कहा, फिर आकर मेहमानके पास बैठ गया। घरमें नीरवता छाई हुई थी।

देवदारकी लकड़ीके जलनेकी सरसराहटके सिवा वहाँ कोई शब्द सुनाई नहीं देता था। लेकिन यह नीरवता देर तक न रही और मेहमानने आगकी ज्वालाके सामने अपनी कथा आरम्भ करनेसे पहले पूछा—अर्बाब, बतला आज-कल तेरी हालत कैसी है?

—कैसी कहें? जनाबआलीके साथ हमारे यहाँसे "ख़ैरियत और बरक्कत" भी चली गयी। जब हमारा देश मुसलमानाबाद था, उस जमानेमे किसी रात मेरी सराय मेहमानोसे खाली नही रहती थी। यदि हाकिम या अमलदार मेहमान होते, तो मामूली खरच देनेके अतिरिक्त मुझे जामा भी पहनाते। उनके नौकर और न होता, तो भेड़ मारकर एक भाग खुद खाते और दूसरा भाग मेरे लिये छोड़ जाते। क्या कहूँ, उस जमानेमे शेरके किये हुए शिकारसे पेट-पूर्ति करनेवाले गीदड़की भाँति मेरी जिन्दगी थी और किसी चीजकी चिन्ता न थी।

—और अब?

—अब कभी पन्द्रह-बीस दिनतक भी मेरी सराय मेहमानका मुँह नही देखती। यदि कोई बोलशेविक आ भी गया, तो अपना खाना अपने साथ लाता है। यदि किसी चीजको लेता भी है, तो हिसाब करता है और एक-एक पैसाको कागजपर लिखवाकर देता है।

—कोई हरज नही, यह भी दिन बीत जायेंगे और दुनिया फिर दुनिया बनेगी। जनाबआली चले गये है, किन्तु हम उनके दीपकको बुझने नही देगे। सिर्फ बे-हथियारीने कामको कुछ पीछे कर रखा है। अगर एक बन्दूक पाता, तो इन कारतूसोका काम चल जाता और उसी दिन मै स्वय काम शुरू कर देता। एक कजाक़ने मुझे यह कारतूस और एक बन्दूक दी, लेकिन सिर्फ एकसे काम आगे नहीं बढ सकता, और अच्छा काम करनेके लिये ग्यारह गोलियोंवाली नही तो पाँच गोलियोंवाली बन्दूक चाहिये।

अर्बाबने शिरको दाहिने बाँये घुमाते अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा—बन्दूक मिलनेपर भी अकेले तुमसे क्या हो सकेगा? "बेडम्मत

(के अनुयायी)के पैगम्बर''की तरह पर्वत-पर्वत, बयाबान-बयाबानमें भटक रहे हो, यदि शिकार मिला तो कुछ भेड़ों और बकरियोंको हाथ लगा लिया। किन्तु ऐसे कामोसे देशको मुसलमानाबाद नहीं बनाया जा सकता।

—अर्बाब !—कारतूसवाले आदमीने गरम होकर कहा—तू इस कामका आदमी नही है। तू सिर्फ इतना ही जानता है कि दो तका खर्चकर एक थाल आरा दे मुसाफिरसे पॉच तका लेये और किसानको सौ तका दे साल भर बाद डेढ़सौ तका वसूल करे। तू आदमीको नहीं पहचानता। यदि एक अच्छी बन्दूक हाथ आ जाय, तो मै इन चौबीस कारतूसोसे दूसरी चौबीस बन्दूके अपने हाथमे कर सकता हूँ। तू दुनियासे बेखबर है। तूने सुना है कि अब्दुर्रहमान-मिगबाशी बोलशेविकोका खुराक-अफसर बना है या कि दौलतमन्दबी बलजुवानकी रेवकम (रिवोल्यूशनरी कमीटी—क्रान्तिसमिति)में है। क्या समझता है, ये सारे बोलशेविकोके भक्त बन उनपर प्राण न्योछावर करने गये हैं? विश्वास रख, इनमेसे कोई भी अमीरी जमानाके शान व शौकतको भूल नही सकता। एक आवाज़ भी यदि उस तरफसे आई, तो "लब्बैक" कहकर सबसे पहले ये मदद देनेको आगे बढ़ेगे। हमारे सौभाग्यसे जदीदोने "हमने अब्दुर्रहमानको खुराक अफसर और दौलतमन्दबीको क्रान्ति-समितिका अध्यक्ष बनाया" कहकर न केवल इनपर बल्कि सारे पुराने अमलदारोंपर विश्वास प्रकट किया। रूसियोको इस देशसे जानकारी नही है। वे नही जानते कि यहाँ क्या हो रहा है। यह अवस्था हमारे लिये बहुत आशाप्रद है।

आश तैयार हुआ। कारतूसोवाला आदमी आश खाकर अर्बाब-नासिरसे "खुश रहो" कहकर उठा। जब वह अपने घोड़ेपर सवार हुआ तो अर्बाबने पूछा—इस वक्त तुम्हारा कूशखाना (अस्त्रभवन) कहाँ है?

—अब्दुलक़यूमबीकी हवेलीमें—कहकर वह दनगरा गाँवकी ओर घोड़ा दौड़ाते चला गया।

२

शैतान

आदमियोंसे भरा एक मेहमानखाना था। लोग दम-पर-दम हुक्का और प्याला-पर-प्याला चाय पी रहे थे। मेहमानखानेमें प्रथम स्थानपर बैठे आदमीने कहा—जनाबआलीके तग़ाई (एजेन्ट) सईदबेकने चिट्ठी-पत्री देकर फैजाबादकी तरफके महानों (नम्बरदारों)को तैयार कर दिया है। उन्होंने मिलकर एक-एक दो-दो करके हिसारकी तरफके दूसरे अमलदारोको भी काम करनेके लिये तैयार कर लिया है। अब कूलाब और बलजुवानके महान बाकी हैं, उन्हें तुम तैयार करो—उसने यह बात नीचेकी तरफ बैठे आदमीसे कही।

आदमीने जवाब दिया—शैतानने एक अविवाहित आदमीको स्त्रीसे सम्पर्क करनेके लिये बहकाया, लेकिन स्त्री नहीं मिल रही थी। शैतान फिर-फिर उकसा रहा था। इसपर अविवाहित आदमीने तग आकर शैतानसे कहा, मैं हर कामके लिये तैयार हूँ, मुझे उकसानेकी जरूरत नही, तू सिर्फ एक औरत लाके दे दे। इसी तरह शैतान सईदबेगको पत्र लिखना चाहिये, कि हमे उकसानेकी आवश्यकता नही, यदि हथियार हाथमे आये, तो हम अपना जौहर दिखला देंगे।

दूसरे आदमीने कहा—यदि हथियार हो, तो औरत भी मिल सकती है न ?

इस पर सब आदमी उसकी समझपर ठहाका लगाकर हँस पड़े।

इसी समय एक फरजावाली औरत दरवाजामे आ नीचेकी ओर बैठे आदमीको इशारासे बुलाकर बाहर ले गयी।

—हथियार न हो तो भी औरत मिल सकती है—किसीने कहा और एक बार फिर ठहाका लगा।

बाहर गये आदमीने अन्दर आकर प्रथम स्थानपर बैठे आदमीसे कहा—इब्राहीम ! इस औरतका तुमसे काम है।

इब्राहीम बाहर जा पाँच मिनट बाद घरके अन्दर आकर बोला—सचमुच इस औरतको शैतानने मेरे पास भेजा है। तैयार हो जाओ, आज रात एक भाग्य-परीक्षा करनी है।

सभी जामा पहन कमर बाँध तैयार हो गये। इब्राहीमने "बी ! साफ करके रखी कज़ाकवाली बन्दूकको ले आ, आज काम आयगी" कहकर कारतूसोंकी मालाको ताकसे उठा गर्दनमे डाल लिया। गृहपतिने,—जिसे कि इब्राहीमने "बी" कहकर सम्बोधन किया था—कुछ कारतूसोके साथ बन्दूक को लाकर उसके हाथमे देते हुए कहा "मिट्टीमे दबी रहनेसे बहुत मुर्चा खा गयी थी। तेल डालकर बहुत गज चलाये तो भी अच्छी तरह साफ नहीं हुई।"

—हरज नही—बन्दूकको हाथमे लेते इब्राहीमने कहा—एक दो बार फैर करूँगा आप ही साफ हो जायगी।

इब्राहीम आगे-आगे और दूसरे उसके पीछे-पीछे चलकर रास्तेपर पहुँचे। हवेलीसे बाहर निकलते वक्त इब्राहीमने कह दिया—बी, एक मोटी भेड़ मारकर यखनी तैयार कराके रखना, बहुत सम्भव है कल हमे मुहिमपर जानेकी जरूरत पड़े।

लोग वहाँ पहुँचकर आध घटा नासिरके दरवाजेपर बिना आवाज दिये या दरवाजा खटखटाये खड़े रहे। फिर अर्बाब आया। इब्राहिम ने पूछा—हालत कैसी है ?

—बुरी नहीं है। चार सैनिक सरायमें आये। देखा कि वे पेटसे भूखे और थके-माँदे हैं। जल्दी उनके लिए खाना तैयार करा बीबीको

तुम्हारे पास मेजा, इस वक्त वे सारे नींदमें मुर्दा पड़े हैं, यदि काम करना है तो यही समय है।

—तेरे पास रस्सियाँ हैं?

—चार रस्सियाँ तैयार कर रखी हैं।

"बहुत अच्छा, रस्सियोंको इनके हाथमें दे" कह अपने आदमियोंकी तरफ इशारा करके इब्राहीमने उनके हाथोंमें रस्सियाँ दिलवाईं और स्वयं बन्दूक ले उनके पीछे-पीछे मेहमानखानाके द्वारपर पहुँचा। सोनेवालोंके खर्राटेके सिवा वहाँ कोई आवाज सुनाई नहीं देती थी। इब्राहीम और उसके साथी हल्के पाँव मेहमानखानाके अन्दर दाखिल हुए और तुरन्त चार हिस्सोंमें बँट सैनिकोंपर टूट पड़े। खबरदार होनेसे पहले ही उनके हाथ-पैर बाँधे जा चुके थे और सिरहाने रखी उनकी चारों बन्दूकें दुश्मनोंके हाथ में थी। इब्राहीमने एकएक बन्दूकको देखा। एकमें उसका अपना कारतूस ठीक आ रहा था। उसने "शैतानने बहुत अच्छे समयमें मदद दी" कहकर उस बन्दूकको अपने गलेसे लटका लिया और बाकीको बगलमें दाबे मकानसे बाहर आया। साथियोंके भी बाहर आ जानेपर "असदुल्ला इसे तू ले, शाहमर्दा कुल यह तेरी चीज हैं, तग़ाई सरिक यह तेरे लिये है" कहते बाकी तीनों बन्दूकोंको अपने तीन साथियोंमें बाँट दिया।

असदुल्ला—लेकिन इनको क्या जिन्दा ही छोड़ चलें?

—हाँ—इब्राहीमने कहा—अगर इनकी जानको नुकसान पहुँचायेंगे तो हम अरबाब नासिर और दौलतमन्दवी रेबकमूको भी सन्दिग्ध बना देंगे। यही नहीं हम लोगोंको अरबाबके घरकी कुछ चीजें भी बाँधकर ले चलनी चाहिये, जिसमें इस घटनाके बारेमें पूछनेपर चोरोंके आनेका बहाना किया जा सके।

यह तदबीर अरबाबको भी पसन्द आई और उसके घरसे दो-तीन बोझचा बाँधकर इब्राहीमके साथी चल दिये। उनके चले जाने पर

अरबाबने "चोर चोर, मेरे घरको लूट ले गये" कहकर कई बार हल्ला मचाया। फिर अन्दर आकर सैनिकोंका हाथ-पैर खोल उनकी हालतपर अफ़सोस करते उन्हें बल्जुवानकी ओर भेज दिया।

३

प्रारम्भ

इब्राहीम अपने आदमियोंके साथ अब्दुलकयूम बीकी हवेलीमें यखनी खाकर बैठा हुआ था। इसी समय दर्रवाजसे एक सवार आया। इब्राहीमने सवारसे पूछा—क्या कर आया है ?

—सैनिकोंके बल्जुवान पहुँचनेसे पहले ही मैंने वहाँ जा दौलतमन्द बीसे मिलकर सब काम पक्का कर दिया। यदि रूसी हमारे पीछे सैनिक भेजेंगे तो दौलतमन्दवी—जो कि उनका पथ-प्रदर्शक है—उन्हें सरसरक पर्वतमें पहुँचा देगा। हमें जल्द वहाँ पहुँचकर मौकेकी ताकमें रहना चाहिए।

× × ×

सौ लाल सैनिक आ रहे थे। एक बल्जुवानी आगे आगे चलते उनका पथ-प्रदर्शन कर रहा था। लाल-सैनिकोंने शामतक पहाड़ोंको छान मारा लेकिन दुश्मनका कोई पता न लगा। शाम होनेपर सैनिकोंने लौटना चाहा, किन्तु पथ-प्रदर्शकने कहा—"सरसरक पर्वतको भी देख लेना चाहिए।" सरसरक पहुँचने तक चारों ओर अँधेरा छा गया था तो भी हिम्मतवाले लाल सैनिक पहाड़पर चढ़ने लगे। थोड़ी ही दूर ऊपर जानेपर पाँच बन्दूकें एक साथ खाली हुईं और उसके बाद भी लगातार बन्दूकोंकी आवाज आने लगी। सैनिक पीछे लौट पड़े।

लालसैनिकोंके घोड़ोंके पैरोंकी आवाज दूर सुनाई देने लगी, तब कुछ आदमियोंने पहाड़से नीचे उतर वहाँ पाँच मुर्दे और पाँच गोलियों

वाली पाँच बन्दूकें पायीं। बन्दूकों और मुर्दों की पोशाकको ले वे पहाड़के नीचे उतरने लगे। चन्द कदम आगे उन्होंने एक मुसलमानके मुर्देको पाया। उसे देखकर इब्राहीमने कहा—सैनिकोको धोखेका पता लग गया और उन्होंने अपने पथ-प्रदर्शकको भी मार डाला। अब हमें यहाँसे दूसरी जगह चल देना चाहिये—और वह अपने साथियोंको लेकर तबक़चीकी ओर चला गया।

× × ×

अब काम शुरू कर देना चाहिये—अब्दुल कयूमबीने दौलतमन्दबीसे कहा—कलकी घटनासे अवश्य बोलशेविक तुमपर सन्देह करने लगे होंगे। यदि हम चुप रहेंगे तो शायद बड़ी सेना आकर प्रदेशपर जबर्दस्ती अधिकार जमा ले और तुमको निकालकर तुम्हारी जगह अपने आदमीको रखे। फिर हमारे लिये काम करना कठिन हो जायगा।

—तुम्हारा कहना ठीक है, किन्तु यदि रेव्-कम् (क्रान्ति-समिति)मे कुछ समय और काम करनेका मौका मिले तो अच्छा है।

—अच्छा होता ठीक है, लेकिन मुझे आशा नही है कि वे तुम्हें और निश्चिन्त हो काम करने देंगे। इसलिये सब ख्यालोको छोड़ मैदानमे आ जाओ। देखा नही, फुज़ैल और ईशान सुलतान कितने ही समय तक हाकिमी करते रहे, लेकिन अब फुज़ैलने गर्मको और ईशान सुलतानने दर्रवाज़को अपनी चीज बना ली।

—हथियारोंकी कमी है, इसलिये किसी तरह कुछ और हथियार हाथमें करना चाहिये। फिर कामको आगे बढ़ाना अधिक आसान होगा।

—अधिक हथियार भी मैदानमे सीधे उतरनेपर ही हाथ लग सकते हैं। तू बिलायत (सूबा)का हाकिम बन और मै तेरा नायब, और इब्राहीमको सेनापति बना अपनी हूकूमत कायम करें। हमारे पास जो हथियार हैं, वह लोगोंसे पैसा लेनेके लिये काफ़ी हैं। कुछ पैसा खानाबादमें

जनाबआलीके तगाई (एजेण्ट)के पास भेज देंगे और तीन दिनमें हमारे पास हथियार आ जायगा।

—अफसोस, इब्राहीमकी अदूरदर्शिताने काम खराब कर दिया, नहीं तो भीतर रहकर हम बहुत काम कर सकते थे। नहीं देखा, इस्माइल दीवानबेगीने बोलशेविकोंके साथ भक्ति प्रदर्शित कर क्या-क्या काम किये। शहरसब्ज जैसे प्रदेशको—जहाँके लोगोंने स्वय बोलशेविक सेनाकी अगवानीकर तुरा (राजकुमार)को गिरफ्तारकर प्रदेशको बोलशेविकोंके हाथमे सौंपा था—उलट-पुलट दिया और शहर-सब्ज प्रदेश पर ऐसी जबर्दस्त चोट लगाके निकल गया कि आज भी उसे सम्हालना मुश्किल है।

—दौलतमन्द, अगर-मगरको छोड़, यदि जनाबआली न भागे होते, याद तुम्हें कूलाब और मुझे बल्जुवानका हाकिम न बनाया होता, तो बहुत अच्छा होता, लेकिन वह नहीं हुआ। बीती बातोंको यादकर अफसोस करनेसे कुछ लाभ नहीं, हमें भविष्यकी चिन्ता करनी चाहिये।

—लेकिन इब्राहीम एक मोट-गरदनियाँ एक-बग्गा स्वार्थी आदमी है, वह चाहता है कि देशमें स्वय महान बने। नहीं मालूम वह हमारी रखी कौल-करारपर राजी होगा नहीं।

—मै उसे राजी करूँगा। वह खुद जानता है, कि मुल्कमे उसकी इज्जत नही है। हर एक आदमी उसे "इब्राहीम गल्लू डाकू" कहता है। बाय लोग भी उसे महान बनानेपर राजी नहीं। वे डरते हैं कि इब्राहीम खुद हमारे मालको लूटेगा। तू इब्राहीमको अपनी बहिन दे रहा है, यही इज्जत उसके लिए काफी है। सुबेदारका दामाद और राज्यका सेनापति होना यह पद उसके लिए बड़ा है।

—अच्छा जाओ, इब्राहीमको इस बातपर राजीकर कौल-करार बाँधकर उसे ले आओ।

*

४

मित्रता

बल्जुवान बिलायत (सूबा)के गाँव खोजा बल्जुवानमें भारी जलसा हो रहा था। भेड़ोंको मार पाँतीसे रखकर देगोंमें तरह-तरहके आश और दूसरे खाने पकाये जा रहे थे। एक ओर प्रदेशके महान लोग—मुल्ला, ईशान, सरकर्दा (सैनिक अफसर) और अमलदार (नागरिक अफसर) वकील-मुखतारका भाई (जो कि भाईके बुखारा जानेपर उसका स्थानापन्न था—के सामने पातितजानु बैठे तकसीरकशी (हाँजी हाँजी भरना) हो रही थी। दूसरी ओर सुरैया आफन्दी मेहमानोके खातिर राष्ट्रीय सेनाकी परेडका प्रदर्शन कराते जलसाकी शान-शौकतको दुगुना कर रहे थे।

दावतके खतम होनेके बाद दौलतमन्दबी, अब्दुलकयूमबी और अब्दुश्शकूरको—जिनके लिये कि यह दावत दी गई थी—सुनहले जामो, नसली घोड़ो और भारी रकमकी भेट दी गई। दूसरे महान लोग भी अमीरी जमानेके अपने पदोके अनुसार स्थानापन्न वकील-मुखतारकी ओरसे पारितोषिक पाये। सभी प्रसन्न और कृतज्ञ थे।

मजलिससे दूर एक कोनेमे स्थानापन्न वकील-मुखतारके घोडोके बाँधनेकी जगह उकडू बैठा केवल दाखुन्दा ही एकमात्र ऐसा आदमी था, जिसके मुँहपर प्रसन्नताकी रेखी न थी। वह मजलिसके जिन्दाबादके नारो और तालियोंकी गूँजको मानो बिल्कुल देख-सुन न रहा था और अपने माथेको बाँधपर रखे किसी खयालमे डूबा हुआ था।

"हाँ दाखुन्दा!" कहकर एक बुखारीने उसे नींदसे जगातेकी तरह परिहास किया—"फिर तेरे शिरमे क्या खयाल आया, अब भी सोच रहा है कि देश बसमाचियो (डाकुओं)के जूतोके नीचे रौंदा जा रहा है?"

—अब क्या हुआ है ?—कहकर दाखुन्दाने आश्चर्य भी किया और प्रश्न भी।

—सुलह हो गयी।

—किसके साथ सुलह हो गयी ? बसमाचियोंके साथ !

—चाहे बसमाची नाम रखो, चाहे कूलाब और बल्जुवानके महान, जो भी कहो उनके साथ सुलह हो गयी।

—मेरी समझमे सुलह नही हो सकती, यदि भेड़िया और भेड़ोंके बीच सुलह होना सम्भव है, तो हमारे और बसमाचियोंके बीच भी सुलह हो सकती है।

—स्थानापन्न वकील मुख्तारने ऐसा काम किया कि भेड़िया भी सन्तुष्ट और भेड़ भी।

यह बात मेरी समझमे नहीं आ सकती।

—ठीक कहता है। तू एक अनपढ अशिक्षित आदमी है। किसी बातको कैसे समझ सकता है ? यह भी नहीं जानता कि हमारे कलॉ (महान्) लोग समझदार और युक्तिज्ञ आदमी हैं, विशेषकर स्थानापन्न वकील-मुख्तार तो अपने आका (बड़े भाई)से भी अधिक चतुर हैं। उनके युक्ति-कौशल और कूटनीतिज्ञताके तो सारे बुखारावाले कायल हैं। वह हजार बसमाचियोंको प्यासा नदी तक ले जा प्यासा ही लौटा सकते हैं। उन्होने कई साल इस्ताम्बूल (तुर्की)में शिक्षा प्राप्त की है। ऊपरसे अमीरके हाथसे निकलकर और कितने ही समय तक सोशल रेवोल्यूशनरी (करेन्स्कीकी सामाजिक क्रान्तिकारी) पार्टीमे, फिर कम्युनिस्टों और कितने ही समय तक नौजवान-बुखारा पार्टीमे सम्मिलित हो उन्होंने क्रान्तिसम्बन्धी कार्य किये। तू गॉठ बाँध ले, ऐसा आदमी खता नहीं कर सकता।

—खूब, बहुत खूब ! सुलहकी शर्त क्या है ?

—चार महीने तक देशके कलानों, या तेरे कहनेके अनुसार

बसमाचियोंके हथियार उन्हींके हाथमे रहेंगे। उनका खर्च सरकारकी ओरसे दिया जायगा, जिसका कुछ हिस्सा इसी वक्त दे भी दिया गया। इसके बदले वह डाकुओको दबाकर मुल्कमे शान्ति स्थापित करेंगे और बुखारा जन-प्रजातन्त्र सरकारकी आज्ञा मानेगे। चार मास बाद अपने हथियार लाकर उन्हें और अपनेको नम्रता-पूर्वक सरकारके हाथोंमे सौंप देगे।

—इन शर्तोंके पूरा करनेके लिये उनकी ओरसे कौन जिम्मेदार हुआ है?

—सभीने खोजा बल्जुवान—वह बुजुर्ग जो इस मजारमें सोये हुए हैं, की कसम खाई है।

—ओ हो! क्या खूब! मेरी अल्पबुद्धिमे इस माँसे बच्चा होनेकी आशा नहीं।

× × ×

—मेरे साथ कौल-करार किया, फिर क्या हुआ जो तूने सरकारसे मित्रता बाँधी—इब्राहीमने दौलतमदबीसे पूछा।

—तू नहीं जानता, इस सुलहमे हमने कुछ भी उन्हें नही दिया। मुझे पहले उमीद न थी कि वे मुझसे सुलह करेगे। लेकिन उन्होने खुद सुलहकी बात शुरू की और चार माह तकके लिये मुल्कका अधिकार हमारे हाथमे छोड़ दिया। इन चार महीनोंमे हम जो चाहें करेगे। उदाहरणार्थ पहली बात हम यह कर सकते हैं, कि जितना हो सके उतना पैसा अफगानिस्तान भेज वहाँ खानाबादमें बैठे जनाबआलीके तग़ाई (एजेन्ट)के द्वारा खूब हथियार मँगाये। दूसरी बात यह कि सुलहकी एक शर्तके अनुसार डाकुओंके दबानेके बहाने उन्हें हम अपने नीचे ला हथियारबन्दकर अपना आदमी और नौकर बनायें। इस तरह लोग भी हर बातमे हमारा मुँह देखनेको मजबूर होंगे और जिसके घरको डाकूलूटेगा वह हमे प्रसन्न करके हमारी सहायता चाहेगा। इस तरह हकूमतकी इज्जत गिरेगी और हमारी इजत लोगोमे बढेगी। हमने सुरैया आफन्दीको

गर्म और दबावज मेजा है कि क़ुजैल और ईशान सुल्तानसे भी सुलह करें। यदि उनमें भी बुद्धि हुई और इस तरहकी सुलह उन्होंने मान ली तो बहुत अच्छा होगा। अभी उनकी ताकत इतनी मजबूत नहीं हुई है, इसलिये लड़ाईपर उतर आना अच्छा न होगा। न तू मजलिसमे आया न सुलहमें शामिल हुआ, तेरे लिये अब अच्छा यही है कि दोशम्बा और हिसारकी ओर जाकर अपना काम शुरू करें।

५

गैबी हथियार

नारोन गाँवमे एक हजार आदमियोंकी भीड़ जमा थी। किसीने पूछा—क्या बात है?

—इब्राहीम ग़ल्लू चकवै-तोकसाबा-पुत्रने लोगोंको सलाहके लिये बुलाया है।

—क्या लोगोको दूसरा काम नही है, कि उसके बुलानेपर इकट्ठा हुए हैं?

—नही देखता, यहाँ जमा होनेवाले कौन हैं? ये वही आदमी हैं जिनका अमीरके जमानेमे बोलबाला था। वह मिल्कियतवाले थे। अच्छी-अच्छी जमीनों और बहुसख्यक ढोरोके स्वामी थे। इनमेसे कितने ही "हम अमीरके सरकर्दा, हम अमल्दार हैं" कहकर लोगोंपर शासन करते, तनखाह (जगीर) खाते, घूस लेते और लोगोसे मुफ्त काम कराते थे। इनमेसे कितने ही "मै मुल्ला, मै ईशान, मै काजी, मै रईस हूँ" कहकर लोगोका खून चूसते और वक्फ (धार्मिक सम्पत्ति)का माल उड़ाते। अब जब कि अमीर भाग गया है, कितनोकी पहली शान-शौकत खतम हो गई। कुछ अब भी अपनी पहली हालतमे हैं, तो भी भय खाते हैं, कि जल्दी या देरमे उनकी यह मुफ्तखोरी खतम होके रहेगी। चूँकि यह अपनी सारी दौलत और दबदबेको अमीरकी तरफसे समझते हैं, इसी-

लिये वह "हम जनाब-आलीकी सरकारकी तरफसे ऐसे बने", "हमने दौलतआलीकी छत्रछायामे अमुक-अमुक काम किया" कहते फिरते थे। वस्तुत: सभी काम इन्होने अमीरकी सरकार और उसके नामपर किये। अब जब कि उन्होने सुना है कि सरकार कमकरोकी है, तो याद करते हैं कि पिछले जमानोमे कमकरोंपर उन्होने जो जोर-जुल्म किये हैं, यदि सचमुच सरकार कमकरोकी है तो वह सब उनके सिरपर पड़नेवाला है। यह बात उन्हें खूब अच्छी तरह मालूम है, इसीलिये वह यहाँ इकट्ठे हुए हैं और चाहते हैं कि कमकरोकी सरकारके मजबूत होनेसे पहले ही उसे नेस्त-नाबूद करके फिरसे अमीरी दौरको जारी करे। दूसरे, कितने ऐसे भी हैं जो मेरी-तेरी तरह असल कामको नहीं जानते और "क्या बात है क्या बात है" या "चलो देखे यह क्या करते हैं" सोचकर अथवा सरकर्दो, बायो, मुल्लोकी बातोमे पड़कर यहाँ आये हैं।

जमा हुए आदमियोमेंसे कुछ लोग आपसमे इसी तरहकी बात कर रहे थे। इसी समय इब्राहीम अपनी जगहसे उठकर एक ऊँची जगहपर आ एक छोरसे दूसरी छोर तक लोगोपर निगाह डालते बोला—मुसल्मानो! मैने तुम्हे इसलिये बुलाया है, कि तुम मेरी सहायता करो और हम इस्लाम और मुसल्मानीकी राहमे जहाद करे, मुल्कको मुसल्मानाबाद बनाये, जनाबआलीको अफगानिस्तानसे ले आ उनको अपने तख्तपर बैठाये।

लोगोके बीचसे आवाज आने लगी—"हमने अमीरसे क्या नेकी देखी कि उसे वापस बुलाये?" "अगर तू भूखा है तो कुछ-कुछ चीजे अपने लिये जमाकर और हमे अपनी हालतपर छोड़", "यदि जहाद (धर्मयुद्ध)की नीयत रखता है, तो फिर क्यो इस तरहकी बेसिरपैरकी बाते कर रहा है?" "अमीर अपने सारे तोपो-तुफगो, खजाना-दफीना (निधि)से क्या काम कर सका, जो यह करेगा? व्यर्थ लोगोको पामाल, घरोको उजाड़ और किसानोंको परेशान करेगा।" "इसे या इसको आगे बढ़ाने वालोंको लोगोंकी बर्बादीकी क्या पर्वाह? वह ऐसा काम करना

चाहते हैं, जिसमें चद्दरोज तक उनका बोलबाला रहे" "कब्र जले और देग उबले"। "पहले जमानेमें भी लोगोंके घर जलते थे और इनकी देग उबलती थी, गरीबोंकी बर्बादी इन्हें मोटा बनाती थी। अब भी वह यही चाहते हैं।" "कहते हैं आज-कल कमकरोंकी हकूमत है, लेकिन हुआ क्या? अब्दुर्रहमान मिगवाशीने खूराक-अफसर बनकर लोगोंके घरोंको बेदखना कर दिया और बाय लोगों तथा उनके पक्षपातियोंके गेहूँसे भरे अम्बारों तथा बखारोंको छुआ तक नहीं। 'गरीब जनताकी सरकार है' कहकर इनकी आँखे सदा गरीब किसानके एक ठिलियाभर गेहूँपर गड़ी रहती है। पहले नाजके बदले चाय, चीनी, कपड़ा और दूसरी चीजे देते थे और अब 'जब माल बुखारासे आयेगा तो देंगे' कहकर एक सूखा पुर्जा थमा देते हैं। इस पुर्जेको क्या किसान थूक लगाकर चाटे?" "यह पाप अब्दुर्रहमानका है। आज न सही, कल। उसका विश्वासघात प्रगट होगा और उसे दड मिलेगा। हमे न इब्राहीमकी जरूरत है, न उसके अमीरकी।"

इब्राहीमने लोगोंकी बड़बड़ाहटके कम पड़नेपर फिर अपनी बात शुरू की :

—गर्मको फुजैलने और दर्वाजको ईशान सुल्तानने अपने हाथमे लिया है। यदि कूलाबके अदर बैठे साठ लाल सैनिकोंको न गिने तो मै कह सकता हूँ कि कूलाब और बलजुबान दौलतमदबी और अब्दुल कयूमके हाथमे हैं। मैने खुद अपने चद आदमियोंके हाथ पत्र भेजकर कुर्गान-तप्पाको खाली करवाया। वहाँका रेव्-कम् (क्रान्तिकारी समितिका प्रतिनिधि) मेरा पत्र पढकर अपने परिवारके साथ वहाँसे भाग गया। मैने वहाँ पहुँचकर बोलशेविकोंसे मित्रता दिखलानेवाले कितने ही नर-नारियोंको मारा और अपनी तरफसे केन्ज-बेकराको वहाँका हाकिम नियुक्त किया। अमीर तगाई शहीद-बेकके पत्रोसे मालूम होता है, कि जनाब-आली बहुत जल्द अग्रेजी सरकार और अफगान सरकारसे दोस्ती करके

यहाँ आनेवाले हैं। तबतक हमें चाहिये कि इस देशको दुश्मनोसे पाक कर रखे, जिसमें जनाब-आलीके सामने हम सुर्खरू बन सके। यदि तुम हमारी सहायता करो तो दोशम्बाको खाली करा लेना मुश्किल नही है।

फिर बाते उठने लगीं, और किसीने कहा, "कुछ नही होगा, तू जा अपना काम कर। हमे अपनी हालतपर छोड़ दे। यदि तू भूखा है तो हम थोड़ी बहुत चीज जमाकर तेरे पास भेज देगे।"

इब्राहीमने अपने आपसे कहा—"अफसोस! मेरा बाप इस आदमीका कृतज्ञ था। नही तो अभी एक गोलीसे इसकी खोपड़ी उड़ा देता।" फिर लोगोकी ओर निगाह करके कहा—आप लोगोको मैने मुसल्मान समझकर यहाँ बुलाया, जिसमे हम दूसरे मुसल्मानोसे मिलकर जहाद कर सके। जहाद फर्ज (परम कर्तव्य) है। यदि विश्वास नही, तो मुल्ला लोगोसे पूछ ले .."

"जहाद फर्ज है, जिहाद फर्ज है" कहकर दो-तीन सफेद पगड़ी-वालोने इब्राहीमकी बातका समर्थन किया। इब्राहीमने फिर अपनी बात जारी रखते मुल्लोसे कहा—आप हमारी मदद करनेके बारेमे जोरदार भाषण दे और आयते पढे।

—तक्सीर! एक अर्ज है।

इब्राहीमने अपनी बात रोककर कहा—क्या कहता है?

—आज रातको जब लालसैनिक रास्तेसे जा रहे थे, तो मैने सोचा, शायद नुक्सान पहुँचाये, इसलिये अपने ढोरोको एक ओर हाँक ले गया। दिन हो जानेपर एक-एककर देखा तो मालूम हुआ कि एक दुमकटा लदा हुआ घोड़ा पैदा हुआ है। घोड़ेको पकड़ उसका भार देखा, तो वहाँ दो पेटी कार्तूस और छः बदूके पाई। यही वह घोड़ा है जिसे भारके साथ मे तुम्हारे पास लाया हूँ।

इतना कहकर उसने बोझवाले घोड़ेको इब्राहीमको भेट किया। यह बात सुनकर इब्राहीमने लोगोकी तरफ निगाह करके कहा—सुना! यह है

भगवानकी मदद ! यह है गैबी हथियार जिसे खुदाने मेरे पास भेजा है। तुम सबमें ईमान नहीं, इसीलिये सहायता नहीं देना चाहते। अब मैं कमरको मजबूतीसे बाँधकर मैदानमें उतरा हूँ। जो कोई भी गर्दन खींचेगा उसे अच्छी तरह याद रखना चाहिये, कि वह खुदाके गजबका शिकार होगा और उस गजबका लानेवाला मै होऊँगा। हम खुदाकी राहमे जहाद कर रहे हैं और खुदा हमारे साथ हैं।

इसके बाद इब्राहीम अपने घोड़ेपर सवार हो दोशम्बाकी तरफ रवाना हुआ और जमायतके दो सौ आदमी भी निकलकर उसके पीछे हो लिये।

६

दंड

शाहमंसूर गाँवमे लोग मजलिसके सामने एकत्रित हुए थे। उनके चेहरोको देखनेसे मालूम होता था कि कोई असाधारण बात सामने आई है। गाँवका बाय कह रहा था—इब्राहीम बकेने जहादके लिये कमर बाँधी है। हमारा कर्तव्य है कि इस्लाम-प्रेमके नामपर उसकी सहायता करे।

—इब्राहीम कहाँ और इस्लाम-प्रेम कहाँ—गाँवके एक आदमी हकबर्दीने कहा इस आदमीका इस्लामसे क्या सबध जिसने बाप-दादोके जमानेसे चोरी-डकैतीको अपना पेशा बना रक्खा है ?

गाँवके इमामने विरोध करते हुए कहा—इतिहासके ग्रथोमे उल्लेख है कि अमीर तैमूर साहबकराँने भी आरम्भिक जीवनमे डकैती की थी। शायद हमारा यह डाकू भी साहेबकराँ बने। इसलिये मदद देनी चाहिए जिसमे उस दिन हमे लज्जित न होना पड़े।

जहाँ-तहाँसे लोग बोल उठे 'हकबर्दीने ठीक कहा', 'चोरका क्या भरोसा', 'वह लोगोंको लूटना चाहता है,' 'अपने लूटनेवालेको हम क्यो मदद दे ?'

बायने कहा—चाहे डाकू ही सही, लेकिन अब भाग्य-लक्ष्मी उसके शिरपर बैठी है। नारोनमें उसे गैब (गुप्त)से हथियार मिला। फौजी पुलिस उससे मुकाबिला न कर सकी और उसके कितने ही सैनिक मारे गये। एक हुकूमत, जिसने अमीरको निकालकर बाहर किया, उनका इतनी मजबूतीसे मुकाबिला करना आसान काम नहीं है। यह सभी चिह्न साहबकरॉ (सम्राट्)के हैं। खुदाने जिस आदमीको साहबकराँ बनाया, उससे मुँह फेरना हमारे लिये ठीक नही।

—उससे मुँह फेरना खुदासे मुँह फेरना है—इमामने कहा।

हकबर्दी—गैबी हथियारकी बात करते हो ? लाल सैनिकोकी गलतीसे एक हथियारोंसे लदा घोड़ा पास चरती घोड़ियोंमे चला गया। फौजी पुलिसका हथियार छोड़ भागना यह दोशंबाके हाकिमोकी गलती है, जिन्होंने कि एक प्रसिद्ध और अनुभवी डाकुओंके मुकाबलेमे थोड़ेसे अनुभवहीन सिपाहियोको भेज दिया। जब उसका मुकाबला लाल फौजके थोड़ेस सिपाहियोसे हुआ तो इब्राहीम लाचार हो भाग खड़ा हुआ।

बाय—मै तुम लोगोंके लाभके लिये कह रहा हूँ, नही तो मुझे क्या, मै भी तुममेसे एक हूँ। यदि इब्राहीमकी सहायता न करोगे, तो तुम्हारे सारे अनाजको छीनकर अब्दुर्रहमान मिगवाशी बोलशेविकोको खिला देगा। उसमे मेरा भी गल्ला चला जायगा। लेकिन मै कोई-न-कोई उपाय निकाल अपनेको भूखसे बचा लूँगा। 'भेड़ियेकी माँद बेहड्डीकी नहीं होती।' यदि तुम्हारा गल्ला हाथसे निकल गया, तो भूखो मरोगे और खेतके लिये बीज भी न रह जायगा, और मै अमीरके जमानाकी तरह बोनेके लिये बीज न दे सकूँगा।

—कमकरोकी सरकार गरीब किसानोको भूखों मरने और बेबीजके नही रहने देगी। यह बात कितनी ही बार सरकारी कर्मचारियोंने जलसो और बाजारोंमे लोगोंसे कही है। यद्यपि आवश्यकताके समय सरकार हमसे गल्ला लेती है, लेकिन जब-जब हमे आवश्यकता होगी, तो हर तरहसे

हमारे पास अनाज पहुँचायेगी, और तुम्हारी तरह एक मनकी जगह दो मन लेनेके लिये नहीं।

हकबर्दी—नही, हमको चोर नही चाहिये। अगर तू चाहता है, तो खुद उसके पास चला जा। यदि इब्राहीमकी ताकत बढी, तो वह फिर हमारे शिरपर अमीरको ला बैठायेगा। अमीरके जुल्म व अत्याचारको हम भूले नही हैं।

'बुढियाका दर्द है कपास' बाय भी अमीरके आदमियोको चाहता है।

सभा समाप्त हुई। सबसे पहले बाय अपना जामा सम्हाले मजलिससे रवाना हुआ।

× × ×

रातको लोग नीदमे थे। इसी वक्त गोलियोंकी आवाज एकके बाद एक सुनाई दी। सभी घबड़ाकर जाग उठे और अपनी हवेलियोके दरवाजेसे बाहर निकल आये। लेकिन जो कोई भी दरवाजासे बाहर आया, उसे हाथ-पैर बाँध कूचामे डाल दिया गया। डाकुओने शाहमन्सूर गाँवको घेर लिया था। घरकी सारी चीजोंको निकालकर उन्होने जमा कर लिया था।

'यह है उन लोगोके लिये दंड, जो लश्करे-इस्लाम (इस्लामी सेना)की मदद नही करते, जिन्होने मलीशिया (फौजी पुलीस) और लालसेनाके मुर्दोको रास्तेसे हटाकर दफनाया उनके नाक-कान काट लो, आँख निकाल लो, हकबर्दीको हाथ-गर्दन बाँधकर सामने लाओ, दूसरोंको उनकी हालत पर छोड दो कि भूखो मरे। देखे बोलशेविक कहाँसे अनाज लाके उनका पेट भरते हैं—इब्राहीम कह रहा था।

× × ×

शाहमंसूरकी भाँति दोशबा इलाकेके कोकताश, मौलाना और दूसरे गाँवोको भी दंड दिया गया। फिर मुल्लो, ईशानों (पीरो) सरकर्दों (फौजी अफसरों), अमलदारों (नागरिक अफसरो) और बाय लोगोंने

कारासू गाँवमें एकत्रित हो शपथपूर्वक इब्राहीमको कलाँ (नेता) या सर्दार बनाया। सभाकी समाप्तिपर इब्राहीमने कहा—खुदाका शुक्र कि मैं अब खुद दौलत (सरकार) बना, लेकिन इस सभामे एकत्रित हो फातिहा पढनेवालोंको शपथ और करार तोड़नी नहीं चाहिये। फातिहा क्या है इसे भूलना न चाहिए।

—फातिहा 'खुदाकी मुहर है' तकसीर (क्षमानिधान) ! जो फातिहा तोड़ता है वह खुदाकी मुहरको तोड़ता है—एक मुल्लाने कहा।

—हाँ यही बात है—कहकर इब्राहीमने अपनी बात जारी की—जनाबआलीके पाससे भी हर रोज अच्छी खबरे आ रही हैं। जनाबआलीने अपने मुबारकनामा (श्रीपत्र)मे खुद लिखा है—'हमारे सेवकोंमे जो कोई बहादुरी दिखलाये उसके कामसे हमे सूचित करो। हम उसे ऊँचा पद देगे।'

—हजरतने करामत (चमत्कार) कर दिया तकसार !— एक फौजी अफसरने कहा—पहलेके बादशाहोकी भी यही रीति रही है। वह जान देनेवाले बहादुरोंको धनसे वचित नही होने देते थे। उदाहरणके तौर-पर स्वर्गीय अमीर यानी जनाबआलीके पिताके समय बादशाही लगान न दे किसान अफगानिस्तान भाग गये। एक किसानको मै पकड़के लाया, तो मुझे एक बारगी मीर-आखुर बना दिया।

—अब भी ऐसा ही होगा—इब्राहीमने कहा—जो कोई भी जान लड़ायेगा, मेरे बतलानेके मुताबिक जनाबआली उसपर कृपावृष्टि करेगे। गोली-बदूक भी जनाबआलीके पाससे बराबर आ रही है। लेकिन हमारे आदमी व्यवस्थित युद्धके ढगको नही जानते। इसलिये यह आवश्यक है कि जबतक वह ठीकसे कवायद-परेड न सीख जायँ, तबतक लालसेनासे सामने होकर न लड़े। हाँ, ऐसा काम करे, कि जिसमे लालसेना बेखुराकके रह जाय। इसके लिये आवश्यक है कि किसानोपर कड़ाई की जाय और कोई शख्स शहरमे अनाज न ले जाने पावे। यदि कोई किसान एक मट्ठी

अनाज शहर ले गया या उसने अन्न ले जानेके लिये लोगोंको प्रेरित किया, तो हम उसे बहुत सख्त दड देंगे।

—यदि लाल सैनिक स्वय आकर गॉवोंसे अन्न ले जायँ, तो क्या करना चाहिए ?—एक नौकरने पूछा।

—यदि लाल सैनिक स्वयं गाँवमें आकर अनाज ले जायँ, तो भी उनके चले जानेपर गॉववालोंको कड़ा दड देना चाहिए, जिससे बादमें वह यथाशक्ति अन्न देनेकी कोशिश न करे। तब लाल सैनिक अन्न न देनेवालोपर कड़ाई करेगे। इससे लोगो और लाल सैनिकोंमे दुश्मनी पैदा होगी और यह हमारे फायदेकी चीज है। लाल सैनिक हफ्तामें एक बार गॉवमें आयेगे और हमारे आदमी सभी गॉवोंमें सदा रहते हैं। इसलिये हम अपने हुक्मको हर तरहसे गॉवोंमे चला सकते हैं। गाँवोंमे भी अपने नौकरोको पैसा-जूता-जामा पहनाकर दे-दिलाकर खिला-पिलाकर रखना जरूरी है। मुल्लो और ईशानोके लिये बेगार और खैरात फिरसे जारी करानी चाहिए, जिसमे कि वह मेरे और जनाबआलीके लिये दुआ करे और लोगोंको हर तरहसे बोलशेविकोंको अन्न देनेसे मना करें।

एक मुल्लाने आधा उठकर—करामत कर दी तकसीर ! खुदा आपकी दौलत बढावे। 'बिन्नबी-व-आलेहिल्-अमूजद्' (पैगबर और उसकी श्रेष्ठ संतानके वास्ते)—कहते दुआ की।

इब्राहीमने कहा—सक्षेपमे यह कि हमे हर तरहसे शहरमें अनाजको जानेसे रोकना चाहिए। इसका सबसे आसान तरीका है कड़ा दंड।

७

नाच-गान और कूबकारी*

कोकताश गॉवमे हवेलीके अंदर-बाहर, बाहरी फाटक और कूचा तक

*बकरी नोचनेकी घुड़दौड़।

झाड़ दे छिड़काव किया गया था। रासवाले घोड़ोंको खूँटोंसे बाँध साईस धोकर खरहरा कर रहे थे। दालानमें एक छोरसे दूसरे छोर तक बड़ा कालीन बिछाया गया था। लम्बाईके दोनो छोरोंपर हिसारी आबरेशमके दो गद्दे रखे थे। प्रधान स्थानपर अदरस, शाही, अतलस और मख-मलके चार गद्दे बिछे थे। वहाँ एक लम्बा बकर-दाढी, स्याह चेहरेका पैतालीस-साला आदमी तीन तकियोंको लगाये एक पार्श्वमें झुका हुआ बैठा था। उसके पैरहनेकी ओर एक सोलह-सतरह साला लड़का बैठा पैर दबा रहा था। जरा और नीचे एक और उसी उम्रका लड़का कमरमें सफेद कमरबद बाँधे अपने सामने एक चायनिक, प्याला और तश्तरी लिये बैठा था। जिस वक्त प्रधान पुरुष इशारा करता, लड़का चायको प्यालामें डाल प्यालाको तश्तरीमें रख दोनो हाथोसे बड़े सन्मानके साथ आदमीके सामने रख बिना पीठ दिखाये अपनी जगह आकर बैठ जाता। फर्शकी दोनों तरफके गद्दोंपर चार-पाँच आदमी पालथीजानु बैठे थे, जिनकी पगड़ी और लिबाससे मालूम पड़ता था, कि वह बाय और अमलदार (अफसर) हैं। फर्शके नीचेकी ओर एक गद्दे पर और चार आदमी बैठे थे, जिनके सामने दो आगकी अँगीठियाँ रखी थी। उनमेंसे एकके हाथमें रबाब (एकतारा) था, जिसकी खूँटियोंको ऐंठकर तारको मिजराबसे बजाकर वह ठीक कर रहा था। पासके दो आदमी दायरा (डफ) और दुबक हाथमें लिये उनके चमड़ेको अँगेठीपर ताजा कर रहे थे। चौथा आदमी एक सतरह-अठारह साला लड़का था, जो अपने लंबी-काली जुल्फोंको कंघी कर रहा था।

प्रधान पुरुषने चाय पी प्यालाको तश्तरीपर रख रबाबीकी तरफ निगाह करके कहा—तुम लोग आका ! कितने वर्षोंसे इस तरफ हो ?

—सरदार साहब ! तीन साल हुआ। जहाद (धर्म-युद्ध)की इच्छासे हम अपने वतनसे बुखारा आकर अमीर साहबके नौकर हुए। जब-तब रबाब बजा संगीत करके अमीर साहब और उनके दरबारियोंको

खुश करते थे। अमीर साहब इस मुल्कसे चले गये, हम लोग बे-साहब हो गये। खुदाका शुक्र है, कि आप साहबे-दौलत (राजा) हुए। फिर हमे अपनी कला दिखानेका अवसर मिला—रबाबीने कहा, जिसके रग-ढग और बोल-चालसे मालूम हो जाता था कि वह अफगान है।

—खूब, अच्छा तो कोई चीज सुनावे—सरदारने कहा। रबाब, डफ और दुंबक एक साथ बजने लगे। रबाबीने गाना शुरू किया :—

ले गया अफगान-बच्चा रबाबके स्वरसे, (दो बार)
अल्ला-अल्ला अजब गानेवाला है वह, (")
ऐसी चाल, कटाक्ष और निद्रालु आँखे, (")

. .. .

त्राहि माम् त्राहि माम् ....

—आगा—सरदारने कहा—मेहरबानी करके अपने बच्चेका नाच भी दिखलाइये।

साजमे नाचकी गत बजने लगी। जुल्फीवाला बच्चा उठकर नाचने लगा और रबाबी गाने लगा :—

हाथमे ली तलवार,
कर दिया कीमा उसका,
जो कि होवे गाजी,
बगलमे लेवे निमूछा,
ओय, जो कि होवे गाजी
बगलमे लेवे निमूछा।

महफिल खूब गरम थी। इसी समय दमुल्ला इमाम आया। इज्जतके लिये कहीं लोग खड़े न हो जायँ और मीर गाजीकी महफिलमे विघ्न न पड़े' इसलिये मुल्ला तेजीसे कदम बढ़ाते पास पहुँच गया। प्रधान पुरुषने सम्मान-प्रदर्शनके लिये जरा-सा शरीरको झुका देना ही काफी समझा और गद्देके

ऊपरी हिस्सेपर बैठनेके लिये इशारा किया। इमामने बैठकर मीर गाजी और 'जनाबआली'के लिये हाथ उठाकर दुआ की।

—तकसीर!—पीर गाज़ीने कहा—रोष न दीजिये। 'कभी ग़मज़ा व उसूल, कभी खुदा व रसूल (कभी कटाक्ष और नयन-बाण और कभी भक्त-भगवान)। हम रात-दिन दीन-इस्लामके लिये जहाद करते हैं। इसलिये कभी-कभी बज्म (नाच-गान) लगाकर दिमागको ताजा न करें तो ठीक नही होता।

—अलबत्ता, अलबत्ता—इमामने कहा—यह पुराने बादशाहोंकी सुन्नत (सदाचार) है। इतिहासकी पुस्तकोमें लिखा है, कि अब्बासी खलीफा भी दासियोंकी बज्म रचाते थे। और उनके वली (सिद्ध) होनेमे जरा भी शक नहीं। दूर जानेकी जरूरत नहीं। जनाबआली बुखारामे रहते वक्त कभी-कभी खास तौरसे बज्म रचाकर दिमागको तर करते थे। कभी-कभी जनाब ईशान क़ाज़ीकलॉ (महान्यायाधीश) 'शहीद' (धर्मपर बलिदान हुए)को भी बज्म कराते। और छोकरेसे चाय और मिठाई ले उसे स्वागत आदि कहते।

—खूब, ऐसा है तो आप भी ईशान कलॉकी सुन्नत (सदाचार)को पूरा करते हमारे छोकरेसे एक प्याली चाय और मिठाई लीजिये और उसे स्वागत कहिये।

इमामने नर्तक छोकरेके पास एक प्याला चाय ले जा अपने हाथको उसके ओठोंमे लगा 'तेरे सदके (निछावर)! मेरी खातिर और हमारे मीर गाजीकी खातिर जरा मेहरबानी करके' कहा।

—दमुल्ला! अपने ही लिये—मीर गाजीने कहा—मेरे लिये सारी रात है।

महफिलवाले कहकहा लगाकर हँसे। रबाबीने गाना शुरू किया—

हाथमे दिया रुमाल }
आ सामने मेरा माल } दो बार

जो कोई गाजी होवे,
उसे मिले पैसा माल,
ओय, जो कि होवे गाजी,
उसे मिले पैसा-माल

× × ×

बसमाची (डाकू) नौकरोंने एक आदमीके हाथ-गर्दनको बाँधकर द्वारसे लाकर मीर गाजीके सामने किया।

—यह कौन है ?—मीर गाजीने पूछा।

—राहती गाँवका निवासी सादुल्ला है। इसे बोलशेविकोंके लिये शहरमें अनाज ले जाते पकड़ा—नौकरने जवाब दिया।

—खूब खूब, अभी ठहरो, बज्मके बाद इससे बात पूछेंगे।

लेकिन बज्मके खत्म होने तक जिंदा रहना उस आदमीको नसीब न हुआ। अब्दुर्रशीद लकेके साथ पचास दूसरे बसमाची हवेलीके अंदर आये। अब्दुर्रशीदने उस आदमीको देखकर मीर गाजीसे कहा—इब्राहीम बेक ! इस आदमीका एक मिनट भी जिंदा रहना ठीक नहीं। इसे मुझे दो कि ले जाकर कुबकारी करे, जिसमे तुम्हारी बज्म बिना कुबकारीके न रहे।

इब्राहीमकी "हाँ-ना"की प्रतीक्षा किये बिना सवार सादुल्लाके तनके कपड़ोंको उतारकर दरवाजासे बाहर ले गये और बकरीके नोचने जैसी कुब-कारीकी धुड़दौड़ शुरू की। कुबकारीके मैदानमे जैसे सिरकटी बकरीके साथ करते हैं, उसी तरह उन्होने जिन्दा आदमीके साथ किया। आध घटेकी खीचाखीचीके बाद हाथ-पैर और सिरसे अलग हो सादुल्लाका लहूलुहान धड़ जमीनपर गिर पड़ा।

—अब तूदाकाशी (छीनाझपटी) करे—अब्दुर्रशीदने कहा—जो आदमी इस 'बकरी'को छीनकर मीर गाजीके सामने ला रक्खे, इस नारकी आदमीका माल-असबाब और जवान स्त्री उसीकी होगी।

खिलाड़ियोंको यह शर्त मजूर हुई। लहूलुहान धड़को किसीने वृत्तपर टाँग दिया। खिलाड़ी सवार आस्तीन ऊपर चढ़ाये, लगामको घोड़ेकी गर्दनपर छोड़े, कोड़ेको दाँतसे पकड़े, हाथोको हवामे उठाये खड़े हुए। बुज-अन्दाज (बकरी फेकनेवाले)ने रक्तलिप्त धड़को दो-तीन बार हवामे घुमाकर सवारोकी भीड़के अदर फेंका। खिलाड़ी सवारोने बड़ी फुर्तीसे अपने शरीरको घोड़ेकी पीठसे झुकाकर लोथड़ेको चारो तरफसे पकड़ा। फिर खीचतानी शुरू हुई। अन्तमे अब्दुर्रशीदने चार फदावाली रस्सीको लोथड़ेपर फेक दूसरी छोरको जीनकी काठीसे मजबूतीसे बाँध घोड़ेको कोड़ा लगाया। घोड़ा दो छलाँगमे पाँतीके किनारे पहुँच गया। दूसरोने भी अपने घोडे उसके पीछे डाले लेकिन अब्दुर्रशीदका तेज घोड़ा उनसे सौ कदम आगे बढ़ते हवेलीके अदर घुसकर बज्मके सामने खड़ा हुआ। अब्दुर्रशीदने खून भरे लाल लोथड़ेको फर्शके एक छोरपर इब्राहीमकी नजरके सामने जमीनपर रखकर कहा—"यह है मेरी कूबकारी 'बकरी'को निकाल लानेमे मै ही सफल रहा।"

रबाबी अब भी गानेसे मीर गाजीके दिलको खुशकर रहा था—

"पक्केको पकड़ पक्केको
पक्केको न बनाये को।
जो कि होवे गाजी
खीचे वह लड़कीको
ओय जो कि होवे गाजी
खीचे वह लड़कीको.. "

८

आगे बढ़नेके लिये पीछे हटना

मौसिम बहुत सर्द था। बर्फ पड़ रही थी। गैरिसन (छावनी) क्लब

एक उजाड़-घरमे थी, जहाँ अन्दर और बाहरकी सर्दीमें कोई अन्तर न था। किवाडकी दारारों और प्रकाश-छिद्रोंसे होकर गिरते बरफके फाहोंने फर्शको मानो सफेद रुईसे ढाँक दिया था। घरके अन्दर दस लाल-सैनिक और कुछ क्रान्तिकारी सैनिक कार्तूसके खाली बक्सोंपर बैठे हुए थे। उनके फटे जूते और लिबास बतला रहे थे, कि काफी समयसे उनके पास नई पोशाक नहीं पहुँची। उनके उडे रगो और सूखे चेहरोसे पता लगता था, कि देरसे उन्हें पेटभर खाना नसीब नही हुआ, लेकिन उनकी चमकती आँखे बतला रही थी, कि लाल-सैनिकोकी वीरता और अभिमान अब भी उनमे वैसा ही है।

—साथियो! सभा आरम्भ करता हूं—सभापतिने कहा—कार्यक्रममें सिर्फ एक ही प्रश्न है "कुलाबको छोड़ देना उचित है या नही?"। कोई और प्रश्न रखना चाहता है?

—नही रखना चाहता है। कहना पडेगा कि सिर्फ एक ही प्रश्न है। पहले राजनीतिक कमीसर (अफसर)को बोलनेकी इजाजत है।

कमीसर—साथियो! कुलाबके किलेकी रक्षाके लिये जो भी हो सकता था, हमने किया। भूखे, नगे सर्दी खाते भी हमने धैर्यको न छोड़ा। अगरेजी बदूकोसे हथियारबन्द तीन हजार बसमाचियोसे सिर्फ साठ लाल-सैनिकोने डटकर मुकाबिला किया। कठिनाइयोने उन्हे अनुत्साहित नहीं किया। जरूरत पड़नेपर हम फिर मुकाबिला करेगे। लेकिन मै समझता हूँ, अब यहाँ रहना बेफायदा है। महीनो गुजर गये, दोशम्बाकी तरफसे हमारे पास कोई मदद नही आई और न निकट भविष्यमे आनेकी आशा ही है। ऊपरसे खूराकका मिलना असम्भव हो गया है, जिसको कि ध्यानसे हटाया नही जा सकता। इस बारेमे साथियोकी राय सुनकर सभाको कोई निर्णय करना चाहिये।

—मेरा विचार है—एक साथीने कहा—चाहे जो भी हो, अब भी हमे इस स्थानको दृढ़ बनाना चाहिये, जिसमे यह किला दुश्मनके हाथमें

न जाय। हम "दुनियाके सारे कमकरो, एक हो जाओ"का नारा लगाते इस किलेकी रक्षा करते रहे। खूराक जैसे आज तक हासिल करते रहे, आगे भी उसी भाँति हासिल करेंगे।

कमाडरने बहस शुरू की—यह वह स्थान है, जहाँ गृहयुद्धों और प्रतिगामियोंकी विरोधाग्निमें हमारे शरीरका मास पका। हम कभी नहीं चाहते, कि जीवित रहते कमकरोंके अधिकारमें आये इस किलेको लौटा दे। खासकर जब कि बुखाराकी जन-प्रजातन्त्र-सरकार, बुखाराके अत्याचार-पीड़ित कमकरोंकी रक्षाके लिये हमें बुलाकर यहाँ लाई है। ऐसी अवस्थामें यह उचित न होगा कि हम अपने कधेपर पड़ी इस बड़ी जिम्मेवारीको उतार फेंके। किन्तु आहारका प्रश्न बाध्य कर रहा है, कि हम अस्थायी तौरपर इस स्थानसे पीछे हटे। इस साथीने कहा, कि आहार जैसे आज तक हम हासिल करते रहे, वैसे आगे भी करेंगे, किन्तु यह आहार प्राप्त करनेका काम इतना आसान नही है। इलाकेमें बसमाचियोंने किसी चीजको रहने नही दिया, सबको बर्बाद कर दिया है। खूराककी चीजें दूर ले जाकर पहाड़की चोटियों और गुफाओंमें छिपा दी गई हैं। गाँवमें कुछ रह नहीं गया है। लोग भूखे मर रहे हैं। इसपर भी जब हम गाँवमें जाते हैं, तो थोड़ा बहुत कोई न कोई चीज हाथमें लेकर लौटते हैं, लेकिन जैसे ही हम गाँवसे निकल आते हैं, बसमाची पहुँच जाते हैं और 'तुमने लाल सैनिकोंको अन्न दिया" कहकर लोगोंकी बड़ी सासत करते हैं। बसमाची किस तरह सासत करके लोगोंको मारते हैं, यह साथियोंको मालूम है। वह लोगोंको जिन्दा जलाते, कत्ल करते, दारपर टाँगते और कूबकारी करते हैं। सबसे नरम सजा उनकी है आँख-कान काट लेना। यहाँ बहुत कम ऐसे सौभाग्य वाले आदमी हैं, जो इस सजासे बचे हैं। यद्यपि हमारे चले जानेपर भी बसमाची इन सासतोंको जारी रखेंगे, लेकिन उस वक्त कोई आदमी हमें इसका कारण नही समझेगा। इसलिये मेरी राय है, कि इस अवस्थामें अपने प्रति लोगोंमें रजिश पैदा करनेका मौका देना ठीक नहीं।

दूसरोंने भी अपने-अपने विचार प्रगट किये। अन्तमें राजनीतिक कमीसर फिर बोले—हम इस किलेको सदाके लिये छोड़कर नहीं जा रहे। हम इसलिये जा रहे हैं, कि जल्दी ही नई शक्ति और पूरे साधनोंके साथ लौट आएँ। हम जा रहे हैं, कि लौटकर इस घरकी छतपर, सिर्फ इसी घरकी छतपर नहीं बल्कि सभी नवनिर्मित घरोंकी छतोंपर लाल झंडा फहराये। हम पीछे हट रहे हैं, लेकिन हमारा पीछे हटना उस आदमीके पीछे हटनेकी तरह है, जो अपने वेगको बढ़ा छलाँग मारकर नहरके पार जाना चाहता है। हम दो कदम पीछे हट रहे हैं, ताकि दौड़ते आकर सामनेका उस खाईको आसानीसे कूद जायँ, जिसे अंगरेजी साम्राजियों और अमीरके पक्षपातियोंने खोद रखा है। हमारी क्रान्तिके युद्धोंके इतिहासमें इस तरह पीछे हटनेके कई उदाहरण हैं।

सभाने एक राय से निश्चय किया और आगे बढ़नेके विचारसे दो कदम पीछे हटना स्वीकार किया।

६

आँखों-कानोंसे भरा थैला

इब्राहीम बेग, ईशान सुल्तान खाँ, दौलतमन्दबी, अब्दुलकयूमबी, तोगे सरिंग, बरात, एसिक आकाबाशी और दूसरे सारे बसमाचियोंके कूरबाशी (सेना-संचालक) और सरदार अपने दस्तों और सिपाहियोंके साथ शहर कूलाबमें एकत्र हुए थे। आपसमें शपथ करके उन्होंने इब्राहीम बेगको अपना नेता बनाया। सारे सरदार एक घरमें बैठे और युद्ध-कौन्सिल आरम्भ हुई। इब्राहीमने कहा—

—सभी काम इच्छानुकूल हो रहे हैं। शहर कूलाबका हाथमें आना बहुत बड़ा सगुन है। अब हमारे लिए बुखाराका रास्ता खुल गया। जनाबआलीकी तरफसे भी अच्छी-अच्छी खबरें आई हैं। जनाबआलीकी

दयादृष्टिसे खुदा, पैगम्बर और शरीयत हमारे मददगार हैं। अफ़गानिस्तानकी सरकार बिल्कुल नही चाहती, कि जनाबआली और अंग्रेज सरकारके बीच सबन्ध स्थापित हो। लेकिन उसकी सारी कडाइयोके होते भी रास्ता निकल आया। अँगरेजी कौन्सलखाना (दूतावास)के एक कर्मचारीने मास्कवी पोशाकमे जनाबआली और अंग्रेजी राजदूतके बीच पत्र-व्यवहारका सिलसिला कायम कर दिया है। जनाबआली और राजदूतने ऐसा प्रबन्ध कर दिया है, कि अब हमे हथियारोकी किल्लत नही पड़ेगी। चाहे खानाबादके रास्ते चाहे बदख्शाँके रास्ते हमे हर तरहके हथियार अब मिलते रहेगे, लेकिन इसके लिये हमे पैसा इकट्ठा करना पडेगा। सईद बेकने मुझे यह भी लिखा है, कि जो लोग जहाद (धर्मयुद्ध) मे ज्यादा बहादुरी दिखला रहे हैं, उनका नाम लिखकर भेजो, जिसमे कि उन्हे अपनी सेवाके अनुसार श्रीचरणोसे पद और प्रतिष्ठा प्रदान की जाय।

पैसकी समस्या आसानीसे हल हो गई। सभी कूरबाशियोने एक रायसे ते किया कि जो कुछ—बच्चोकी टोपियो तक—कुलाब और बल्जुवानके लोगोसे मिल सके, सबको सईद बेकके पास खानाबाद भेज दिया जाय, ताकि वह हथियार खरीदे। इसके बाद बहादुरी दिखलाने वालोके बारेमे लिखनेकी बात आई। हरेक आदमी पत्रमे अपना नाम लिखे जानेके लिए अपने-अपने कारनामोको सुनाने लगा—"मैने अमुक गाँवमे आग लगाई", "मैने एक दर्जीको जदीदो और बोलशेविकोकी बर्दी सीनेके लिए मार डाला" "मैने अमुक आदमीको लाल सैनिकोके हाथमे अनाज बेचनेकी कोशिश करनेके लिए कान छेदकर पेड़से टाँग दिया", "मैने एक मजूरकी 'अब स्वतन्त्रता है, कोई किसीको दबा नहीं सकता' कहते मालिककी ओर दौड़नेके अपराधमे आँखे निकाल लीं", "मैने पहाड़ोंमें न ले जानेके कारण अमुक गाँवके गेहूँमे आग लगाकर जला दिया"... ..

वहाँ सिर्फ एक आदमी था, जिसने अपने कारनामोंके बारेमें मुँह नही खोला। इब्राहीम बेकने उसकी ओर निगाह करके कहा—तू क्यो कुछ नही बोलता ? क्या तूने कोई कारनामा नही किया ?

आदमीने एक मुँह बन्द भरे थैलेको अपने नीचेसे निकालकर इब्राहीम को दिखलाते हुए कहा—मैने जो कुछ काम किया, सब इसी थैलेके अदर है। जब जनाबआली आयेगे, तो खुद उनकी सेवामे भेट करूँगा।

इब्राहीम—इस थैलेके अदर क्या है ? यदि हीरा, मोती या सोना है तो उसके खर्च करनेका वक्त यही है और इसे अफगानिस्तान भेजकर हथियार खरीदा जा सकता है।

—नही, यह हीरा-मोती या सोना नही है। इसके बदलेमे हथियार नही मिल सकता, लेकिन यह ऐसी चीज है, जिसे देखकर जनाबआली सोना-जवाहिरके देखनेसे भी अधिक खुश होगे।

एक बसमाचीने दूसरेके कानमे धीरेसे कहा—जान पड़ता है, जनाब-आलीकी भेटके लिये एक निमूछे लड़केको इस थैलेके अन्दर बन्द कर रखा है ?

इब्राहीम—बता, दुनियामे अलभ्य यह कौन सा धन तेरे पास है ?

आदमीने थैलेका मुँह खोलकर दिखलाया। वहाँ आदमियोके कटे कान और आँखे भरी हुई थी। फिर उसने कहा—यह जदीदो, बोलशेविकों और उनके खैरखाहोंके आँख-कान हैं, जिन्हें जनाबआलीकी सरकारकी स्थापनाके लिए मैने काटे। आगे भी इस कामके लिए जितने आँख-कान काटूँगा, उन्हें जब जनाबआली पधारेगे, तो श्रीचरणोंमे भेट करूँगा। उस वक्त जनाबआली जानेगे कि तोग़े सरिंगने क्या कारनामा किया, फिर वह जो चाहेंगे वह मेरे लिये प्रदान करेंगे।

१०

कार्तूसोंसे भरा कुंड

लाल सैनिक कुलाबसे निकल **कनकुर्त्ता** पहुँचे और चद रोज वहाँ ठहरे। राहमे बसमाचियोके साथ कई झड़प हुई, लेकिन वह सलामतीके साथ फैजाबाद पहुँच गये। साठ लाल सैनिको और चंद स्थानीय स्वयं-सेवकोका तीन हजार बसमाची जल्लादोके बीचसे उन्हे नुक्सान पहुँचाते हुए सलामत निकल जाना एक ऐसी वीरता और चमत्कारकी चीज है, जो कि क्रान्ति-युद्धके इतिहासके पन्नोमे ही दिखलाई पड़ती है। फैजाबादमे वहाँ पहलेसे ही वर्तमान सैनिक मिल गये और दोनों कुछ समय तक वहाँ ठहरे।

बसमाचियोकी सख्या दिन प्रतिदिन बढ रही थी। हर रोज हर गाँवमे चंद आदमियोको अमीरकी तरफसे नया अमला (पदाधिकारी) बनाया जाता, जो आदमियोंको जमाकर बसमाचियोसे आ मिलते। इस तरह चार हजार बसमाची दोशम्बा और फैजाबादके इलाकेमे छाये हुए थे। दोशम्बासे फैजाबाद मदद नही पहुँच रही थी। फैजाबादके सैनिक बिना अनाजके थे। उनके अच्छे-अच्छे घोडे खूराकके बिना मर गये या मॉदा हो गये थे। जैसे भी हो, फैजाबादसे निकलकर दोशम्बा जाना जरूरी था, लेकिन सवाल था अधिक सामान और हथियारोको क्या किया जाय। खासकर बीस पेटियोंमे आये चालीस हजार कार्तूसोको किसपर लादकर दोशम्बा ले जाया जाय। अब एक दिन भी फैजाबादमे रहना सभव नही था, क्योंकि एक दिनका भी दाना न तो आदमियोंके लिये बचा था और न घोड़ोंके लिये। खैरियत यही थी कि कुर्गानके पास एक कुड था, नहीं तो वे प्यासे मर जाते।

× × ×

दोशम्बेका समीपवर्ती मौलाना गाँव एक हकूमतकी राजधानी बना हुआ

था। इसका अधीश्वर था "मुल्ला मुहम्मद इब्राहीमबी दीवानबेगी लश्कर-बाशी तोपचीबाशी (महामंत्री-सेनापति-तोपखाना-जेनरल) चक्कावे तूकसाबा (पुत्र)"। इतना लम्बा चौड़ा विरुद अधीश्वरकी मुहरपर खुदा हुआ था। हर रोज निकलनेवाले फरमानोपर लगी इस मुहरको गॉवके इमामसे पढवाकर लोगोने याद कर रखा था, नही तो भूलमे भी यदि किसीने विरुदोमेसे किसी एकको छोड़ दिया तो अपमानके अपराधमे उसे मृत्युदड मिलता। स्वरूप और गुणमे अमीरके हकूमतकी उत्तराधिकारिणी इस हकूमतको अमीरसे दायभागम दो पुरानी तोपे मिली थी, जिन्हे बारूदसे भरकर हर रोज सुबह और शाम दोशम्बाकी तरफ दागा जाता। दोशम्बा बाध्य हुआ कि इस नवस्थापित जीर्ण हकूमतपर आक्रमण करनेके लिये लाल सैनिकोंको इजाजत दे। वहॉके लाल सैनिकोकी सख्या अधिक नही थी, तो भी उन्होंने अपनेमेसे सौ सवारोको दो मशीनगनोके साथ मौलानाकी तरफ रवाना किया। उन्होने रातको मौलाना गॉवमे चुपचाप मुकाम करके आक्रमण करनेका निश्चय किया था, लेकिन पहले हीसे खबर पाकर बसमाची गोली चलाने लगे। दो मशीनगनों और सौ बन्दूकोने उनका जवाब दिया। लेकिन सौका चार हजारसे मुकाबला आसान नही था—खासकर जब कि उनमेसे कितनोके पास ग्यारहगोलिया, सतगोलिया, पचगोलिया बंदूकें थी। इसलिये लाल सैनिकोको बाध्य होकर पीछे हटना पड़ा, जिसमे बहुतसे लाल सैनिक हताहत हुए और उनके हथियार दुश्मनोके हाथ लगे। वह तबतक पीछे हटते रहेगे, जब तक कि दोशम्बासे कुमक न पहुँच गई। कुमकके पहुँच जानेपर उन्होने दुबारा बसमाचियोकी राजधानीपर हमला किया और उसे ध्वस्तकर जहॉ अपने बदियोंको स्वतन्त्र किया, वहॉ अमीरकी पुरानी तोपोंको भी छीन लिया। इसी वक्त मौका पाकर फैजाबादके लाल सैनिक भी बसमाचियोंसे लड़ते-भिड़ते सलामतीके साथ दोशम्बा पहुँच गये।

इस घटनाके बाद बसमाचियोंने भली भाँति समझ लिया, कि सिंहकी पूँछ मरोड़ना आसान काम नहीं है। इसके बाद सीधे हमला करनेका प्रयत्न

उन्होंने फिर कभी नही किया और एक जगह भारी जमावड़ेको खतरनाक समझ वह बहुतसे गिरोहोमे बँटकर गाँवों और पहाड़ोंमे बिखर गये। अब उनका काम था, अपने आस-पास संतरी रख गाँवोको लूटना और बरबाद करना।

× × ×

फैजाबादके कुडका पानी नीले रगका हो गया। उसका स्वाद भी इतना बदल गया कि कोई उसे पी नही सकता था। आसपासके आदमी यह हालत देख कुडके पानीको उलाचनेके लिये जमा हुए। पानीको निकाल फेकनेपर देखा कि वहाँ बीस भरी पेटियाँ पड़ी हैं। उन्ह कुडसे बाहर निकाल खोलकर देखनेपर उनमे चालीस हजार कार्तूस मिले। मौलानाकी लड़ाईसे इब्राहीम करीब-करीब बेकार्तूसका हो गया था। खबर पा पेटियोको अपने हाथमेकर उसने लोगोसे कहना शुरू किया—यह है खुदाकी मदद जिसने इस्लामके गाजियोंक लिये कुडको कातूसोंसे भर दिया।

११

हामियान-इस्लाम (१९२१ ई०)

आसमानसे बात करनेवाले ऊँच-ऊँचे पहाड़। पाताल तक पहुँचनेवाले खड्ड और गुफाये। रास्ते इतने तग तथा सीधे कि जिनपर चलते बकरियोके भी हवास ढीले पड़ जाते। बारीक भयानक ऊँचे डाँड़े, जहाँ पहुँचनेमे बादल भी काँप उठता। बड़ी-बड़ी पथरीली चट्टाने, जो हाथीको भी अपने पीछे छिपा सकती। घूम-घुमौआ दर्रे या जोते जो अपने घुमावमे साँपको भी मात करती। यह है मस्चाह पर्वतकी दूनका नक़शा। इस दूनके एक किनारे काले-काले बिन्दु दिखाई पड़ते हैं। यही है आध-बुर्दनी मस्चाह गाँव। यहीं बारह कमरोंका एक मकान है। यह इमारत १९२० से १९२३ तक हामियान-इस्लामकी राजधानी रही। उनका नेता था सैयद अमीर अहमद खाँ।

उस समय इमारत कैसी अवस्थामें थी ? हरेक कोठरीमें नस्तालीक़ (फारसी) अक्षरमे लिखी छोटी-छोटी तख्तियाँ टँगी थी, जिनसे उनके नाम मालूम होते थे—काजीखाना, मुफ्तीखाना, रईसखाना इत्यादि। औरोंसे बड़े एक कमरेपर लिखा था—जास्दानिया (मन्त्रणागृह)। इस कमरेकी जमीनपर किर्कीवाला सुन्दर कालीन और बुखाराके लम्बे गद्दे बिछे थे। प्रधान स्थानपर शाही गद्दा तीन मस्नदोके साथ सुसज्जित था। कमरेकी दीवारसे बन्दूक, तमंचा, तलवार जैसे हथियार लटक रहे थे। पैरहनेकी ओर बैठकीको जमीनमे गाड़कर एक शिकारी बाजको भी रखना न भूले थे।

इमारतके कोनेमे नीचे जानेकी सीढी थी। बारह-तेरह सीढियाँ उतरनेपर वहाँ एक अँधेरा तहखाना था। यहाँकी कोठरियोपर लिखा था—जेलखाना, शरबतखाना (मदिरालय) और कूरखाना (अस्त्रागार)।

जेलखानेके अन्दर झाँकनेपर वहाँ गर्दनोमे जजीर, पाँवोमे कुंदा पहने खोजन्द (लेनिनाबाद), ऊरातप्पा और पंजकन्दके कितने ही किसान लेटे "मुफ्ती इस्लाम"के मौतके फतवे और "अमीर सैयद अहमद खाँ"के फर्मानकी प्रतीक्षा कर रहे थे। और शरबतखानेमे क्या था ? रंग-रूपमे यूरोपियन किन्तु साफा-जामा पहने एक आदमी ऊरातप्पा और पजकन्दसे लूटकर लाये अगूरोंको अर्क खीचनेकी मशीनोमे डालकर शराब निकाल रहा था। और कूरखानेमे ? दूसरे कुछ साफा-जामा धारी यूरोपीय "लश्करे इस्लाम"के लिये कार्तूस और गोलियाँ तैयार कर रहे थे।

१६२१की गर्मियोंमे हामियान-इस्लामके सारे नेता मंत्रणागृहमे एकत्र हुए थे। प्रधान-स्थानमे खुद सैयद अमीरखाँ पल्थी मारे बैठे थे। उनकी दाहिनी ओर दीवारके पास मुफ्तीखाना, काजीखाना, रईसखाना तक आलिम लोग, और बाईं ओर कूरबाशी (सैनिक) पाँतीसे अदबके साथ पातितजानु बैठे थे।

सभाका आरंभ करते अमीर अहमदखाँने कहा :

"मैंने कुछ समय खोजन्दके उलूस (महल)मे प्रबन्ध-समिति (इजरा कमेटी)के प्रधानके रूपमे बोलशेविकोके साथ काम किया था। इस थोडेसे समयमे मैने उनसे बहुत सी चीजे सीखी। बोलशेविकोके काम करनेका सबसे बड़ा ढंग यह है, कि वह आइन्दाका पहलेसे ही प्लान (योजना) बनाते हैं, इसलिये उनका काम अव्यवस्थित नही होता। हमे भी उसी तरह अपने आइन्दाके बारेमे पहलेसे सोचकर प्लान बनाना चाहिये। (सभाकी ओर एक नजर डालकर फिर बात जारी रखते) मस्चाह और किला पहले क्या थे, इसे आप जानते हैं। मस्चाहके पास कुछ न था। फलगरके पास जो कुछ था, उसे हमारे आदमियो और घोड़ोने चन्द दिनोमे समाप्त कर दिया। उस समय इसराइन (परगना)के आदमी खुद भूखे मर रहे थे। वह भला हमे क्या खूराक-पोशाक देते? बादमे हम खोजन्द और ऊरातप्पाके इलाकोमे लूटपाट मचाकर अपनी आवश्यकताकी चीजे लाये। लेकिन अब इन इलाकोमे बोलशेविकोने अपनेको इतना मजबूत कर लिया है, कि रकिफ और आबबुर्दानसे बाहर कदम रखना भी मुश्किल है। कुछ वक्त तक हमारे भाई जनाबआली अमीर बुखारा हिसारकी ओरसे सहायता पहुँचाते रहे, लेकिन उनकी सल्तनतपर भी बहुत चोट लगी और हमे उनकी सहायतासे वंचित हो जाना पड़ा। यदि जल्दी आवश्यकताकी चीजोके पानेके लिये रास्ता न निकालेगे, तो हमे तग होना पड़ेगा। मेरी रायमे हिसार और दोशम्बाकी तरफ अपने दस्तोको भेज वहाँसे खूराक और पोशाक लूट मँगाना चाहिये। अभी वहाँ बोलशेविक नये आये हैं और देशमे व्यवस्था ठीक तौरसे नही स्थापित कर सके हैं, इसलिये लूटपाटका पूरा सुभीता है। मेरी इस रायके बारेमे मंत्रियोकी क्या सलाह है?"

सभीने एक स्वरसे कहा—हजरतने करामत (चमत्कार) कर दी!

—दीनके आलिम (धर्माचार्य) इस बारेमें क्या फर्माते हैं?—कहते अमीरने दाहिनी ओर निगाह डाली।

—तक्सीर—काजीने कहा—"शुभस्य शीघ्र" आपके विचार बडे ही सुदर हैं। मेरी रायमें इसके बारेमे और बात-चीत करना फिजूल है। बहादुरोको कामके लिये हुकुम देना चाहिये।

—आप कुछ नही बोल रहे हैं ईशान मुफ्ती ?—कहते अहमदखॉने मुफ्तीकी ओर निगाह फेरी।

—इस कामको सयार और इतिहासकी पुस्तकोंमे 'शरीय्या' कहा गया है। हमारे पैगम्बरने ऐसे कामके लिये 'असहाबे शरीय्या' (शरीय्यावाले मित्रो)को दारुल-हरब (अ-मित्र देश)मे भेजा था। अब जब कि जनाबआली (बुखारा-अमीर) चले गये और मुल्क जदीदो तथा बोलशेविकोके हाथमे चला गया, उधरके इलाकोंको 'दारुलहरब' मानना पड़ेगा। अतएव शरीयतके अनुसार उधरके गरीबोंको लूटना-पीटना उचित ही नही बल्कि पैगम्बरकी सुन्नत (सदाचार) है।

शिकारी बाज सभाकी कार्यवाहीके बीच पखोको अपनी चोंचसे खुजलाता या शरीरको हिलाता था, किन्तु सभा समाप्त होनेके बाद अब उसने अपने सिरको छातीके नीचे कर लिया, मानो बसमाचियोंके लाभके लिये दोशम्बाके मुसल्मान निवासियोंके विरुद्ध मुफ्ती-इस्लामके इस फतवासे वह भी लज्जा महसूस कर रहा था।

× × ×

जिस समय इब्राहीमबेक कूलाब और बलजुवानको दौलतमदबी और अब्दुल क्यूमबीके हाथमे दे, स्वय हिसार और दोशम्बाके पहाड़ोंमें तोगे सरिगके साथ लूटपाट मचा रहा था। इसी समय गरीबोंके सिरपर एक दूसरी बला आई। दर्रा रामितसे नसरतशाह मस्चाही और दर्रा वर्जाबकी तरफसे इसरार तुरा अपने दस्तोंके साथ लूटपाटके लिये उतरे। भूखी टिड्डियोंकी तरह जो कुछ भी उनके सामने आया उसे लूटा। खूराक-पोशाकसे लेकर कालीन, गेलम्, नमदा, कूरपा (गद्दा), कूरपाचा, देग, थाल (तबक), कटोरा, गाय दूहनेकी नदिया आदि किसी चीजको नहीं

छोड़ा और सबको गधों, घोड़ों, बैलों और भेड़ोंपर लादकर मस्चाहकी तरफ रवाना किया। वहाँके गधों, घोड़ों, गायों, भेड़ोंके गल्लों और रेवड़ोंको ही नही आशूके नमक तकको भी लदवाकर भेज दिया। यदि विरोधमे किसीने दम भी खीचा तो वह तलवारके घाट उतारा गया या गोलीका शिकार बना। दो तरफसे खेत काटनेवालेकी तरह एक दूसरेके नजदीक होते नसरतशाहने किबूला-दोशम्बामे और इसरार तुराने चारबाग खानकाहके गॉवमे डेरा डाला।

लेकिन बादमे जब दोशम्बासे आकर लालसैनिकोने आक्रमण किया, तो हामियान-इस्लाम अपने कितने ही साथियोंको खो दोबारा रामित और वर्ज़ाबको लूटते "दयार-इस्लाम" यानी अमीर अहमदखॉकी राजधानीको भाग गये।

इब्राहीम बेगने इस घटनाके बारेमे अमीरको लिखा था :

> "जहॉपनाह ! आपके दास मीर मस्चाहने मुसल्मानोंके सुख और जनाबआलीकी सल्तनतको दृढ करनेके लिये अपने अफसर नसरत शाह और भाई इसरार तुराको हामियान-इस्लामके बहादुरोंके साथ भेजा था। वह गरीबोके सामानमेसे कुछ लेकर तथा 'मुसल्मानोके शत्रुओं'को मारकर अपने वतन लौट गये। बाकी देश हर तरहसे सुखी और शान्त है और हजरतकी दीर्घायुकी प्रार्थना करता है। अत्तक्सीर, अत्तक्सीर, अत्तक्सीर।"

१२

अनवरपाशा

—दाखुन्दा !

—...

—ओए दाखुन्दा !

—दाखुन्दा ! मै तुझे बुला रहा हूँ

—लब्बैक तकसीर !

—सोता है या जागता ! एक चायनिक चाय गरम करके ला।—वकील मुखतारके प्रधान लेखक (सरकातिब)ने बहुत शोर मचा खिदमतगारको चाय लानेका हुकुम दे बगलमे बैठे अपने सहकारीसे कहा—शरीक ! याद है परसाल पूर्वी बुखाराकी यात्राकी तैयारीके वक्त मैने इस दाखुन्दाके बारेमे क्या कहा था ? मैने कहा था, यदि यह लिखा-पढा होता तो वकील मुखतारका लेखक बन जाता, तबसे साल पूरा नही हुआ, लेकिन मेरी वह भविष्यद्वाणी करीब-करीब ठीक उतरी। इस आदमीने इतने समयमे लिखना-पढना सीख लिया, जिसके साथ इसका रग-ढग भी बदल गया, अब पहलेवाला वह सीधा-सादापन इसमे नही है। यदि किसी कामको करनेके लिये कहो, तो अनसुनी कर देता है या दबाने पर हिलता है। शायद जल्दी ही "खुद कीजिये" सुनना पड़े। अवश्य इसपर प्रधान लेखक बननेकी हवस सवार है।

—इसके अक्षरोको इसे छोड़ दूसरा नहीं पढ सकता, भला किस तरह यह प्रधान लेखक बनने की हवस करेगा ? कौन इसे प्रधान लेखक बनायेगा ?

—जदीदो और बोलशेविकोके राजमे अक्षरकी सुन्दरताको कौन पूछता है ? "लिख सकता है", "सकता हूँ" बस प्रधान लेखक बन जाता है, बोलशेविकोने इल्मकी भी मट्टी पलीद कर दी। हमने दमुल्लाकी कितनी कमचियों और थप्पड़ खा-खाकर दस सालमे बड़ी मुश्किलसे लिखना-पढना सीखा था। इस पहाड़ी दाखुन्दाने अपने आप छै मासके अन्दर लिखना-पढना खतम कर दिया। वकील मुखतार मुझे "पुराने परिचित" समझकर सतोष देते हैं, नही तो इस घासके चपलीवालेने कबके नहीं मेरी प्रधान-लेखकता छीन ली होती, विशेषकर आजकल जब कि दाखुन्दा

एक सरगरम बोलशेविक गिना जाता है और मैं पुरानी सरकारका एक सेवक। यह वकील मुखतारकी गुणज्ञता ही है, जो अब भी मै इस पदपर हूँ।

—आप भी तो चख-चख लगाये रहते हैं और अपने ऊपर सयम नहीं रखते। यह स्वतन्त्रताका युग है। कोई किसीको आँख नहीं दिखला सकता। "लिखना-पढना सीख गया, प्रधान लेखक होगा या नहीं, सर-गरम बोलशेविक है ..." कहकर चिन्ताके मारे मरनेकी जरूरत नही। आका-ओका (महाशय) कहकर किसी तरह अपना काम चलाना चाहिये। यदि हर काममे झगड़ा उठाया करेगे, तो अपना काम खराब करेगे। पाँच मिनट आगे नही पाँच मिनट पीछे सही, दाखुन्दा चाय गरम करके लावेगा। इतनी-सी बातके लिये हाय-हाय करनेकी क्या जरूरत ?

—आखिर प्याससे हलक सूख गया है। जीभ तालूमे चिपकना चाहती है।

—तेज शोरबा जरा कम खाइए।

—सच कहूँ, असलमे वकील-मुख़तारके कामोने आजकल मुझे परेशान कर रखा है।

—ओ, वकील-मुखतारके किस कामने आपको परेशान कर रखा है ?

—आजकल जो कुछ हो रहा है, उसका क्या तुम्हे कुछ भी पता नहीं है ? वकील-मुखतार सदा अलीरजाके साथ फुस-फुस करते रहते हैं। दोनो सारी रात सुबह तक बैठे रहते हैं। दानियालको छोड़ किसी दूसरेको बात करनेका मौका नहीं देते।

—खूब, फुस-फुस करते रहें, इससे हमारा-तुम्हारा क्या बिगड़ता है !

—यह...

—यह कौन ?

—दाखुन्दा आकर चला जाय, तो बात करेंगे।

दाखुन्दाने चायनिक लाकर प्रधान लेखकके सामने रखी, उसने दाखुन्दासे पूछा—कहाँ था, आवाज़ देने पर "हाँ" भी नहीं कहता।

—अलीरजा आफन्दी सैनिकोको परेड करा रहा था, उसीको देखता था।

—अच्छा, इस चायनिकको भी गरम करके ला दे, फिर तमाशा देखने जा—कहकर प्रधान लेखकने दूसरी खाली चायनिक सामने रख दी।

दाखुन्दा चायनिक लेकर चला गया।

प्रधान लेखक—इस वक्त मै क्या कह रहा था ?

—कह रहे थे, कि अलीरजा और वकील-मुख़तार फुस-फुस करते रहते हैं।

—हाँ, कुछ दालमे काला मालूम होता है। रातमे कितने ही बसमाची भी उनके पास आते हैं। वह अपनी हर बातको तवारिशों (रूसियों)से छिपाते हैं। कोई बला सिर पर न आये, यही सोचकर डरता हूँ।

—कौन-सी बला, बताइये तो ?

—मै डरता हूँ, कि कही ये बसमाचियोके साथ मिल न जायँ।

—खूब, मिल जायँ मिल जायँ इससे हमारा तुम्हारा क्या ! हमारा काम है, हर रोज़ कामको इनकी आज्ञानुसार करना और अपना वेतन लेना। व चाहे बसमाचियोसे मिल जायँ या खुद बसमाची बन जायँ, इससे हमारा क्या वास्ता ?—'लोली (नट)के गदहेको पानी दे और अपना पैसा ले।' किसी बातके लिये परेशान होने और घबड़ानेकी ज़रूरत नहीं है।

—मै तुमसे एक कहानी कहता हूँ। एक दिन स्वर्गीय ईशान काजीकलाँने मुझसे पूछा यह हिण्डनबर्ग किस तरहका आदमी है, कि जिस युद्ध-क्षेत्रमे जाता है, दस-दस हजार आदमी मरने लगते हैं ! मैने निस्सकोच हो जवाब दिया था। "तकसीर ! वह मृत्यु है, मृत्यु। जहाँ जाता है मौतको साथ लिये जाता है"। इस वार्तालापके बाद हिण्डनबर्ग सदा मेरी आँखोंके सामने मृत्युकी भाँति प्रकट होने लगा। जब सो जाता, हिण्डनबर्गको मृत्युके रूपमे देखकर जाग उठता और जबतक विश्व-युद्ध समाप्त नही हुआ, मै चैनसे सो नही सका। जबसे बसमाची पैदा हुए हैं, तबसे हर रात हिण्डनबर्गकी तरह बसमाचियोको देखता हूँ, विशेषकर इन दिनोमे, जब कि उनमेसे एकको रक्तपूर्ण प्यालीकी तरह लाल-लाल आँखे फाडे वकील-मुखतारके सामने जाते देखा और सो भी स्वप्नमे नही बल्कि जाग्रतावस्थामे मूर्तिमान मृत्युके रूपमे, तो मेरे होश उड़ गए। भगवान न करे कि वकील-मुखतारके साथ मिल जाय। ठीक जानो, यह बसमाची सिर्फ बोलशेविकोको ही नही बल्कि एक भी जदीदको दुनियामे जिन्दा नही रहने देगे। जदीदोके साथ हम और तुम भी हरामकी मौत मरेगे। यही बात है, जिसने मुझे परेशान कर रखा है, नही तो मेरे लिये जैसा अमीर वैसा बसमाची और वैसा ही जदीद। जो भी एक कौर रोटी दे, मै तो उसीका गुलाम हूँ। तुम्हारी बात ठीक है "लोलीके गदहेको पानी दे और अपना पैसा ले"। इस बातको मैंने गाँठ बाँध लिया है।

—मै तुम्हारी इन बातोको बिल्कुल न समझ पाया, वकील-मुखतार पूर्वी बुखाराके राज-काजके वकील-मुखतार (शासक) ही नही हैं, बल्कि वह बुखारा जन-प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति भी हैं। बसमाची इस सरकारके दुश्मन हैं, फिर वकील-मुखतार कैसे उनसे मिल जायँगे ?

प्रधान लेखकने जरा सोचकर कहा—मै आज न सही कल प्रधान लेखक पदके हाथसे चले जानेके लिये दाखुन्दा जैसोंसे भय खाता हूँ

इसी तरह वकील-मुखतार और दूसरे जदीद भी दाखुन्दोंसे भय खाते हैं। सच बात यह है, कि यह लोग बोलशेविक ढंगके शासनके लिये राजी नही। बुखारा-क्रान्तिके बाद चाहे वकील-मुखतार बोलशेविक बन गये हों, लेकिन इनका यह काम वैसा ही अवसरवादका था जैसा हमारा और तुम्हारा जदीद बनना। यह ठीक है, कि वह बोलशेविक होनेसे ही बुखारा जन-प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति बन पाये, किन्तु वह अच्छी तरह जानते हैं, कि शासनकी आजकी व्यवस्था देर तक न चलेगी। आज न हुआ तो कल दाखुन्दे, भिश्ती, मजूर और भूखे किसान उठ खड़े होगे और बुखारा सरकारको भी रूसिया और तुर्किस्तानकी भाँति वास्तविक बोलशेविक सरकार बना देंगे। उस समय यदि वकील-मुखतारका पद कायम भी रहा, तो भी यह दर्जा भिखमगोके अकसक्काल जैसा होगा; जब कि आज यह और इनकेसे विचार रखनेवाले गरीबोके मालिक और मुल्कके जीवनमरणके स्वामी हैं। यही कारण है, जो यह उसके लिये रास्ता ढूँढ रहे हैं और चाहते है कि बसमाचियोंसे एक होकर अपनी उद्देश्य-पूर्तिकी ओर एक कदम और आगे बढाये।

—लेकिन तवारिश लोग या लाल सैनिक, जो कि बुखारा जन-प्रजातन्त्रके बुलाने पर यहाँके कमकरोकी सहायता और अमीर तथा बसमाचियोको खतम करनेके लिये आये हैं, क्या वकील-मुखतारके इस कामको पसन्द करेगे ?

—अगर जान जायँ, तो जरूर पसन्द न करेगे, लेकिन वकील-मुखतार इस कामको उनसे छिपाकर कर रहे हैं।

—लेकिन अलीरजा और दानियाल तो आज तक सेना-पुलिसको शिक्षा दे बुखारा जन-प्रजातन्त्रके नामसे बसमाचियोके साथ लड़ते आये, वह क्यो वकील-मुखतारके विचारको मान बसमाचियोसे एक हो जायँगे ?

—वह भी आजतक मतलबसे बसमाचियोके साथ लड़ रहे थे।

अचरज कि उन्हे एक बड़ा आधार मिल गया, तो चाहते हैं कि मुहसे परदा उतारकर फेंक दे ।

—ठीक, किन्तु उनका यह बड़ा आधार क्या है ?

—तुम ऐसी बाते कर रहे हो शरीक, मानो दुनियामे अभी आये हो। अनवरपाशा उसमानी तुर्कोके जदीदोका नेता और एक प्रसिद्ध आदमी है। वह शिकारके बहाने बुखारासे भागकर आजकल बसमाचियोंके भीतर बैठा है । क्या वहाँ वह कूमिज (घोड़ीके दूधकी शराब) और कबाबखानेके लिये बैठा है ? वही अनवरपाशा इनका आधार है। यदि वह न होता, तो वकील-मुखतार, अलीरजा, दानियाल और दूसरोको आगे बढनेका हिम्मत न होती। अनवरने मेहमानके तौरपर बुखारामे आकर काममे जोश दिलाया। कौन जानता है, बुखारामे इस बातकी भी सलाह हुई हो और आश्चर्य नहा कि जल्दी हा बुखाराके खासकामस भी कुछ इनके साथ हा जायँ।

—अनवरपाशा !

—ठहरो, दाखुन्दाको चाय रखकर चले जाने दो।

दाखुन्दा चायदिक रखकर चला गया ।

—तुम दाखुन्दासे क्यो इतनी सावधानी रखते हो ?—कहकर शरीकने आश्चर्य प्रकट किया ।

—यह दाखुन्दा वह परसालवाला दाखुन्दा नही है। अब वह हर बातको समझता है। रातको मेरी नीद जब टूट जाती है, तो दाखुन्दाको पुकार अँगीठी जला बैठे-बैठे बात करता हूँ । अलीरजा और वकील-मुखतारके बहुतसी बातोका पता मुझे दाखुन्दास ही मिला। उसके कथनानुसार अब्दुर्रहमान मिंगबाशी दो रात पहले दानियालके पास आया था, यद्यपि दानियालने उससे पहले युद्ध किया था और अब मिंगबाशी उसके पाससे चालीस बन्दूके और दो पेटी कारतूस ले गया है। जानते हो, अब्दुर्रहमान मिंगबाशी कौन है ! वही, जो कि क्रान्तिके आरम्भमें

हमारा अन्न-अफसर बनकर ग़रीबोंको सताता रहा और अन्तमे स्वय भागकर बसमाची बन गया। वकील-मुख़तारके पास और भी कितने बसमाची चुपके-चुपके आते हैं। दाखुन्दा कह रहा था "जदीद और बसमाची एक होकर बोलशेविकोसे लड़ रहे हैं", ऐसी अफवाह लोगोंमे उड़ रही है। इस बातको सुनकर बाय, मुल्ला और अमीरके पुराने अमलदार बहुत खुश हैं, लेकिन गरीब कमकर "अमीरी जमानाके जुल्मोको दस गुना करके हमारे शिरपर ढायेगे" कहकर चिन्तित दीख पड़ते हैं। दाखुन्दा इस सम्बन्धमे जो-जो भी बाते कहता, मै 'हॉ-हॉ' कहते सुनता हूँ और अपनी तरफसे कुछ नही बोलता, बल्कि अपनेको बिल्कुल अनजान प्रकट करता हूँ। यदि उसको मालूम हो कि हम दोनो इसी तरहकी बात-चीत कर रहे हैं, तो उसे सन्देह होने लगेगा। मालूम नहीं इन कामोका क्या परिणाम होगा? क्रान्तिका समय है। बहुत सावधान रहनेकी जरूरत है। अब क्या कहना चाहते हो?

—मै यही कहना चाहता हूँ, कि अनवरपाशा जैसा एक प्रसिद्ध आदमी अपने वतनको छोड़कर यहाँ काम कर रहा है।

—मै जदीद नहीं हूँ लेकिन रूस-जापान युद्धके बादसे गज़ट (समाचारपत्र) पढता आया हूँ। तुर्कीमे जब क्रान्ति हुई, उसी समय मैने अनवरपाशाका नाम समाचार पत्रमे पढ़ा। विश्व-युद्धमे भी उसने हिण्डनबर्गके साथ काम किया और 'विश्वके तुर्कोको हम एक करेगे, विश्वके मुसलमानोको हम एक करेगे" कहकर लाखोको मौतके मुँहमे झोका, लेकिन अन्तमे तुर्की की हार हुई और अनवरको बे-आबरू हो वतन छोड़ भागना पड़ा। कमालपाशाने तुर्कीकी बागडोर सभाली और अनवरपाशा आकर फिर कोई गड़बड़ी न पैदा करे, इसलिये उसे देश लौटने की इज़ाजत न दी। अब वह यहाँ आया है, कि अशिक्षित आदमियोमें कोई बड़ा काम करके हाथसे गयी प्रसिद्धिको फिरसे लौटानेमें सफल हो।

—बसमाची तो जदीदोंके खूनके प्यासे हैं, फिर वे कैसे अनवरपाशा जैसे जदीदके साथ मिलकर यह काम करेंगे ?

—कहावत है "चोर-चोरको अँधेरी रातमें भी पा लेता है", उसी तरह ये भी एक दूसरेसे घुल मिल रहे हैं, लेकिन इनमेंसे हरएक दूसरेको धोखा देकर अपना मतलब पूरा करनेकी फिक्रमे है और राजको अपने हाथमें लेना चाहता है। अफवाह है, कि अनवरपाशा "इस्लामकी एकता" के बहाने बसमाचियोंको इकट्ठाकर उन्हे अपनी अधीनतामें ला अपना मतलब पूरा करना और राजको अपने हाथमें लेना चाहता है। उधर बसमाची भी—जो हजार मुसलमानोंको एक धेलेमें भी खरीदनेको तैयार नही—अनवरपाशाकी प्रसिद्धिसे फायदा उठा, राजको अपने हाथमें करके अपनी इच्छानुसार मुसलमानोंको लूटना चाहते हैं। "हर आदमी अपने मुर्देके लिये रोता है।" जदीद, कदीम, मुसलमान, तुर्क, जाति और देशके नाममे चिल्लाना लोगोंकी आँखोंमे धूल झोकनेका एक बहाना है। लेकिन इसी चिल्लाहटमें, जैसा कि मैंने कहा, हम और तुम हरामकी मौत मरेंगे।

—तुम्हारी यह सब बातें भगेड़ियोंकी तान हैं, इनशा-अल्ला, कोई ऐसी बात न होगी।

—भगेड़ियोंके भी तानमे कभी-कभी सचाई देखी जाती है। जो भी हो, हम इन बातोंका ख्याल रखना चाहिये और परिणामसे भय खाना चाहिये।

१३

आहारकी खोज

—सलामदर !

दोशम्बाके कुर्गानमे दो घटासे दो पाँतियोंमे खड़ी जातीय सेना (लश्कर-मिल्ली) इस फर्मानको सुनकर सलामीके लिये तैयार हो गये। फर्मान देनेवाला पीले रग, खडी-मूँछ तुर्की पोशाक पहने एक लम्ब

आदमी था। उसने अपनी मूंछको ऐंठते हुए थोड़ा पीछे खडे कफकाजी (काकेशसवाली) फौजी वर्दी पहने आदमी से पूछा—नह्मिल (कैसे हो) दानियाल आफन्दी ?

—चोक गोजल् (बहुत अच्छा)—दानियाल आफन्दीने जवाब दिया।

कमाण्डरने दानियालके साथ फौजकी सलामी ली। कुर्गान (महल)की दूसरी ओर एक कमखून मैले रगका लम्बा आदमी दिखलाई पड़ा। उसकी आँखोपर चिन्ताके चिह्न थे। वह धीरे-धीरे विनय और अभिमानके साथ कमाण्डरके सामने आया। कमाण्डर और दानियालके सलाम करने और जवाब देनेके बाद उसने सैनिकोकी तरफ निगाह करके "ओगलान् लारम्" कहते तुर्की भाषामे सैनिकोंसे कुशल-मगल पूछा। सैनिकोंने भी इन चन्द दिनोंमे सीखे शब्दो द्वारा "यो शासुन् वकील-मुख्तार हजरतलरी' कहकर दुआ किया। वकील-मुख्तारने जवाबमे अपने शिरको थोड़ा हिलाते "तशक्कुर् एदरम्" (धन्यवाद) कहा।

दूसरी पाँतीके एक सैनिकने अपने साथीसे धीरेसे कहा—आका शरीफ! वकील-मुख्तार "तश्शकता खुरम्" बोले क्या ?

शरीफ अपनी हँसीको न रोक सका।

कमाण्डर अपने जरनैलीके चिह्न छोटे चाबुकको हाथमे लिये दूसरी पाँतीसे गुजरते हुए शरीफसे बोला "यजूनगलर इस !"

शरीफने "ओह अकरम तोपचीबाशी ! तू कौन सी कब्रसे जिन्दा हो उठ आया ?"—कहकर सारे सैनिकोंको हँसा दिया। कमाण्डरने सुनीको अनसुनी बना वकील-मुख्तारके पास लौटकर जगी सलाम दे तुर्की भाषामे कहा—इन जवानोकी शिक्षा और व्यवस्था बहुत अच्छी है, इनसे बहुत आशा की जा सकती है।

वकील-मुख्तारने भी "चोकयोशा, इन्तुखीनवात, अलीरजा आफन्दी" कहकर कमाण्डरको बधाई दी।

मान-सम्मान और धन्यवाद देनेके बाद अलीरजाने "तशरीफ लाइये" कहकर वकील-मुख्तारका हाथ पकड़े एक कमरेके अन्दर दाखिल होते "दानियालबी तुम भी आओ" कहकर अपने साथीको भी बुलाया। तीनों कमरेके अन्दर पहुँचे। वकील-मुख्तारने "काम कैसे चल रहा है?" कहकर अलीरजासे पूछा। अलीरजाने "बहुत अच्छा" कहकर जेबसे एक पत्र निकाल वकील-मुख्तारके हाथमे दिया। वकील-मुख्तारने चुपचाप पत्रको पढ़ना शुरू किया। पत्रका प्रभाव उनके चेहरेपर पड़ता जा रहा था और समाप्त करने वक्त उनके होठोंपर हँसीकी रेखा दौड गई। और बोले—कहना होगा इन्तुखीन काम रास्तेपर चल रहा है।

—हम आज रातको दानियाल आफन्दीके साथ "अन्नकी खोज"मे जा रहे हैं और हर बातको कह देगे और उसे लिखकर इस चिट्ठी लानेवालेके हाथसे भेज देगे।

—जो भी हो इन्तुखीन तैयार रहना चाहिये, जिसमे काम इन्तुखीन शत-प्रतिशत इच्छानुसार होवे—कहते वक्त वकील-मुख्तारके चेहरेपर फिर घबडाहटका असर दिखाई देने लगा।

अलीरजा—हजरत वकील-मुख्तारकी तबियत अपने इन दासोकी ओरसे खातिर-जमा रहे। हम मुट्ठीभर तुर्क (उस्मानी) नौजवानोंने आरमेनियन, कुर्द, अर्नऊद, अरब, तुर्क—सक्षेपमे तुर्क-साम्राज्यके सभी अत्याचार-पीड़ित जातियोंके नेताओंको मीठी-मीठी बातोंसे अपने साथ करके हल्ला मचाया और इस तरह ३१ मार्चकी क्रान्ति हुई और खलीफा अब्दुलहमीदको तख्तसे उतरना पड़ा। बल्कानके युद्धके समय सेनाको हार दिलवा कामिलपाशाकी सरकारको खतम किया। बुल्गारिया-सर्वियाके आपसी मतभेदों और जगसे फायदा उठा बगैर एक गोली चलाये हाथसे निकल गये अदरनाको फिर वापस ले लिया और इस प्रकार अपने मंत्रि-मण्डलको दोस्त और दुश्मनोंके आगे ऊँचा किया। बगदाद रेलवेको जर्मनोको और दूसरी चीजोंको दूसरी युरोपीय शक्तियोंको प्रदानकर

कर्मचारियोंको प्रतिमास ठीक वक्तपर वेतन देते रहे। अन्तमे विश्व-युद्धमें सम्मिलित हो उस्मानी (तुर्की) नामको दुनियामे प्रसिद्ध किया। हमारे शिरपर जो बाते गुजरी हैं, उनके सामने इस वक्तकी समस्या कुछ भी नही है। हजरत वकील-मुखतार—जो साथ ही बुखारा-जन-प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति भी हैं—की छत्र-छायामे हर कामको हम पूरे इतमिनानके साथ अजाम देगे। जरूरत सिर्फ इस बातकी है, कि हजरत वकील-मुखतार अपने उद्देश्य और वादोपर दृढ रहे।

इस हर्षोत्पादक भाषाको सुनकर वकील-मुखतारके चेहरेसे चिन्ताका प्रभाव जाता रहा। आशा और आनन्दको प्रकट करते हुए "धन्यवाद इन्तुखीन राय, सफलता इन्तुखीन चाहता हूँ"—कह वकील-मुखतार अपने आफिसकी तरफ जानेको तैयार हुए। अर्लीरजाने बडे सम्मानके साथ फिर मिलनेका वादा करते हुए कहा—श्रीमान्से इजाजत ले "अन्नकी खोज"के लिये जा रहे हैं।

कोकनाश गॉवमे एक कच्चा घर था जिसकी छत सरकण्डे और घाससे छाई हुई थी। उसमे दूसरे किसान-घरोसे कोई अन्तर न था। इस घरमे मझोले कदका छरहरा आदमी खड़ा था। उसकी पोशाक यूरोपीय ढगकी थी। दाढीके बाल बतला रहे थे, कि उसने कितने ही दिनोंसे हजामका मुँह नही देखा है। जब वह मूँछके बालोंको पकड़कर ताव देना चाहता, तो दाढीके बाल उलझकर उसमे बाधा डालते। वह दाढीके बालोंको अलगकर मूँछके छोरोंको मुँहमे डाल चबाते हुए अपने पैरोंकी ओर देखने लगता। फिर घरके बीच इधरसे उधर टहलने लगता। जब भी किवाड़के सामने पहुँचता, दरारोंसे बाहरकी ओर देख फिर टहलने लगता।

आधी रात खतम हो जानेपर बाहरसे पैरोंकी आहट आने लगी। आदमी भी टहलना छोड़ द्वारके पास खड़ा होकर बोला—क्या है हसनबे ?

—आ गये, यदि हजरतपाशाकी आज्ञा हो तो अन्दर आयें—इसनने कहा।

"आने दो" कह आदमीने मुँहके पानीसे भिगे मूँछकी नोकोंको ऊपर ले जा ऐंठ दिया, फिर घरके बीचमे खड़ा हो आनेवालोंकी प्रतीक्षा करने लगा। प्रतीक्षा देर तक नही करनी पड़ी। दो आदमी द्वारके अन्दर आ सम्मान और सैनिक सलामके तौर पर हाथोको ललाट तक पहुँचा पाशाके सामने आकर खड़े हुए।

—अलीरजाबे! क्यो देर हुई? मै दो घटेसे प्रतीक्षा कर रहा हूँ—कहते पाशाने भी सलामके जवाबमे अपने हाथको कुछ ऊँचे उठा मिलानेके लिये आगे बढाया। अलीरजाने दौड़कर पाशाके हाथोको आँखोंसे मला और फिर जमीनपर पड उसके पैरोको चूमा। किन्तु "उठ" यह फरमान मिलते ही अलीरजा सैनिक ढगकी चुस्तीके साथ खड़ा हो अपने साथीकी तरफ इशारा करके बोला—यह हमारे साथी मशहूर बहादुर दानियालबे हैं।

"मुसलमानोके खलीफाका दामाद अनवर" कहकर अपने हाथको दानियालकी ओर बढाते हुए "अलीरजासे तुम्हारी बहादुरीके बारेमे सुनकर मै तुम्हारा अदृष्ट-प्रसशक बन गया था" कहकर अनवर-पाशाने अपने विशेष ध्यानसे दानियालको कृत-कृत्य किया।

फिर अलीरजाने "बुखारा जन-प्रजातत्रकी शासन समितिके प्रधान तथा पूर्वी बुखाराके राज-काजके वकील-मुखतार उसमान खोजाने सलाम भेजा है" कहकर बात पूरी की।

मुलाकातकी रस्म खतम होनेके बाद तीनो बैठकर आपसमे बातचीत करने लगे।

—कामको कहाँ तक पहुँचाया!—कहकर अनवरपाशाने अलीरजासे पूछा।

—सभी बातें ठीक हैं, हर कामके लिये तैयार हैं—अलीरजाने जवाब दिया।

—और उसमान खोजा ?

—उसमान खोजा भी अपने वचन पर दृढ है। केवल हजरत पाशाके फ़र्मानकी प्रतीक्षामें है।

—अगर ऐसा है, तो कामको शुरू करना चाहिये।

—सिर-आँखो पर—कह अलीरजा उठकर सैनिक सलाम दे फिर अपनी जगह बैठ गया।

अनवर—तेरी ताकतमें कुछ कमी हो तो बसमाची मदद देनेको तैयार हैं। किन्तु उनमेंसे कुछके पास हथियार नहीं है। हिन्दुस्तानसे बदखशोंके ऊपर-ऊपर नये हथियार आनेवाले थे, लेकिन देर हो गयी। हो सके तो घटनाके दिनके लिये आप उन्हें हथियार दे।

—सिर-आँखोपर।

राष्ट्रीय सेना खासकर फौजी पुलिस—जिसे मैंने खुद सिखाया है—हर कामको अच्छी तरह कर सकती है—कहकर दानियालने अपने कौशलका परिचय दिया।

"मुजाहिद (धर्मयोद्धा) आगये" कहकर खिदमतगारने बाहरसे खबर दी।

—आने दो—अनवरपाशाने जवाब दिया।

इब्राहीम बेगके साथ बसमाचियोंके बीस कूर्बाशी (सेना-सचालक) अन्दर आये। अनवरपाशाने उनमेंसे हर एकको "काज़ी, मुजाहिद, दीवानबेगी, दादखाह..." नाम देकर उनका अलीरजा और दानियालसे परिचय कराया। कुशल-प्रश्नके बाद वे जहाँ-तहाँ बैठ गये। अलीरजा इब्राहीमके साथ और दानियाल अब्दुर्रहमानके साथ पास-पास बैठकर बाते करने लगे। उस वक्त उनके देखनेसे आदमी समझ सकता था, कि वह मिली-भगतवाले पहलवान हैं, जो कि तमाशबीनोंके सामने एक

दूसरेके ऊपर झपट्टा मार अपना रोल पूरा करते हैं और अपने कमरेके अन्दर चिर-मित्रकी तरह दूध-शक्कर हो जाते हैं। बातचीत और योजनाके पक्की हो जानेके बाद अलीरजाने कहा—हजरत पाशाकी इजाजतसे बेहतर होगा कि हम जल्द लौट जायें। दोशम्बामें हम अन्नकी खोजके बहाने आये थे। यदि खाली हाथ लौटेंगे, तो तवारिश (बोलशेविक) लोग सन्देह न करने लगें।

—इसके लिये चिन्ता न करें इब्राहीमबे तुम्हें खाली हाथ न जाने देंगे— अनवरने कहा।

अलीरजा और दानियाल, अनवरपाशा और बसमाचियोंसे रुखसत हो बाहर निकले। नदीके किनारे दस भेड़े और सौ पूत (पन्द्रह सेरा) गेहूँ उनके लिये तैयार था, जिसे लेकर वे वकील-मुखतारके पास पहुँचे। वकील-मुखतारने उनकी 'अन्नप्राप्ति"की प्रशंसा की।

१४

अमीर लश्करे-इस्लाम (दिसम्बर १९२१)

दिसम्बर १९२१की एक रातको दोशम्बेमें बड़ी हलचल मची हुई थी।

—क्या बात है ?

—वकील मुख्तारने लाल सैनिकोंको बसमाचियोंके सामने हथियार रखनेका हुकुम दिया है, लेकिन उन्होंने इसे माननेसे इनकार कर दिया है।

—फिर ?

—अलीरजा और दानियाल अपने सिपाहियोंको लेकर लाल सैनिकोंसे जबर्दस्ती हथियार रखवानेके लिये किलाके सामने खड़े हैं।

—खुद वकील-मुखतार कहाँ है ? शायद यह विश्वासघात अलीरजा और दानियालने खुद किया है।

—नहीं, खुद वकील-मुखतार बुखारासे लाये हथियारोंको बसमाचियोंमें बाँट रहा है।

दोशम्बाके दो आदमियोंमे इस तरहकी बातचीत हो रही थी, इसी समय किलाकी ओरसे बन्दूकों और मशीनगनोंकी आवाज आने लगी। भोरके वक्त इस भयानक आवाजने शहरके लोगोंको नींदसे उठाकर भागनेके लिये मजबूर किया और वह अपने छोटे बच्चोंको कंधेपर रखे शहरमे निकलने लगे। आठ बजे तक शहरके स्थायी निवासियोंमे यहूदियोंके चन्द परिवारो—जिन्हे भागनेका ठाँव न था—को छोड कोई नही रह गया, लेकिन लोगोका माल-असबाब जहाँका तहाँ पडा रहा। शहरमे हर घटे हलचल बढती जा रही थी। वकील-मुखतार अब भी अपने हथियारोको बाँट रहा था।

वकील-मुखतारकी बदौलत हथियारबन्द हुए बसमाची पहले खुद वकील-मुखतारके खास आदमियोको, फिर लोगोके खाली मकानोंको, फिर अनाथ यहूदियोंको लूटकर बाहर चले गये।

मिनट-मिनट स्थिति बदल रही थी। वकील-मुखतारने देखा, कि शहरमे खुराक नही रह गयी है और बसमाची चाहते हैं कि उसके पास बचे हथियारोंको भी छीन ले। इधर लाल सैनिक भी बेवकूफी करके अपने हथियारोको "हजरत वकील-मुखतार" को सौंपना नही चाहते। ऐसी अवस्थामे भागनेका निश्चय करनेके सिवा वकील मुखतारके लिये कोई चारा न रहा।

रातका वक्त था पानी बरस रहा था। इसी वक्त वकील-मुखतार उसमान खोजा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं, तिल्ला (अशर्फी) और तका (चांदी सिक्का) और बख्शनेसे बचे छोटे हथियारोंमेंसे कुछको समेटा और अलीरजा, दानियाल, सुरैया और दूसरे अनुयायियोंको लिये शहरसे निकला। अब भी कूर्गान (महल) में जामोंसे भरे टंक, तह किये कालीन

अन्नसे भरे अम्बार, तीन सौ पेटी कारतूस, बहुतसे हथियार और दूसरी भी कितनी चीजे पड़ी थी।

वकील मुख़्तारके भागनेकी ख़बर पा बसमाची शहरमे आये। उन्होने इन चीजोको लिया और शहरके घरमे जो कुछ बच रहा था, उसे भी लूटा। दिन हुआ। लाल सैनिकोने अपने स्थानसे शहरका देखा। आदमियो और चीजोंसे खाली मकानो और शिर पैरसे नगे यहूदियोके अतिरिक्त शहर और कूर्गानमे कोई चीज न दिखलाई पड़ी। शहरके बाहर चारो तरफ नये हथियारोसे सुसज्जित पॉच हजार बसमाची घेरा डाले हुए थे। अनवरपाशा "अमीर लश्कर-इस्लाम, दामाद-खलीफा-मुसलमीन व नायब जनाब-आली बुखारा" (इस्लामी सेनाका सेनापति, मुसलमानोंके खलीफाका दामाद, बुखाराके अमीरका नायब)की उपाधिसे बसमाची दलका कमाण्डर बना हुआ था। लेकिन यह भाग्यका जुआरी, हिण्डनबर्गका शिष्य और प्रसिद्ध नेता अपने पॉच हजार खूँखार अनुयायियोके साथ ससारके कमकरोके अधिकारोके प्रतिनिधि चद दर्जन लाल सैनिकोको परास्त न कर सका और न दोशम्बा शहरको लेनेमे सफल हो सका—दोशम्बा भविष्यके ताजिकिस्तान प्रजातत्रकी राजधानी। हॉ, उसने यह कहकर दिलको तसल्ला दा होगी कि बसमाचियोंने वकील-मुख़्तारके साथ विश्वासघात किया और उसे डटे रहनेकी हिम्मत न रही।

१५

परेशान कारवाँ

वकील-मुख़्तारका छः सौ आदमियोंका कारवॉ इक्कीस मशीनगनों, सत्तरह सौ बन्दूको, तका-तिल्लासे भरी सन्दूकों, मूल्यवान जामों और लिबासोंसे भरे ट्रकोके साथ पर्वत और निर्जन प्रदेशोंसे जल्दी-जल्दी रवाना हुआ। खुद वकील-मुख़्तार "इन्तुखोन शै, शै इन्तुखोनशै" कहते आगे-आगे घोड़ा भगाये लिये जा रहा था। अलीरजा अत्यन्त क्रोधसे

अपनी मूँछोंको चबाते "पज्वन्गलर सफिल्लर पज्वन्गजर सफिल्लर" कहते किसीको गाली दे रहा था। पहाड़ों और दर्रोंसे गुजरते तीसरे रोज कारवाँ लत्ताबन्द गाँवमे पहुँचा, लेकिन अभी कारवाँ खाने-पीनेकी तैयारी ही कर रहा था कि चारो ओरसे बन्दूकोकी आवाज आने लगी। वकील-मुखतारको "इन्तुखीन शै" कहनेकी भी ताकत न रह गयी। जब वह बोलना चाहता, तो उसके ओठ सिलेसे मालूम होते और भयके मारे जीभ हिल न सकती थी। आवाज और बढ़ने लगी। कुछ मिनट बाद बसमाचियोके प्रतिनिधि वकील-मुखतारके सामने आत्म-समर्पण करने और हथियार छोड़नेकी शर्त लेकर आये। पाँच मिनटमे ही कारवाँमें "समर्पण-समर्पण"की आवाज सुनाई देने लगी।

—भाइयो! किसके सामने समर्पण? बसमाचियोके सामने समर्पण! उन बसमाचियोंके सामने समर्पण, जिनके साथ हम बोलशेविक पार्टीके नेतृत्वमे बुखाराके कमकरो और जन प्रजातन्त्रके नामसे लडते रहे! यह ऐसी शर्त है, जिसे खुद बसमाची हमारे हाथ कर सकते हैं। यह ऐसी शर्त है, जिसे वही कबूल कर सकते हैं, जो खुद बसमाची हैं, और प्रजातन्त्र सरकारके सेवकोका बाना पहनकर हमारे अन्दर आ हमारा नेतृत्व कर रहे हैं। जब तक हमारे तनमे जान है, तब तक हम बसमाचियों और समर्पणके लिये जोर देनेवालोसे लडेंगे। बस, देख लिया, इस धोखेको। इसे वकील-मुखतारके नामसे हम पर डाला गया। बस, रहने दो उन लोगो की पैरवी करना, जिन्होने अन्तमे हमे यहाँ लाकर पटका। इस वक्त हमारे अन्दर वकील-मुखतार और सेना-नायक नही है। इस वक्त हमारे सामने सिर्फ बसमाची हैं। आओ, बसमाचियो और उनके पक्ष-पातियोसे लड़े।

—दाखुन्दा ठीक कहता है—शरीफने कहा—हम किस उद्देश्यसे अपना घरबार छोड़ बुखारासे इधर आये? हम किस लिये अब तक बसमाचियोसे लड़ते रहे? यदि हमे बसमाची होना होता, तो इतना कष्ट

उठानेकी जरूरत न थी, हम वतनसे बिना निकले ही बसमाची बन सकते थे। यदि बसमाचियोंके सामने आत्मसमर्पण करना ही हमारा उद्देश्य था तो इतनी पहाड़ो-पहाड़ा जगला-जगलोंम मारे-मारे फिरनेकी जरूरत क्या थी? हम घरमे आरामसे बैठे रह सकते थे। न बसमाचीका मुँह देखते और न उनके हाथमे समर्पित हात। हम बिना किसी दबावके पार्टी और जनताके प्रति अपने कर्त्तव्यको पालन करनेके लिये अपनी खुशीसे बसमाचियोंके साथ लड़नेके लिये मैदानमे उतरे। इस रास्तेमे बड़ी-बड़ी तकलीफे झेलो। हमे "पज़ोङ् सतिल सफिल" कहकर गालियाँ दा गयी, हमने सहा बर्दाश्त किया। यह सब इसलिये बर्दाश्त किया कि बसमाचियोंका खतमकर अपने किसानीके काममे लग। लेकिन हमारे ये नेता अक्करम तोपचीबाशा और नोरोजीकी औलाद चाहते हैं, कि खुद हम बसमाचा बनावे और हमारी सारा कुर्बानियोंके बदलेमे सदाके लिये अपयश और बदनामीका इनाम दे। आओ बसमाचियोंसे लड़े और अपने खूनसे उस बदनामीके धब्बेको धोये, जिससे वर्कील मुखतार और उसके सहकारियोंने अपने पदसे अनुचित फायदा उठाकर हमारे दामनपर लगाया है

—आओ लड़े, आओ लड़े!

यह आवाज जो अलारजाके सैनिको और दानियालकी फौजी पुलिसके अधिकाश लोगोकी ओरसे बुलन्द हुई, उसने बसमाचियोंकी गोली की आवाजका दबा दिया। यह आवाज थी, जिसने कारवाँवालोको एक दूसरेसे भिड़ा दिया। यह वह ज्वालावाली अग्नि थी जिसने कारवाँवालोको परीक्षाकी भट्ठीमे डालकर सोनेको ताँबेसे और चाँदीको राँगे और सीसेसे शुद्ध करके अलग कर दिया। यह वह कोलाहल-पूर्ण बाढ थी, जो पत्थरको खड्डोंमे, बालूको गड्ढेमे, घास और तृणको किनारेपर फेंककर अपनी राह चली। गोलियोंके आनेके शुरूमें दानियाल अपने सत्तर सिखाये हुए सिपाहियोंके साथ मैदानसे निकलकर बराबरके लिये बसमाची बन

संगगर्दककी तरफ चला गया। कुछ दूसरे भी बसमाची बन गये, किन्तु समर्पण विरोधी बहादुर बिना किसी सचालक या कमाण्डरके बसमाचियोंसे लड़ने लगे। आध घटेके भीतर बसमाचियोंने चोटियों और टिड्डियोंकी तरह सारे गाँवको घेर लिया। प्राणोंका बाजार सस्ता और बहादुरी की जान महगी हो गया। कोलाहलवाली बाढ़ रक्तवाहिनी नदीके रूपमें परिणत हो गयी।

वकील-मुखतारने देखा, कि या तो शत्रुकी तरह बसमाचियोंके हाथ पड़कर उनके हाथों यन्त्रणा सहनी पड़ेगी या बहादुरोंके हाथों जान खोना पड़ेगा। उसने मुक्तिका रास्ता ढूँढ़ते हुए वही रास्ता पाया, जिसका उपयोग करके २२ जुलाई १८७५ को खुदायारखाँने खोकन्दसे और ३ सितम्बर १९२० को अन्तिम अमीर बुखारा आलमखाँ गिजदवानसे भागा—अर्थात् अशर्फी भरे ताड़ो, तकोंसे भरे बक्सों, बन्दूकों और मर्दानगीको रास्तेमें जहाँ-तहाँ बिखेरते हुए भागे। इस तरह जब कभी बसमाची नजदीक आते, वह अपने खजानेके बचे-खुचे भागोंको बिखेरता पहाड़ों और दर्रोंमें घोड़ा दौड़ाते भाग निकला। अन्तमें भुक्खड़ बसमाची मालसे इतने लद गये और वकील-मुखतारका भार इतना हल्का हो गया, कि बसमाचियोंने उसका पीछा करना छोड़ दिया। वकील-मुखतार अपने बचे सहगामियों—जिनमेंसे कुछ खुरासे और कुछ दूसरा चारा न होनेसे उसके साथ हुए थे—के साथ उज्बकान-किन्दी गाँवमें पहुँचा और अपने आदमियोंको दो-दो चार चार करके लोगोंके घरोंमें बाँट करके खुद अलीरजाके साथ एक घरमें जाकर ठहरा।

× × ×

सुबह होने तक इस परेशान कारवाँका कोई आदमी गाँवमें नहीं रह गया, जिसकी जिधर इच्छा हुई वह उधर चला गया—कुछ बसमाचियोंकी ओर और कुछ जन-प्रजा-तन्त्रकी ओर। वकील-मुखतारने अलीरजाके साथ अफगानिस्तानका रास्ता लिया।

पीछे रह गये प्रधान कातिबने अपनी दावातकी ओर इशारा करके अपने सहकारीसे "खैरियत हुई कि अशर्फियोकी खुर्जीको बसमाचियोंकी ओर फेकते वक्त मै इस दावातको सभाले रखना नहीं भूला, नहीं तो मेरे जीवनकी कीमत एक काले पैसेके बराबर भी न होती"—कहकर सतोष-प्रकट किया।

१६

लूट और कैदी

युर्चीमे एक अजब घबडाहट फैली थी। लोग अपनी अधिकाश चीजें जमीनमे गाड़ रहे थे। जो चीजे उतनी मूल्यवान न होती, उन्हें वैसे ही छोड देते और आवश्यक चीजोमे जितना ले जा सकते थे, उसे ले अपनी गाय-भेड जैसे खानगी जानवरोंको हाँकते दो-दो चार-चार करके जगल और बयावानकी तरफ भागे जा रहे थे। युर्चीमे एक भी आदमीका पूत न रह गया था। इस वक्त नगे-पैर नगे-सिर दस आदमी वहाँ आये। यद्यपि उनकी भिन्न-भिन्न शकल-सूरतसे उनके भिन्न-भिन्न नगर और देशका होना साफ-साफ मालूम होता था, किन्तु उन सबके लिवास फटे, बदन चोटसे घायल, पैर अधिक चलनेसे सूजे, आँखे भूखसे अन्दर घुसी, ओठ बेखून होनेसे नीले और निगाहे निष्प्रभ थीं। उनकी यह दशा बतलाती थी, कि उन सबको एक वक्त एक घडी एक ही बलामे फँसना पडा था।

—यहाँ रेव्-कम्-खाना (रेवोल्यूशनरी कमीटीका आफिस) कहाँ होगा?

—मुझे क्या मालूम, उस आदमीसे पूछे शायद उसे मालूम हो—कहकर दूसरेने एक आदमीकी ओर इशारा किया जो दो छोटे बच्चों और सरपर बकचा लिये हुई औरतके साथ जा रहा था।

—ओय् आका! तू यहाँका रहनेवाला है?

आदमीने आवाज सुन मुँह फेरकर मुसाफिरोंकी ओर एक निगाह डाली और फिर वह जल्दी-जल्दी कदम बढाकर चलने लगा।

—ओ आदमी, तू यहाँका रहने वाला है, पूछ रहा हूँ ?

आदमी आवाजको अनसुनीकर औरतपर तेज़ चलनेके लिये दबाव डाल रहा था, किन्तु मुसाफिर तेजीसे चलकर उसके पास पहुँच गये।

—आदमी हो या जानवर ? क्यों बात नही सुनते ?—एक मुसाफिरने कहा।

—लो, सुनता हूँ, क्या कहते हो ?—आदमी खड़ा हो गया।

—रेव्-कम् खाना यहाँ कहाँ है ?

आदमीने मुसाफिरोकी तरफ एक-एक करके निगाह डाली और कहा—तुम मनहूस जदीद हो क्या ? देख रहे हो न तुम्हारी मनहूसीसे हमारी क्या हालत है ? तुम्हारा वकील-मुखतार देशमे आग लगाकर भग गया। अब एक ओर तबारिश (बोलशेविक) लोग सदेह करके बसमाची कहकर हमसे नाराज हैं और दूसरी तरफ "मुल्क हमारा है" कहकर बसमाची हमारा सब कुछ नाश कर रहे हैं। इन दो आगोंके बीच पड़े हम नही जानते कि क्या करे ?

आदमी अभी अपने दुख-सुखको नही कह पाया था, कि एक तरफसे बदूककी आवाज आई और कूचासे कुछ हथियारबन्द सवार निकलकर उनकी तरफ दौड़े। रेव्-कम्-खाना ढूँढनेकी बात छोड़ "बसमाची-बसमाची" कहते हुए वह हर तरफ भाग गये। उनमेंसे एक जो औरोंसे न भागनेके लिये कह रहा था, अपनी जगह खड़ा रहा। सवारोने उससे पूछा—

—तू कौन है ?

—मैं आदमी हूँ।

—मै भी जानता हूँ, तू आदमी है, हैवान नही है। पूछता हूँ, तू किस पक्षका है ?

अभी मुसाफिरने अपना मुँह न खोला था, कि जानेवाले आदमीने कहा—मै समझता हूँ, यह जदीद या बोलशेविक है, क्योंकि अभी मुझसे "रेव्-कम्खाना" पूछ रहा था ?

सवारोंने तुरत उस आदमीके हाथो और गर्दनको बाँध दिया। फिर एक सवारने उस आदमीसे पूछा—तू खुद कौन है, कहाँ जा रहा है ?

—मै यहीका रहनेवाला हूँ और जहाँ दूसरे लोग गये हैं, उधर ही जानेवाला हूँ।

—बहुत खूब ! बकचा ला, और खुद हल्का हो जिधर चाहे जा।

आदमीके 'हाँ' या 'नही' कहनेसे पहले ही एक सवारने औरतके सिरपरसे बकचा छीन लिया।

अब तक गाँव हथियारबन्द सवारोसे भर गया था। सवार अपने घोड़ोको कूचेमे बाँध घरोकी तलाशीमे लगे हुए थे। उन्होने पहले घरोमे छोड़ी चीजे लाकर एक जगह जमा की, फिर कुदालसे फर्श खोदकर गाड़ी हुई चीजोको भी निकाला।

—इस बन्दीको क्या करूँ ?—रक्षक सवारने पूछा।

—क्या करे ? एक कार्तुस इसके सिरपर भी निछावर "घास कम दुनिया पाक"—कहकर एक बदूकचीने निशाना बाँधा।

दूसरेने कहा—नही, क्या जाने यह आदमी बोलशेविक नही, बल्कि जदीद हो। अनवरपाशाने हुकुम दे रखा है, कि हरेक जदीद या हकूमतके आदमीको न मारकर उसे केन्द्र मे भेजना चाहिये। मीर गाजीने भी इस हुकुमको कबूल किया है, इसलिये इस आदमीको भी लूटके मालके एक भागके साथ बदी बनाकर कोकताश भेजना चाहिये।

बसमाचियोने हाथ लगी चीजोंमेसे एक हिस्साको केन्द्रीय नेताओंके नाम अलग करके बाकीको आपसमे बाँट लिया और बद को भी मालके साथ दश सवारोके हमराह कोकताश भेज दिया। बाकी सवार यूरचीसे निकलकर देहनौ रवाना हुए।

१७

पथराव

यंगिकुर्ग़ान गॉव बसमाचियोंसे भरा था। लके (किर्गिज), मर्का, करलुक् और ताजिक सभी जातियोंके बसमाची हवेलियों, घरो और कूचोंमे लेटे हुए थे। उनके साथ आठ सौ दरवाजके भी बसमाची थे, जिनके पैरोंमे लकड़ीके जूते और गर्दनमे ग्यारह-गोलिया पंच-गोलिया अगरेजी बन्दूकोके अतिरिक्त बाबा आदमके जमानेकी एक-एक कमान भी थी। बात मारनेमे यह सबसे आगे थे।

गॉवके बीचम वकील-मुखतारके सामानसे मुसज्जित एक घरमे ईशान सुल्तान, अलीमर्दा, अब्दुलकयूमबी और दूसरे कूरबाशी और मुल्ला बैठे हुए थे। ईशान सुल्तानने अलीमर्दा से कहा—इस वक्त तू हमारी और खलीफा मुसल्मीनक दामाद अनवरपाशाकी मददसे इब्राहीम डाकूकी जगह बैठा है, लेकिन कोई काम हमारी रायके बिना न करना। भगवानकी दी हुई इस दौलतको हमे आपसमे मिलकर सॅभालना चाहिये। इब्राहीम चाहता था सभी चीजे खुद खाये और सब काम अपने हाथमे रखे। वह किसी आदमीको पसन्द नहीं करता था।

अलीमर्दा—अलबत्ता, तुम हमारे दोस्त हो। मेरे लिये उचित है कि कोई काम बिना तुमसे पूछे न करूँ। इस वक्त भी मै तुम्हारे पास सलाहके लिये आया हूँ कैसे रूसियोको मुल्कसे निकाला जाय ?

एक मुल्लाने बीचमे बोलते हुए कहा—सब काम शरीयत-शरीफ (सद्धर्म)के अनुसार होना चाहिये, तभी देश मुसल्मानाबाद बनेगा। जिस तरीकेसे जदीदोके हाथसे मुक्ति मिलेगी, उसी ढगसे रूसियोंके हाथसे भी। इब्राहीम बेग अपने पिछले कामोंमे शरीयतका ख्याल नहीं करता था। आलिमोंका सम्मान नहीं करता था। वकील-मुख्तारसे लूटे मालमेंसे मल्लोको उचित अश नहीं देता था।...

इसी समय बाहरसे हल्ला-गुल्लाकी आवाज आई और मुल्ला अपनी बात समाप्त न कर सका। कुछ हथियारबन्द आदमी एक हाथ-गर्दन बँधे व्यक्तिको ला रहे थे और उसके पीछे-पीछे एक पगली जैसी औरत अलीमर्दा और दूसरे बसमाचियोंको गालियाँ देती आ रही थी। बन्दीको अंदर ले जाकर ईशान सुल्तानके समक्ष खड़ा किया गया। ईशानने पूछा—यह कौन है ?

—यह जदीद (नवीन) है। हम इसे यूर्चीसे पकड़कर ला रहे हैं। कोकूताश ले गये, किन्तु वहाँ सर्दार न थे। आपके पास लाते वक्त रास्तेमे इस बदीको हमारे हाथमे देखकर यह औरत पागलोकी तरह पीछे पड़ गई। भगानेकी बहुत कोशिश की, किन्तु नही भगी और यहाँ तक आ गई।

अलीमर्दा ने बडे ध्यानसे बदीकी ओर देखकर पूछा—तेरा नाम क्या है ?

—यादगार।

अलीमर्दा सिरको ऊपर-नीचे हिला पहचानते हुए बोला—क्या तू सरेजूय वाले अजीमशाहका भगोड़ा चरवाहा तो नही है ?

बंदीने इस सवालका जवाब नही दिया।

अलीमर्दा ने ईशान सुल्तानकी तरफ निगाह करके कहा—तक्सीर ! इस औरत और मर्दकी कहानी बहुत लम्बी है। मै इन्हें बहुत सालोंसे जानता हूँ। इन दोनोके बीच शरीयतके विरुद्ध सम्बन्ध है। ऊपरसे इन्होने हर जगह हमारी शिकायत की है। मैने सुना है लत्ताबन्द गाँवमे इसीने वकील-मुख्तारके सैनिकोको हमारी फौजोसे लड़वाया। इसलिये चाहे अनवरपाशाने जदीदोके न मारनेका हुक्म दे भी रखा है, तो भी इसे मारना चाहिये, शायद यह आदमी बोल्शेविक भी होगा।

मुल्लाने बीचमे टोका—चूँकि इनका एक दूसरेके साथ शरीयतके विरुद्ध सम्पर्क है, इसलिये इन्हें पथराव करना चाहिये पथराव।

—अलबत्ता, पथराव करके मारना चाहिये—दूसरे मुल्लाने साथ दिया।

ईशान सुलतान—कल तक इसे बद रखकर आलिमोसे फतवा लिखवा फिर लोगोंके बीच ले जाकर पथराव करना उचित है। (अपने आदमीकी ओर निगाह करके) इन्हे ले जा, अलग-अलग दो कोठरियोंमें बद कर ताला लगा दे।

× × ×

दूसरे प्रातःकाल मुल्ला अपराधियोंके पथराव करनेका फतवा लिख लाये। ईशान सुलतानने फतवा पढकर अपने आदमीसे कहा—अपराधियोंको ले आ।

पॉच मिनट बाद "ले आया" कहते नौकर अदर आया। ईशान सुल्तानने दर्वाजासे बाहर सिर्फ एक आदमीको देखकर पूछा—अपराधिनी औरत कहॉ है ?

—तक्सीर !

—औरतको भी ला, कह रहा हूँ।

नौकरने आगे आकर कहा—औरतको दो द्वारवाली कोठरीमे बद किया था, किन्तु ताला लगाते वक्त एक द्वार भूल गया और वह भाग गई।

ईशान सुल्तान इस असावधानीके लिये अपने आदमीको खूब गाली देकर बोला—जल्दी करो। एक बड़ी जगहमे गड्ढा खोद बन्दीको कमर तक गाड़ दो और फौजियोंको खबर कर दो, कि हरेक आदमी इसपर एक-एक पत्थर मारकर पुण्यार्जन करे। अगर मर जाय, तो भी सारा शरीर जब तक ढँक न जाय, तब तक पत्थर मारनेसे हाथ न खीचें।

नौकर अभी बदीको दरवाजासे बाहर न ले गया था कि बदूकों और मशीनगनोंकी आवाज आने लगी। बसमाचियोंमें खलबली मच गई। हर आदमी हथियार ले घोड़ेपर चढ़ भागनेके लिये उतावला हो गया।

आध मिनट बाद **यगी-कुरगान** गॉवको सौ लाल सैनिकों और क्राति-कारियोने घेर लिया था। बसमाची जंगके लिये हवेलीसे निकले। मुल्ला भी 'मारो गाजी मरो शहीद' कहकर उन्हे युद्धके लिये प्रोत्साहित करने लगे, किंतु बसमाचियोको गाजी बनना मयस्सर न हुआ और सभी गरोह गरोह 'शहीद' भाग खड़े हुए। बसमाचियोके दस्तेके अगले भागमे दरवाजी थे। वे सबसे पहले अपने लकड़ीके जूतोको छोड़कर भाग निकले।

एक दरवाजीने कहा—वल्लाह! ऐसी नामर्दाना जगसे बिल्कुल खुशी नही होती। हम तो ऐसी जंग पसद करते हैं, जिसमे मर्दोंकी तरह बगलसे बगल मिलाके लड़ा जाय, और मर्दको नामर्दसे जुदा किया जा सके।

बढते-बढते युद्ध-क्षेत्र गॉवके अदर आया। दोनों तरफकी गोलियाँ शत्रु-मित्रको पहिचाने बिना एक दूसरेकी छाती चीरने लगी। बसमाचियोंने देखा कि गॉव छोड़ना ही पड़ेगा। उन्होने अनाजवाली हवेलियोमे आग लगा दी। गॉव खून और आगके अदर था।

बसमाची भाग गये। लाल सैनिकोंने गॉवमे घुसकर बहुत ढूँढा, किंतु वहाँ ईशान सुल्तानके कुशखाना (अस्त्रागार) की किवाड़को ढाल बना-कर खड़े दाखुदाके सिवा और कोई नही मिला। वह उनके साथ दोशबा गया।

१८

तंका

दोशबा शहरको चारों ओरसे दस हजार बसमाचियोंने घेर रखा था। यह बसमाची पहलेके बसमाचियोंकी तरह युद्ध-विद्यासे अपरिचित और अव्यवस्थित न थे। उनका नेतृत्व अनवरपाशा जैसा विश्व-युद्धका एक अतिप्रसिद्ध जेनरल कर रहा था। वकील-मुखतारके विश्वासघातके बाद इस आदमीका प्रभाव बसमाचियों और प्रतिगामियों पर बहुत बढ गया

था। अब बसमाची अच्छी तरह उसकी आज्ञाका पालन करते थे। उसने "अमीर-लश्करेइस्लाम-नायब-अमीर-बुखारा व दामाद-खलीफा-मुस्लमीन अनवर" की मुहर और हस्ताक्षरसे खत-पत्र भेजकर अपनी आज्ञाकारिता और प्रजातत्रीय सरकारसे लड़नेके लिये लोगोको निमत्रित किया था। उसने हाथमे आये लूटके मालको अफगानिस्तान भेजकर हथियार और सैनिक पोशाक खरीद मँगाई थी और अपने हस्ताक्षरसे 'कागजाकचा' (नोट) निकालकर नकद सिक्केकी जगह लेनेके लिये मजबूर किया था।

शहर दोशबाकी हालत और खराब हो गई थी। लाल सैनिक चद स्थानीय ताजिको और बुखारियोके साथ घिर गये थे और बड़ी मुश्किलसे रोजका खाना इकट्ठा कर पाते थे। अतमे बसमाचियोने पानीका मिलना भी कठिन कर दिया। काफी समयसे वे अपनी और अपने घोड़ोकी प्यास केवल बारिशके पानी और बरफसे दूर कर रहे थे। उनकी पोशाक फटकर बेकार हो गई थी और कड़ाकेकी सर्दीके दिनोको उन्होने पोशाकके बिना बिताया था। बीमारो और घायलोकी सख्या दिन-पर-दिन बढकर उनकी शक्ति कम हो रही थी। भूखे घोड़े खुले मैदानमे बरफ-वर्षाके समय भी नगे खड़े थे। बुखारासे कोई मदद नही आ रही थी।

"अब इस जगह और रहना सभव नही"—यह आवाज अफसरोसे लेकर सिपाहियों तक सबके सामने आ रही थी। किंतु लालसेनाका नियम और विनय इस बात की इजाजत न देता था, कि कोई इस बातको मुँहपर लाये। बुखारासे कोई खबर नही आई। हवाई तारसे मिली खबरोंसे मालूम होता था, कि बाहरी दुनियासे उनका सबध बिल्कुल कट चुका है। तीन मास तक घिरे रह सारे कष्टोंको सहन करनेके बाद बुखारासे हवाई तारके जरिये फर्मान आया—"दूसरा फर्मान मिलनेपर अस्थायी तौरसे दोशबा छोड़कर चले आओ।"

घिरावेके कष्टोंसे मुक्ति देनेवाले इस फर्मानका जारी करना जारी न

करनेसे भी कठिन था। लेकिन लालसेनाकी दृढ़ता और दृढ सकल्पने हरेक कठिनाईको आसान कर दिया।

रात अँधेरी थी। बर्फ और वर्षा दोनों पड़ रही थी। आदमी और घोड़े बर्फ और कीचड़मे कमर-कमर तक डूब जाते थे। घोड़ोंने तीन माहसे पेट भर खानेका मुँह न देखा था। इनमे उतनी शक्ति न थी, कि वे अपने सवारोंको कीचडसे बाहर खीच लाये, बल्कि उल्टा सवार ही पैदल हो कीचड़मे फँसे अपने घोड़ोंको बाहर निकाल रहे थे। कारवाँ इस अवस्थामे दोशबासे निकला। उनकी मददसे दोशबाके यहूदियोंके साठ परिवार नर-नारी, छोटे-बड़े, वृद्ध-जवान शिरसे पैर तक नगे बसमाचियोंके हाथसे निकलकर उनके साथ हुए थे। किसी के मुँहसे जरा भी आवाज न निकल रही थी। आगे-पीछे दाहिने-बाये लाल-सैनिक सिपाही और सवार उनकी रक्षा कर रहे थे। राह चलना कितना कठिन था, यह इसीसे मालूम है, कि रात दस बजेसे दिनके नौ बजे तक वह सिर्फ एक योजन आगे बढ़ सके थे।

बसमाचियोको पहले पता न लगा। दिन होनेपर खबर मिली। फिर उन्होने आकर कारवाँको घेर लिया। आगे-पीछे दाहिने-बाये चारो ओरसे गोलियाँ चला उन्होने मुश्किल कर दिया। ऊपरसे रास्तेके पुलोंको उन्होंने बरबाद कर दिया था। रेगर, सरेआसिया, यूर्ची, और देहनौके लोगोंको लाल-सैनिकोके आनेका डर दिखा भगा दिया था। लोगोंके भाग जानेपर उनके मालको लूट घरो और बखारोंमे आग लगा दी थी।

लेकिन लाल-सैनिक कारवाँकी रक्षा करते आगे बढते गये। यहूदियोके अल्प-वयस्क बच्चो, बूढो और औरतोंको अपने घोड़ोपर चढाये आगे बढते गये। बसमाची चारों ओर से गोलियों की वर्षा कर रहे थे तो भी आगे बढते गये। जगली भेड़ियोंको भगा रहे चतुर निशानचियोकी तरह अपने शत्रुओंको भगा रास्ता साफकर वह आगे बढ़ते गये। आगे-पीछे और दोनों पक्षोंसे वर्षाकी भाँति गोलियोंके बरसते रहनेपर

भी नीची-ऊँची जमीनों पहाड़ों और दर्रोंका ख्याल न कर वे आगे बढ़ते गये।

१६

विजयोत्सव

देहनौ और **बायसून**के बीच **अबारसाय** नामक जगह है, जिससे दूर यात्रीको गुजरना पड़ता है। युगोंकी बाढ़ोंने गुजरते हुए यहाँ पहाड़मे बहुतसे खड्ड और ऊँची-नीची जगहे बना दी हैं, जिसके कारण यह स्थान प्राकृतिक मोर्चेका रूप लिये हुए है। यहाँ यदि एक आदमी बदूक लेकर खड़ा हो जाय, तो अपने ऊपर एक भी गोलीके आये बिना दर्जनों आदमियोके रास्ते रोक सकता है। अनवरपाशा दोशबासे यहाँ तक लाल-सैनिकोको घेरनेमे सफल न हुआ था। उसने इस जगह अपना जाल बिछा रखा था। साथ ही उसने आधुनिक युगकी युद्ध-विद्याके अनुसार प्राकृतिक खाइयोंकी मोर्चाबदीको और मजबूत कर रखी थी। दस हजार बस-माचियोंमेसे चुनकर चार हजारको इस स्थानपर नियुक्त किया था, और हरेक टुकड़ीपर एक-एक अनुभवी तुर्क अफसरको मुकर्ररकर सारी सेनाकी कमान अपने हाथमे ले वह लाल-सैनिकोंकी अगवानीके लिये तैयार था।

लाल-सैनिक और स्थानीय स्वय-सेवक अपने विरोधियोके दशाश भी न थे। हजारो कठिनाइयोको झेलते जब वे यहाँ पहुँचे, तो एकाएक नई परिस्थितिको देख अपने कमाडरके हुक्मपर जमीनपर लेट गये। दुश्मनोंकी ओरसे गोलियोंकी वर्षा हो रही थी। छिपानेके लिये शरीर पर डाले बर्फके अतिरिक्त दूसरी कोई आड़ न थी। तोपोंकी गड़गड़ाहट और बदूकोंकी पटपटाहटसे सारी पर्वतस्थली गूँज रही थी। इसी अवस्थामे लाल-सैनिक पेटके बल सात घटे तक सरकते एक खाईके किनारे पहुँचे।

दुश्मन चला गया था और खाइयोंमें कारतूसोंके खाली खोलोंके अतिरिक्त और कुछ भी न था। इन्ही खाइयोमे उन्होने आराम लिया।

कमाडरने दुनियाके एक प्रसिद्ध जेनरल पर विजयी होनेके लिये लाल-सैनिकोंको बधाई दी। जवाबमे पर्वतको गुंजाते मानो उसे भी अपने साथ लिये सबने मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाया। और उसके बाद :—

न राजा न धनी ही हो,
पुरान वस्त्र फेक दो,
बोलशेविक है मेरा पथदर्शक,
दाखुदा बहादुर हूँ मै।
पैरसे पैदल चलूँ,
विशाल पथपर चलूँ,
न हाथ बाँध मै चलूँ,
दाखुदा बहादुर हूँ मै।
पहाड़ जोत पार हो,
सीनेको बर्फपर धरूँ,
लेकिन बिजली सा लड़ूँ,
दाखुदा बहादुर हूँ मै।

एक ताजिकके इस गानेने विजयोत्सवके आनदको दूना कर दिया और वह ताजिक था हमारा दाखुदा।

२०

ज्वालामुखी पर्वत

काफिरून (बायसून) गाँवमे अमीर-बुखाराके दरबारकी तरहका एक दरबार लगा था। दरबारके चारों तरफ युरोपीय सैनिक पोशाक पहने ताजिक, अफगान और उजबेक सैनिक घेरे खड़े थे। इनके अफसर उस्मानी तुर्क थे। प्रधान मकानको सजाया गया था। उसके अदर जेनरल

अपनी सैनिक वर्दी, कधेपर फीता और सीनेपर तमगोंको लगाये बैठा नक्शा देख रहा था और उसपर जहाँ-तहाँ पेंसिलसे चिन्ह लगा पास रक्खे कागजपर कुछ लिखता भी जाता था।

—हाजी लतीफ दीवानबेगी जनाबआली अमीर बुखाराके पाससे आया है। यदि हजरत पाशाकी आज्ञा हो, तो हस्तचुबनसे कृतकृत्य होनेके लिये आये।

—पद्रह मिनट बाद आवे।

अर्दली निवेदन करते वक्त ललाट पर रखे दाहिने हाथको हटा शिर नीचाकर सम्मान प्रदर्शन करते 'अच्छा' कहकर लौट गया।

जेनरल पुनः नक्शा देखनेमें मग्न हो गया। पद्रह मिनट बाद फिर अर्दली अदर आया, लेकिन इस बार कुछ न बोल सिर्फ हाथको ललाटपर रखके खड़ा रहा। जेनरलने दस मिनट और नक्शा देख कागज काला करके कहा—अच्छा, आनेको कह।

मझोली दाढ़ीवाला एक पैतालिस-साला लबा आदमी ललाटसे कठ तक ढाँके साफा लगाये अंदर आया और पास आ पातितजानु बैठ अमीर बुखाराको दुआ करनेकी तरह जेनरलके लिये दुआ करने लगा। लेकिन जेनरल दुआके समाप्त होनेकी प्रतीक्षा किये बिना फुर्तीसे अपनी जगहसे उठा, और तबतक सम्मानके लिये खड़े हो अपने मेहमानकी 'क्या मुझे हाजी लतीफबेसे मिलनेका सम्मान मिल रहा है?' कह बड़ी गर्मजोशीके साथ मुलाकात की, उसे बैठनेके लिये स्थान बतला स्वय अपनी जगहपर बैठ गया। फिर उसने हाजीसे कुशल-मङ्गल पूछकर कहा—मेरे भाई जनाबआली अमीर बुखाराका मिजाजशरीफ कैसा है?

—अल् हमदो-लिल्लाह (भगवानकी प्रशंसा), जनाबआली हर तरहसे खुश हैं और हजरतपाशाके दीर्घायु होनेके लिये दुआ करते मित्रतापूर्ण सलाम भेज रहे हैं। उनकी सारी आशाएँ पहले खुदा और दूसरे हजरत पाशापर बँधी हुई हैं। उन्हें विश्वास है कि खुदा, पीर

(गुरु), और इजरतपाशाकी मददसे जल्दी वह बुखाराके सिंहासनको सुशोभित करेंगे।

जेनरलने कहा—इन् शाअ-ल्लाह (यदि भगवानने चाहा) सारी इच्छाएं जल्द पूर्ण होंगी। यहाँके हरेक कूरबाशी (सेनानायक) अपनेको अपने-अपने गाँव या इलाकेका स्वतन्त्र शासक समझता था और अपने मतलबके लिये वह आपसमे लड़ते रहे थे। मैने उनको एक व्यवस्था-सूत्रमे लानेकी कोशिश की और अतमे मेरे भाई जनाबआली अमीर बुखाराकी कृपासे एक हद्द तक मै इसमे सफल हो गया। इस समय समरकद, बुखारा, शहरसब्ज, करशी, गजार, शेराबादके सारे कूरबाशी मेरी आज्ञा मानते हैं। उनमेसे अधिकाश अपने-अपने मुजाहिदो (धर्म-योद्धाओं)के दस्तोंके साथ खुद मेरी कमानके नीचे काम करनेके लिये यहाँ मौजूद हैं। सबसे ज्यादा सरकश इब्राहीमबेग था जो मेरी आज्ञा माननेके लिये बिल्कुल तैयार नही था। मूर्ख मुल्लाओंने भी उसकी सहायता की थी। देखिये मुल्ला लोग उसे किस तरहका पत्र लिखते हैं—कहकर जेनरलने एक पत्र* निकालकर पढनेको दिया :—

अमीरुल् मोमिनीन् सल्लमल्लाह तआला

वह महाविजयी

रक्षक प्रभु सम्माननीय मीर-बी-दादखाह, लश्करबाशीको दुआ और सलामके उपायनके बाद मालूम हो, कि हम आपके दुआ-वाचक परमभक्त आलिम (पंडित) लोगोंने सुल्तानाबादमे पुण्य ईद-पर्वके मनानेके लिये इकट्ठा हो आपसमें मन्त्रणा की। कुछ लोगोंके बारेमे हमने सुना, कि वह जनाबआली और श्रीमानके विरोधी और बागी हैं। श्रीमान उनके बारेमे हमें सूचित करें। जो कोई अनवरका अनुयायी है, उसे कुरान और हदीस

* यह मूल पत्रका अनुवाद है।

(स्मृति)के अनुसार क़ाफिर सिद्ध कर सभी यहाँ एकत्र हुए हम आलिम-फाजिल शरीअतके अनुसार कत्ल करायेगे । जो लक्के (किर्गिज़) है और जो ताजिक या कर्लुक अनवरका अनुसरण करते हैं उनके बारेमे सूचित कीजिये । उनको भी शरीअतके अनुसार हम आलिम-फाजिल लोग एकत्र हो कत्ल करायेगे । हम लोग शरीअतके अनुसार काम करेगे । श्रीमान् भी हमारे पक्षका समर्थन करे । जो कुछ बदनामी होगी, वह सब हम लोगोंके शिरपर, यदि वह श्रीमान्को उचित जान पड़े । आगे आप स्वय भली भाँति जानते हैं । अत्तकसीर अस्सलाम व अलेकुम् ।

(पत्र भेजनेवालोकी मुहर और हस्ताक्षर)

मुल्ला मुहम्मद सलीमी मुदर्रिस — मुल्ला अली महमदी मुदर्रिस
खलीफा मुल्ला अल अज़र मखदूम — मुल्ला अस्मतुल्ला मखदूम
मुल्ला तुगाय मुरादी मुदरिस — मुल्ला अब्दुर्रहमान मखदूम

मखदूम महमदी तुकसाबा

—हम उस्मानी (तुर्क) यहाँ सदा नही रहेगे । मुल्कको बोलशेविकोसे पाक करके हम उसे जनाबआलीको अर्पण कर देगे । इसके बाद हमारा कर्तव्य समाप्त हो जायगा और हम अपने देशको लौट जायेगे । यह आपका देश गुप्त निधि है, जिसके उद्घाटन करनेवाले शिल्पी स्वय प्रकट होगे । इस समय हम इस स्थानको बोलशेविकोंसे खाली कर रहे हैं । फिर पैसेवाली सरकारे—विशेषकर अग्रज यहाँ आकर अपना खेल खेलेगे । ताजिकोंकी एक अच्छी कहावत है 'यदि पैसा हो तो वनमे भी शोरबा ।' उस समय इस भूमिके स्वामी अपनी गुप्त निधि और इसकी शिल्प-शक्तिको पैसेवाली सरकारोको सौंपकर उसके बदलेमे तोड़े-तोड़े अशर्फियाँ लेकर खुशीके साथ राज-काज करेगे । व्यापार बढेगा । उससे भी शासन-कर्ताओंको भारी लाभ होगा । लेकिन कूरबाशियों और मूर्ख मुल्लाओंकी बुद्धि यहाँ काम नही करती । वह चाहते हैं, कि एक गाँव या मौजेका शासक बनकर खायँ और सोयँ । जो भी हो, मेरे भाई जनाब-

आलीके बारबारके भेजे फरमानोंकी वजहसे इब्राहीमने भी मेरी आज्ञा माननी स्वीकार की और अपने बारह सौ नवानोंके साथ स्वय मेरे स्कधावार (छावनी)में आया है। इस समय दस हजार जगी मुजाहिद बायसूनको नगीनेकी तरह घेरे हुए हैं। एक बड़े आक्रमण द्वारा हम इस शहरका काम तमाम कर देगे। इसके बाद शेराबादकी बारी आयेगी, जिसके ले लेनेके बाद हम जनाबआलीके और नजदीक हो जायेगे। जनाबआलीकी कोशिश और इस्माइल दीवानबेगीकी मार्फत हिन्दुस्तान (अग्रेज सरकार) से जो सौ ऊँट फौजी बर्दी, सैनिक और डाक्टरीके सामान हमारे पास पहुँचे हैं, उनसे हमारा काम बहुत अच्छा हो गया है। आगे भी इस तरहकी कोशिश जारी रहनी चाहिये।

हाजी लतीफ—तीस हजार अफगान जिहादी, जिनमे अधिकाश हिन्दुस्तानके सीमान्तके हैं, हमारे हाथमे हैं। सिर्फ हजरतपाशाकी आज्ञाकी जरूरत है। फिर तो जनाबआलीकी इजाजत ले इस्लामके गाजियोंकी सख्या हम दूनी कर देगे।

—ठीक है। इन सब कामोसे पता लगता है कि इस्लामके भाग्यका सूर्य मध्याह्नपर है। जो इलाका बोलशेविकोंके हाथमे है, वहाँ भी हमारे पक्षपाती हैं और वे हमारे फायदेके लिये काम करते हैं।

अर्दलीने बीचमे आ जेनरलकी बात काटते हुए कहा—बाइसूनसे प्यादा आया है और कहता है, कि हजरतपाशाके लिये एक पत्र और गुप्त सन्देश लाया हूँ।

—आनेको कह—कहकर जेनरलने सामने फैले नक्शेकी ओर एक निगाह डाली। प्यादाने आकर पत्र जेनरलके हाथमें दिया। जेनरलने पत्रको खोलकर पढना शुरू किया। पढते वक्त उसके चेहरेपर चिन्ताके बादल दौड़ने लगे, जिसे रोकनेकी उसने बड़ी कोशिश की। पत्र समाप्तकर चुकनेपर हाजी लतीफकी ओर निगाहकर "अच्छा, अभी आया" कहकर प्यादाको दूसरे घरमें ले जा कुछ बात की और फिर पहले कमरेमें आकर

"शत्रुके इरादेसे पहले खबरदार होना भी आधी विजय है" कहते अपनी जगहपर बैठा। हाजी लतीफको खबर सुननेका इच्छुक समझकर "शत्रु आज रातको आक्रमण करना चाहता है" कहते अपनी घड़ीकी तरफ देखकर "अभी दो घटा रात गई है। अभी भी फुर्सत है" कह कलम हाथमे ले कागजपर लिखना शुरू किया, साथ ही अलीरजाको बुलानेका भी हुकुम दिया।

अलीरजाके आने तक कुछ पन्ने और भी जल्दी-जल्दी काले हो चुके थे। अलीरजा आकर हाथको ललाटपर रख सैनिक सलाम दे खडा हो गया। जेनरलने अपने लिखे कागजोमेसे एकको उसके हाथमे दे "यह तेरे लिये है, इस फर्मानके अनुसार अपनी चुनी हुई फौज और अफगान गाजियोको ले नक्शेके अनुसार बायसूनकी राहपर सन्तरी रख स्वय अपने सवार दस्तेके साथ उसके ऊपर खबरदारी कर"। दूसरे कागजोको भी देते हुए "इन्हे विश्वस्त सवारो द्वारा कूरबाशियोके शिविरोमे भिजवा दे, जिसमे वह आध घटेके भीतर युद्ध-क्षेत्रमे आ जायँ।"

अलीरजा "बचश्म (आज्ञा सिर आखोपर)" कह अपने सिरको झुका जेनरलके सामनेसे चला गया। जेनरल भी गर्दनमे तमचा डाल, दूरबीनको हाथमे ले घरकी छत पर गया और दूरबीनसे बायसूनकी ओर देखने लगा।

देखते-देखते देर हो गई, किन्तु न बायसूनकी तरफसे और न कूरबाशियोंके शिविरकी तरफसे ही कोई सुगबुगाहट दिखाई पड़ा। केवल जेनरलके शिविरके पासकी सवार और पैदल सेनाने बायसूनकी तरफ कूच किया था। सरदारने कुछ कदम पीछे खडे अपने चार तुर्क अर्दलियोंमे से एककी ओर निगाह करके कहा—जल्दी जा, अलीरजासे पूछ कि फरमानको कूरबाशियों तक पहुँचाया या नहीं?"

अर्दलीने फुर्तीसे नीचे उतर एक घटा बाद लौटकर एक पुर्जा

जेनरलके हाथमे दिया। जेनरलने दियासलाई जलाकर कागजको पढा और कहा—फर्मान अपने समयपर पहुँच गया, किन्तु क्यों इन गर्धोका कही पता नही ?

एकाएक बायसूनकी तरफसे बदूकों और मशीनगनोंकी आवाज आने लगी। "काम शुरू हो गया"—कहकर जेनरलने दूरबीनको शिविरोकी तरफ लगाया, किन्तु अब भी वहाँ गतिका कोई चिह्न दिखलाई नही पड़ता था। जेनरलने "मै अमीर लश्कर-इस्लाम नायब-जनाब-आली व दामाद खलीफा-मुसल्मीन अनवर फरमान देता हूँ कि मिनट न खतम होते सारे गाजी तैयार होकर युद्ध-क्षेत्रमे पहुँच जायँ" कहते चिल्लाकर आवाज दी, किन्तु कोई प्रभाव नही। फर्मानको दो-तीन बार और जोरसे दुहराया लेकिन सब बेकार। जेनरल जल्दी-जल्दी छतसे उतर घोड़ेपर सवार हो अपने नजदीकके अब्दुर्रहमान मिगबाशीके शिविरकी ओर दौड़ा। अन्दर जाकर देखा कि अब्दुर्रहमान मिगबाशीके सहायकोमे हरेक छोकड़ेके साथ वृक्षके नीचे सोया है और अब्दुर्रहमानके घरके अदर कालीनपर दो-तीन साज बजानेवाले बैठे गा रहे हैं —

"ओय् ! जो ाक होवे गाजी
बगलमे लेवे निमूछा"

खुद अब्दुरहमान एक लड़केके साथ सो रहा था।

जेनरलके ऊपर मानो वज्रपात हो गया। वह जरा देर स्तब्ध हो इस दृश्यको देखता रहा। फिर उसने गाली देकर पुकारा, किन्तु तब तक तोप और मशानगनकी आवाज स्कन्धावारके समीपसे आने लगी थी और जेनरलको अवसर न था कि इन "गाजियो" को कामपर लगावे या दूसरे शिविरोंमे भी जाकर ऐसे ही दृश्योको अपनी आँखोसे देखे। वह फौरन वहाँसे निकल घोड़ा दौड़ाते अपने स्थान पर पहुँचा, किन्तु देखा कि वह उसके आनेसे पहले ही लूटा जा चुका है। जेनरलको और आश्चर्य हुआ, जब अर्दलीने आकर संदेश दिया :

—हजरतपाशाके जानेके बाद ही शहरसब्जवाले अब्दुल् गफ्फार कूरबाशीने अपने दस्तेके साथ यहाँ आकर खजाना और अस्त्रागारको लूट लिया और कितने ही हथियारों तथा अशर्फीके तोड़ोंको अपने साथ ले गया। उसके बाद ईशान सुल्तान अफगानोंके दस्तेके साथ आया। वह भी दो खुर्ज़ी तिल्ला (अशर्फी) लेकर चला गया।

ज़ेनरलको फुरसत न मिली, कि अपने इन लुटेरे गाजियोंको कुछ कहे, क्योंकि ज्वालामुखी बायसूनकी तरफसे नजदीक आ पहुँचा था।

जिसने भी चाहा कि अदूरदर्शितापूर्वक बहादुरीके साथ मुकाबलेमें खडा हो, वह ज्वालामुखीके लावेकी बाढमें पड़े पाषाण-खंडों और वृक्षोंकी तरह पलक झपकते-झपकते नेस्तनाबूद हो गया। ज़ेनरलके स्वयं युद्धमें पड़नेसे भी कोई फायदा नहीं हुआ। चंद घटों बाद युद्ध-क्षेत्रोंमें लाशोंके सिवा कुछ न रह गया। हाँ बसमाचियोंकी सेना एक बर्फका पहाड़ थी वह लालसेनाके ज्वालामुखीका मुकाबला न कर सकी। लावाके प्रभावसे पानी बन बाढकी तरह वह हर तरफ बह गई। उसके रास्तेमें जो भी आया उसे जलाते, खराब करते साथ ले गयी।

जिन्दा बचे बसमाची अपने बचे-खुचे आदमियोंके साथ अपनी असली जगहको भाग गये। भागते समय उनके सामने जो भी चीज आई उसे लूटने, जलानेमे कोई कसर उन्होने उठा न रखी। अनवरपाशा अपनी एक हजार चुनिन्दा फौजके साथ सरिक्-मिश्में दुबारा भाग्य परीक्षाके लिये चला गया।

२१

वृक्ष-शाखाकी सेना

लाल-सेना बसमाचियोंका पीछा करते चौबीस दिनोंमें दोशम्बा पहुँचते चारएक्काराँ गाँवमें ठहरी। इन चौबीस दिनोंमें गाँवों और कसबोंमें कोई

वैसा मुकाबला नहीं हुआ, लेकिन चारयकारोंसे दोशम्बाके लिये रवाना होनेके पहले लाल-सेनाको कुछ रुकना पड़ा। उसे पता लगा कि दोशम्बा और उसके आस-पासमें बसमाचियोंने बड़ी तैयारी कर रखी है, पुलोंको बिल्कुल बर्बादकर दिया है और रास्तेपर खाइयाँ खोद रखी हैं। दोशम्बाकी तरफसे उठती धूलको देखकर मालूम होता था, कि वहाँ तीस-चालीस हजार सशस्त्र फौज जमा हुई है। यह सोचकर लालसेनाने चारयकारोंसे शहरको तोपके दायरेमें लिया। शामको वहाँसे कूच कर मारतप्पा गाँवमें मुकाम किया; दूसरे दिन फिर चारयकारों लौट आये। उस दिन आकाशमें पहले दिनसे भी अधिक धूल उड़ रही थी। दूसरी बार शहरको फिर तोपके दायरे लिया। शहरकी तरफसे सवारोंके आक्रमणके चिह्न—गर्द और धूल—चारयकारोंके नजदीक आने लगी, किन्तु खुद सवारोंका पता न था। आज सत्तको भी मारतप्पा लौटकर चारों ओर सन्तरी रख लाल-सैनिकोंने विश्राम किया। तीसरे दिन वह फिर चारयकारों आये और अबकी बार शहरपर पक्का हमला करनेका इरादा कर चुके थे। कुछ तोपें दागी गईं, किन्तु उनके गोले उड़ती धूलमें गुम हो गये और कुछ पता न लगा। सवारोंने शहर पर हमला किया। लालसेना शहरके बहुत नजदीक पहुँच गई। धूल भी बहुत कम हो गई थी, किन्तु अब भी दुश्मनका पता न था। शहरके अन्दर पहुँच गये, फिर भी कोई दिखाई न पड़ा। शहरके कूचोंमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक देखकर लौट आये, लेकिन वहाँ वृक्ष-शाखाओंके बोझोंके सिवा कुछ न मिला। पता लगा कि शहरको हाथमें रखनेके लिये बसमाचियोंने यह आखिरी तजवीज निकाली थी। वह दरख्तोंकी शाखाएँ काटकर उन्हें घोड़ोंसे कूचोंमें खिंचवाते थे, जिससे उठती भारी धूल देखकर लालसेनाने धोखा खाया था।

—:o:—

२२

अनवरका अवसान (अगस्त १९२२)

अगस्त १९२२ का आरंभ था। बल्जुवान इलाकेके एक गाँवमें बसमाचियोंका एक दस्ता बकरीद मनानेके लिये जमा हुआ था। उन्होंने लोगोंको मस्जिदमें जमाकर बोलशेविकोंके विरुद्ध भड़काया। सभा गर्म थी। इसी समय एक आदमी आया और एक कोनेमें तहारत (हस्त-पाद-मुख-प्रक्षालन) करने लगा। बसमाचियोंके सरदारके लिये यह अपरिचित स्थान था। उसने वहाँके लोगोंसे आगन्तुकके लिये पूछा। लोगोंने "एक गरीब ताजिक है, ईदकी नमाज पढने आया है" कहकर जवाब दिया। सभा समाप्त हुई। सभी ताजा तहारत करके ईदकी नमाज पढनेके लिये तैयार हुए, लेकिन सरदारके दिलसे संदेह दूर नहीं हुआ था। उसके लिये हर अपरिचित सरकारी जासूस और हर काला चिह्न लालसेना थी। नमाजके अन्तमें वह अपने संदेहको और न रोक सका। उसने उक्त अपरिचित आदमीको पकड़ लानेके लिये अपने आदमियोंको हुकुम दिया। आदमियोंने चारों ओर बहुत पूछताछ की, लेकिन पदचिह्न और पन्द्रह मिनट पहले दीवारके पास बँधे घोड़ेकी लीदके सिवा और कुछ न मिला। इस बातको सुनकर सरदारका सन्देह और बढ़ गया। उसने अपने आदमियोंको हथियार-बन्द हो हरवक्त हाजिर रहनेका हुकुम दिया था।

देर न हुई कि एक ओरसे तीस लाल-सैनिक कुछ स्थानीय स्वयंसेवकों और एक मशीनगनके साथ प्रकट हुए। अभी बसमाची अपने घोड़ोंपर सवार न हो पाये थे, कि लाल-सैनिकोंने उन्हें चारों ओरसे घेर लिया। लड़ाई शुरू हुई। मशीनगनकी गोलियाँ फव्वारेके पानीकी तरह बसमाचियोंके सिर पर पड़ने लगीं। अपने आदमियोंको मुकाबला करनेका हुक्म दे खुद आगे बढ़ा। बसमाची लाल फौजके और नजदीक पहुँचे। अब तक,

फिर तगचा और अतमे सगीनकी लड़ाई हुई। युद्ध-क्षेत्रमे हताहतोंकी ढेर लगी थी। बसमाची भाग गये।

लाल-सैनिकोने कुछ दूर तक पीछा किया, फिर उन्हें लुप्त देखकर लौट आये। लौटकर मुर्दोंमें दोको विशेष शान-शौकतवाला देख उनके लिबासको उतरवाकर साथ ले लिया। शिविरमें आ लिबासोंकी जॉच पड़ताल करनेपर वहॉ दो मुहरे मिली। एक पर उत्कीर्ण था "दौलत-मन्दबी" और दूसरी पर "अमीर-लश्कर-इस्लाम नायब-अमीर-बुखारा व दामाद-खलीफा मुसल्मीन अनवर"।

अपनी उमरके बयालिसवे सालमे भाग्यके जुआड़ियोके सरदार अनवरपाशाने इस अभागी मृत्युसे अपने जीवनका अन्त किया।

कमाडरने अपने आदमियाको बधाई दी और सेनाका पथ-प्रदर्शन करके लानेवाले ताजिककी तरफ निगाह करके कहा—तुझे और भी बधाई देनेकी जरूरत है। यदि तूने चतुराई और सावधानीसे काम न लिया होता, तो शिकार हाथसे निकल गया होता।

एक बुखारीने, जो कि सफरमे उसके साथ था, उसकी तरफ निगाह करके कहा—सचमुच दाखुन्दा! तूने भारी काम किया।

—यदि मस्जिदमे एकत्रित गरीबोंने मेरे भेदको न छिपाया होता, तो मै उनके हाथ पड़कर मारा जाता और यह विजय न प्राप्त होती। इसलिये मैं तुम्हारी बधाईको ताजिक गरीबोंकी ओरसे स्वीकार करता हूँ।

२३

निराशा

अनवर और दौलतमद बीके मुर्दोंको चगन गाँवमें दफनाकर अनवरके खास फौजियोंको लिये बसमाची तुफ़लग नदीके किनारे एकत्रित हो भविष्यके कामका प्रोग्राम बनाने लगे। उन्होंने गाँवके लोगोंको एकत्रकर

अनवरपाशा और दौलतमदबीके खूनका बदला लेनेके लिये उभाड़ा। अनवरके अनुयायी यूसुफजियाने कहा—हमने काफिरोंके हाथसे तुम्हें स्वतन्त्र करनेके लिये इस्लामी सेनाके सेनापति और मुसल्मानोंके खलीफाके दामादकी बलि दी, किन्तु यदि तुम्हारी सहायता प्राप्त हो, तो हममेंसे हरएक इस्लामी सेनाका सेनापति बन सकता है। मै तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि पहलेकी तरह अब भी हमारी सहायता करनेसे हाथ मत खीचो, जिसमें हम अपने सेनापतिके खूनका बदला ले सके और उनके आरभ किये कामको पूरा कर सके—

हम जिन्दगीका एक दिन काटनेके लिये सहायता चाहते हैं। एक ओर तुम हो और दूसरी ओर सरकारी सेनाये हैं। हम दो आगोके बीच पडे हुए ह। बहुत हो चुकी यह सारी बरबादियाँ—यूसुफकी बात काटकर एक किसानने यह आवाज निकाली, जिसका समर्थन करते दूसरे किसान भी बोल उठे "सच तो कहता है, सच तो कहता है।"

दौलतमद बीके भाजे अब्दूकादिरने युसुफजियाका पक्ष समर्थन करते कहा—दौलतमदबी शहीद हो गये, लेकिन हम उनके कामको आगे बढायेगे। जो आदमी पहलेकी तरह हमारी सहायता न करेगा, उसे मरे हुए इन आदमियोंके पीछे-पीछे दूसरी दुनियामे जाना पड़ेगा।

—भाइयो! काम खराब है, परिस्थितिको देखना चाहिये। अब अच्छा यही है, कि प्रजातत्र सरकारके हाथमे हम आत्मसमर्पण कर दें। जो नही चाहता वह बैठ जाय, या अपने देश चला जाय—कहकर समरकन्दके बसमाची हाजी अब्दूकादिर करीमोफ्ने किसानकी बातका अनुमोदन किया।

यूसुफजियाने गुस्सेमे लाल होकर कहा—यह पतित बच्चाबाज़ है। इसकी बातपर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

सभामें लोग हर तरफ अलग-अलग बोलने लगे, "लेकिन क्या इसकी बच्चाबाज़ी तुम्हें अब मालूम हुई?" "क्या इसके सिवा तुममें कोई

दूसरा बचावाज नहीं ?" "जो कोई आत्मसमर्पणका नाम ले वह पतित और बध करने योग्य है", "अब कुछ नहीं हो सकता, आत्मसमर्पण करना जरूरी है", "बस, मुसल्मानोंको स्वतंत्र करनेके नामपर यह सारी बदचलनियाँ बहुत हो चुकीं।"

यूसुफजिया—"अच्छा, तो इस सलाहके अनुसार करेंगे" कह सभाको समाप्तकर अपने आदमियोंको साथ ले हाजी अब्दूकादिरको आगे करके एक तरफ चला। लोगोंसे चद कदम दूर होनेपर यूसुफजियाका तमचा छूटा और हाजी अब्दूकादिरका शरीर धराशयी हुआ। हल्ला मच गया। बसमाचियोंकी बंदूके एक दूसरेपर तन गई। लोगोंने शोर करना शुरू किया "हाजी अब्दूकादिरके कातिलको हमारे हाथमें दो", "यूसुफजिया शिया है, इसलिये इसने हाजी अब्दूकादिरका कत्ल किया। इसका बदला इससे लेना चाहिये" इस आवाजने झगड़ेके लिये तैयार आदमियोंमें जोश पैदा कर दिया। तुर्क भग चले और यूसुफजियाने उनके आगे-आगे अपना घोड़ा दौड़ाया। वह तुफलग नदीके तटपर पहुँचा और घोड़ेपर सवार ही नदी पारकर जाना चाहता था, लेकिन पानीके भँवरमें पड़ गया। उसका काम वही तमाम हुआ।

दूसरे बसमाची जहाँ-तहाँ चले गये। ईशान सुल्तान अपने आदमियोंके साथ आत्म-समर्पणका विचार करने वख्तयाकी तरफ गया। दानियाल अपने अनुयायियोंके साथ गर्ममें फुज़ैल मख्दूमके पास चला गया। कूलाब और बलजुवानके बसमाची दौलतमदबीके भाजे अब्दू-कादिरको अपने भीतर ले बलजुवानकी तरफ रवाना हुए। कुछ बसमाची अलग हो आत्म-समर्पण करनेके लिये प्रजातत्र सरकारके पास गये। फारूक आफन्दी, उस्मान आफन्दी, अलीरज़ा आफन्दी और दूसरे तुर्क "कुछ नही हुआ" कहकर अफगानिस्तानकी ओर चले गये।

—:o:—

२४

साहसका काम (१९२३)

१९२३का आरभ था। कूलाबके किलेको तीन-चार हजार बसमाचियोंने घेर रखा था। अन्न लाने और आदमियोंके आने-जानेका रास्ता बिलकुल कट गया था। अनवरके मारे जानेके बाद अफगानिस्तानसे आकर सलीम शामीपाशा*ने बसमाचियोंका नेतृत्व सभाला था। उसके अपने कथनानुसार वह उस्मानी (तुर्की) तुर्क और अनवरपाशासे भी अधिक युद्धकलाविशारद और बहादुर था।

—मै अफगानिस्तानसे इसलिये आया, कि अपने शिष्य अनवर-पाशा—जो अपने कम अनुभवके कारण शहीद हुआ—के खूनका बदला लूँ और उसके अपूर्ण कामोंको पूर्ण करूँ— शामीने कहा।

लेकिन बसमाची अपने नये सरदारके बारेमे दूसरी ही राय रखते थे। उनमेसे एकने कहा—शामीपाशा कदापि अनवरका स्थान नहीं ले सकता। अभी हमारे पास आये देर न हुई और इस थोड़ेसे समयमे ही चारसौ बढ़िया घोडे हथिया लिये। ऊपरसे हर सप्ताह नई औरत रखता है, इस बातमे तो अमीर आलमखाँसे भी बढ गया।

दूसरे बसमाचीने कहा—जो भी हो "यद्यपि गाँव उजाड़ है किन्तु नाम बड़ा है" की कहावतके अनुसार इसका नाम सुनकर अनवरके मारे जानेके बाद छिन्न-भिन्न हुए कूरबाशी फिर एक हुए हैं। आशा है, इसके नेतृत्वमे चलकर कूलाबको हम फिर अपने हाथमे कर लेंगे। इस आदमीमे अनवरसे बढकर गुण यह है, कि हमारे गुण-दोषको यह नहीं

---

* इसके बारेमे अनेक मत हैं। किसी-किसीने इसका शामी नाम बतलाया और किसीने सलीम, इसलिये हमने दोनों नाम मिला दिया है—लेखक

देखता। यद्यपि स्त्री-लम्पट और पैसेका लोभी है, किन्तु इसकी जीभ छोटी है, इसलिये हमारे ऐश-अशरत और माल जमा करनेमे बाधा नहीं डालता।

× × ×

कूलाब किलेके अन्दर पाँच सौ लालसैनिक और कुछ स्वयसेवक ताजिक घिरे हुए थे। बीस दिनसे किलेका सम्बन्ध बाहरसे टूट गया था। कई दिनोंसे आदमी और घोड़े भूखे थे। बाहर निकल जानेका कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। अब ये बसमाची १६२१के बसमाचियो जैसे नही थे। तीन सालको लड़ाइयोके अनुभव और तुर्की अफसरोकी सैनिक शिक्षा पाकर वह बहुत दक्ष हो गये थे। अफगानिस्तान और हिन्दुस्तान (अगरेज सरकार)से लगातार आये हथियारोसे वह अच्छी तरह लैस थे। अनवरकी मृत्युके बाद बिखरे बसमाचियोने अपना अन्त समीप देख "जो भी हो" कहते शामीका नेतृत्व स्वीकार किया था।

अब और किलेमे रहना सभव नही था। मनुष्य सभी कष्टोको झेल सकता है, किन्तु भूखसे देरतक लोहा नही ले सकता।

—तुम स्थानीय आदमी हो। यहाँसे निकलनेका क्या तरीका तुम्हारी समझमे आता है?—लाल-सेनाके कमाडरने ताजिक स्वयसेवकोमे पूछा।

—मुझे एक चिह्न दो, उसे ले मै दोशम्बा जाकर सेना लाता हूँ—दाखुन्दाने जवाब दिया।

कमाडरने दाखुन्दाको अपने कमरेमे ले जाकर एकान्तमें बात शुरू की—किलेसे किस रास्ते निकलोगे? बसमाचियोंके बीचसे, उनके हाथमे पड़े बिना कैसे दोशम्बा पहुँच सकोगे?

—यह मेरा काम है। यदि मैं उनके हाथ पड़ गया, तो मारा जाऊँगा। एक आदमी कम होनेके सिवा इसमे तुम्हारा कोई नुकसान नहीं। लेकिन यदि मै अपने उद्देश्यमे सफल हुआ, तो सभीकी मुक्ति होगी।

—बसमाची रातदिन कड़ी देख-भाल कर रहे हैं। किलेसे निकलते ही तुम जरूर पकड़ लिये जाओगे।

—मैंने ऐसा उपाय सोच लिया है, जिसमें शत-प्रतिशत सफलताकी आशा है। तुम मुझे एक कुदाल, एक सुभा, एक टोकरी और चार आदमी दो; फिर मेरा काम देखो।

—बहुत अच्छा, किन्तु दोशम्बा जाने भरके लिये समय नहीं है। यदि निकलनेमें सफल हुए, तो आकसू गाँव जा वहाँको गैरिसन (फौजी चौकी)के आदमियोंको साथ ले आओ।

× × ×

घिरावेकी चौबीसवीं रातका सबेरा अभी नहीं हो पाया था। इसी समय कूलाबके किलेके चद स्थानोंसे ज्वालामुखी फटने जैसी "गुमबुर-गुमबुर"की भयानक आवाज आई। उसके बाद ही पत्थर, मिट्टी, धुआँ और आग बवंडरकी तरह आसमान तक बुलद हुई। घिरे सैनिक हक्के-बक्केसे नींदसे एकाएक जगे। "जान देना जान लेना" बस यही उनके सामने रह गया था। इस आग और धुएँके पीछे हजारों हथियारबद बसमाची नींदसे अभी-अभी पाँचसौ लाल सैनिकोंपर टूट पड़नेके लिये तैयार थे। कमांडरके "सावधान!" कहनेपर लाल सैनिक और ताजिक स्वयंसेवक आकस्मिक दुर्घटनाके भयको मनसे जल्दी हटा अंतिम सांसतक लड़नेको तैयार हो गये।

धूल-मिट्टी, आग और धुआँ दब गया था, लेकिन अब भी आक्रमण-कारियोंका कहीं पता न था। केवल बसमाचियोंके कैम्पके पीछेसे बंदूक और मशीनगनकी आवाज आ रही थी। चारों ओर दिनका आलोक फैल गया। किला घेरनेवाले बसमाची भी अपने कैम्पकी तरफ दौड़े। लाल-सेनाने अवसरको हाथसे जाने नहीं दिया और बसमाचियोंने जिस जगह किलेकी दीवारको बारूदसे उड़ाया था, उसी रास्ते एक बार ही लाल-

सैनिक किलेसे बाहर निकल बसमाचियोंपर बंदूक और मशीनगनकी गोलियाँ बरसाने लगे।

सूर्यने और ऊँचे उठकर विश्वको प्रभासित किया। बसमाची भी रात्रिके अन्धकारकी तरह आँखोंके सामनेसे लुप्त हो गये। मैदानमें सिर्फ किलेकी लालसेना और आकसूसे आई गैरिसन आमने-सामने दिखलाई पड़ी। उन्होंने एक दूसरेको बधाई दी, जिसका सबसे बड़ा पात्र दाखुन्दा माना गया। वह सचमुच इस साहस-कार्यका प्रथम वीर था।

२५

परस्पर-हत्या

कुर्गान-गर्ममें सैनिक समिति बैठी थी। शामीपाशा प्रमुख था। कितने ही बसमाचियोंने ईशान सुल्तानके अपराधों और विश्वासघातोंको एक-एक करके गिनाया। अन्तमे फुज़ैल मखदूमने कहा—ईशान सुल्तानका अन्तिम अपराध यह है कि मैने चाहा, फरगानाके बसमाची कोरी शेरमती (शेरमहमद)को हमारे इलाकेसे अफगानिस्तान जाते वक्त गिरफ्तार करके उसका सारा माल और हथियार छीन ले और इस तरह अपनी नवस्थापित सरकारको मजबूत बनावें। साथ ही इस तरह दूसरे बसमाचियोंको भी शिक्षा दे कि वह भागनेका ख्याल छोड़ दे। इसी विचारसे मैंने चहल-दर्राके रास्तेको भी खराब करवा दिया था। लेकिन ईशान सुल्तानने रास्तेको ठीक करवा शेरमतीको अपनी तरफसे गुजरने दिया। यही नहीं, जिसमें मेरी फौज पीछा न कर सके, रास्तेको फिरसे खराब करवा दिया। ईशान सुल्तानका यह अन्तिम अपराध भी हुकुमनामामें लिखा जाना चाहिये।

शामीपाशाने "पैकी" (अच्छा) कहकर इन सारी बातोंको काग़ज़पर लिखा, फिर तुर्की जबानमें लिखे अपने सारे कागजोंको अनुवाद करके लिखनेके लिये कातिबके हवाले किया।

जुमा (शुक्र)के दिन जुमाकी नमाजके लिये लोग मर्मकी जामा-मस्जिदमें एकत्र हुए थे। इमामने साधारणप्रथाके अनुसार जुमाके दो प्रसिद्ध खुतबों (उपदेशों)को पढा। दूसरे खुतबेमें तत्कालीन बादशाहका जिक्र करते समय "अल् अमीर फुजैलुद्दीन महम्मद बहादुर सुल्तान" कहकर फुजैल मखदूमी बसमाचीका नाम अमीरकी उपाधिके साथ पढा। फिर निम्नोक्त हुकुमनामेंको पढकर सुनाया* और समाप्तिपर फिर एक बार नये बादशाहके लिये लोगोंसे भी दुआ कराई। हुक्मनामा इस प्रकार था :

आरोपपत्र

ईशान सुल्तान खोजा सूबा दरवाजके हाकिम और अस्कर-बाशी (सेनानायक)के विश्वासघात

जनाबआली अमीर बुखाराशरीफ सैयद अमीर आलम अफगानिस्तान की भूमिमे विराजमान, की सेवामें। अभिवादनके बाद मालूम हो, कि ईशान सुल्तानने दरवाजपर अपना अधिकार जमानेके लिये सेना जमा की और इलाकेको अधिकृतकर बलजुवान, आकसू, कानीतिल्ला और कूलाबदर्राको दबाकर तरह-तरहके झगड़े-फसाद और अत्याचार किये, जनाबआलीकी ओरसे नियुक्त नायब और राजप्रतिनिधि दिवगत शहीद अनवरपाशाके सैनिक और नागरिक शासनकी समाप्तिके समय ईशान सुल्तानने इस्लामके मुजाहिदोंके भीतर उक्त सेनापतिके सामने फूट डाली जिसके परिणामस्वरूप मुजाहिदोंकी छ हजार सेना बायसून इलाकेसे घबड़ाकर भागी और दुश्मनसे लड़नेकी जगह उसने परस्पर हत्याकाड मचाया, जिसमे सैकड़ों मुसल्मान कुर्बान हुए। ईशानकी मददसे फरगानावालोंने उसके प्रतिद्वंदियोंका कत्ल किया, जिससे देशवासियोंको भारी क्षोभ हुआ। बुखारावालों और दूसरे कबीलोंके आपसी झगड़ेसे

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक

फायदा उठा उज़बेकों और ताजिकोंको एक दूसरेसे लड़ा अपने विश्वास-घातका परिचय दिया, साथ ही रूसियोंके साथ मेल करके इस्लामके मुजाहिदोंसे तीन सौ बन्दूके और दो सौ मशीनगने देकर सुलह की, जिसके कि कागज-पत्र हमारे हाथ लगे हैं।

फरगानियों और किरगिजोंमे झगड़ा डालकर इस्लामी-मुजाहिदोंकी शक्तिको निर्बल करनेकी सलाह दी। उसने रूसियोंके साथ मेल किया। इस तरह इस्लामी उद्देश्यको हानि और लोगोके युद्ध करनेके भावको दबानेके लिये वहाँके प्रबन्धालयोको खतम कर दिया। बादमे जब कि इस तरहकी निराशा फैली थी, तो भगवान्‌के रास्तेमे युद्ध करनेके लिये महम्मद अकबर तूकसावाको अपने घरमे ले जाकर दस्तरखानपर बैठा इसे पकड़कर कत्ल किया। उसके मालको ले लिया और उसके बाल-बच्चोको नगा करके बाटका भिखारी बना दिया। इसके अतिरिक्त कितने ही मातबर सेनानायकोको भी कत्ल कराया। फिर [illegible] शेरमहम्मद (शेरमत) बेकीको खबर दे तुर्कों और करातगिनके स्वामी फूजैलुद्दीन मखदूमको पराजित करनेका निश्चय किया। हमारे ऊपर भी उसने आक्रमण किया, लेकिन हमने सैनिक तरीकेके अनुसार उसके हमलेका मुकाबला किया और ईशान सुल्तानकी फौजको भागना पड़ा। पहले हमने शेरमहम्मदको रोकनेके लिये चहलदर्राके रास्तेको खराब किया था। ईशानने खराब रास्तेको फिरसे तैयारकर शेरमहम्मदकी फौजको रास्ता दिया और हमारी फौजको न जाने देनेके लिये रास्तेको खराब कर दिया। उसके भाई ईशान सुलेमानको हमारे मुक़ाबलेमे भेजा और शेरमहम्मदको दरवाज़के रास्ते निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त गैरतशाह बी दादखाह और दिलावरशाह बी लश्करबाशी दरवाज़ और कितने ही दूसरोंको क़त्ल करवाया। हमारी फ़ौजोंका पीछा करते ईशान सुलेमान तबीलदर्रा और सगीरदश्तमे बन्दूकवाले सैनिकोंको जमाकर शेरमहम्मद बेककी सेनासे एक हो हमला किया। जब हम दरवाज़में थे, तो

दर्रासे होकर उसने कूलाबवाले महम्मद अशूरबेक बी दादखाह लश्कर-बाशीको कत्ल कराया। बादमे अब उस तरफसे हमारी फौजको आगेसे घेरकर दरवाज़में भूखसे आत्म-समर्पण करने या अफगानिस्तान भागनेके लिये मज़बूर करना चाहता है। उसकी इस तरहकी योजनायें और पत्र हमारे हाथमें आये हैं... इसलिये उसके इन कामों, अपरांधों और विश्वासघातोंके लिये शरीयत और सैनिक कानूनके अनुसार उसे मृत्युदण्ड देनेका निश्चय किया गया है...

२८ माह रबीउल-औव्वल सन् १३४१

मुहर : सेनापति मुसल्मान-जनसाधारण-सेना सामीपाशा

× × ×

जब फर्गानाके बसमाची कोरी शेरमतने ईशान सुल्तानसे मदद मिलना सम्भव न देखा, तो तवीलदर्रासे खुम-किलासे होते उस स्थानको लूटते-पाटते वह अफगानिस्तानकी तरफ चला गया। फुज़ैल मखदूम और सामीपाशाके भी दर्बाज आनेकी खबर मिली। थोड़ी देर बाद अपने सिपाहियोके साथ तवीलदर्रासे आकर उन्होने ईशान सुल्तानको गिरफ्तार कर लिया और किला-खुम भेज दोस्तीसे पुकारकर ईशानके भाई ईशान सुलेमानको भी बन्दी बना लिया। फिर उपरोक्त आरोप-पत्रको दोनोंके सामने पढ़ सुना और शरीयत शरीफके अनुसार दोनोंको अपराधी सिद्धकर ईशान सुल्तान द्वारा मरवाये महम्मद अकबर तूकसाबाकी कब्रके पास उन्हें दार (शूली)पर खीच दिया गया।

सुबह होनेपर लोगोंने आकर दारपर खीचे दोनो मुर्दोंको देखा। तमाशबीनोमेंसे एक ताजिकने उस वक्त कहा—

खींचो तलवार तेज मारो एक दूसरेको,
जाओ इस दयारसे, हटाओ शिरदर्दको ॥

एक बूढ़ेने कहा—अच्छी कविता पढ़ी पुत्र ! एक बार फिर तू पढ़।

—एक बार नहीं, बार-बार मै पढ़ूँगा, लेकिन कविता-पाठसे काम नहीं चलेगा—जवानने कहा।

—भगवान् दया करे, किन्तु मेरे हाथसे क्या बनेगा ?

—उसकी दया भेड़ियोंकी दया है, किन्तु जब तक भेड़िया नहीं मरता तब तक दया नहीं होती। भेड़िया मरे और दया आवे कहकर बैठे रहना समझदार आदमीका काम नहीं है।

—तो क्या करना चाहिये ?

—जो भी काम कर सकते हैं करना चाहिये, जिसमे जल्दी भेड़ियेकी बला भेड़ोके शिरसे नेस्तनाबूद हो जाये।

बूढ़ेने जवानके नजदीक आ कानमें कहा—सावधान जवान, मालूम है मुर्गीकी कितनी टाँगे ?

—हाँ, मुर्गीकी एक टाँग।

—यदि तेरे हाथ-पैरको काट डालें तो ?

—तो भी मुर्गीकी एक टाँग।

—तो सुन, यदि कर सके तो कूलाब जाकर अधिकारियोंको खबर दे कि कुजैल अपने भाई सदाहको सामीपाशाके साथ कूलाबके ऊपर भेजना चाहता है। उनके साथ अपने भतीजे, दौलतमन्दबी और अब्दूकादिरके साथ ही तुर्गेशरिफ और बरात ईशक आकाबाशीको भी भेज रहा है, जिसमे कि वह दो तरफसे कूलाबपर आक्रमण करे। कहा जाता है, इब्राहिम और रहमान भी उनके साथ होंगे। दूसरी खबर यह है, कि ईशान सुल्तानका भाई ईशान रहमत अपने दोनों भाइयोंके क़त्लके बाद चाहता है कि सरकारके सामने आत्म-समर्पण करके उसकी सेवा करे।

—क्या ईशानको देखा जा सकता है ?—जवानने पूछा।

—देखा जा सकता है, लेकिन यदि कुजैलके आदमियोंको खबर लग गयी, तो हम सबको मार डालेंगे।

—बाबा ! सत्तरको पहुँच गये, आदमियोंसे क्या इतना डर रहे हो ? यदि वह न भी मारे, तो भी घरमें मर जाओगे। आओ चलें, ईशान रहमतके पास।

बूढ़ा जवानको अपने साथ दूर पहाड़ोंमें ले गया। फिर पत्थरोंसे घिरी एक गुफाके पास जवानको खड़ाकर अन्दर गया। पाँच मिनट बाद लौटकर जवानको भी साथ ले बूढ़ेने वहाँ बैठे एक तरुणकी तरफ इशारा करके कहा—यह है ईशान रहमत।

ईशान रहमतने जरा देर आँखोंकी तरफ देखकर कहा—तुम वही आदमी तो नहीं हो, जिसे यमिकुरगानमें पथराव करके मारना चाहते थे।

—सम्भव है।

—क्षमा करना बिरादर ! मैंने अब तोबा किया, तुम मेरे साथ नेकी करो और मेरी अर्जको सरकार तक पहुँचा दो।

—मैं तवीलदर्रासे यह जाननेके लिये आया था, कि तुम्हारे भाई ईशान सुल्तानने आत्म-समर्पणके बारेमें जो निवेदन-पत्र दिया है, वह असली है या जाली। किन्तु अब तो वह नहीं रहे। तुम बताओ, किस नियतसे आत्म-समर्पण करना चाहते हो ?

—आत्म-समर्पण छोड़ मेरे लिये दूसरा रास्ता नहीं है। यदि मैं आत्म-समर्पण न करूँ, तो फुजैल या दिलावरशाह मुझे मार डालेंगे।

कविता-याठी जवान—दाखुन्दा—ने गुफासे निकलकर कूलाबका रास्ता लिया।

२६

भाग्यवान् सरदार

सवालाख पर्वतमें सवालाखियोंने डेरा डाला था। सदाद, दानियाल और कूवीशियोंको साम्यीयशा इसके साथके सम्बन्धमें पाठ दे रहा था :—

—चाहे कूलाब हो या कूलाबकी दीहात, हमारे लोगोको अपनी इच्छा और अपने लाभके लिये कोई चीज नही लूटनी चाहिये। गरीबोंके घरों या सरकारके हाथसे जो कोई भी कामकी चीज हाथ लगे, उसे कैम्पमेले जाकर जमा करना चाहिये। शहरकी विजय और शान्ति-स्थापनाके बाद हर एक आदमीको उसके कामके अनुसार इनाम दिया जाये।

सामीकी शिक्षाके अनुसार सदाद और दानियाल बसमाचियोको दस्ता-दस्ता करके खुद भी अपने खास दस्तों (फौजी टुकड़ी)के साथ चले। सबसे पीछे सामी घोडेपर चढकर निकला। उसने तै कर लिया था, कि जैसे ही कूलाबपर विजय हो, जो भी कामकी चीज हाथ लगे, उसे अपने आदमियों द्वारा अफगानिस्तान भेज देना होगा। अब आजके कामको कलपर नहीं छोड़ना होगा, क्योंकि इन चोरोंके हाथमे कोई चीज सुरक्षित नही है।

× × ×

बसमाचियोंकी फौज पेचीले रास्तेसे गुजर रही थी और रास्ता इतना तग कि कहीं-कही एक घोड़ा भी मुश्किलसे गुजर सकता था। साथ ही वहाँ इतनी सीधी चढाई-उतराई थी, कि कितनी जगहोंपर आदमीको उतरकर घोड़ेकी पूछ पकड़कर ऊपर चढना पड़ता था। एक तरफ पहाड़ इतना ऊँचा, कि मेघको भी वहाँ पैर रखना आसान नही था। दूसरी ओर नदी इतनी खड्डमे बह रही थी, कि गिरनेवाले पत्थरोंके सिवा कोई वहाँ पहुँचनेकी हिम्मत न कर सकता था। यदि कोई वहाँ पहुँचे यानी ऊपरसे लुढके, तो दूसरी बार दुनियामे नहीं लौट सकता था, सिर्फ उसकी मिट्टी पानीके साथ निश्चित स्थानमें पहुँच सकती।

बसमाची जिस वक्त इस दुर्गम राहसे गुजर रहे थे, उसी वक्त बन्दूक और मशीनगनकी आवाज आई। कूलाबसे आये लाल सैनिकोंकी ओरसे सामीपाशाके लिये यह अगवानी थी। लड़ाई शुरू हुई। अन्तमें बसमाचियोंने हार खाई। गोलीसे बचे कितने ही लुढ़ककर नदीमे गिर अपने अनन्त-

कालीन निवासमे पहुँच गये और बाकी इधर-उधर भाग गये। सामी अपने खास सिपाहियोके साथ पहाड़के ऐसे कोनेमें छिप रहा, जहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था। सदादने पहाड़के डाँड़ेपर जाकर शरण ली। दानियाल अपने अनुभवी सिपाहियोंके साथ बहुत बुरी जगहमें फँसा था। यहाँ तीन तरफ सग तराशों द्वारा काटी जैसी पहाड़ी दीवारे खड़ी थीं और चौथी तरफ एक तग रास्ता था जिधरसे कि लाल-सैनिक आ रहे थे। उनके आगे-आगे आकर दाखुन्दा और उसके साथी ताजिक स्वयसेवकोंने अपनी पहाड़ी चतुराईसे पत्थरोकी ओट तैयार कर ली थी। आगे बढनेके लिये लाचार दानियालने गोली चलानी शुरू की। गोलियाँ बेकार हो खतम होनेको आई। लाल-सैनिकोने मौतकी परवा न कर आगे बढना जारी रखा और अन्तमे दानियालके कैम्पमे पहुँच तलवार और तमचेका हाथ दिखाया। रात आई। जिन्दा बचे बसमाचियोंको अन्धकारने अपनी गोदमे छिपा लिया। लालसेना भी अपने कैम्पमें लौट गयी।

× × ×

अगले दिन सबेरे सदाद अपने छिपनेके स्थानसे निकलकर कलके युद्धकी जगहमें आया। मुर्दोके बीच उसने दानियाल और उसके घोड़ेको देखा। वह उसके शवको लेकर गर्मकी तरफ भागा। और सामी ? अपनी बाशकमन्दानी (सेनापतित्व)के इन चन्द महीनोमे लोगोंके लूटे मालसे उसने अच्छा खजाना जमा कर लिया था। इस लूटको ले उसने अपने आदमियोके साथ अफगानिस्तानका रास्ता लिया। इस तरह माल-जान दोनोंके साथ निकल भागनेसे उसने अवश्य अपनेको अनवर पाशासे अधिक भाग्यवान समझा।

अब्दूकादिर, तुगेसरिक और बरात ईशक आकाबाशी पीछे कूलाबसे भागकर खानाबाद (अफगानिस्तान) पहुँचे। उन्होंने वहाँ सामीपाशाकी शान-शौकतको देखकर कहा—मुस्लिम-जन-साधारणकी सेनाके बाशी-कमन्दानने चोरीमें हमारा भी कान काट लिया।

२७

हिमानी (जुलाई १९२३)

जुलाई १९२३का महीना था । आबबुर्दान—मस्चाह गाँवमे सैयद अमीर अहमदखाँके मन्त्रणागार—जिसे हम १९२१मे देख चुके हैं—मे कूर्बाशी लोग सलाहके लिये एकत्रित हुए थे। सैयद अहमदखाँने कहा—हमे कभी यकीन न था कि लाल सैनिकोको हमारे पहाडमें रास्ता मिल जायगा। अब क्या करना चाहिये ?

—खुदाका मुल्क तग नहीं है, यदि मस्चाहमे नहीं रहा जा सकता, तो करातगिन चले, जहाँपर फुजैलउद्दीन गाजीकी "सुदृढ सरकार है"—कहकर खालबूता कूर्बाशीने अपना विचार प्रकट किया।

इसरार तुराने कहा—यदि फलगरके भुक्खड़ न होते, तो इस कोहिस्तान (पर्वत-स्थली)में लाल-सेना कभी पैर न रख सकती थी। इन भुक्खड़ोंने न सिर्फ लाल-सेनाका पथप्रदर्शन किया, बल्कि वह पहाड़ी तोपोको अपने कंधोंपर रख पहाड़ी डाँड़ोंसे पार कर लाये । अफसोस कि अपने राज्यके समय हमने इन्हे क़तल न कर डाला। यदि आजके दिनको जानते, तो एक भी फलगरीको दुनियामे न छोड़ते।

नसरतशाहने कहा—फलगरियोके लिये रोनेकी जरूरत नहीं, यदि लाल-सेनाकी छाया अपने ऊपर देखे, तो मस्चाहके भुक्खड़ भी वही करेगे। फलगरके भुक्खड़ोंने हमारे हाथो जो जो मुसीबते सही हैं, मस्चाहके गरीब भी हमसे उतने ही बेजार हैं। अपने चन्द सालोंके यहाँके निवासमे हमने उनके पास एक दिनकी भी खुराक नही रहने दी। हमे ऐसी तदवीर करनी चाहिये, कि हमारे चले जानेके बाद मस्चाहमे एक भी आदमी न रह जाय, नहीं तो ये भी लाल-सेनाका पथ-प्रदर्शनकर हमे पकड़वा देंगे ।

खालबूताने कहा—तदबीर आसान है। लोगोंको बोलशेविकोंसे डरवाओ, यदि नहीं सुनें तो अपने रवाना होनेसे पहले इन्हें करातगिन

भेजवा देना चाहिये। ऐसी अवस्थामे लाल-सैनिक मस्चाहमें पहुँच, यहाँके पाषाण-स्थानमे किसी आदमीको न देख चन्द रोज रहकर लौट जायेगे।

मन्त्रणा-समिति लम्बी नही होने पायी, क्योंकि इसी वक्त लाल-सैनिकोंके आबबुर्दान पहुँचनेकी खबर मिली। बसमाचियोने लोगोंको भड़काना शुरू किया—बोलशेविक दुनियासे आदमके बीजको नेस्त कर देना चाहते हैं। तुम लोग जल्दी भागकर फुजैलउद्दीन मखदूम गाजीके राज्य करातगिनमे चले जाओ। मस्चाहके रहनेवालोंने अपने कोहिस्तानसे बाहर कभी पैर न रखा था और बोलशेविकोंको वे जानते न थे। बसमाचियोके मुँहसे जो कुछ उन्होने सुना उससे बोलशेविक उन्हे "सात शिरोवाले देव" मालूम हुए और डरके मारे भाग खड़े हुए।

एक दूसरी जगहके ताजिकने "भाइयो! इनके बहकावेपर कान मत दो और अपने वतनसे आवारा मत बनो। बोलशेविक गरीबोके दोस्त हैं" कहकर चाहा कि लोगोंको भागनेसे रोके, लेकिन इसी वक्त बसमाचीकी छोड़ी एक गोली उसके कानके पाससे गुजरी और उसे वहाँसे हटनेके लिये मजबूर होना पड़ा। वह पहाड़मे जा सामनेसे गायब हो गया।

२३ जून १९२३को लाल-सेना फलगरके गरीबोके साथ अमीर अहमद खाँकी राजधानी आबबु-र्नमे पहुँची और देखा कि वहाँ कोई नहीं है। "प्रासाद"मे ज़िन्दान (जेल) तौक और जजीरोसे भरा, शर्बतखानामे शराब चुआनेकी मशीन, कूरखाना (अस्त्रागार)मे गोली ढालनेके सामान—ये थे अमीर अहमद खाँकी तीन सालकी हकूमतके स्मृति-चिह्न। लेकिन मन्त्रणागारमे अब भी शिकारी बाज बैठकीपर बैठा अपनी चोंचसे पखोंको खुजला रहा था, मानो दरबारके नष्ट होनेसे उसे कोई परवा न थी।

लाल-सैनिकोंने बसमाचियोंका पीछा कर कुछको मारा और कुछको बन्दी बनाया। कूर्बाशियों (सेनानायकों)मे केवल खालबूता फुजैल मखदूमके पास तक पहुँच सका।

बसमाचियोके काम तमाम करनेके बाद लालसेनाने बहकावेमे पड़कर भागे लोगोको समझा बुझाकर लौटा लानेके लिये आदमी भेजे, लेकिन जब तक वे उनके पास पहुँचे, तबतक पकशेफके पीछे नरनारी, छोटे-बड़े, वृद्ध-जवान सारे भगोड़े हिमानीके नीचे दबकर मर चुके थे।

२८

दृढ़ संकल्प

१६२३ में बिलायत गर्ममें अन्न और खानेकी दूसरी चीजोंके लिये बहुत तगी थी। इस बिलायत (प्रदेश) के आधे काम करनेवाले फरगाना मजदूरीपर जिन्दगी बसर करते थे। पिछले छ सालकी बेकारीने उन्हे भारी बलामे फसा दिया था। खेती कभी भी वहाँके सारे आदमियो-का पेट न भर सकी थी और अब तो वह खेती भी पिछले तीन सालसे बसमाचियोके पैरोसे पामाल हो चुकी थी। बसमाची पहले अधिकतर हिसार और कुलाबकी बिलायतोकी लूटपर जिन्दगी बिताते थे, लेकिन अब एक सालसे उनका वह रास्ता भी बन्द था, इसलिये वह इसी बिलायतसे अपनी सारी आवश्यकताओको पूरा करनेके लिये मजबूर थे।

फुजैल मखदूमने जब अपनेको सुदृढ और मजबूत ख्याल किया, तो उसने चारों तरफके चार-पॉच हजार बसमाचियोंको वहाँ जमाकर बन्दूक, कारतूस और फौजी लिवास बनानेके कारखाने कायम किये, जिससे "दृढ" राज्यके लोगोकी आर्थिक-अवस्था और भी खराब हो गयी। इस खराबीका बुरा असर सबसे पहले गरीबोंपर पड़ा। बाय, मुल्ला, ईशान (पीर) और अमीरके अमलदार (अफसर) या तो स्वय बसमाची थे या बस-माचियोकी छत्र-छायामे रहते थे, इसलिये वह अपनेको खुशहाल रख सकते थे। यह बिलायत अच्छे दिनोंमे भी अभी चीजके बदले चीजके युगसे आगे नहीं बढी और अब "दृढ" होनेके बाद वह एकाएक कागज-चा (नोट) के युगमे आ पड़ी। फुजैल मखदूमके राज्यमें चीजके बदले

कागज लेनेके लिये लोग बाध्य थे। थोड़े समयमें वह नोटोके मालदार और चीजोंके भिखारी बन गये। हॉ, इसकी वजहसे भूखसे तंग आकर कितने ही गरीब फुज़ैल मखदूमकी नौकरी करनेके लिये बाध्य हुए। तो भी देशमे भारी तवाही थी।

यही वजह थी कि जब फुज़ैल मखदूमने आबगर्ममें जाकर लाल-सेनासे लड़ना चाहा, तो बिलायतके अन्दर उसके विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हुआ। लोगोंने उसको मदद देना छोड़ दिया। दाखुन्दोका प्रोपेगैण्डा (प्रचार), बायो और मुल्लोके प्रोपेगैण्डासे अधिक बलवान सिद्ध हुआ। एक यह भी बड़ा कारण था, कि फुजैलने अपनी सारी बहादुरी और गर्मके कोहिस्तानकी दुर्गमताओंके अपने पक्षमे होते भी आबगर्ममे बारह दिन ठहरकर लड़नेके बाद हार खाई और वह बिन सफियान गाँवमे भागनेके लिये बाध्य हुआ।

२६

तीन आकस्मिक महोत्सव

गर्मकी बिलायतमे बिन्-सफियान गॉवमे सारबुक नदीके आर-पार दो सेनाये पड़ी थी। एक तरफ पाचिरा गॉवमे लाल-सेनाका कैम्प लगा था और दूसरी तरफ कज़नाक गॉवमे फुज़ैल मखदूम डेरा डाले अपने भगोड़े सिपाहियोंको जमा करनेमे लगा था। उन दोनों गॉवोंके बीच नदी पर एक पुल था, जिसे भी फुज़ैलने खराब कर दिया था और इस तरह वह अपनेका नदी पारके आक्रमणसे सुरक्षित समझता था।

—मैने अपने बीस बहादुर जवानोंको इसलिये अलग कर दिया है कि वे नदी पारकर दुश्मनकी खबर लावे, लेकिन उनके साथ जानेके लिये कुछ ताजिक वीरोंकी आवश्यकता है—यह बात तवारिश वरीनोफने बसमाची-विध्वसन-कमीशनके प्रमुखसे कहा।

प्रमुखके माँगने पर पाँच ताजिक जानेके लिये तैयार हुए, जिनमें

दाखुन्दा सबसे पहला था। ये तीस आदमी बसमाचियोंकी नजरसे दूर नदीके नीचेकी तरफ गये और उन्होंने एक पुल बाँधकर सारबुक नदीको पार किया।

वहाँ अपने लिये एक अच्छा मोर्चा तैयार कर वह बसमाचियोंकी गतिविधिपर नजर रखते वहाँ जम गये। किन्तु थोड़े ही समय बाद बसमाचियोंको इस बातका पता लग गया और उन्होंने उनपर हमलाकर दिया। अवस्था बड़ी खतरनाक थी। एक ओर सिर्फ तीस आदमी थे, जिनमें सिर्फ पचीस सैनिक शिक्षा-प्राप्त थे और दूसरी ओर दो हजार बसमाची उनपर गोली चला रहे थे। पहलेसे तैयार किये सुदृढ मोर्चेने उनकी सहायता की। वे बसमाचियोंको देखकर निशाना लगा सकते थे और उनकी एक गोली भी खाली जाने वाली नहीं थी, लेकिन बसमाचियोंकी गोली मोर्चेके पत्थरोंसे टकरा चिपटी होकर गिर पड़ती थी। अन्तमें बसमाचियोंने मरनेका कुछ भी न ख्याल कर एक साथ तीन ओरसे हमला कर दिया। फुज़ैल और खालबूता स्वयं उनका नेतृत्व कर रहे थे। मोर्चा और मोर्चावालोंकी हालत बुरी थी। लालसैनिक मोर्चा छोड़ पीछे हटनेके लिये मजबूर हुए। वे पेटके बल जमीन पर पीछेकी ओर सरकते पत्थरोंका आड़ ले बसमाचियोंके साथ लड़ते भी जा रहे थे। लाल-सैनिकोंने इस तरह अपनेको नदीके किनारे पहुँचाया। तबतक बसमाचियों ने पुलको तोड़ दिया। अब एक तरफ पानी और दूसरी तरफ आग थी। दोनोंके बीच थोड़ेसे लाल-सैनिक आग लगे जंगल और समुद्रके बीच पड़े सिंहकी तरह छुटकारेका रास्ता ढूँढ रहे थे।

कितने बसमाची बहुत धीरे-धीरे बढ रहे थे। वे चाहते थे कि लाल-सैनिकोंकी गोली खतम हो जाय, तो बिना नुकसान उठाये उन्हें गिरफ्तार कर ले। थोड़ी देरमें ताजिक स्वयंसेवकोंने नदीमें एक अनुकूल जगह ढूँढ निकाली और पलक मारते-मारते वे अपने साथियोंके साथ पानीमें कूदकर दुश्मनकी आँखसे दूर चले गये। शिकारके हाथसे निकल जाने

पर वे बड़े कुपित हुए और घोड़ो पर सवार नदी पार हो पैदल दौड़ते गोली चलाने लगे। लाल-सैनिक नदीके किनारेकी चट्टानों और नीची ऊँची जमीनमे छिपते ऊपरकी ओर दौड़े। बसमाची भी उनके पीछे ऊपरकी ओर दौड़ना चाहते थे, लेकिन दो-चार आदमियोंके गोली खाकर लुढ़कने पर पीछे आ दूसरे रास्तेसे उन्होंने लाल-सैनिकोको घेरना चाहा।

× × ×

"ऐ वाय! दाखुन्दा नही है" कमाण्डरने लौटकर आये लाल-सैनिकों पर एक-एककर नजर दौड़ाकर कहा। पॉच मिनटमे यह खबर सारी सेनामे पहुँच गयी और हर एक जवानको दाखुन्दाके गुम होनेका अफसोस हुआ। एक कमाण्डरने कहा—इन लड़ाइयोमे बहुतसे साथी बलि हुए। दाखुन्दा भी इस राहमे कुर्बान हुआ। वह ऐसा आदमी था, जिसका व्यक्तित्व एक दर्पण था, जिसमे ताजिक कमकर-जनसाधारणका आत्मबल दिखलाई पड़ता था। साथ ही वह ऐसा व्यक्ति था, जिसने अपने आपको हमारी पार्टीकी अभिलाषा और सकल्पके लिये अर्पण कर दिया था। वह सच्चा बोल्शेविक था और उसके सारे काम बोलशेविकोंके अनुरूप होत थे। अपने अन्दरसे ऐसे व्यक्तिका उठ जाना हमारे लिये भारी अफसोसकी बात है।

—दाखुन्दा स्वय हमारे अन्दरसे उठ गया, लेकिन उसका व्यक्तित्व ताजिक कमकरो और जन-साधारणमे अब भी मौजूद है और हमारी पार्टी ऐसी मजबूत है कि हजारो ऐसे व्यक्तियोको पैदा करेगी—कहते दूसरे कमाण्डरने अपने साथीको तसल्ली दी।

बसमाची नदीके किनारे आकर भी अपनी पहली जगहको छोड़े न थे। उनकी तैयारी भी पूरी हो चुकी थी। उन्होंने लाल-सेनाको चारों तरफसे घेर लिया। रसद खतम हो गयी और हालत बुरी थी। हर तरफ नगी पहाड़ियाँ और पत्थर थे। वहाँ किसी चीजके मिलनेकी आशा न थी। लालसेना ऐसे स्थानमें थी, जहाँसे पीछे हटनेकी गुंजाइश न थी।

बसमाचियोका हमला हर घटे तेज होता जा रहा था और वे अपने घिरावेको तग करते जा रहे थे।

× × ×

समरकन्दसे श्वेदसोफकी कमानमे एक दस्ता सारबुकके किनारे पहुँचा। एक पत्थरके पीछे काली चीजको देखकर उन्होने गोली चलाई, लेकिन काली चीजमे कोई गति न दिखाई पड़ी। दस्ताने अपनी एक टुकड़ीको जिन्दा गिरफ्तार करनेके लिये आदमीके पास भेजा, जिसमे कि उससे कुछ बातोंका पता लगा सके। टुकडीने नजदीक जा फिर एक बार गोली चलानी चाही, किन्तु "स्वयी, स्वयी" (अपना आदमी) की आवाजने गोली चलानेसे रोक दिया। टुकड़ीके सरदारने "रूकि वेर्ख" (हाथ ऊपर) कह काली चीजको हुकुम दिया। काली चीजने चट्टानके पीछेसे सीधे खड़े हो दोनो हाथोंको ऊपर उठा दिया। टुकड़ीने आगे बढकर उसे गिरफ्तार किया और चट्टानके पीछे खड़ी बन्दूकको भी ले लिया।

—इस आदमीको मै पहचानता हूँ—यह आवाज श्वेदसोफके दस्तेके साथ आये एक फलगरी स्वयसेवककी थी, जिसे सुनकर सबकी नजर आदमीके ऊपर गड़ गयी।

—तू ही न मस्चाहमे लोगोंको न भागनेके लिये समझा रहा था, फिर क्या हुआ जो स्वय बसमाचियोमे चला गया?—फलगरीने पूछा।

—मैं यहाँ दुश्मनकी गति-विधि जाननेके लिये आया था। मस्चाह के बाद लौटकर अपने दस्तेके साथ आबगर्म जाकर मैं फुज़ैल मखदूमसे लड़ा और अब फिर उसी कामके लिये यहाँ आया—कहकर आदमीने अपना हाल बताया।

× × ×

श्वेदसोफका दस्ता बसमाचियों पर पीठकी तरफसे हमला करके उनकी पातीको तोड़ बरीनोफके दस्तेसे जा मिला था।

बरीनोफके कैम्पमें आज तीन आकस्मिक महोत्सव हो रहे थे।

बसमाची हार खाकर भाग गये, समरकन्दमे कुमक आ पहुँची और जिसे सब लोग मारा गया समझते थे वह दाखुन्दा सही-सलामत स्कन्धावारमे पहुँच गया था—चट्टानके पीछेकी काली चीज दाखुन्दा ही था।

फुज़ैल इस पराजयके बाद फिर अपनी कमर सीधी न कर सका। **मौज़ामज़ार** ताबे हायतमे एक बार सामने आ पड़ने पर लड़नेके लिये मजबूर हुआ, लेकिन उसका घोड़ा मारा गया। फुज़ैल दूसरे घोडेको ले सीधे **मोतीनान** गाँवमे अपनी हवेलीमे पहुँचा। वहाँसे नकद और मालको ले छतपर फहराते अपने "सुदृढता"के झण्डेको गिरा उसने सारे घरमे अपने हाथसे आग लगा दी। फिर **तोपचाक**के रास्ते वखयाकी तरफसे भागते पजनदीके किनारे पहुँचा। उसके सिपाहियोने देखा कि वह अफगानिस्तान भागना चाहता है, उन्होने चाहा कि उसे पकड़कर सरकारके हाथमे दे दें और इसके द्वारा अपने अपराधोके लिये क्षमा माँगे, लेकिन फुज़ैलने ऐसा करनेका मौका न दिया और अपने भाई सदाद और दो-तीन दूसरे आदमियोके साथ नदी पार हो अफगानिस्तान चला गया। उसके आदमियोने दूसरे दिन अपने हथियारोंको दे सरकारके हाथमे आत्मसमर्पण किया।

अब बिलायत गर्म अपनेको आबाद करनेके लिये आजाद थी।

३०

चतुर कलाकार

बिलायत दर्वाज़मे लालसेनाने सगीरदश्तमे अपना कैम्प बनाया था। इस निर्जन बयावानमे भी उन्होंने खेमोमे पुस्तकालय, सिनेमा और नाटक स्थापित कर सास्कृतिक जीवन और मनोरजनके साधन स्थापित कर दिये थे। सिनेमाके बाद नाटक शुरू हुआ। एक अकके पूरा हो जानेपर पर्दा गिरा और दर्शकोंके बैठनेकी जगहमे चिराग जल उठे। दाखुन्दाकी नजर

स्थानीय दर्शकोंके पीछेकी पंक्तिमे एक स्त्रीपर पड़ी, जो स्वय भी उसकी तरफ ध्यानसे देख रही थी। उसकी आँखोंसे मालूम होता था कि वह परिचित है। दाखुन्दाको उस स्त्रीके बारेमे ज्यादा जाननेकी इच्छा हुई और वह दर्शकोके बीचसे आगे बढा। स्त्री भी मानों पुरुषके अभिप्रायको समझ गयी और दर्शकोंकी पाँतीसे अलग हो. एक ओर खड़ी हो प्रतीक्षा करने लगी। दाखुन्दा तेजीसे कदम बढाते उसके पास पहुँचा और देखकर चकित हो बोल उठा—ओः, गुलनार ! तू यहाँ क्या काम करती है ?

—तू यहाँ क्या काम करता फिरता है ? एक साल हुआ दोशम्बासे अलग हुए। न तू खुद दोशम्बा लौटा न मुझे अपने पास बुलाया। अन्तमे वियोगसे दम लेना मुश्किल हो गया और तेरी खोजमें चल पड़ी। किसीने कहा बेदानामे है, मै वहाँ पहुँची। कहा आबगर्म गया, वहाँ पहुँची, कहा बिलायत गर्ममे है, वहाँ पहुँची। कहा तबील दर्रा गया, वहाँ गयी। कहा सगीरदश्त गया, और अन्तमे यहाँ तुझे पानेमें सफल हुई। मै आई कि तुझसे एक पक्की बात करूँ। "क्या करना चाहिये" अब इस बातका मुझे जवाब दे, मुझमे और अधिक प्रतीक्षा करनेकी शक्ति नहीं है।

—बसमाचियोंको नेस्त करना चाहिये, इस समय इसके सिवा कोई दूसरा काम मुझे दिखलाई नही पड़ता।

—बसमाचियोको लाल-सैनिक नेस्त कर रहे हैं, बसमाचियोंको नेस्त करना तेरे लिये बाकी नही है।

—तू गलत कह रही है गुलनार ! वस्तुतः बसमाचियोका नेस्त करना मेरा-तेरा और सारे ताजिक कमकरोका कर्त्तव्य है। बसमाची वही आदमी हैं, जो पहले अमलदार (सरकारी अफसर), बाय, काजी, और हाकिमके नामसे हमारा खून पीते थे और अब बसमाचीका लिवास पहनकर फिर चाहते हैं कि वही अमीरी, अमलदारी, अकसक्कालीका युग जारी हो, और फिर चाहते हैं कि मेरे, तेरे और सारे कमकरोंके खूनको पीवे। इसलिये सारे बसमाचियोंको नेस्त-नाबूद करना सबसे पहले मेरा और तेरा कर्तव्य

है; क्योकि उनके नेस्त होने ही पर हम चैनसे रह सकते हैं। हमें लाल-सेनाके गिर्द जमा हो जाना चाहिये, जिसमें बसमाचियोंके बीजको अपने हाथसे दुनियासे नेस्त कर दे।

—यदि यही बात है, तो मुझे भी अपने साथ ले चल और बस-माचियोके नेस्त करनेके रास्तेकी शिक्षा दे।

—अगर चाहती है, तो जरूर तेरे लिये भी काम मिल सकता है।

—क्यो न चाहूँगी ? जिसने अपनी जवानीको अमीरी युगके कानून-कायदेकी भट्टीमे झोका। जिसने अपने सब-कुछको प्राचीन रीति-रवाजोंकी चक्कीमें पिसवाया, वह मै आज यदि प्राचीन और नवीनके इस सघर्षमें कमकर सरकार और अमीरशाहीके युद्धमे काम न करूँ, यह कैसे हो सकता है। यदि मेरे लिये कोई काम हो, मेरी सेवा आवश्यक हो, तो मै उसके लिये तैयार हूँ।

—अच्छा, मै तुझे काम देता हूँ। दरवाजवाले गैरतशाह और दिलावरशाह कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं, और उनके पास कितने लड़ाकू हैं—यह बात जाननेकी बड़ी जरूरत है। यदि इस कामके लिये मर्दको भेजे, तो वह जरूर मारा जायगा, क्योंकि इन आखिरी दिनोंमें जरा भी सन्देह हो जानेपर बसमाची बिना कुछ पूछे कत्ल कर डालते हैं। लेकिन अभी स्त्रियोके बारेमे उतना सन्देह नही करते, इसलिये मुझे आशा है कि तू इस कामको कर सकती है।

—जरूर कर सकती हूँ। दिन उगते ही किला-खुमकी तरफ रवाना हो जाऊँगी—गुलनारने कहा।

नाटकके दूसरे अङ्ककी घटी बजी। दाखुन्दा तमाशाकी तरफ जाना चाहता था, किन्तु गुलनारने उसे रोककर कहा—मुझे एक तदबीर सूझी है।

—क्या तदबीर ?

—मैंने यहाँ आज रात एक गलतीका काम देखा। जिस समय नाटकके लिये अभिनेता तैयारी कर रहे थे, उसी वक्त उनके अन्दरसे

एक मध्य वयस्का मोटी-सी औरतने आकर चादर ओढ अट्ठारह-साला सुन्दरी तरुणीका रूप धारण किया। यदि कर सके, तो मुझे भी अट्ठारह-साला कन्या बना दे।

दाखुन्दाने हँसते हुए कहा—मेरी दृष्टिमे अभी भी तू अतीव सुन्दरी और सुमुखी अट्ठारह-साला कन्या है। तुझे बनावट-सजावटकी जरूरत नही है।

—तेरी नज़रमे ऐसा हो सकता है, किन्तु बसमाचियोंकी नज़रमे अट्ठारह-साला कन्या और मुझमे बहुत अन्तर है। भेष बनानेसे मुझे आशा है कि उद्देश्य जल्दी सिद्ध होगा।

—किन्तु तब सम्भव है तेरा अनिष्ट करे।

—इसके लिये मुझे एक कटार लाकर दे दे। वह काफी होगी।

—तू चाहती है कि खतरेके वक्त सीनेमे कटार मार ले?

—नही, खुदा न करे, उस सीनेमें जहाँ कि तेरा प्रेम मौजूद है, वहाँ मैं अपने हाथोंसे कटार मारूँगी? यदि यह काम करना चाहती तो मै कबकी न खतम हो गयी होती? कटार इसलिये चाहिये, कि समय पड़ने पर उससे मै अपनी रक्षा कर सकूँ, यानी ज़रूरत आ पड़े तो उसे तेरे शत्रुओं, अपने शत्रुओ और ताजिक गरीबोके शत्रुओके सीनेमें घुसेड़ दूँ।

"बहुत अच्छा" कह दाखुन्दा गुलनारके विचारसे सहमत हुआ। दोनों नाटक देखनेका खयाल छोड़ पिछवारे—हजामके खेमेमे गये।

३१

मुल्ला चारतारीकी कन्या

सगीरदश्तसे एक सवार घोड़ा दौड़ाये किलाखुमकी तरफ जा रहा था। किलाखुम नजदीक आ गया था। वह चश्मासे निकलती छोटी नहरमे घोड़ेको पानी देनेके लिये खड़ा हो गया। इसी समय हरियाली और



"तार की झंकारों के साथ सुरीली आवाज़" पृष्ठ ४२६

पहाड़ी फूलोंसे घिरे चश्मेकी तरफसे तारकी झंकारोंके साथ सुरीली आवाजमे किसीको गाते सुना :

गिरि और बनमें	लाला उगे
बाग औ खेतमे	शस्य झुके
सुख है सर्वत्र	मेरे मनको छोड़
प्यारी हवाएँ	खुशी बढाये
ऐ सुगन्ध वायु	उसे खबर दे
सौन्दर्य सब ये	आते दौड़ते
आँख और दिलसे	तुझ बिन क्या मिलता
हे मम हृदय-बल !	हे नेत्र-प्रभा !

इन भाव-पूर्ण पदोंको सुनकर सवारका दिल विकल हो उठा और वह घोडेका मुँह चश्मेकी ओर मोड़कर उधर चल पड़ा। देखता है, एक अट्ठारह साला सुन्दरी कन्या चारतार बजाती गीत गा रही है। मानो सवारके आनेकी उसे कोई खबर नहीं है। वह अपनी आँखोंको बन्द किये उसी तरह गानेमे तन्मय थी। "तू कौन है, यहाँ क्या कर रही है?" सवारके इस प्रश्नको सुनकर ध्यान-मग्न कन्याने जगी-सी हो चारतारको जमीनपर रखकर कहा—

शोगनानकी एक गरीबिन हूँ। बाप और मै दोनों दर्वाज़के शाहबच्चोंके दरबारमे जानेके विचारसे इस प्रदेशमे आये। रास्तेमे पिता जाते रहे और मै अकेली राह भूल गई। अब कुछ समयसे पहाड़ों-पहाड़ों जगल-ज़गल मारी-मारी फिर रही हूँ।

—तेरा नाम क्या है और तेरे बापका क्या नाम था?

—मेरा नाम शाहसनम है। बापका असली नाम शाहगुल था, किन्तु तार बजानेकी वजहसे लोगोंने उन्हे मुल्लाचारतारी नाम दे रखा था। वह इसी नामसे सर्वत्र प्रसिद्ध थे।

—बहुत अच्छा, आ मेरे पीछे सवार हो। मैं तुझे शाहबच्चोंके पास ले चलता हूँ।

लड़की अपने तारको हाथमे ले घोड़े पर सवार हुई। सवारने अपने घोड़ेको किला-खुमकी तरफ दौड़ाया।

सवार किला-खुममे पहुँच एक हवेलीमे दाखिल हुआ, जिसमे बसमाची डेरा डाले हुए थे। घोड़ेसे उतर लड़कीको एक तरफ रख वह स्वय घरके अन्दर गया। वहाँ कूरबाशी बैठे हुए थे।

—आ मिर्जा अस्करी, क्या खबर लाया?—कहकर दिलावरशाहने आनेवालेसे सवाल किया।

खबर यही है, कि बोलशेविक जबानी आत्मसमर्पण पर राजी नहीं होते। कहते हैं "यदि तुम वस्तुतः बसमाचीगिरीका पागलपन सिरसे उतार फेकना चाहते हो, तो बिना किसी शर्तके अपने सारे आदमियों और हथियारोके साथ आकर हमारे यहाँ आत्मसमर्पण करो।"

—यानी कहो कि तुम्हारे हाथसे जो भी चीज आये, उसे लेनेसे उज्र नही।

गैरतशाहने कहा—बोलशेविक हमे तुच्छ समझते हैं, लेकिन तोप और मशीन समतल मैदानोंमे काम आती हैं, हमारे कोहिस्तानमे नही। हमारा कोहिस्तान चारों ओर भगवानके बनाये मजबूत किलेसे घिरा है। यदि डाँड़ेसे एक पत्थर गिराये तो सौ तोपे और मशीनगनें बेकार हो जायें।

सदीक बेक, कूरबाशी—दिलावरशाहने कहा—बहादुर जवानोंको ले रास्तोंकी रक्षा करें। हम भी मौजकी रूखी-सूखी चीजोंको हाथसे न जाने दे, कुछ आनन्दोत्सव मनायें।

मिर्जा अस्करीने बीचमें बोलते हुए कहा—यदि हजरत शाह वज्म (नृत्य-गीत) और खुशी मनाना चाहते हैं, तो एक चारतार बजाने-

वाला शोगनानी शिकार भी हाथ आया है। वह वज्मको इच्छाके अनुसार रौनक कर सकता है।

—यह भी भगवानकी देन है। जल्दी वज्म तैयार कर—दिलावर-शाहने मिर्जा अस्करीसे कहा।

× × ×

रातको दिलावरशाह और गैरतशाहके सामने मजलिस सजा था। मुल्ला चारतारी शोगनानीकी कन्या तार बजाकर गीत गा रही थी। एक ताजिक दुम्बक बजा रहा था और बारी आने पर गानेमें भी साथ दे रहा था। वज्म गरम थी। शोगनानी कन्याके मनोहर केश तार बजाते वक्त उसके चेहरे पर बल खा रहे थे, जिन्हे देखकर दिलावरशाहकी पाशविक वृत्तियाँ भड़क उठी और उसने चाहा कि अपने अभिप्रायको बदेहागोई (सवाल-जवाबके गीत)के द्वारा कन्याके सामने रखे। उसने दुम्बकको अपने हाथमे ले चारतारसे सुर मिलाते बदेहागोई शुरू की :

दिलावरशाह—हे कन्या मुल्ला चारतारी यार मेरी होगी ?
कन्या— नही हूँगी।
दिलावरशाह—जान मेरी होगी ?
कन्या— नही हूँगी।
दिलावरशाह—माल मेरी होगी ?
कन्या— नही हूँगी, नही हूँगी।
दिलावरशाह—मिश्री और मधु ओठ तेरे क्षीर और शक्कर जीभ तेरी
कुसुमकली बदन तेरा हे कन्या मुल्ला चारतारी
यार मेरी होगी ?
कन्या— नहीं हूँगी।
दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?
कन्या नहीं हूँगी।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नही हूँगी, नही हूँगी ।

दिलावरशाह(रोते)—अस्पहाँका सेव दूँ तुझे बदख्शाँका लाल दूँ तुझे जो कुछ चाहे दूँ तुझे हे कन्या चारतारी यार मेरी होगी ?

कन्या— नही हूँगी ।

दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी ।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी, नही होऊँगी ।

दिलावरशाह (सखेद)—मै शाह दरवाजी हूँ अमीर मीरकाजी हूँ दिलावरशाह गाजी हूँ हे कन्या चारतारी यार मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी ।

दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी ।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी, नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— राज है मेरे अधीन बूढे जवाँ मेरे अधीन देश और जहाँ मेरे अधीन हे कन्या चारतारी यार मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी ।

दिलावरशाह— जान मेरी होगी ?

कन्या— नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह— माल मेरी होगी ?

कन्या— नही होऊँगी, नहीं होऊँगी ।

दिलावरशाह कन्याकी गुस्ताखीसे गुस्सामें आ दुम्बकको एक तरफ रखकर तलवारकी मुट्ठीको पकड़े खड़ा हो गया। कन्या भी तारको जमीन पर रख हाथको अपने बगलमें डाले मुकाबलेके लिये खड़ी हो गई।

दिलावरशाह—तलवार तेज खींचूँ मैं दुश्मन और दोस्त काटूँ मैं
मिलन-मदिरा पिऊँ मैं हे कन्या मुल्ला-चारतारी
यार मेरी होगी?

कन्या— आजमा ले।

दिलावरशाह—जान मेरी होगी।

कन्या— आजमा ले।

दिलावरशाह—माल मेरी होगी?

कन्या— आज़मा ले।

दिलावरशाहने म्यानसे तलवार निकालकर कन्या पर वार करना चाहा। कन्याने भी अपनी बगलसे कटार निकालकर शत्रुके सीनेमें भोंकना चाहा। कटारकी मूठको झपटकर दिलावरने पकड लिया और उसे छीनना चाहा। इसी समय कड़ाकेकी आवाजके साथ बदूककी गोली जमीनपर गिरी। सारे घर मे दुर्गन्धित धुआँ भर गया और चिराग बुत गया। बसमाची एक दूसरेसे टकराते अपनी बदूके हाथमें लिये गोली आनेकी दिशाकी ओर देखने लगे। उन्होंने देखा कि हवेलीकी छतको लाल-सैनिकोने ले लिया है। दूसरी गोली भी छतसे आई, किन्तु खता कर गई।

"ठहर दाखुन्दा, ठहर दाखुन्दा! नहीं तो गुलनार मारी जायगी"—कहते किसीने आवाज दी और फिर गोलीका छूटना बद हो गया। कितने ही बसमाची गिरफ्तार होनेका अवसर न दे, गुप्तरास्तेसे जिसे केवल वही जानते थे, और रातके अँधेरेसे फायदा उठा भाग गये, किन्तु कितने ही सालोंकी लूट-मारसे जमा किया उनका खजाना और माल-असबाब लाल-सेनाके हाथ लगा।

लाल-सैनिकोंने बसमाचियोंका पीछा करना नहीं छोड़ा। बसमाची अधमरे हो बंज पहुँचे और वहाँ अंतिम बार भाग्य-परीक्षा कर मुकाबला करते खड़े हो गये। इस लड़ाईमें बहुतसे मारे गये, जिनमें एक गैरतशाह भी था। बाकी बचे अफगानिस्तान भाग गये या बंदूकें गर्दनमें डाल उन्होंने सरकारके समक्ष आत्मसमर्पण किया। इस तरह दरवाजसे पामीर तकका प्रदेश बसमाचियोंसे पाक हो गया।

३२

बहुमूल्य पत्र

हजरत इलाह* (श्री भगवान)

श्री महान्, मंत्री, पूर्वी बुखारा-शरीफके उपराज, मीर, बी, दीवानबेगी, लश्करबाशी, गाजी महोदयकी सेवामें—

दुआ सलाम स्वीकारके बाद मालूम हो, कि हे अभिलाषा-स्थान! हे कृपालु! मैं यहाँ आकर जनाबआलीके पादचुंबनसे कृतकृत्य हुआ और श्रीमानके कुशल-मंगलको अपने स्वामी जनाबआलीके चरणोंमें पहुँचाया। और हर तरहसे आपके बारेमें प्रसन्न कराकर भगवानके मार्गमें लड़नेवाली इस्लामकी सेनाके लिये दुआएँ ली। हे अभिलाषा स्थान! हे पृष्ठ-रक्षक! जबसे यह दास अपने स्वामीके रिकाब-चुंबनसे कृतकृत्य हुआ, कितनी ही अच्छी खबरें हर तरफसे आईं। इसलिये कासिम नूकसाबाको देरसे मैंने जवाब दिया। हे दयालु! इस्लामी सरकारोंसे भिन्न पाँच सरकारें जैसे—जर्मनी, इटाली, अमेरिका, फ्रांस और अंग्रेजी सरकारें हैं। उन्होंने आपसमें बोलशेविक बीजके नष्ट करनेका निश्चय करके युद्ध-घोषणा कर दी। अब तक कितने ही शहर—जिनका जिक्र मैंने पहले पत्रमें किया था—बोलशेविकों-के हाथसे उस्मानिया यानी तुर्कोंकी सरकार के हाथमें जिसमें काजिमपाशा

* मूल पत्रका अनुवाद।

ी शामिल हैं, चले गये। उस्मानिया (तुर्की) सरकारका जो प्रदेश फेरगियों (अंग्रेजों), रूसियों या जर्मनोंके हाथमें चला गया था, वह अलहमदो लिल्लाह (रामजीकी कृपासे) सारे मुक्त कर लिये गये। अबदुल करीम बादशाह गाजी जो कि अरब बिलायतके रीफ (मराक्को) और यमन सीरिया)मे पहले बसमाची रहा, अलहम्दोलिल्लाह (भगवानकी कृपासे) उसने आजकल दो लाख लड़ाकू सेनाको अल्लाहके रास्तेमें तैयार किया है। और हर तरहके तोप, मशीनगन, एरोप्लेन किसी चीजकी उसे कमी नही है। इसाइयोंमेसे यदि कोई दुश्मन पैदा हो तो वह तैयार है और भगवानकी मददसे सदा विजय इस्लामकी तरफ रहती है। मक्का और मदीना शरीफको इब्न सऊदने ले लिया। इस वक्त इस्लामी राज्योंमे एकता है। सारे मुसलमानोंमें अब एक खलीफाकी जरूरत है। सबकी एक राय है कि वह खलीफा महान् मक्कामे रहे। इन्शा-अल्लाह (यदि भगवानने चाहा) तो सुल्तान अब्दुल मजीदको इस्लामका खलीफा बनायेगे। हे कृपालु ! आपसे कहना न होगा, कि हर सेनानायकको पत्र लिखकर सेनाको बढा फकीरोकी दुआ लेकर हमारे हजरतकी दीर्घायुके लिये आप दुआ करते रहे। यदि भगवानने चाहा, तो जल्दी ही मनकी मुराद पूरी होगी। हे दयालु ! बोलशेविककी ओरसे एक रूसी आया है कि अमीर बुखाराको ले जाकर उनके तख्तपर बैठाये, लेकिन हमारे श्रीमानने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने श्रीमुखसे कहा कि पहले हमारे देशसे निकल जाओ, तब हम नदी (आमू-दरिया) पार होकर कूलाब प्रदेशमें ठहरेगे और वहाँसे अपने नायब (उपराज) दीवानबेगीको बायसून भेजेगे। फिर हम हिसार आयेगे औ वहाँसे दीवानबेगी (महामन्त्री)को बुखारा भेजेगे। फिर हम बायसून जायेगे। इस तरह काम जल्दी ही ठीक हो जायगा। हे अभिलाषा-स्थान ! एक पत्र पहले इस दासको वकील बनानेके लिये भेजा है। वही वकील बननेका पत्र आपके सेनानायकोंके लिये होगा। और खुद आपकी वकालतका पत्र साथ लिये कासिम तूकसाबाके साथ भेजिये, जो कि मुझे बातचीत

करनेके लिये आवश्यक है। दूसरी अर्ज यह है कि इस्माइल बेक दीवानबेगीको जनाबआलीने मुल्ला कोरी तुकसावाके साथ भेजा, जो भगवानने चाहा तो बदख्शाँसे ऊपर-ऊपर आपके पास पहुँचेगा। जिस वक्त कि आपके पास तूकसावा पहुँचे, तो समझिये कि वह जनाबआलीका वकील (प्रतिनिधि) है। हे कृपालु ! हाजी इस्माइल दीवानबेगीके पास खत नहीं आया। आपके सबधमे वह बड़ी धार्मिक दोस्ती रखता है। उसने आपके लिये एक खत और एक दूरबीन मुझे दी। चूँकि रास्ता बहुत खतरनाक है, इसलिये उस दूरबीनको अपने पास रखकर उसके पत्रको भेज रहा हूँ। श्रीमान् एक पत्र लिखकर दो जोड़ा अच्छा इलाचा हाज़ी इस्माइल बेकके साथ भेजें। और किसी बारेमें पत्र नही लिखना है सिवा इसके कि दो जोड़ा इलाचा और छः जोड़ा करतागी इलाचा भेजिये। यह दास जहाँ उसकी आवश्यकता होगी वहाँ देगा।

पत्र-लेखककी मुहर : मूल्ला मुहम्मद नियाजबेक बी

इनाककलाँ, १३४४

अनवर, सामी, फुज़ैल और दरवाजके शाह-बच्चोंका काम खत्म होनेके बाद इब्राहिम गल्लूने अपनेको 'मुस्तकिल' (सुदृढ शासक) घोषित किया। और अमीरके तगाई (एजेंट) सईद बेककी सलाहसे छः हजार नक़द बुखारी तंका, दो हजार चारी भेड़े, तीन सौ घोड़े, और तीस ऊँट देकर मुल्ला नियाजको अपना वकील (प्रतिनिधि) और सादिक पुचुकको दीवानबेगी (मत्री) बनाकर काबुलमे भूतपूर्व अमीर-बुखाराके पास भेजा। काबुल जाकर मुल्ला नियाजीने ऊपर उद्धृत पत्रको इब्राहिमके पास भेजा था। इब्राहीम इस खतसे बहुत खुश हुआ। पहली खुशी यह थी, कि बोलशेविक बिना लड़ाईके ही देशको खालीकर अमीरको सौंपना चाहते हैं। दूसरी खुशी यह थी कि अमीरने सबसे पहले अपने नायब यानी इब्राहीम बेगको बायसून और बुखारा भेजनेका वायदा किया। इस तरीकेसे मानो ताजिक और लके (किरगिज) गरीबोंकी गाढ़ी कमाईको लूटकर जो छ

हजार तका और भेंड़े, घोड़े और ऊँट काबुल भेजे गये, वह एकके दस होकर अपने जेबमें चले आयेंगे।

इब्राहीम बेकने इस पत्रमें खूब नमक-मिर्च लगा लिखवाकर सभी कूरवाशियोंके पास भेजा। उसका एक प्रभाव यह हुआ, कि बसमाची जो निराश होकर आत्म-समर्पण करनेको तैयार थे, वह "अमीरके आगमन और बोलशेविकोंके नेस्त होने" की बात सुनकर आशावान हो फिर एक बार क्रियाशील हुए। इस पत्रका नगद लाभ इब्राहीम बेकको यही हुआ।

बादमे दूसरा खत अमीरके चचा मीर अकरम-पुत्र मीर मुजफ्फरकी ओरसे आया। इसमें भी 'बोलशेविकोंके जल्द नेस्त होने'की बात थी। मीर अकरमने अपने पत्रमे शुभ-समाचार देनेके बाद एक जगह लिखा था कि 'कोरी शेरमहम्मद, फूजैल मखदूम, और उसका भाई बड़ी तबाहीकी हालतमें कालके रास्तेमें सो रहे हैं।" इस वाक्यने अफगानिस्तानकी तरफ भाग कर जानेकी इच्छा रखनेवाले बसमाचियोको इस प्रवृत्तिसे रोकनेमे बड़ा काम किया। दूसरी जगह मीर अकरमने लिखा था 'बिरादर! सभी नये बने अमलदारो (अफसरो)को मेरी ओरसे बधाई पहुँचाओ। इन्शा अल्लाह बधाई (का पैसा) मुल्ला नियाजसे प्राप्त करूँगा।' इसके लिये नये अमलदार बने बसमाचियोंने यद्यपि कुछ पैसे जमाकर अमीरके चचाके पास बधाईके तौरपर भेजे, किंतु पहले पत्रकी अपेक्षा दूसरा पत्र बहुत सस्ता रहा।

३३

हुक्मनामा

हे दयालु !*

एक जोड़ा मोजा...तीस इटालियन सतगोलिया तमचेके कारतूस... एक चश्मा.....भेजा। हे अभिलाषा-स्थान !...हे कृपालु ! शुकरानाके

* मूल पत्रका अनुवाद।

लिये भी निवेदन करना चाहता हूँ और आशा है, कि श्रीमान् दस-रूबल-वाली एक सौ अशर्फियाँ जनाबआलीके लिये और एक सौ दस-रूबली अशर्फियाँ इस दासके खर्चके लिये भेजे। आपने जो पैसा भेजा था, उसमेंसे अब कुछ बाकी नही रह गया . सलवार, कुलाह .मौजूद न थी, उसके लिये पेशावर लिखा है। भगवान चाहेंगे तो खुद ले आऊँगा। भगवान श्रीमानकी और सारे मोमिनों (मुसलमानों)की इच्छा पूरी करे। आमीन (एवमस्तु)। दासके आनेके वक्त मिर्जा दादखाह नहीं थे। मैं भी अपने साथ कोई चीज नही लाया था। यह (मिर्जा दादखाँ) तीन हज किये हुए हैं। इनको एक सौ रुपया भेजकर एक पत्र लिखिये। उदेचीको भी कुछ मेहरबानी करके भेजिये ..। चीज भेजनेकी ज़रूरत नही । हाजी मिर्जाके लिये पत्र भेजिये लेकिन चीज नही, परवानचीके लिये भी खत भेजिये चीजकी दरकार नही। दो आदमियोंको छोड़ बाकी किसीको चीज नही भेजनी चाहिए। जनाबआलीकी भी यही राय है। यदि आपके पास पैसा हो तो चाहे जितना पैसा इस दासके पास भेजिये। कहाँ खर्च करना चाहिये मै उसे जानता हूँ ..अस्सलाम अलेकुम्।

मुहर : मुल्ला महम्मद नियाजबेक बी इनाककलाँ

मिर्जा (लेखक)ने जब इस पत्रको शुरूसे मुहरके अंत तक पढके सुनाया, तो इब्राहिम बेकने उससे कहा—पत्रको यहाँ रखकर जा मुहरम (नौकर छोकडे)को कह कि हुक्का भरकर लाये।' और फिर माथेपर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा।

एक सोलह-सतरह-साला लड़केने इब्राहीम बेकके सामने भरा हुक्का रख पातितजानु बैठकर निगालीको उसके मुँहमे दे दिया। इब्राहीम बेकने पाँच-छः फूंक लगा दोनों हाथोंको माथेसे हटाकर हुक्का ले जाते मुहरमसे कहा—खालिक तूकसावाको मेरे पास आनेको कह, दूसरा कोई भीतर न आने पाये—और फिर माथेपर हाथ रखकर विचारमग्न हो गया।

—फिर क्या आफत आई ? क्यों हालत बदली है ?—कहते खालिक आकर इब्राहीमके सामने बैठ गया।

—छः हजार चाँदीका बुखारी तंका, दो हजार मेड़े, तीन सौ घोडे, तीस ऊँट यह कहना आसान है। यह इब्राहीम (अपने सीनेकी ओर इशारा करके) था, जिसने इतना चीजे इस बरबाद मुल्कसे जमा करके भेजी और वह सब निहंगईमें स्वाहा हो गई। इतनेसे पेट नही भरा और अब फिर इस घर-जले मुल्ला नियाजने लिख भेजा है और 'दस रूबलवाली सौ अशर्फियाँ जनाबआलीके लिये, दस रूबलवाली सौ अशर्फियाँ मेरे लिये और सौ रुपया किसी तीन बार हज कर आये धोखेबाजके लिये' माँग रहा है। मानों मै बच्चा हूँ और वह मुझे धोखा दे सकता है, और अंतमे कहता है—'जनाब-आलीकी भी यही राय है। जितना पैसा हो मेरे पास भेजा करो। मै जानता हूँ उस ठीकसे खर्च करनेका रास्ता।' मैने कितनी बार लिखा कि एक कुलाह और सलवार भेजो, लेकिन पेशावरसे मँगानेका वादा करता है। जान पडता है, इन सबकी नियत बिगड़ी हुई है। पहले जो पैसा भेजा जाता, उसके बदलेमे बदूक और कारतूस आते थे और अब छः हजार तंकों और दूसरी चीजोके बदलेमे पाँच सौकी भी चीजें नही आ रही हैं।

खालिक—कहावत है 'दे और माँग' उनको दो और फिर गरीबोंसे लो। इतनी बातके लिये इतना शोर मचानेकी जरूरत नही। अपने पासकी कोई चीज मत दो। क्या भूल गये, जिस वक्त मैं और तुम डकैती-बटमारी करते थे, तब भी यही बात थी। एक तरफसे छीना-खाया और दूसरी तरफ हाकिम, काजी और मीर सबको दिया। वह भी हमारी दी हुई चीजोमेसे कुछको अमीर और उसके मुसाहिबोंके देते। अब जब कि तुम खुद जनाबआलीके नायब हो, लश्करबाशी हो, तो चीज देनेमे इतना कसाला क्यों ? यह न भूलो कि तुम्हारा यह सारा पद और दर्जा जनाबआलीकी तरफसे मिला है। यदि वह न भी माँगे, तो भी अपने ही समझकर देते रहना चाहिए।

—अब यह मुल्क पहले वाला मुल्क नहीं है। अब इस मुल्कसे कुछ लेना बहुत कठिन है। पहले तो यह कि इस मुल्कमें चीजे हैं ही नहीं। यहाँ जो कुछ था सबको लिया और खाया, अमीर और उनके आदमियोंके पास भेज दिया। बाय और धनवान लोगोंके पास चीज है भी, तो हम उसपर हाथ नही डाल सकते, क्योंकि मुल्कमे हमारे अबलब अब सिर्फ वही हैं। वही हैं जिन्होने हमे बालशेविकोंकी आँखोंसे छिपा रक्खा है। यदि उनपर भी हाथ बढ़ाये, तो कहाँ खड़े होंगे? दूसरे, जबसे ताजिकिस्तानको एक प्रजातत्र घोषित किया गया, तबसे उसके शासनके नियमोमे भी परिवर्तन हुआ है। पहले जदीद लोग सदा मुल्कके बड़ोंके साथ रियायत करते, उनकी उमीद हमेशा इनपर थी। यह बड़े मालदार लोग गरीबोको हमेशा दबाते, जहाँ तक हो सकता हमारी मदद करते। अब सरकार सारा विश्वास और आशा मुल्कके भूखो और नगोंपर रखती है। उन्हें वह खेतीके लिये बीज और बैल देती, सामान देती है; उसने उनकी सेना बनाई है। अब ये कमकर हमारी जड़ उखाड़ फेकनेको तैयार हैं। जहाँ भी हम पैर रखते हैं, इससे पहले कि हमारी चायकी केटली गरम हो, वह हुकूमत-को खबर कर देते हैं। हमे सहायता देनेवालोंको गिरफ्तारकर खुद बदूक ले लाल-सैनिकोके आगे-आगे दौड़ते हैं और आक्रमण करते हमसे भिड़ जाते हैं। हम किससे और कहाँसे चीज जमा करें? खुद अपना पेट भरना मुश्किल हो गया है। जनाबआलीको कहाँसे भेजे?

—"अली मर्दा तुकसाबा आये है, यदि आज्ञा हो तो अदर आनेको कहूँ" कहते मुहरमने इब्राहीमको बीचमे ही टोक दिया।

"आनेके लिये कह"—इब्राहीमने कहा।

अलीमर्दा आँसू भरी आँखोंसे सलाम देते भीतर आ दौड़कर पातितजानु बैठ इब्राहीमके हाथोंको बोसा दे पीठ फेरे बिना मुड़कर नीचेकी तरफ एक कोनेमे जा बैठा।

—कहो तूकसाबा, क्या बात है?

—मेरे गाँवके भुक्खड़ सरकारके खुफिया बन गये हैं। कुछ दिन पहले उनके हाथसे छिपकर मै निकल आया। कल सैनिकोंको लाकर उन्होंने मेरे घरमें ताला डलवा दिया। अब्दुल्ला दादखाके पास जाकर यह बात कही। उसने "मेरे बसकी बात नहीं, मीर तोपचीबाशीसे जाकर कहो" कहकर आपके पास भेजा। यदि यही हालत रही, तो हमारे लिये जीना दूभर हो जायेगा। फिर या तो आत्म-समर्पण करना पड़ेगा, या तो अफगानिस्तान भाग जाना होगा।

इब्राहीमने खालिक़की ओर निगाह करके ताना देते हुए कहा—"जनाबआली और मुल्ला नियाजको जाकर कहो, कि इसका इलाज करे" फिर कातिब (लेखक)को आवाज देकर कहा—'अब्दुल्ला दादखाको खत लिखो।" कातिबने अपना बस्ता खोल कलम और कागज हाथमे ले लिखना शुरू किया* :

अमारतपनाह अब्दुल्ला दादखाको मालूम हो, कि कुछ आदमियोंने अलीमर्दा तूकसाबाके बारेमे खबर दे उसके घरमे ताला लगवा दिया। इसलिये तुम्हे सूचित किया जाता है, कि यह खत पाते ही खबर देनेवालोंको पकड़कर तूकसाबाके मालको लेकर उन्हें दिला दो, और खबर देनेवालोंको क़त्लकी सजा दो। बहुत ताकीद। बाकी अस्सलाम-अलेकुम। सन हिजरी १३४२

मुहर : मुल्ला मुहम्मद इब्राहीम बेगी, दीवानबेगी, तोपचीबाशी लश्करबाशी, पुत्र चक्काबे तूकसाबा।

इब्राहीमने खत लिख जाने पर छोटी-बड़ी कितनी ही मुहरों वाली थैलीको कातिबके पास फेकने कहा—"मुहर लगा।"

कातिबने मुहर लगा दी। इब्राहीमने पूछा—कौन-सी मुहर लगाई ?

इसपर कातिबने मुहरका वाक्य पढ़ सुनाया। इब्राहीमने "ठीक"

---

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

कहकर मुहरकी थैली ले फिर अपने खीसेमें डाल ली। अलीमर्दा हुक्मनामा ले घरसे बाहर चला गया।

३४

बादशाह बेतख़्त

बाबातागके पहाड़ोकी एक गुफामें बसमाचियोंके क़रबाशी (सेना-नायक) अपनी फौजके मुफ्तीके साथ जमा थे। अब्दुल्ला बेग दादखाने कहा—इस क्रान्तिके समयमें मैंने तुम्हे तकलीफ देकर जो यहाँ जमा किया है, इसकी वजह यह है, कि हमने जनाब तोपचीबाशी इब्राहीम बेकके हुक्मनामाके अनुसार अलीमर्दा तूकसाबाका माल दिलवाने और खबर देने वालोको सजा देनेके लिये जवानोंका एक दस्ता उस गाँवमे भेजा। गरीबोके जत्थे और हथियारबन्द सैनिकोंने उनपर हमला किया। लड़ाईमे गाँवके कितने ही आदमी और हमारे दो जवान मारे गये, तो भी हमारे आदमी दो घोडे हाथमे कर निकल आनेमें सफल रहे। मैंने इस बातको मीर दीवानबेगी लश्करबाशीको निवेदनकर घोड़ोमेसे एकको गनीमत (लूटका धन)के रूपमें हिम्मतअली तूकसाबाके साथ भेज दिया। जवाबमे मीरकी ओरसे एक खत आया, जो हम सभीके नाम है।"

यह कहकर अब्दुल्ला दादखाने खत बाँचना शुरू किया* .

फजीलतपनाह इस्लामके दुआकारी, सेनाके मुफ्ती, और मुल्ला अब्दुल कयूम सदूर।

राजरक्षित हुतात्मा अब्दुल्ला बेक बी दादखा, मुल्ला अहमद बी दाद-खा, पहलवान दादखा और हैदर कुल्ली बीको मालूम हो, कि भगवानकी कृपा और इस्लामी राज्यकी महिमासे हर तरहसे कुशल-मगलके साथ रह इस्लामके धर्म-योद्धाओंके लिये दुआ करता रहता हूँ।...आपने जो पत्र

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

मुल्ला अब्दुल कयूम सदूरने कहा—जिन मुसल्मानोंने लालसेनाको खबर दी या खुद सैनिक बने या जिनके भाई-बन्द सैनिक हैं; शरीयतके अनुसार वह मुर्त्तिद् (पतित) हैं और काफिरोंसे भी गये गुजरे हैं। इसलिये उन्हें क़त्ल करने या उनका घर जलानेमे तनिक भी झिझकना नहीं चाहिये।

मुल्ला अहमद बी दादखाने कहा—हमको चाहिये कि इस फर्मानको गयूर बेक, अस्मतुल्ला बेक और दूसरोंके पास भी पहुँचावे और सब जगह एक साथ काम शुरू करे, नही तो भुक्खड़ोकी सेनाके हाथमे पड़कर हम सब अलग-अलग मारे जायेगे।

इस वक्त स्वय तोपचीबाशी कहाँ हैं ?—पहलवान दादखाने पूछा।

हिम्मतअलीने जवाब दिया—जिस समय मुझे उन्होंने खत दिया, उस समय वह दर्रा गर्दनेजौजामे थे। अभी दर्रासे बाहर न निकले थे, कि एक तरफसे लाल-सैनिकोका एक दस्ता और भुक्खड़ोंकी पल्टन आ गई; लेकिन मीरने डटकर उनसे लड़ना ठीक नही समझा और सही-सलामत पहाड़के डाँड़ेपर चले गये।

—क्यो नही कहते, कि इस समय हमारे बादशाह बेतख्त हैं ?—हँसते हुए मुल्ला अब्दुल सदूरने कहा।

—एक बादशाहके लिये बेपायातख्ती कोई दोष नहीं, खुदा भी बे-मकाँ है—कहकर दूसरे मुफ्तीने सदूरके कथनका दुष्प्रभाव दूर करना चाहा।

इसी समय एकाएक बदूकोंकी पटपटाहट सुनाई दी। सब घबड़ा गये। गोलियोकी आवाज पर्वतकी प्रतिध्वनिसे मिलकर और भयकर हो गई। बसमाची चट्टानोसे छिपते पहाड़के डाँड़ेपर भागे। गोलियाँ भी वर्षाकी भाँति, किन्तु नीचेसे ऊपरकी तरफ, बरसती रहीं। बसमाचियोंमें-से एक लुढ़का। स्वयसेवकोके आगे-आगे जाते दाखुन्दाने उसे गिरते देखा। वह दौड़कर उस बसमाचीके पास गया। देखा, अलीमर्दा दम

तोड़ रहा है। दाखुन्दाने एक क्षण उसकी तरफ देखते "यह तेरा आखिरी ड है। तू बच्चो तकको मारकर अपने गाँवको जला मेरे हाथसे भाग गया था। अफसोस कि अपनी आयुके पहले भागमे जो जुल्म हम गरीबोंपर तूने ढाये थे, तुझे उसकी सजा न मिल सकी" कहकर अपने चिरशत्रुसे अन्तिम बिदाई ली।

३५

मुसलमान-संहार (१९२५)

१९२५मे ताजिकिस्तानके सभी ताजिक और उज्बेक कमकर बसमाचियोंका सफाया करनेके लिए मैदानमें उतर आये थे। यहाँ तक कि जिनके पास हथियार न थे, वह भी लाठियाँ लिये "लाल लट्ठदारों" की गरोह बाँधकर बसमाचियोंको खोज निकालनेमें लगे हुए थे। बसमाचियोंके लिये जिन्दगी दूभर हो गई थी। खुल्लमखुल्ला बस्तीमें आनेपर मारे जाते या गिरफ्तार होते। इन हालतोंने बसमाचियोंके पैर हिला दिये थे। एक तरफ गरीब झुण्डके झुण्ड स्वयसेवक-सेनामें नाम लिखा चुके थे और दूसरी तरफ भूखके मारे या कूरबाशियों, मुल्लोंके बहकायेमें पड़कर बसमाची बने बहुतसे डाकू पाँच-पाँच दस-दस करके सरकारको हथियार दे आत्म-समर्पण कर रहे थे।

बसमाची अब सीधे मैदानमे आनेकी हिम्मत न रखते थे। लाल सैनिकों या स्वयसेवकोसे मुकाबला करनेकी उनमे हिम्मत न थी। बसमाचीगिरी अतिम साँस ले रही थी और साँप-बिच्छूकी तरह मरनेके समय सख्त चोट करनेमे बसमाची अब पशुतापर उतर आये थे। यह बात जिद्दीकी तरफ भागे अब्दुर्रहमान परवानचीके इस पत्रसे मालूम होती है, जो कि उसने खाल मुराद और राजिक नामी बसमाचियोंको लिखा था।*

*मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

आंखोंके तारे खालमुराद व मुझे दाखिल और सारे सिपाहियोंको मालूम हो कि मैं सिंहोंका वध्य आप लोगोंके अच्छे काम देखकर बहुत खुश हुआ। जो कोई बुरा है उसे सुधार मुझे करे। हमारे आप लोगोंको सूचना किया जाता है, कि जहां कहीं भी इनके गांव देखें और मिलिशिया (सैनिक पुलिस) मिले उनको खत्म कर डालें। यदि सिंहोंकी सरपरस्ती मिलिशिया कत्ल और गायब हो। यदि आप लोग मुझसे प्रेम रखते हैं और खुदा तथा शरीयतसे डरनेवाले बनाईकर। आशा रखते हैं, तो बदमाश और बेदियानत मुसलमानोंको पकड़कर पांच सौ लड़का कत्लकर उनके माल-मवेशी और घरवालोंको आगमें जला दें। जरा भी दया न दिखावे। हां, जहां कहीं अच्छा घोड़ा देखें, उसे तुरन्त अपने हाथमें करें। यहां तक कि मेरा औलादमें भी न हिचकिचाये और मेरी बातपर अमल करें। शेष अस्सलाम अलेकुम्।

(मुहर) अब्दुर्रहमान परवानची लश्करबाशी गाज़ी।

सरसरक पहाड़से होकर गये इब्राहीमने भी सुफ्ता सदूर और अन्य दो आलिमों—अब्दुल्ला दादखा और हैदरकुल्ली बी—को यह पत्र लिखा था* :

फजीलतपनाह (विद्वान्) और मुफ्ती सदूर तथा इस्लामके दुआ करनेवाले अमारतपनाह अब्दुल्ला बेग दादखा और हैदरकुल्ली बीको मालूम हो, कि भगवानकी कृपासे यहाँ सब कुशल-मगल है। . आपका पत्र मिला और समाचार जानकर खास करके अमारतपनाह अस्मतबेक दादखाके शहीद होनेको सुनकर बहुत अफसोस और परेशानी हुई, फिर भी भगवानकी इच्छापर सतोष किया और पुनीत आयते पढकर दुआ की। विश्वका

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

स्वामी अपनी कृपासे अक्षय आनन्द प्रदान करे। आमीन (एवमस्तु)।

...आप दोनो एक जान हो अपनी सेनाको कामपर लगाये और छै मास तक काफिरोंके साथ युद्ध न कर मुसल्मानोंका सहार (मुसल्मानकुशी) करे। चाहे अलिमोंमेसे हो, चाहे फकीरोंमेसे, जो भी सरकारका नाम जबानपर लाये या उससे सहानुभूति रखता हो, सर्वहत्या (कत्ल-आम) करके उसके घरमें आग लगा दे। इसके लिये जो कुछ करेंगे, वह शरीयतका काम है। उसके लिये ईशान मुफ्ती (धर्मशास्त्री)से सवाल करनेपर फतवा (व्यवस्थापत्र) मौजूद ही समझो। और अस्मदुल्ला बेकने तीन व्यक्तियोको शहीद किया है। उसके पुत्र-कलत्र सगे-सम्बन्धी सबको बिल्कुल कत्ल करो। कूलाब, किज्जिलसू कन्गुर्त्ता-सगलाख-पर्वत, सरसक-पर्वत और सील-पर्वतस्थलीके मुसल्मानोको शत्रुकी सहायताके जुर्ममे कत्ल करो। एक हो जाओ। अपने समाचारको जल्दी-जल्दी भेजियो। अलबत्ता वस्सलाम्।

१३४४...

(मुहर) मुल्ला महम्मद इब्राहीम, बी, दीवानबेगी, तोपची-बाशी, लश्करबाशी, चक्कावे तूकसाबाका पुत्र।

वस्तुतः अब दोनों वर्ग साफ-साफ एक दूसरेके विरुद्ध मैदानमे उतर आये थे। बसमाची—जो आज तक अपनी सारी पाशविकताओंको मुसल्मानोकी हिमायतके नामपर करते थे—अब सीधे मुसल्मान-कुशीपर उतर आये थे। हॉ, हरेक मुसल्मानको वह कत्ल नहीं करते थे, क्योंकि "मुफ्ती सदूर" (प्रधान धर्मशास्त्री) और "अमारतपनाह" लोग भी तो मुसल्मान थे, जिन्होंने उन सब मुसल्मानोका कत्ल करनेका हुक्म दिया, जो "सरकारका नाम जबानपर लाते" या "सरकारसे सहानुभूति रखते"। कौन वर्ग सरकारसे सहानुभूति रखता था ? यह थी सर्वसाधारण

मुसल्मानोंकी वह भारी सख्या, जो कि कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार-के नेतृत्व तथा आर्थिक सहायतासे अपने जीवनको बेहतर बनाना चाहती थी। बसमाची अपने वर्गके स्वरूपको इतना खोल चुका था, कि वह अपने शत्रुओके उद्गम स्थानको भी बखशनेके लिये तैयार न था। इसीलिये "अस्मतुल्लाके पुत्र-कलत्र सगे-सम्बन्धी" तकको कत्ल करनेका हुक्म दे रहा था और अपने इस कामके लिये ईशान मुफ्तीसे फतवा भी ले रहा था। फतवा देनेमे मुफ्तीका दिल भी हिचकिचाता नहीं था। बसमाची-सरदार तैमूर इनाकने सरकारसे सहानुभूति रखनेवाले कुछ गरीबोंको लिखा था* :

"जब तक मै हरामज़ादोंको कत्लकर तुम्हारे घरवालोंको बदी करके न लाऊँगा, दुनियामे एक दिन भी (निश्चिन्त हो) न फिरूँगा।"

अब "कहाँ जाये, क्या करे"के बारेमें कुछ भी न जाननेवाले गरीब कमकर भी पार्टी और सरकारके सक्रिय नेतृत्व और आर्थिक सहायतासे अपने शत्रु और मित्रको साफ-साफ समझने लगे थे। वह समझने लगे थे, कि सुखी जीवनके निर्माणके लिये बसमाचियों और उनके समर्थकोको नष्ट करना पहली शर्त है। वह यह भी जान गये थे, कि जनसाधारणकी भारी संख्याके साथ हुए बिना इस कामको पूरा नही किया जा सकता। यही वजह थी, कि जनसाधारण इन डाकुओके खिलाफ उठ खड़े हुए थे—जिनको सरकार हथियार न दे सकी थी, वह लाठी-भाला ले "लाल लट्ठधार" बनकर बसमाचियोंका मुकाबला कर रहे थे। कितने ही कमकर बसमाचियोके हाथ मारे गये, लेकिन उनके खूनने बाकी लोगोमे जोश भर और अधिक जनसख्याको मैदानमे खींचा। गाँवके गाँव जला दिये गये थे। लेकिन उनकी लाल लपटे कालरात्रिके बाद दिनके अरुणोदयकी सूचना दे रही थी।

---

* मूल प्रतिका अनुवाद—लेखक।

३६

जनताका कोप

पत्थरके पीछे पत्थर आया
स्वयसेवकोंके हाथोंसे
फूल पहाड़ोंपर उग आये
बसमाचीकी गंदगियोंको
बरस रहे सावनके बादल
पड़तीं बसमाचीके सिरपर

दाखुन्दा लड़नेको आया
बसमाची है तग आया
फूल सूँघ रही गोपकन्यका
बसमाचीका खून धो रहा
काफिर-निहाँ हुआ अति उज्ज्वल
हम असवारोकी तलवारे

१६२५में ताजिकिस्तानके सारे कमकर बसमाचियोंके खिलाफ उठ खड़े हुए और लाल सेनाकी सहायताके साथ वह पहाड़, जगल, दर्रे सबमें फैल गये। क्रुद्ध जनगण सालीपायासे फैजाबाद तक, हिसारसे रामित तक, देहनौसे शेराबाद तक, बसमाचियोके पीछे पड़े उन्हें ढूँढता-फिरता रहा। बसमाची भी अपनी अन्तिम शक्ति लगा खूरेजी कर रहा था। गाँवोंको जला खान्दानोको वीरान कर रहा था। कुपित जनता इस पाँच सालकी बसमाचीगर्दीमे अपना सब कुछ खो चुकी थी। इसीलिये उसको अब बसमाचियोंका भय नहीं था। अब लोग शत्रुओंको बिल्कुल समाप्तकर सुखी जीवन बिताना चाहते थे। वह युद्धमे जाते वक्त ब्याह-शादीके गीत और कविता गाते विदा होते थे। दाखुन्दा भी उपरोक्त गीत गाता उनके आगे-आगे दौड़ रहा था। अन्तमे जनताका कोप विजयी हुआ। गैरू बेक, असमतुल्ला बेक, शरीफ बेक, बनर बेक और दूसरे इक्कीस कूरबाशियोंके दस्ते नष्ट कर दिये गये। ज़िद्दीके पहाड़ोंमे भागा अब्दुर्रहमान परवानची भी जनताके कोपसे न बच सका और यकनाबमे गिरफ़्तार कर लिया गया और तत्काल उसका सिर धड़से अलग कर दिया गया। तैमूर इनाक, अब्दुलअजीज खानकारी और कितने ही दूसरे कूरबाशी नेस्तनाबूद हुए। और भी कितने ही कूरबाशियों और बसमाचियोंने जनताके क्रोधसे

बचनेका कोई और उपाय न देख हथियार-समेत आत्म-समर्पण कर दिया।

अब सिर्फ इब्राहीम बेक बे-उम्मत (अनुयायी-विहीन) पैगम्बरकी तरह बच रहा था और उसके साथ कुछ नजदीकी भर रह गये थे। वह अब भी मैदानमें था लेकिन कहाँ है, यह कोई नहीं जानता था। उसे अब बादलोंकी पहुँचसे बाहरके पहाड़ी डाँड़े और जलसे दुर्लंघ्य संकीर्ण दर्रे बचाये हुए थे।

२७

अवसान (१६२६)

१६२६की गर्मियोंमे सरसरक पर्वतस्थलीके अन्न-जल-विहीन डाँड़ेपर "मुल्ला महम्मद इब्राहीम बेक, दीवानबेगी, तोपचीबाशी, लश्करबाशी, चक्कवे तूकसाबा-पुत्र" अपने बीस घनिष्ठ बन्धुओंके साथ चार महीनोंसे पड़ा हुआ था। यह वही जगह थी, जहाँसे इब्राहीम गल्लू "अवतरित" हो "तोपचीबाशी" और "लश्करबाशी" बना था। लेकिन इस समय पाषाणहृदय इस कठोर पर्वतने पहलेकी तरह दया न दिखलाई और अपने शरणागतके आर्त्तनादपर कोई ध्यान नहीं दिया। जीवनकी अन्तिम निधि एक बोरा गेहूँ था सो भी आज खत्म हो गया।

- दूसरा कोई चारा नहीं, आओ, अपने एक घोड़ेको मारकर खायें—इब्राहीमने अपने आदमियोंसे कहा। उन्होंने घोड़ेको मारकर चमड़ा खींचा और चमड़ेको भी पकाकर नमक डालकर रख दिया लेकिन वह भी देर तक नही चल सका। चमड़ेके आखिरी टुकड़े उबालकर शोरबा बना पीनेके दिन इब्राहीमने अपने आदमियोंसे कहा- "इस तरह जीना सभव नहीं, दो जाँबाजोंकी जरूरत है, जो जान हथेलीपर रख नीचे जायें। शायद अमृतकी घड़िया प्राप्त करके लाये।"

एक आदमीने उठकर सेवा बजानेके लिये हाथ सीनेपर रखा

बिदा माँगी। इब्राहीमने कहा—शाबाश, तेरे आत्म-त्यागको। यदि मेरे शासनके समय मेरी सेवामे तू होता, तो इसके लिये मैने तुझे एक बिलायतका हाकिम बना दिया होता। अब तुझे जबानी "दादखाह" बनाता हूँ। जब एक पन्ना कागज मिलेगा तो इस पदकी यारलिक (सनद) दे दूँगा—यह कहकर उसे एक पुराने नौकरके साथ रवाना किया।

अन्न ढूंढनेवाले जैसे ही आँखोंसे ओझल हुए, कि इब्राहीमके दिलमें हौल होने लगा "हाय, क्या किया ? हाय, क्या किया ? क्यों मैंने एक नवागत अपरीक्षित आदमीको इस कामके लिये भेजा ? क्या जाने, विश्वासघात करके मुझे पकड़वा दे"। इसके बाद पहाड़की एक ऊँची शिलापर बैठ दूरबीनसे वह देखने लगा। हरेक पत्थर और हरेक काली चीज लाल-सैनिक या स्थानीय स्वय सेवक-सी दिखाई पड़ने लगी। भविष्यको अन्धकारपूर्ण देखकर दिल काँपने लगा। "घटनाकी दवा समयसे पहले करनी चाहिये" कहते वह अपनी जगहसे उठा। उसने अपनी औरतोको डेरेसे दूर ले जाकर उस जगह छिपाया, जहाँ पिछले साल "लाल लट्ठदारो'के स्त्री-बच्चोंको पहरेके अन्दर रख भूखों मरवाया था। फिर वह उसी जगह आकर दूरबीनसे देखने लगा।

× × ×

सरसरककी सैनिक चौकीमे लोगोंको सन्देह होने लगा था, कि क्यों दाखुन्दाका कोई पता नही ! यदि जिन्दा होता तो अब तक जरूर लौट आता। उसे गुम हुए एक सप्ताह हो गया, किन्तु कोई नही जानता कि कहाँ है। शायद उसके शिरपर कोई आफत आई।

—बंदूकके साथ गया था या बे-बन्दूक ?

—गैरू बेककी ग्यारह गोलियोवाली बदूक उसके पास है। गैरूके कत्ल होनेपर उसने वह बदूक विजय-धनके तौरपर पाई थी।

यह बातचीत अभी चल ही रही थी, कि दूरसे एक प्यादा आता दिखाई पड़ा। सबकी आँखे उधर लग गई। दूरबीनसे देखकर एकने कहा—स्वय दाखुन्दा है, उसके हाथमे दो बन्दूके हैं।

बिदा माँगी। इब्राहीमने कहा—शाबाश, तेरे आत्म-त्यागको। यदि मेरे शासनके समय मेरी सेवामें तू होता, तो इसके लिये मैने तुझे एक बिलायतका हाकिम बना दिया होता। अब तुझे जबानी "दादखाह" बनाता हूँ। जब एक पन्ना कागज मिलेगा तो इस पदकी यारलिक (सनद) दे दूँगा—यह कहकर उसे एक पुराने नौकरके साथ रवाना किया।

अन्न ढूंढनेवाले जैसे ही आँखोंसे ओझल हुए, कि इब्राहीमके दिलमे हौल होने लगा "हाय, क्या किया ? हाय, क्या किया ? क्यों मैंने एक नवागत अपरीक्षित आदमीको इस कामके लिये भेजा ? क्या जाने, विश्वासघात करके मुझे पकड़वा दे"। इसके बाद पहाड़की एक ऊँची शिलापर बैठ दूरबीनसे वह देखने लगा। हरेक पत्थर और हरेक काली चीज लाल-सैनिक या स्थानीय स्वय सेवक-सी दिखाई पड़ने लगी। भविष्यको अन्धकारपूर्ण देखकर दिल काँपने लगा। "घटनाकी दवा समयसे पहले करनी चाहिये" कहते वह अपनी जगहसे उठा। उसने अपनी औरतोको डेरेसे दूर ले जाकर उस जगह छिपाया, जहाँ पिछले साल "लाल लट्ठदारो"के स्त्री-बच्चोंको पहरेके अन्दर रख भूखों मरवाया था। फिर वह उसी जगह आकर दूरबीनसे देखने लगा।

×

सरसरककी सैनिक चौकीमे लोगोंको सन्देह होने लगा था, कि क्यों दाखुन्दाका कोई पता नहीं ! यदि जिन्दा होता तो अब तक जरूर लौट आता। उसे गुम हुए एक सप्ताह हो गया, किन्तु कोई नही जानता कि कहाँ है। शायद उसके शिरपर कोई आफत आई।

—बंदूकके साथ गया था या बे-बन्दूक ?

—गैरू बेककी ग्यारह गोलियोवाली बदूक उसके पास है। गैरूके कत्ल होनेपर उसने वह बदूक विजय-धनके तौरपर पाई थी।

यह बातचीत अभी चल ही रही थी, कि दूरसे एक प्यादा आता दिखाई पड़ा। सबकी आँखे उधर लग गईं। दूरबीनसे देखकर एकने कहा—स्वय दाखुन्दा है, उसके हाथमे दो बन्दूके हैं।

प्यादा चौकीमें पहुँच गया। वह सचमुच दाखुन्दा था।

—क्या खबर ? क्यों देरसे आया ?

—यह बदूक कहाँसे मिली ?

—उसका पता मिला या नहीं ?

चारों तरफसे सवालोंकी बौछार होने लगी। लेकिन सबका जवाब दाखुन्दाने इतना ही दिया :

—पता मिला। मैने भागना पसन्द नही किया। आज बहाना करके लौटा। उसने एक आदमी मेरे साथ कर दिया था, जिसे खत्मकर यह बंदूक हाथ लगी। देर करनेके लिये ज़रा भी समय नहीं, तैयार हो जाओ।

दश मिनटके अदर तैयार हो लाल-सेनाके सैनिक और स्वयंसेवक चल पड़े। आगे-आगे दाखुन्दा गाता जा रहा था :

"पत्थरके पीछे पत्थर आया
दाखुन्दा लड़नेको आया"...

दस्ता पहाड़की जड़में पहुँचा। इब्राहीमको अपना सन्देह सच्चा मालूम हुआ और वह जलालताग पहाड़की ओर भागा। वहाँ बारह दिन छिपे रहकर उसने फिर अपने एक घोड़ेको मारकर खाया। दस्ता वहाँ भी पहुँचा। इब्राहीम वहाँसे भाग वेशआर्ग़, फिर भागकर सरचश्मा गया। वहाँके लोगोंसे चीजे माँगी, लेकिन किसीने कुछ नहीं दिया। अभी वह कुछ करनेकी सोच ही रहा था, कि पीछा करनेवाला दस्ता फिर समीप आता दिखाई पड़ा। जल्दीसे भागकर वेशकप्पा गया और जून १९२६के अन्तमे अपने छब्बीस अनुयायियोंके साथ नगे पैर नदीमें कूदा। अफगानिस्तानकी ओरसे चली गोलियोंने पाँचका काम तमाम किया और स्वयं इब्राहीमने अपने इक्कीस नौकरोंके साथ अफगानिस्तान भागकर जान बचाई।

—:०:—

पंचम खंड

ताजिक कमकरोंका प्रजातंत्र

(१९२६-३०)

१

चटाईके नीचे बिच्छू

दिसम्बर १६२६मे दोशम्बा बहुत अच्छी तरह सजाया गया था। शहर हर तरफ दर्पणकी तरह स्वच्छ था। कूचोंमे रग-बिरगे कागजोंकी फूल-पत्तियाँ लगाई गई थी और जगह-जगह हरे पत्तोंवाले दरवाजे बनाये गये थे। कपडेके टुकड़ोंपर "जिन्दाबाद स्वतत्र ताजिकिस्तानके मजदूरों-किसानों-सिपाहियोंके प्रजातत्रका प्रथम सम्मेलन", "जिन्दाबाद ताजिकिस्तानके स्वामी"के नारे चमकीले अक्षरोमें लिखकर दरवाजो, दीवारों, कार्यालयों और सड़कोंपर लटकाये हुए थे। निजी घरोंके दरवाजे और छतें भी लाल झडेसे सूनी न थी। सड़के और गलियाँ आने-जानेवालोंसे भरी थीं। लाल चायखानोंमें रबाब, तम्बूर, दोतारा और दुम्बककी झकारसे जोश उमड़ रहा था। क्लबोंमे प्रथम सम्मेलनके सम्बन्धमे व्याख्यान हो रहे थे। लोग वक्ताओंका स्वागत तालियोकी गड़गड़ाहटसे कर रहे थे। सिनेमाघर "लाल मस्को"के दृश्यों और सोवियत-देश-बन्धुओंकी प्रतिगामियोंके साथकी लड़ाइयाँ दिखला दर्शकोंके सामने शिक्षा-जनक मनोरजन पेश कर रहे थे। रेडियोके भोंपे दुनियाके दूर-दूर कोनोंके सगीत कल तक घासकी चपली पहननेवाले पहाड़ियोंका सुना रहे थे। गैसके लम्प रातको भगा और बिजलीके प्रदीप अँधेरेको जला रहे थे।

यह रात-दिनसे भी अधिक प्रकाशमान थी। दाखुन्दा और गुलनार हाथ मिलाये एक दूसरेको सहारा देते एक बजे रात तक शहरमे चक्कर लगाते रहे, फिर अपने वासस्थानमें लौटे। उनका वासस्थान एक

बेमालिकका घर था, जिसे बसमाचियोंके ध्वसके बाद दरवाजा-खिड़कियाँ लगाकर उन्होंने रहनेके लायक बना लिया था। दाखुन्दाने गुलनारके हाथसे अपना हाथ खींचकर जेबसे कुजी निकाल किवाड़ खोला और दियासलाईसे लालटेन जलाई। बक्सों और सामानसे खाली कमरा अर्ध-यूरोपीय जैसा मालूम हो रहा था, लेकिन फर्शकी जगह अब भी चटाई बिछी थी। कमरेकी एक तरफ लकड़ीका एक बड़ा पलग था, जिसपर सादा साफ तकिया और बिस्तरेपर लिहाफ पड़ा था।

दाखुन्दाने लालटेनको चारपाईके पास रक्खी कुर्सीपर रख दिया। बहुत थके होनेसे दोनो पोशाक उतारे बिना ही पैरोको नीचे लटका पलगके किनारे बैठ गये। गुलनार अपने एक हाथमे उसका हाथ पकड़, दूसरे हाथको पीठ-पीछेसे उसके बगलमे लगा, सिर उसके सीनेपर रख अर्ध निमीलित तद्रिल दृष्टिको भूमिपर गड़ाये विचारोंमें निमग्न हो गई। दाखुन्दा भी सामनेके कोनेपर नजर डाले विचारमग्न था।

गुलनारने थोड़ी देर बाद अपनी आँखें खोली, लेकिन सिरको उसके सीनेसे हटाये बिना ही घरकी चीजोपर नजर दौड़ाते चटाईकी एक एक पत्तीको देखते बोली—सिनेमामे कैसे खुले और उद्यान-सज्जित घर देखे? उस तरहके घर रहनेको कहाँ मिलेगे?

दाखुन्दाने जवाब देनेमे देर न की—बाबाओंने कहा है "खाना ताजा रहे, दिल ताजा रहे" दूसरे यह कि अभी..

"बाय, साँप तो नही!" चिल्लाकर बोलती गुलनारने दाखुन्दाकी बातको बीचमें ही काट दिया। दाखुन्दा एक छलाँगमे वहाँ पहुँचा। सचमुच साँप था। साँप भागना चाहता था, किन्तु कड़ी सर्दीमे दूर न भाग चटाईके नीचे छिपने गया। वह अपने आधासे अधिक शरीरको अन्दर कर पाया था कि दाखुन्दाने अपने बूटसे साँपके सिरकी जगह चटाईपर दो-तीन बार जोरसे मारकर खूब रगड़ा। साँप कुछ क्षण अपनी पूँछ हिलाता छल्ले बनाता अन्तमे ठडा पड़ गया। दाखुन्दा एक हाथसे उसकी पूँछ पकड़ दूसरे हाथसे



चटाई के नीचे बिच्छू !

चटाईको हटा साँपको अलग करना चाहता था। इसी समय वहाँ एक दूसरा प्राणी दिखलाई पड़ा, जो बड़ी तेजीसे जमीनपर रेंग रहा था। दाखुन्दाने ऊँची आवाजमे कहा—गुलनार, लालटेनको और आगे ला।

गुलनार साँपके डरसे अपनेको पलगपर खींच गुमसुम पड़ गई थी। किन्तु यादगारको परेशान-सा देख प्रेमकी बलिदानी भावनासे प्रेरित हो झटपट उठ पड़ी और लालटेन उठाकर उसके पास दौड़ी। दाखुन्दाने देखा कि उस प्राणीका कहीं पता नहीं। गुलनारके भयको दूर करते यादगारने कहा—डर नही, साँपको मैने कुचल दिया।—इसके बाद मृत-मर्दित साँपको द्वारके बाहर ले जाकर रख दिया और फिर कहा—साँपको तो कुचल दिया लेकिन जान पडता है, चटाईके नीचे बिच्छू है।

गुलनार लालटेन दिखाने लगी और यादगार घरके फर्शको हर तरफ देखने लगा। दाखुन्दाका सन्देह सच निकला। एक बड़ी पूँछवाला हरा बिच्छू घरमे जोरसे दौड़ते एक कोनेमे मिट्टीमे सिर डालकर छिपने जा रहा था। लेकिन छिपनेसे पहले ही उसे दाखुन्दाने अपने बूटसे पीस दिया। फिर चटाईको अपनी जगहपर रखकर पलगपर बैठा। कुछ रुककर गुलनारसे उसने कहा—ये साँप और बिच्छू हमको कुछ सिखला रहे हैं। आज पहला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। मै आदिसे अन्त तक वहाँ उपस्थित रहा। सभी भाषण मैंने ध्यानपूर्वक सुने। व्याख्यानोका अभिप्राय यही था, कि हमने साँप जैसे बसमाचियोको नेस्तनाबूद कर दिया, लेकिन वह गिरोह—जिनके प्रतिनिधि यह बसमाची थे—अब भी मौजूद हैं और बिच्छूकी तरह चटाईके नीचे-नीचे आँखोसे ओझल रह, डक मार, हमारी प्रगतिमें पग-पगपर रुकावट डाल रहा है। हमे चटाईके अदर दुबके हुए इन बिच्छुओंको चुन-चुनकर खत्म करना होगा, जिसमे समाजवादी व्यवस्था एव देशके नवनिर्माण करनेमे हम सफल हों।

क्षण भर चुप रह दाखुन्दा फिर बोलने लगा—गुलनार! तू हमारे घरकी अकिंचनताकी शिकायत कर रही थी। मैं कहना चाहता था कि एक

घरको बसाना और स्वतन्त्र करना बहुत आसान है, किन्तु हमारा व्यय इतना छोटा नहीं। जैसा कि सम्मेलनमे स्वीकृत हुआ, हमें चाहिये कि मुल्कको आबाद करनेमे बाधा डालनेवाले सभी शत्रुओंका खात्मा करे; अपने देशको स्वतन्त्र और सुखी जीवन-सामग्री-सम्पन्न घरकी भाँति नये सिरेसे निर्मित करे, तब उस विराट् गृहके एक व्यक्तिकी तरह मै और तू भी सुख-सुविधाका जीवन बितायेंगे। किन्तु इसके लिये हममेसे प्रत्येकको सदा एक निश्चित क्रमसे काम करना होगा। कामको सीखना, पढना और याद करना होगा। यही कारण है, जो कि हमारी सरकारने एक तरफ निर्माणके बडे-बड़े कार्य आरभ किये हैं, और दूसरी तरफ वह तरुण नर-नारियोको मस्को और ताशकन्द जैसे महानगरोके महाविद्यालयोंमे शिक्षा प्राप्तिके लिये भेज रही है। यदि तू भी राजी हो, तो हम दोनों साथ चल दो-एक साल वहाँ विद्या सीखे, जिसमे लौटकर अपने घर—देश—का नये ढगसे निर्माण करनेमे होशियारीके साथ हाथ बटाये।

—मै तो अक्षर भी नही जानती। बड़े विद्यालयोंमे जाकर क्या लूँगी?—गुलनारने कहा।

—यह कमी छः महीनेमे पूरी की जा सकती है। यदि चाहे तो छः महीनेमे अच्छी तरह साक्षर हो सकती है। मुझे ही नहीं देखती, क्रान्तिके आरम्भमे लिखना-पढना आरम्भ किया। बसमाचियोंके साथ लड़ते-भिड़ते समय पढनेका मौका कम ही मिला, और इधर जब मुल्कको कुछ आराम मिला और हमे भी, तो मैंने कोशिश करके अपने ज्ञानको कुछ बढाया। अब मै हाई स्कूलमे दाखिल हो सकता हूँ। लेकिन हमारा ज्ञान अभी बहुत कम है। याद रख, बसमाचियोंकी बरबादियों और युगोंसे चली आई कमियोंको दूर करनेके लिये बहुत अधिक परिश्रम, बहुत अधिक विद्या और बहुत अधिक हुनरकी ज़रूरत है।

—बसमाचियोंके जमानेमे देशकी बहुत अधिक क्षति हुई है न!

—हमारा ताजिकिस्तान क्रान्तिसे पहले भी उतना आबाद न था। जो

भी आमदनी होती, वह अमीर, अमलदारों, मुल्लों, ईशानों (पीरों), जागीरदारों और चारबागदारों (मेवा बागके मालिकों)के पेटमे चली जाती। बेचारे गरीब किसानों, चारयक्कार-पचयक्कारों (बटाईदारों) मजूरों और चरवाहोंके भाग्यमे था मर-मरके काम करना। जो लोग सिर्फ अपने व्यक्तिगत लाभको ही सामने रखते थे, वह देशको आबाद करनेकी कोशिश भला क्यों करने लगे ? बसमाचियोंके प्रादुर्भावके बाद स्थिति और भी विषम हो गई।

दाखुन्दाने बगलसे कागज निकालकर देखते हुए कहा—सम्मेलनमें सरकारने जो हिसाब पेश किया, उसके अनुसार मेवोंके बाग आधे रह गये। ऊपरसे नहरे तबाह, खेत परती और गाँव उजाड़ हो चुके हैं। वस्तुतः इस गाँवसे उस गाँव और इस दर्रासे उस दर्रा तक लोग सिर्फ गर्मीकी फसलोंको लकड़ी और कुदालकी मददसे बोते थे। बसमाचियोंके जमानेमे वह भी बिल्कुल चौपट हो गया। देशके बहुसख्यक गरीबोंके घरोंमे कपडेका टुकड़ा, कटोरा या थाली भी नहीं रह गई है। यदि गाँवमे एक मुँहटूटी देग है, तो गाँवके सारे लोग अपनेको भाग्यशाली समझकर उससे लाभ उठाते हैं। तू खुद ही हिसाब करे तो समझ सकती है, कि बसमाचियोंने कितना सत्यानाश किया है। बसमाचीगर्दी प्रायः छ साल तक रही है, जिसमे कभी-कभी उनकी सख्या तीस हजार तक पहुँच गई थी। उन्होंने एक तरफ तो मुल्कको जलाया—बर्बाद किया और दूसरी तरफ लूटकर धनको अपने ऐशो-आराममे खर्च किया। फिर उसी लूटमेसे अमीरको भेजा, गोली और बन्दूकके लिये अग्रेजोंके पास भी भेजा। इस तबाहीका हिसाब करनेपर सारी हानि एक अरब रूबलसे भी अधिक हुई। इन तबाहियों और खर्चोंसे हमारा ताजिकिस्तान—जिसमे आठ लाख आदमी रहते हैं—किस दशामे पहुँच गया है और इसे आबाद करनेके लिये कितने धन और श्रमकी आवश्यकता है, यह अच्छा तरह समझा जा सकता है। इन सारी बातोंपर विचार करके अब हमे हिम्मतके साथ कमर बाँधकर मेहनत करनेमे लग जाना है।

२

रेलगाड़ी

तिर्मिज़से दोशम्बाकी ओर आग-गाड़ी (रेल) बड़ी शान-शौकतसे चल रही थी। धीरे-धीरे विशाल मैदान सिकुड़ने लगा। हवासे बातें करनेवाले आगके घोडेकी घनघनाहटसे पर्वत क्रन्दन करनेके लिये तैयार हो गये। संस्कृतिके इस कारवॉकी दौड़के लिये वन-पर्वत एक समान थे। उसके जानेके लिये दर्रा और बयाबान हाथकी हथेलीकी तरह समतल थे। आरे! यह कमकरोके शक्तिशाली हाथ थे, जिन्होने गहरे दर्राको पाट, ऊँचे पहाड़ोको छेद और काटकर मानवताके आगे बढनेका पथ प्रशस्त किया। इस पर्वत, इस जोतमे—जो चद साल पहले बर्बर बसमाचियोके आखेट-स्थान थे—सभ्यताने कदम बढाया और उसने वे खूनी घटनाएँ इतिहासके पृष्ठोको सौप दी, जो कि अब सिर्फ प्रत्यक्ष-दर्शियोको भयानक स्वप्नकी तरह याद आती है।

—यह वही दर्रा है, जहॉ अब्दुल्ला दादख़ाहके दस्तेके साथ एक सप्ताह लड़ते अपने चंद तरुण साथियोकी बलि दे हमने उसे मार भगाया।

—यह वही पर्वतकटि है, जहॉ कुमक पहुँचने तक मोर्चा बॉधकर हमने मुल्ला अहमदबी कूरबाशीका मुकाबला किया।

—यह वही चोटी है, जहॉ बैठे बसमाचियोंने हमपर गोलियॉ चलाई। हम चट्टानोंको ढाल बनाये एक-एक पग ऊपरकी ओर बढे और अन्तमे बसमाचियोने हार खाई। उनमेसे कितने ही चोटीसे गिरकर चकनाचूर हो गये, कितने ही हमारी सगीनो और तलवारोंके घाट उतरे। बहुत थोड़े ही भागकर जिन्दा बचे, किन्तु हथियार दे आत्म-समर्पणके अतिरिक्त उनके लिये और कोई रास्ता नही रह गया।

—ओ! धुएँकी चिमनीवाले इन सफेद मकानोंकी पाँतीको देखा!

इनकी चारों ओर कपासके खेत फैले पड़े हैं और एक ओर हरा नया बगीचा। ओः! शाखा-विहीन इस वृक्षकी तरफ भी देखो। यहाँ पहले एक गाँव बसता था, लाल सेनाको रास्ता बतानेके अपराधमें बसमाचियोंने समूचे गाँवको जला दिया। नर-नारी, बालक-बूढ़ा, छोटा-बड़ा जो भी हाथ आया, सबका कत्ल किया। बसमाचियोका अंत होने पर यहाँ कपासकी खेतीका कल्खोज़ (पचायती खेती) स्थापित हुआ। उन नई इमारतोंको देख रहे हो? यह स्कूल, क्लब, वाचनालय और मशीनघर हैं। लोगोंने अपनेको नये सिद्धान्तोंके अनुसार सगठित किया है। सब एक साथ काम करते हैं और अपने परिश्रमके फलको अपने कामके अनुसार बाँट लेते हैं। अब उस मारामारी जलाजलीका यहाँ कोई प्रभाव नहीं रह गया। उस समयका चिह्न सिर्फ यह ठूँठा पेड़ है जिसने उस आगमे अपने शाखा-पत्रोको जलाया और जो सन्तापपूर्ण उस विगत युगका स्मृति-चिह्न बन आनेवालोके लिये शिक्षा-स्तम्भका काम करता है।

ट्रेनके मुसाफिरोमेसे कितने ही अपने सिरको खिड़कीसे बाहर करके इस तरहकी बाते कर रहे थे।

ट्रेन दौड़ रही थी। मैदान और दर्रा पीछे छूट गये थे। आँखोके सामने मनोरम दृश्य घूम रहा था। हर तरफ सुन्दर चित्ताकर्षक खेतियाँ थी। हर स्टेशन पर कुछ लोग उतरते और कुछ सवार होते। ट्रेन मानवताकी सवारीकी तरह दुनियाकी सैर करने निकली थी। एक स्टेशन पर यूरोपीय पोशाक पहने मध्यवयस्क दो स्त्री-पुरुष उतरे। स्त्रीने कहा—यदि अदाज करनेमे तूने गलती की है, तो हमारा सारा श्रम व्यर्थ जायगा।

—खातिर जमा रह, मेरा अंदाज गलत न होगा। मै इस जगहके चप्पे-चप्पेको जानता हूँ।

—अच्छा, यदि ऐसा है तो चल जल्दी टिकान पर पहुँच जायँ।

मर्दके हाथमें एक छोटा सूटकेस था और स्त्रीके हाथमें स्त्रियोंका हैंडबैग। दोनो पैदल चलते चद मिनटोमे स्टेशनसे दूर हो गये।

३

दर्रा-अपरिचित

—मेरे अदाजके अनुसार दर्रानिहॉसे निकलनेकी जगह यही होनी चाहिये, किन्तु यह जगह बिलकुल उस जगह-सी मालूम नहीं होती, जिसे मैने बीस साल पहले देखा था, और फिर बसमाचियोंसे लड़ते वक्त अनेक बार यहॉ आकर यहाँके एक-एक पत्थरको गिना था···यह कहकर ट्रेनसे उतरे पुरुषने स्त्रीसे आश्चर्य प्रगट किया।

—मैने कहा नहीं, यदि अन्दाज करने मे गलती की है, तो हमारा सारा श्रम व्यर्थ होगा—कहते स्त्रीने चुटकी ली।

—नही, गलती नहीं हो सकती। मुझे विश्वास है कि दर्रानिहॉका रास्ता यही था। किन्तु आश्चर्य मुझे इस बातका हो रहा है, कि चिह्न क्यों इतने बदल गये?

—सभव है, चिह्नोको तू भूल गया।

—नहीं गुलनार! हर बातको भूलना सभव है, परन्तु दर्रानिहॉको नही। मेरा सौभाग्य भी और दुर्भाग्य भी यहीसे आरम्भ हुआ। जब मै अजीमशाहके हाथसे निकलकर भागा, तो दर्रानिहॉ मेरा शरणदाता हुआ। यही तेरा प्रेम पाया। यही अलीमर्दाके हाथों गिरफ्तार हुआ और अन्तमे बसमाचियोके साथ लड़ते यहीसे लगे बाबातागपर अलीमर्दा का काम तमाम किया। भला कैसे हो सकता है, कि चद सालोमे इन सारे चिह्नोको भूल जाऊँ?

मर्द यानी दाखुदाने पोर्टफोल खोल एक कागज निकाल उसे देखते हुए कहा—स्कूलमे भूगोल पढते वक्त मैंने स्मृतिसे दर्रानिहॉके चिह्नोको नक्शे पर उतारा था, यह वही नक्शा है। इसके अनुसार दरानिहॉको

यहीं होना चाहिये। किन्तु नक्शे पर मैंने जिन चिह्नोंको बनाया था, वह यहां नहीं हैं। सबसे बड़ा चिह्न जो बदल चुका है, वह है वह पुराना रास्ता। दर्रानिहॉका रास्ता बहुत घूम-घुमौआ था। कुछ स्थान तो ऐसे थे, जिनसे पार होते दिल काँपता था। अब हम यहाँ मोटरकी बड़ी सड़क देख रहे हैं। अच्छा, चले, आगे मालूम होके रहेगा।

दाखुदा पोर्टफोल बगलमें दाबे अपने साथीके साथ आगे-आगे चला। अभी पाँच सौ कदम भी वह आगे नहीं बढे थे, कि एक बड़ी चट्टानको देखकर दाखुन्दा खुश हुआ और बोला—जो भी हो, एक चिह्न तो दिखलाई पड़ा! यह वही चट्टान है जिसपर अजीमशाहके हाथसे भागने पर मै पहली बार सुखकी नींद सोया था। अलीमर्दा और अब्दुल्ला दादखाहके दस्तोंका ध्वस करनेके बाद भी इसी चट्टान पर बैठकर मैंने साथियोंके साथ रोटी खाई थी। लेकिन उस वक्त इस चट्टानके पाससे नाला गुजरता था, और अब देख रहा हूँ, मोटरकी सड़क। अभी-अभी यहॉ से मोटर गई है, देख, उसके पहियोंकी छाप यहॉ मौजूद है—कहते दाखुन्दाने उसे गुलनारको दिखलाया।

उस ऐतिहासिक चट्टान पर कुछ देर आराम कर चुकने पर दोनों फिर आगे चले, लेकिन जितने कदम आगे बढते, उतना ही उनका विस्मय भी बढता जाता। वहॉ रास्ता ही अच्छा न था, बल्कि स्वेच्छाचारी चश्मे और नदीके पानीको एक जगह बड़ी झीलके रूपमे जमाकर फिर उससे एक बड़ी नहर निकाली गई थी, जिसके लिये पत्थरके बॉध, पाये और दीवारे तैयार की गई थीं। फिर उससे छोटी-छोटी नहरे निकालकर उन्हें खेतो और बागों तक पहुँचाया गया था। दर्रामे एक टुकड़ा भी कामकी जमीन परती और बेकार न थी। अनाजके खेतोके बीच-बीचमे कपासके बड़े-बड़े खेत थे।

—मैने शायद अपने अदाजमे गलतीकी हो—दाखुन्दाने गुलनारसे

कहा—किन्तु ताजिकिस्तानमे ऐसी कितनी ही जगहें थीं, जो इन चन्द सालोंमें नई हो गई हैं।

धीरे-धीरे गुलनारने दाखुन्दाकी दलीलोंको मान लिया और उसे विश्वास हुआ, कि यह वही दर्रानिहाँ है, यद्यपि उसकी कायापलट हो गई है और वह एक दर्रा-अपरिचित सा लगता है। दोनों यात्री नज़ारा देखते आगे बढे। आगे उन्होंने एक जवानको घास काटते देखा, किन्तु यह घास जंगली नही बल्कि पाँतीसे लगाई घास थी। दाखुन्दाने जवानसे पूछा—यह कौन सी घास है?

जवानने उठकर पहले पूछनेवालेको सिरसे पैर तक देखा और फिर जवाब दिया—जान पड़ता है, तुम यहाँके नही हो। यदि यहाँके होते तो तूत (वृक्ष)को घास न बताते।

दाखुन्दाने जवानके मज़ाकका जवाब न दे सिर्फ इतना पूछा—तो फिर क्यों इन्हें घासकी तरह लगाया गया?

—दो साल हुए, हमारे गाँवमे नमूनेके तौर पर रेशमका कीड़ा पालनेका फार्म खुला, विशेषज्ञोंकी सम्मतिके अनुसार हमने तूतको पौधेके रूपमें उगाना शुरू किया। हर साल हम इन बूटोंके पत्ते कीड़ोंको खिलाते हैं। दो सालके अनुभवसे मालूम हुआ कि कीड़े बड़े वृक्षोके पत्तोंकी अपेक्षा इन पत्तोको अधिक चावसे खाते हैं। दूसरा लाभ यह है, कि तूतको इस तरह लगानेके लिये कम जमीनकी जरूरत होती है।

दाखुन्दाने धीरेसे गुलनारके कानोंमे कहा—जान पड़ता है, गाँव अब मुल्लोंके मकतबसे बहुत आगे बढ गया है। हमने तीन साल हाई स्कूलमे शिक्षा पाई और इन विषयों पर कुछ-कुछ पढ़ा भी और यहाँ देख रही हो गाँवके इस जवानको? मालूम नही, कुछ पढा-लिखा भी है या नहीं, परन्तु कृमि-पालन तथा तूतकी खेतीके बारेमे यह हमसे अधिक जानता है। हमारी हालत यह है कि घास और तूतके पौधोंमें अन्तर नहीं कर सके।

दाखुन्दाने जवानसे फिर पूछा—यहाँ नजदीकमें खाने-पीनेकी कोई जगह है ?

—करीब हजार कदम आगे जाने पर तुम्हारे सामने स्कूल, लाल चायखाना और क्लबकी इमारत आयेगी। वहाँ चाहे आराम करो, खाना खाओ, सोओ या पढो—कहकर जवान अपने काममें लग गया।

यात्री आगे रवाना हुए। पीछेसे घोड़ेकी टापोकी आवाज सुनाई दी। वह सड़ककी एक तरफ हो गये। देखा, सवार आ रहा है। सवारने पास आकर यात्रियोकी तरफ नजर किये बिना जवानसे पूछा—काहे इतना हैरान हो रहा है सगीनजादा ? कीड़ोके कोयोसे घरको रेशमसे भर देना चाहता है क्या ?—सवारने जवानको बोलनेका मौका न दे सूखी हँसी हँसते कहा—कीड़ा पोस कर बाप-दादोके रयाजको तो तोड़ फेका ही, अब नामको भी बदलकर सगीनजादा बन गया ! तो, फिर अब भी क्यो कलखोज (पचायती खेती) मे शामिल नहीं होता ?

—मालिक ! कहावत है "लैलीकी बारी गई अब मजनूँकी आई" तुम्हारे जमानेमें जो कुछ तुम चाहते थे, करते थे। अब हमारी पारी है। कीड़े पालते हैं, अपना नाम बदलते हैं, कलखोजमें भी शामिल होगे। तुम्हारे परिहाससे हम अपना पथ नहीं छोड़ेगे।

—अच्छा, जो चाहो करो—कहते सवार घोड़ा दौड़ाते मुसाफिरोके सामनेसे निकल गया।

—यह कौन आदमी हो सकता है ?—गुलनारने दाखुन्दासे पूछा।

—मै भी नही पहचानता। हो सकता है, गाँवके सीनाज़ोरों ज़ालिमोंमेंसे हो। बातचीतसे मालूम होता है, कि गाँवमें वर्गसघर्ष चल रहा है।

—अभी भी हमराह बाय ज़िन्दा हैं क्या ?

—वह तेरे माँ-बापके मरते वक्त मर गया था। लाल सेनाके साथ जब मै यहाँ आया था, तो पूछ-ताछ की थी। एक बूढेने बतलाया था, कि उन तीनोंको एक ही महीनेमें दफनाया गया था। उससे मालूम हुआ कि उसका लड़का जिन्दा है।

माँ-बापके मरनेकी खबरसे गुलनारका चेहरा कुछ उदास हो गया, जिसका प्रभाव यादगार पर भी पड़ा और कुछ देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे।

४

स्कूल

एक सफेद इमारत थी, जिस पर लगी तख्ती बतला रही थी, कि वह स्कूल है। उसके सामने थोड़ी जगहमे गुलाबकी जगह कपास लगाये हुए थे। वहाँ एक पचीस-साला जवान कितने ही बच्चोको लिये उन्हें कपासकी खेतीके बारेमें समझा रहा था। दो मुसाफिरोंको आया देख जवानने बच्चोको बिदाकर "इस स्कूलका अध्यापक फ ज़ादा" कहते उनकी तरफ हाथ बढ़ाया। मुसाफिरोंमेंसे भी एकने "ताजिक विद्यार्थी यादगार बाजारज़ादा" और दूसरेने "गुलनार रुस्तमज़ादा" कहकर हाथ मिलाया। कुशल-प्रश्नके बाद दाखुन्दाने अध्यापकसे पूछा—क्या इस कपासको खुद बोया है?

—हाँ, यह मिस्री कपास है। कृषि-विशेषज्ञ ने कहा था, कि हमारे देश जैसे स्थानमें जहाँ वसन्त समय पर आरम्भ होता है और मौसिम गरम हो जाता है, मिस्री कपास अच्छी होगी। मैने यहाँके अग्रोनोम (कृषि-परामर्शदाता) की सलाहसे इस थोड़ी-सी जमीनमें मिस्री कपास बोई है। देख रहे हैं न, कैसी अच्छी फसल है!

—बहुत अच्छी। आपने स्कूलको कामका स्कूल बना दिया, शाबाश!

यदि छुट्टी हो तो लाल चायखाना तक हमारा पथ-प्रदर्शन कीजिये। वहाँ बैठकर थोड़ी देर बात करेंगे—दाखुन्दाने कहा।

"बहुत अच्छा" कहकर अध्यापक उन्हें साथ लिये लाल चायखानामें पहुँचा। तीनों मेजपर बैठे चाय पीते बात करने लगे।

—हमारे ताजिकिस्तानमे कितने स्कूल खुले हैं?—दाखुन्दाने पूछा।

—आपको मालूम है न, कि अमीरके जमानेमे स्कूल नामकी कोई चीज न थी। किन्ही-किन्हीं मसजिदोमें धार्मिक-मकतब थे भी, तो उनमें दसमेंसे नौ बच्चोंके लिये जानेका रास्ता न था और जानेवाले सौमेसे एक आदमी दस साल तक छड़ी-थप्पड़ खाते कठमुल्ला बनके निकलता; बाकी सभी अनपढ बने रहते। इसलिये उस जमानेमे सौमेसे एक ताजिक भी मुश्किलसे लिख-पढ़ सकता था। पहलेके बुखारा प्रजातन्त्रके जमानेमे और बसमाचियोंके जमानेमे भी स्कूलके लिये काम करना सम्भव न था। वस्तुतः यह काम १९२५से आरम्भ हुआ, जब कि स्वायत्त ताजिकिस्तान प्रजातन्त्र स्थापित हुआ। बसमाची बरबाद हुए और आर्थिक अवस्था सुधारनेका काम प्रारम्भ हुआ। यद्यपि आरम्भमे सड़क न थी, सामान न थे, अध्यापक न थे, किन्तु पिछले तीन सालोंमे स्कूलका काम बहुत आगे बढ़ा। एक ओर अल्प-समयके पाठ्यक्रमके अनुसार अध्यापक तैयार किये जाने लगे और दूसरी ओर स्कूल खुलने लगे। ताजिकिस्तानमे अब सैकड़ों स्कूल खुल गये हैं, जिनमें अब हजारों विद्यार्थी पढते हैं। अगले साल और भी स्कूल और विद्यार्थी हो जायेगे। हजारसे अधिक हमारे अच्छे-अच्छे ताजिक जवान इस समय मस्को, ताशकन्द और समरकन्दके बड़े-बड़े विद्यालयोंमे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। निरक्षरता दूर करनेका भी काम शुरू हुआ है और वयस्कोंके पढानेके लिये सैकड़ों क्लासे लग रही हैं। इन अन्तिम तीन सालोंमें तीस लाख रूबल इसपर खर्च हुआ है, जो बतलाता है कि पार्टी और सरकारका

इस ओर कितना अधिक ध्यान है। पिछले दो सालोंसे ताजिकिस्तान-सरकार-प्रकाशन-कार्यालयने बहुत-सी किताबें प्रकाशित की हैं। यह भी स्कूलके कामके आगे बढ़नेका प्रमाण है। अलबत्ता, अगले साल और भी ज्यादा किताबे छपेगीं, लेकिन वर्ग-शत्रु स्कूलके काममे भी बाधा डालनेसे बाज नही आते और दीन-धर्मके नामपर कमकरोंको बहकाते हैं।

५

सड़क-निर्माण

एक सत्ताइस-साला जवान एक मध्यवयस्का स्त्रीके साथ लाल चायखानामें आया। अध्यापक फ. जादासे वह मिले। उसने उनमेंसे एकको पार्टी-मन्त्री मिसकीनजादा और दूसरेको ग्राम सोवियत् (पञ्चायत)की प्रधाना फातिमा बेगीम् कहकर उनका दाखुन्दा और गुलनारसे परिचय कराया। दाखुन्दा और गुलनारने भी "हाई स्कूलके विद्यार्थी छुट्टीके दिनोंमे विश्राम और देशकी सफलताओंको देखनेके लिये आये" कहकर अपना परिचय दिया। दाखुन्दा साधारण शिष्टाचारके अनुसार सेक्रेटरीसे मिला, किन्तु फातिमाका नाम सुनकर उससे मिलते वक्त उसके दिलमें कई तरहके विचार तरङ्गित होने लगे, जिसका प्रभाव उसके चेहरेपर पड़े बिना न रहा और वह गुलनारसे भी छिपा न रह सका। किन्तु वहाँ उसके बारेमें पूछनेका मौका न था।

"भले आये" कहकर मन्त्रीने दाखुन्दाकी विचार-शृङ्खलाको तोड़ दिया।

"अच्छी तरह तो हैं" कहते दाखुन्दाकी आँखें फिर एक बार फातिमाके ऊपर गड़ गईं।

—हाँ, तो आबाद होनेके रास्तेमें हमारे ताजिकिस्तानको कितना आगे

बढ़ा देख रहे हैं—कहकर मन्त्रीने बाध्य किया, कि दाखुन्दा और जगहोंसे विचारको हटाकर सवालका जवाब दे।

दाखुन्दाने हाथसे माथेपर गिरे बालोंको आधे सिर तक करते बात शुरू की—नये ताजिकिस्तानको अभी मैंने पूरी तरहसे नहीं देख पाया। रेलमें यहाँ तक आते जो कुछ थोड़ा-बहुत देख पाया, उसने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। जिन जगहोंको चन्द साल पहले मैंने देखा था और चप्पा-चप्पाको जानता था, उन्हें करीब करीब पहचान न सका।

—रास्तेमें कौनसा चीज ज्यादा ऐसी मालूम हुई?

—जिस चीजने हम सबसे अधिक आश्चर्यमें डाला, वह है यही रास्तेका आराम। पहले जिन पर्वतों और जोतोंको हम बड़ी मिहनतके साथ दिनों लगाकर पार होते थे, उन्हें अब चन्द घण्टोंमें बिना थकावटके पार हो जाते हैं।

—जान पड़ता है आप स्टेशनसे यहाँ तक पैदल आये हैं। अगर चाहते तो मोटर बस भी मौजूद था। सरकार सिर्फ सड़कोंको ही नहीं बनवा रही है, बल्कि इन बनी सड़कोंके लिये मोटरें और मोटर-बसें भी उसने भेजी हैं, जिसमें मुसाफिर आसानीसे एक जगहसे दूसरी जगह पहुँच जायँ। यदि आप ताजिकिस्तानकी अच्छी तरह सैर करना चाहते हैं तो मोटर-बसोंमें सैर करें। इस प्रकार थोड़े समयमें बहुत अधिक स्थानोंको देख सकेंगे। नयी नहरोंवाले प्रदेशोंको जरूर देखें। वहाँ कलखोज (पञ्चायती खेती) और सोव्-खोज (सरकारी खेती) स्थापित हुए हैं। नये ताजिकिस्तानका नमूना वहाँ देखनेको मिलेगा। इन जगहोंमें मोटर और मोटर-बसोंका यातायात भी बहुत अधिक है।

मन्त्री गरमागरम वार्तालापमें इतना तत्पर हो गया था, कि उसे चायके प्यालेका ख्याल न रहा। अध्यापकके इशारा करनेपर एक घूँटमें प्यालेको खतमकर उसने फिर बात शुरू की—अमीरके वक्तके रास्ते इस तरहके थे, कि एक गाँवके लुटनेका दूसरेको पता नहीं, यानी वह गाँवको गाँवसे, दर्रा

को दर्रेसे और शहरको इन सभीसे सम्बन्ध स्थापित करनेका मौका नहीं देते थे। उस समय देशको आगे बढाना सम्भव नहीं था। देशमें कारखानोंके माल, खेतीके सामान, सभ्यताके साधनोंको लाने और अपने मालको बाहर भेजने, कारखानों और स्कूलोंको खोलनेके लिये बड़े रास्तोंकी बड़ी जरूरत थी। हम देशको एक परिवारकी तरह ऊपर ले जाना चाहते हैं, समाजवादी सिद्धान्तके अनुसार नये समाजका निर्माण करना चाहते हैं। सबसे पहले रास्तेकी जरूरत थी, इसलिये सरकारने देशको आबाद करनेके दूसरे कामोंकी तरह सड़कोंको बनानेमे भी पैसेको दिल खोलकर खर्च किया। द्वितीय सम्मेलनकी योजनाके अनुसार पिछले दो सालोंमे यात्रा और भार ढोनेके साधनोंपर साठ-लाख रूबल खर्च किया गया, लेकिन अभी यह कार्यका आरम्भ ही भर है। आगे चलकर हमें देशके सारे रास्तोंको फिरसे नये तौरसे बनाना है, जिसमें ताजिकिस्तानकी भूमिके ऊपर और भीतरके खजानोंसे ताजिक-कमकर पूरी तौरसे फायदा उठा सके।

—हम नयी नहरोवाले इलाकोंको देखना चाहते हैं—दाखुन्दाने पूछा—इसके लिये कहाँ और कब मोटर मिल सकती है?

—इसी जगहमे सप्ताहमें तीन-बार मोटर-बसें गुजरती हैं। यदि आप काफिरनिहाँके किनारे जाना चाहें, तो हर रोज बस मिल सकती है। लेकिन अभी आप एक-दो दिन हमारे अतिथि रहें और राहकी थकावटको दूर करें, फिर दूसरी जगह जाइयेगा—मन्त्रीने कहा।

"फिर बात करेंगे" कहकर मन्त्रीने फातिमाके साथ उठकर दो कदम हट सलाह किया और फिर आकर कहा—हमारी इच्छा है, कि अपने प्रिय अतिथिके लिये ग्राम-सोवियत्की एक साधारण सभा बुलायें, जिसमें ताजिकिस्तानके आबाद करनेके बारेमें भाषण हो। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि शामको पाँच बजे गाँवके क्लबघरमें पधारें।

अतिथियोंने मन्त्रीकी बात स्वीकार की। मिसकीनजादा और फातिमा-बेगीम् चले गये, लेकिन अब भी दाखुन्दा मध्यवयस्का महिलाके बारेमें बहुत

सोच रहा था। गुलनार और अब अपनेको रोक न सकी और उसने "इस औरतको देखकर क्यों होश उड़ गया, क्या उसके साथ कोई पुरानी जान-पहचान है?" कहकर आधा परिहास और आधी गम्भीरताके साथ दाखुन्दासे पूछा।

—यह स्त्री मेरी बहुत जान-पहचानकी मालूम होती है, लेकिन बहुत सोचने पर भी मुझे याद नहीं आता कि इसे कहाँ देखा। मुझे जान पड़ता है, मैंने इस स्त्रीको एक बार नहीं अनेक बार देखा है, लेकिन कब और कहाँ यह स्मरण नहीं होता। फातिमा नाम भी बहुत सुना सा मालूम होता है।

अध्यापक जो मन्त्री और प्रधानके साथ-साथ चला गया था, लौट आया और अतिथियोंको लिये घूमने निकला।

६

आबाद गाँव

गाँवके क्लबघरमें स्त्री-पुरुषोंकी भारी भीड़ थी। फातिमा बेगीम्ने सोवियतकी ओरसे सभाका आरम्भ करते प्रिय अतिथियोंका स्वागत किया और ताजिकिस्तानके आबाद करनेके बारेमें मन्त्री मिसकीनज़ादाको बोलनेके लिये कहा।

फातिमा जिस समय बात कर रही थी, दाखुन्दाने फिर उसकी ओर ध्यानसे देखते धीरेसे गुलनारके कानोमें कहा—"मैंने इस स्त्रीको इससे पहले देखा है। किन्तु आश्चर्य है, कि देखी-सुनी किसी बातको न भूलते भी मुझे याद नहीं आता कि इसे कहाँ देखा।

—जान पड़ता है इस स्त्रीसे तेरा परिचय अधिक पक्का न हुआ था—कहकर गुलनारने फिर परिहास किया।

—गुलनार! मेरी तुझसे प्रार्थना है—इसके बाद फिर दूसरी

स्त्रियोंके सम्बन्धके बारेमे बात न कर। मैं जानता हूँ कि तू परिहासमें कह रही है, तो भी मै उसे तेरे मुँहसे नहीं सुनना चाहता।

मिसकीनजादाने भाषण आरम्भ कर दिया था। पहले बाहरी-भीतरी अवस्था सम्बन्धी दो-चार साधारण बाते कहकर वह बोलने लगा—हमारे गाँवमे जो काम हुए हैं और उनमे जो कमियाँ रह गयी हैं, उनके बारेमे मै यहाँ कुछ नहीं कहना चाहता, क्योंकि उन्हें आप सब जानते हैं और उनमेसे कुछको हमारे अतिथियोने भी देखा होगा। हो सका तो दूसरे दिन मै उनके बारेमे कहूँगा। मै यहाँ सक्षेपमे उन कामोंके बारेमे कहना चाहता हूँ, जो कि ताजिकिस्तानके आबाद करनेके सम्बन्धमे हुए हैं और हो रहे हैं।

साथियो! ताजिकिस्तानके आबाद करनेका इतिहास प्रथम सम्मेलन (कान्फ्रेन्स)से होता है। तबसे आज तक तीन सालसे कम ही समय बीता है लेकिन काम बहुतसे हुए है।

मन्त्रीने कामोका विवरण देते हुए कहा—बसमाचियोंके अत्याचार और लूटके कारण हमारे देशकी खेती सिर्फ साठ सैकड़ा रह गयी थी और बागवानी तो आधीसे भी कम। इन तीन सालोमे खेती और बागवानी यथापूर्व हो गयी। इसके अतिरिक्त पहले हमारे देशमे कपासकी खेती नाम-मात्र होती थी, वह भी बसमाचीगर्दीके जमानेमे बिल्कुल खतम हो चुकी थी और अब वह लाख एकड़से ज्यादा पर पहुँच गयी है। यह काम अपने आप नहीं हुआ है। एक ओर कमकरोने काम करनेके लिये कमर बाँधी और दूसरी ओर सरकारने खर्च करनेमे जरा भी हिचकिचाहट नहीं की। ऊपरसे उज्बकिस्तान और सारे सोवियतिस्तानके कमकरोंने सहायता दी। पिछले तीन सालोंमें पुरानी बर्बाद नहरे फिर तैयार हो गयीं। यही नहीं काफिरनिहाँ, वख्श, किज़िलशू और सूखाब नदियोंसे नई नहरे निकालनेमें भारी रकम खर्च की गयी, जिनसे लाखों एकड़ ज़मीन आबाद और सीराब हुई। खेतीके हथियार

और सामान भी बहुत भारी परिमाणमें किसानोंमें बाँटे गये। गाँवकी आर्थिक अवस्थामें बाधा पैदा करनेवालेके कारणोंको दूर करनेमें भी बहुत धन और श्रम खर्च किया गया, और गरीब किसानोंको आर्थिक मदद दी गयी। ताजिकिस्तानके कमकरोंकी अवस्था कितनी अच्छी हो गयी है, इसे जाननेके लिये इतना समझना काफी है। बसमाचियोंके युद्धसे पहले हर परिवार अपनी जरूरतकी सारी चीजोंको तैयार करता था। जो चीजें खरीदता भी था, उन्हें भी अधिकतर अदल-बदल करके। अन्तिम समय पूर्वी-बुखारा यानी आजके ताजिकिस्तानमें जो कारखानेवाला माल लाया जाता था, वह जनताके श्रम-फलको लूटनेवाले धनवानों और अमलदारोंके लिये खर्च होता था। कारखानोंका बना माल यदि कुछ कमकरोंके हाथमें आ भी जाता था, तो बादमें नकद पैसेकी जगह एक हाथसे दूसरे हाथमें होता, मालगुजारी या मोहरानाके रूपमें हाकिम और काजीके हाथोंमें चला जाता। बसमाचियोंके जमानेमें माल-असबाब नामकी कोई चीज न रह गयी था, लेकिन पिछले तीन सालोंमें करोड़ोंका कारखानोंका माल हमारे यहाँ आया और लोगोंमें बेचा गया। जनताकी आर्थिक अवस्थाके बेहतर होनेका यह अच्छा प्रमाण है।

मन्त्रीने आगे बढ़ते हुए फिर कहा—जिस समय हम मुल्कके आबाद होने तथा सुखी बनानेकी बात करते हैं, उस वक्त यह न भूलना चाहिये कि युद्धसे पहले देशकी हर एक चीज़ अमीरके अमलदारों, मुल्लों, ईशानों और दौलतमन्दोंकी मिल्कियत थी। देशकी साधारण कमकर-जनता इस मुफ्तखोर छोटेसे वर्गके लिये गुलामोंकी तरह काम करती, भूखों मरती या उससे भी बुरी अवस्थामें जीती थी, लेकिन अब देशके आबाद होनेका अर्थ है जन-साधारणके सुख और समृद्धिकी वृद्धि। आज हर कामकी सफलता साधारण कमकर जनताके लाभके लिये है। दिन-प्रतिदिन अपने कामोंको पचायती या साझेका बनानेकी ओर कमकरोंकी रुचि बढ़ती जा रही है। इसका एक उदाहरण पंचायती कारीगरी है। इन तीन सालोंमें

गाँवमें सैकड़ो पञ्चायती-हस्तशिल्प स्थापित हुए हैं, जिनके हजारों मेम्बर अब सू-खोरो और बायोंके हाथोंसे स्वतन्त्र हैं।

और आगे बोलते हुए—देशको समाजवादी और पञ्चायती बनानेके लिये एक बड़ा पग है कल-खोज (पञ्चायती खेती) सोव-खोज (सरकारी खेती)का कायम होना। इन तीन सालोंमे हमारे देशमे सैकड़ो कल खोज और सोव-खोज कायम हुए हैं, जो ग्रामोके आर्थिक जीवनकी नयी नींव डाल रहे हैं, लेकिन साथ ही इस कामने वर्गयुद्धको भी तेज कर दिया है। कमकर जितने ही अधिक सब कामको पञ्चायती करनेकी तरफ झुक रहे हैं, वर्ग-शत्रु भी उतने ही जोरसे मुकाबला कर रहे हैं। मुल्लाओके द्वारा वर्ग-शत्रु धर्मके नाम पर कल-खोज और सोव-खोजके विरुद्ध लोगोको बहका रहे हैं। ग्राम-सोवियतो (पञ्चायतों)मे अपने आदमी भेजकर सब काम अपने हाथमे लेना चाहते हैं; कल-खोजोंमे घुसकर लोगोंमे जहर फैला, कल-खोजोको तबाह और ढोरों तथा चीजोको बर्बाद करनेकी कोशिश करते हैं। यहाँ तककी मुस्तैद और मिहनती कमकरोंको जानसे मारने और मरवानेसे भी बाज़ नही आते। क्रान्तिके विरोधियों, हमारे इन वर्ग-शत्रुओका मुकाबला कमकर अपनी वर्ग-चेतनाकी होशियारीसे ही कर सकते हैं।

मन्त्रीने यह भी कहा—एक दूसरी प्रगतिके बारेमे मै आपको बतलाना चाहता हूँ, वह है कमकरो की स्वास्थ्य रक्षाके कामका आगे बढ़ना। अमीरके जमानेमे बीमार पड़ना और मरना एक बात थी। जो गरीब बीमार पड़ा वह मरा, किन्तु इन तीन सालोंमें बहुतसे अस्पताल, दवाखानें और डाक्टरखाने खुले हैं, जिनपर काफी पैसा खर्च किया जा रहा है। दो-तिहाई ताजिक इन अस्पतालोंसे फायदा उठा रहे हैं, वही ताजिक जो बीमार पड़ने पर ईशान (पीर) और दुआख्वान (ओझा-सयाने)के कोड़ेके नीचे मरते थे। साथियो! तुम यह पूछना चाहोगे कि हमारा ताजिकिस्तान एक उजड़ा, पिछड़ा आफतोंमें फँसा देश था; हकूमतने

लोगोंकी गरीबीका ख्यालकर पहले सालोंमें मालगुजारी माफ़ कर दी थी और हालमें जो थोड़ी सी मालगुजारी लेती भी है, वह इतनी कम है कि उन गिनाये खर्चोंके साथ उसका कोई हिसाब नहीं हो सकता। फिर इतनी भारी रकमको सरकारने कहाँसे लाकर खर्च किया? साथियो! तुम्हें यह पूछनेका हक है। लेकिन एक बातको न भूलें—सोवियत् सरकारका सिद्धान्त है, पिछड़े प्रदेशोंको और अधिक सहायता पहुँचाना, जिसमें सोवियत्के सभी कमकर आर्थिक वा सास्कृतिक तौरसे एक समान हो आगे बढ़ें। इसी सिद्धान्तके अनुसार सोवियत्के कमकरोंने हमे आर्थिक और सास्कृतिक सहायता पहुँचानेमें जरा भी कसर न की। सोवियत्-सघकी सरकारने अपने एक अत्यन्त पिछड़े प्रदेश ताजिकिस्तानके लिये अपने खजानेका दरवाज़ा खोल दिया। यही कारण है, कि हमें खर्चकी तगी न हुई।

मन्त्रीने और भी कहा—साथियो! मैने जो हिसाब आपके सामने पेश किया, उसे हवासे नही लिया। यह हिसाब उस पुस्तिकामें दिया हुआ है जिसे द्वितीय कान्फ्रेन्समें पेश किया गया था। असलमे तो इसकी सुख-समृद्धिको प्रमाणित करनेके लिये इतने हिसाब-किताबकी जरूरत नहीं। हमारी सफलताएँ सबके सामने हैं। हर आदमी देखता और समझता है कि इन चन्द वर्षोंमें ताजिकिस्तान कहाँसे कहाँ पहुँच गया है।

दिन खतम हो चुका था और दुनियामे अँधेरा छा गया था। इसी समय बिजलीके प्रदीप जल उठे और क्लबघरके अन्दर दिन सा हो गया। मन्त्रीने अपना व्याख्यान जारी रखते हुए कहा—देशकी खुश-हालीके बारेमे मैं और नहीं कुछ कहना चाहता। यह आपकी आँखोंके सामने प्रकाशित विद्युत-प्रदीप बतला रहे हैं कि इन तीन सालके छोटेसे समयमें हमारा देश काले तेलके चिरागसे बिजलीके युगमें पहुँच गया।

लोगोंने ज़ोरकी ताली बजाई। मिसकीनज़ादाने भाषण समाप्त करते हुए कहा—जिन्दाबाद हमारा प्रकाशमान भविष्य।

एक लक्ष (किरगिज़) कमकरने सभाके प्रधानसे आज्ञा ले ताजिकिस्तानकी जातियोंकी ओरसे बधाई देते हुए कहा—अमीरके जमानेमें देशकी बरबादीका एक कारण यह भी था, कि अमलदार (कर्मचारी) और धनी लोग उज्बक, ताजिक, कज़ाक और तुर्कमान कमकारोंको एक दूसरेके साथ लड़ाते रहते थे, यहाँ तककी दर्वाज़, वखिया, कराताग़िन और गमके इलाकाके लोगोंमे द्वेषकी आग बराबर भड़काते रहते थे, जिसका परिणाम होता था देशका बरबाद होना, कमकरोंके घरका उजड़ना। लेकिन उससे फायदा उठाकर अमलदार और बड़े लोग निश्चिन्त हो उस पर शासन करते कमकराका खून पीते थे। अब पार्टी और सरकारके नेतृत्वमे हमने इन सारा बातोंका खतम कर दिया। सभी जातियोंके कमकर अमलदारों और सीनाजोरोंके मुकाबलेमे एक होकर खड़े हुए थे और अब सभी जातियोंके कमकर मुट्ठीयोंका एकम बाँध देशको आबाद करने और उसके द्वारा अपनी सुख-समृद्धि बढ़ानेके लिये कोशिश कर रहे है। देशको आबाद करनेमे जो सफलता हो रही है, उसका एक कारण है—जातियोंके प्रश्नको मित्रता और समानता द्वारा हल करना।

७

मरा मूस

दाखुन्दाने अतिथि-सेवा और स्वागतके लिये अपनी और गुलनारकी ओरसे धन्यवाद देते हुए कहा—आरे! हमारा ताजिकिस्तान आगे बढ़ रहा है। यह एक बड़ा सफलता है। ताजिकिस्तानने बसमाचियोंको खतम करनेके बाद काम करनेका जो मौका पाया है, उससे फायदा उठाकर थोड़ेसे समयमे वह इतना आगे बढ़नेमे सफल हुआ। लेकिन जैसा कि व्याख्याताने कहा, अभी भी हमारे शत्रु जीवित हैं। शिर कुचले साँपकी तरह यद्यपि उन्होंने अपनेको बिलमें छिपा लिया है, तो भी वह जिन्दा हैं। पुराने अमलदार और सीनाजोर अपने परिवारके चैन और आरामको खतम

हुआ या हमारी उन्नतिको फूटी आँखों नहीं देख सकते। हम जितना ही आगे बढ रहे हैं, उनकी शत्रुता भी उतनी ही बढ रही है। यद्यपि उनका यह काम दम तोड़ते वक्तकी छटपटाहट है, तो भी उनका विरोध बढ रहा है इसमे सन्देह नही। फूजैल मखदूमका अन्तिम बार निकलना उसी तरहकी एक छटपटाहट थी। आरे! फुजैलका निकलना आखिरी दमका घुटना था। वह कुछ गाँवको बरबाद और जलाकर कुछ जवानों और स्त्रियोंको दारपर खींचकर भाग गया, उसी तरह जिस तरह अगूरकी चोरीके लिये आया कुत्ता बागवानके सजग हो जानेपर सामनेकी चीजको खराबकर भाग निकलता है। आरे! फुजैल भागा, लेकिन साथ ही इस बातको सिद्ध कर गया कि अब भी हमारा शत्रु जिन्दा है—हमारा भीतरी-बाहरी शत्रु जीवित है। यदि अवसर पायेगा, तो वह कुत्तोंको हमारे ऊपर छोड़ेगा, इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि आगे बढनेके साथ-साथ वर्ग शत्रुको छिन्न-भिन्न करनेकी भी कोशिश करते रहें। शत्रुको पूर्णतया नष्ट करना जरूरी है, जिसमे दूसरी बार उसमें हिलने-डुलने और चोट करनेकी शक्ति न रह जाय। तभी हम निश्चिन्त हो देशको आबाद करने और खराब हुए वतनको समाजवादी सिद्धान्तके अनुसार फिरसे निर्माण करनेका काम कर सकते हैं। इस बातको भी न भूलना चाहिये, कि शत्रु सदा तलवार और बन्दूक हाथमे ले खुल्लमखुल्ला लड़नेके लिये नहीं आया करता। कितनी ही बार वह मरे मूस-सा बन जाता है, लेकिन अनाजकी बखारको खराब करनेसे बाज़ नही आता। ऐसा शत्रु खुले शत्रुसे भी बुरा है, इसलिये ऐसे शत्रुपर अधिक निगाह रखनेकी जरूरत है।

दाखुन्दाने तालियोकी गूँजमें अपना भाषण समाप्त किया। प्रधानाने किसी दूसरेको बोलने देनेका मौका दिया, किन्तु बीचमें एक तरफसे आवाज़ आई—सवाल।

प्रधाना—लिखकर दो, सभाके अन्तमें जवाब दिया जायगा।

—मेरा प्रश्न सभासे है और इसी वक्त है। सभाके अन्त तक वह नहीं रह जायगा।

चारों ओरसे "पूछो पूछो"की आवाज आयी।

जवाब देनेके लिये मिसकीनज़ादाको वक्त दिया जाता है—प्रधानाने कहा।

—हमारी सभामे "मरा मूस" मौजूद है। क्या उसे यहाँ रहने दें या निकाल फेंके ?

—कौन है यह मरा मूस ?

"बतलाओ बतलाओ"की आवाज़ चारों तरफसे आई।

—यह मरा मूस (चूहा) हमराह बायका लड़का है, जो कि यहाँ अपने शिरको भीतरकी ओर खींचकर बैठा है। अपने समयमें इसके बापने दर्राके लोगोंका खून पीया और अब यह अपने बापके पेशेको पक्का करना चाहता है।

"दूर हो, दूर हो, दूर हो..." चारो ओरसे हल्ला हुआ।

सभी आँखें उस तरफ फिरी, जिधर सगीनज़ादाने इशारा किया था। दाखुन्दा और गुलनार अपने पुराने परिचितको देखनेके लिये आधे खड़े हो गये।

"मरा मूस नेस्त हो" और लोगोंके पैर पटकनेकी आवाजमे वह अपनी जगहसे उटकर दरवाजेसे बाहर चला गया।

दाखुन्दाने गुलनारसे कहा—यह वही सवार है जिसे आज हमने रास्तेमें देखा था, लेकिन पहिचान न पाये।

यह मरा मूस हमराह बायका लड़का था जिसके साथ ज़बर्दस्ती गुलनारकी सगाई करने जा रहे थे।

८

स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता

लोगोंने गुलनारसे कुछ कहनेके लिये कहा और उसने बोलना शुरू किया—ताजिकिस्तानकी प्रगति स्पष्ट है। इन प्रगतियोंमें एक है स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता। यद्यपि पहलेके जमानेमें स्त्रियाँ धनियोंके घरोंमें बनाव-शृङ्गार करने और अत्याचार सहनेके लिये स्वतन्त्र थी, तो भी देशके साधारण कामोंमें सहकारी बननेका उन्हें कोई अधिकार न था। सभाकी बात तो दूर गलीमें भी स्वतन्त्रतासे नहीं आ सकती थी। अब हजारों स्त्रियाँ कारखानों और कल-खोजोंमें स्वतन्त्र जीवन बिता रही हैं, हजारों स्कूलोंमें पढ़ती और सभाओंमें शामिल होती हैं। इसी सभामें मै देख रही हूँ, आधी शाला स्त्रियोंसे भरी है। ग्राम-सोवियत्की प्रधाना स्त्री हैं, जो कि स्त्रियोंकी प्रगतिका एक अच्छा प्रमाण है। जिन्दाबाद स्त्री-स्वतन्त्रता!

अन्तमें प्रधाना फातिमा बेगीमने कहा—आरे! हम आगे बढ रहे हैं जिसका एक प्रमाण—जैसा कि साथी गुलनारने कहा—स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता है। यद्यपि यह बात अभी पूरी तौरसे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाई है, और अभी भी स्त्रियोंने काम करनेमें मर्दों जैसी योग्यता नहीं प्राप्त की है, तो भी इस सम्बन्धमें बहुत काम हुआ है। इस साल ग्राम-सावियतोंके चुनावमें बहुत-सी स्त्रियोंने अपनेमेंसे कुछ मेम्बर रखनेकी इच्छा प्रकट की। जैसा कि साथी यादगारने कहा, हम जितना ही आगे बढ रहे हैं हमारा शत्रु भी उतना ही अपने काममें सर-गर्म है। शत्रु जानता है कि किन-किन जगहोंमें हम आगे बढ रहे हैं और वह उन्हीं जगहोंपर हमला कर रहा है। शत्रु जानता है कि यदि स्त्रियाँ स्वतन्त्र हुई और लोग लिख-पढ़ गये तो फिर उनको धोखा देना और उनपर हुकुम चलाना सम्भव नहीं है। इसीलिये फुज़ैलने अन्तिम बार निकलनेसे पहले इन्हीं दोनों बातोंपर सबसे ज्यादा हमला किया। स्वतन्त्र हुई स्त्रियोंको क़त्ल किया, दारपर

खीचा, कमकरोंको शिक्षित बनानेके लिये काम करनेवाले अध्यापकोंके सिर भेड़ोकी तरह काटे। लेकिन फुज़ैलने समझनेमें गलती की। उसने आजके ताजिकिस्तानको १६२३-२४का ताजिकिस्तान समझा। उसने सोचा था कि दोशम्बासे फौज आने तक वह गर्ममे कत्ल-आम कर चुकेगा, लेकिन अभी वह अपनी रक्त-पिपासाको पूरी नही कर पाया था, कि हमारे एरोप्लान (विमान) दैवी दण्डकी तरह उसके सिरपर आ धमके और एक घटेमे उसके रक्त-रजनागारको ध्वस्त-विध्वस्त कर दिया। फुज़ैल भाग गया, किन्तु अब भी फुजैली जालिम मौजूद हैं। जैसा कि साथी यादगारने कहा, हमे इन शत्रुओंको छिन्न-भिन्न करनेका लड़ाई जारी रखनी चाहिये। इस लड़ाईकी सेना है, कमकर जन-साधारण।

फातिमा बेगीमूने तालियोके बीच सभा समाप्त करते हुए कहा—जिन्दाबाद ताजिकिस्तानकी प्रगति, जिन्दाबाद स्त्रियोंकी स्वतन्त्रता, नेस्तबाद हमारा वर्ग-शत्रु।

दाखुन्दा इस पहाड़ी स्त्रीकी अग्निमयी वाणी और ओजस्वी भाषणसे बहुत प्रभावित हुआ, किन्तु अब भी वह अपनी स्मृतिसे यह ढूँढ निकालनेमे सफल न हुआ कि वह कौन है।

६

संस्कृतिका कारवाँ

पहाड़ी चोटियो और खड्डोंसे होती मछलीकी तरह तैयारकी गई सड़कपर मोटर बस चली जा रही थी। अन्तमे वह एक समतल विस्तृत स्थानपर पहुँची। यहाँ दोनो ओर नहरें थी, जो जाड़े और वर्षाके दिनोंमे पानी बहानेका काम देती और गर्मी तथा सूखेके समय सिचाईका। बस पत्थर-कुटी पक्की समतल सड़कपर बिजलीकी गतिसे दौड़ रही थी। यहाँ दो-गजे साँपों, खरगोश जैसे कालमूसों, साही और वज्रपृष्ठोके सिवा—जो कि जब-तब सामनेसे गुजर जाते थे—कोई बाधा देनेवाला प्राणी न था।

—ये जानवर कहाँसे कहाँ और किस लिये जा रहे हैं ?—दाखुन्दाने अपने एक सहयात्रीसे पूछा।

—इस तरफकी जमीन कितने ही समयसे परती ही पड़ी थी। नहरोंके बर्बाद होनेसे वह एक सन्तप्त मरुभूमि सी बन गयी थी। यहाँ आदमियों और ग्राम-पशुओंका नाम न रह गया था। इस सूनी भूमिके मालिक हर तरहके भयानक जन्तु बन गये थे। यहाँ नहरें निकाल पानी लाया गया। फिरसे खेतोंको आबाद करके कल खोज और सोव-खोज स्थापित किये गये। फिर इन जानवरोंके लिये यहाँ जीना मुश्किल हो गया। इनमेंसे बहुतसे खेतीको हानि पहुँचानेवाले जन्तु कृषि-विशेषज्ञके बतलाये उपायोंसे मार डाले गये। अब ज़िन्दा बचे जानवर आबाद जगहोंसे न-आबाद निर्जन जगहोंकी तरफ भागे जा रहे हैं। मोटर-बस प्रोलेतेरी (कमकरोंकी) सस्कृतिके कारवाँकी तरह इन हानिकारक जन्तुओंको नष्ट करती आगे बढती चली जा रही थी और साथ ही आबादीके प्रभाव भी अधिक दृष्टिगोचर हो रहे थे। सड़ककी दोनो तरफ कपासके खेत यूनुच्का (चारा) घास, नये हरे भरे बगीचे और नयी सुन्दर इमारते शोभा दे रही थी। मोटर-बस एक नये बसे गाँवके पास जाकर खड़ी हो गयी। गाँवकी सड़के और इमारतें यूरोपीय ढगकी थीं। बसके टिकट-विक्रेताने दाखुन्दा और गुलनारसे कहा "यह है गाँव, जहाँ आप आना चाहते थे।"

दोनों वहाँ उतर गये और मोटर-बस आगे रवाना हो गयी।

१०

नया गाँव

गाँव यद्यपि नया था, किन्तु था बहुत बड़ा। उसमें गर्म, दरवाज़, खोजन्द, ऊरातप्पा, फरगाना और दूसरी ज़गहोंके लोग आके बसे थे। हर परिवारके लिये घर और जगह अलग थी, तो भी ढोरखाना, घास-लकड़ी-खाना, अन्नके बखार और भण्डार, रोज़की खुराकका भण्डार, खेतीके

सामानका अम्बार और पात्थशाला—ये सब गाँव भरके सम्मिलित थे। गाँवके बीचमें स्कूल, क्लबघर, वाचनालय, कार्यालय, लाल चायखाना, डाक्टरखाना, कृषि (अग्रोनोम) गृह, स्नानागार, कोआपरेटिव (पञ्चायती) दूकान जैसी सार्वजनिक इमारते थी। एक ओर हरी-भरी घासोसे सुसज्जित जन-उद्यान और दूसरी इमारते थी।

दाखुन्दा और गुलनार एक-एक इमारतको देखते गाँवकी सैर करते लाल चायखानामे गये और चाय लानेके लिये कह मेज़पर कानोंके पास हाथ रखकर बैठे। थोड़ी देरमे चाय आयी और वे चाय पीने लगे।

चायखानामे दो चायखानादारों और एक बूढ़ेके सिवा कोई न था। बूढ़ा टोपीको जमीनपर फेंक, पैरोको लटकाय तख्तपोशपर बैठा चाय पी रहा था। बूढ़ेने चायनिकसे दो प्याला चाय पी "एक चायनिक चाय और लाओ" कहते समावारचीको आवाज़ दी।

समावारचीने दूसरी चायनिक चाय रखते हुए कहा—बाबा साबिर! क्यों चाय पीनेमे इतनी जल्दी कर रहे हो? दम लेकर धीरे-धीरे चाय पीनेमे मजा आता है।

—एक नम्बरवाले खेतमे पानी छोड़कर आया हूँ। शायद भर गया हो। जल्दी जाकर पानीको दूसरे खेतमे बदलना होगा—कहकर बूढ़ेने एक प्याला पी दूसरेको भी भर लिया।

—बूढ़ा बहुत मुस्तैद मालूम होता है—दाखुन्दाने धीरेसे गुलनारसे कहा।

—साठ सालसे ज्यादाका मालूम होता है। इस आयुमे भी इतना कार्य-प्रेम! मालूम होता था कि उबलती चायको ही गलेसे नीचे उतार कामपर चला जायगा—गुलनारने कहा।

बूढेसे जान-पहचान करनी चाहिये—कहते अपनी जगहसे उठते दाखुन्दाने "बाबा! तुम्हारा नाम बाबा साबिर है" कहते बात शुरू की।

"हाँ" कहकर बाबा प्यालीकी चाय पी और दूसरा प्याला भर टोपीको शिरपर रख प्यालीको खाली किये बिना चलनेको तैयार हो गया।

—जल्दी खेतपर पहुँच जाना चाहते हो न ? यदि हरज न हो तो हमें भी साथ ले चलो, हम तुम्हारी खेती देखेंगे—कहते दाखुन्दाने बाबा साबिरसे विनती की।

"बहुत अच्छा" कहते अन्तिम प्याला पीकर बाबाने कहा "यदि चाहते हो तो जल्द चलो।"

दाखुन्दा और गुलनार—जो अभी एक प्याला भी खाली न कर पाये थे—देखनेकी शौकसे चायको वहीं छोड़ बूढेके साथ चल पड़े।

११

कल-खोज (पञ्चायती खेती)

बूढा बहुत जल्दी-जल्दी पैर रख रहा था। दाखुन्दा और गुलनार मानों उसके पीछे पीछे दौड़ रहे थे। दाखुन्दाने चाहा कि बूढ़ेको बातमें फँसा चालको धीमीकर आस-पासकी चीजोंको देखते चले और इसलिये बात शुरू की—बाबा साबिर ! इस गाँवमे इतनी खेती-बारी है, फिर इतने कम आदमी क्यो हैं ?

बाबा साबिरने चकित-दृष्टिसे देखते कहा—"बच्चा ! जान पड़ता है तू शहरसे नया-नया आया है ?" फिर पूर्ववत् चालके साथ चलते ज़रा कन्धा फेरकर दाखुन्दाकी तरफ देखकर कहा—"हमारे गाँवके सारे लोग कल-खोजके मेम्बर हैं। हमारे पास तीन सौ हेक्तर लालमी (बिना सिंचाईकी) और पाँच सौ हेक्तर आबी (सिंचाईकी) जमीन है। जानते हो एक हेक्तर (ढाई एकड़) जमीन कितनी होती है ? चार तनाब या एक मनके बराबर। गाँववालोंने इतनी जमीनमें काम करनेका जिम्मा लिया है। काम टोलीके अनुसार मेम्बरोंमें बाँटा जाता है। हर एक

आदमीका कर्त्तव्य है कि निश्चित परिमाण (नार्म)के अनुसार प्रतिदिन अपने कामको वक्त पर पूरा करे। निश्चित परिमाणसे जो जितना अधिक काम करता है, उसकी मजदूरी भी उतनी ही अधिक होती है। इसलिये सब लोग दिन निकलते काम पर चले जाते हैं और शामको गॉव लौटते हैं।

—तुमको क्या काम मिला है बाबा ?—दाखुन्दाने पूछा।

—मुझे आबी जमीनके एक चकमे सिंचाई या आबदारीका काम मिला है। ब्रिगादीर (नायक)के कथनानुसार मै हर रोज कपास, युनूच्का, या दूसरी फसलकी खेतोंमे पानी देता हूँ।

—क्या तुम्हारे कल-खोजमे तुमसे जवान आदमी नही हैं कि भारी कामको तुम्हारे शिरपर रखा है।

—पहले तो यह कि मै काम करनेमें किसी जवानसे कम नहीं हूँ, बल्कि कितने ऐसे जवानोंसे इतना ज्यादा काम कर सकता हूँ, जिनका पेशा पहले खेती न था और दूसरा काम न ले हमारे कल-खोजमें आकर दाखिल हो गये। दूसरी बात यह है कि हमारे कल-खोजमें सबसे हल्का काम आबदारी है। यद्यपि कामके बारेमें मै अभी अपनेको बूढ़ा नही मानता, लेकिन जवानोने मेरे सफेद बालों पर रियायत करके मुझे यह हलका काम सौंपा है।

—अकेले बाबा ! तुम कैसे नहरों-नालियोंको खोलते-बॉधते हो ?

"ठहरो, पानीके पास चलेगे तो देखना कि बाबा साबिर कितनी आसानीसे पानी खोलता-बॉधता है"—कहकर बूढा दाखुन्दाको फिर बोलनेका मौका न दे तेजीसे कदम बढाने लगा।

रास्तेकी दोनों तरफ कपासके खेत फैले हुए थे। जिस तरह एक चतुर माली अपनी क्यारीको खाद-पानी दे लहलहा देता है, उसी तरह ये विशाल खेत कपासके पौधोंसे लहलहा रहे थे। खेत समतल और क्रम-बद्ध थे, और उन्हे चौड़ी रविशें एक दूसरेसे पृथक् कर रही थीं। खेतोंके

बीचसे जल-प्रणालिकाएं इस तरहसे खींची हुई थीं, कि पानी आसानीसे खेतोंमें डाला जा सके। नहरियोंके किनारे पौधे लगे हुए थे, जो कुछ सालोंमे छाया देने लायक हो जायेंगे। यद्यपि वह नहरके पानीमेंसे कुछ खुद पीते हैं, किन्तु साथ ही वह सूर्यसे पानीकी रक्षा भी करते हैं।

कपासके पौधे बहुत हरे-भरे थे। फर्गाना और बुखारावाली कपासकी खेतीकी पुरानी जगहोंमे आज कल कपास खेतमे बोये जा रहे थे, जब कि यहाँ वह फूलकर कलियाँ भी बाँधने लगे थे। बूढा अपने सहयात्रियोंसे "सीधे चलो, मै खेतके मुँहको बन्दकर तुमसे आ मिलता हूँ" कह दो खेतोंके बीचकी रविशपर दौड़ा और खेतकी परिक्रमा करते नहरके किनारे पहुँच गया, जहाँ कि दाखुन्दा और गुलनार धीरे-धीरे पहुँचे थे।

"यह खेत भर गया। अब खेत नम्बर दोमे पानी देता हूँ" कहकर कुलाबाके पास गया। उसे एक बूँद भी पानी न देने-लायक करके तख्तेसे बाँध रखा था।

बाबाने तख्तेको निकालकर एक मुँहको खोलकर उसीसे दूसरे मुँहको बन्द कर दिया। दाखुन्दाको अपने कामसे प्रसन्न देखकर बाबाने कहा—देखा, बाबा साबिर कितनी आसानीसे पानी खोलता और बाँधता है? पुराने ढगकी सिचाईमे इस कामके लिये बेलचा और कुदाल लिये चार आदमियोंकी जरूरत होती और दो आदमीको हमेशा बंधके पास बैठे रहना पड़ता, जिसमें पानी कही फटकर निकल न भागे। फूट जानेपर तो उसे दश आदमी भी न बाँध सकते। पुरानी सिचाईकी नहरके दोनों किनारे टूटे-फूटे होते और भीतर कीचड़ और बालू भरा होता जिनको ठीके करनेके लिये भी किसानोंको हर साल कितने ही दिन काम करना पड़ता। लेकिन इस हमारी नहरमे एक आदमी बिना एक कुदाल चलाये या बिना एक मुट्ठी मिट्टी डाले एकड़ों खेत सींच सकता है। नहरमें बसन्तके बहावकी कीचड़-मिट्टीको साफ करनेके लिये सिर्फ एक बार काम करना पड़ता है। यह हमारी नहरे नई तेकनीक (साइन्सी तरीका)के

अनुसार बनाई गई हैं, इसलिये बरसाती पानीके बहावके समय भी इनमें कीचड़-मिट्टी बहुत कम जमा होती है।

बाबा साबिरने खेत चक नम्बर दोमे पानीको खोल बाते शुरू कीं—अब कुछ घन्टोंकी मुझे छुट्टी है। यदि चाहते हो तो कल्खोज़की दूसरी खेतीको भी तुम्हें दिखलाऊँ।

दाखुन्दा और गुलनारने "अन्धा क्या चाहे दो आँखे" कहकर बूढेकी बातको स्वीकार किया। वह रास्तेसे रवाना हुए। कपासकी खेती खतम होनेके बाद यूनुच्का और सब्ज़ीके खेतोंके पास पहुँचे। बाबाने खेती दिखलाते हुए कहा—यह फसल एक ओर कल्खोज़के आदमियों और जानवरोंकी आवश्यकताको पूरा करती है, दूसरी ओर कपासकी अगली फसलके लिये जमीनको अधिक ऊर्वर बनाती है।

यहाँ खेतमे स्त्रियोंकी एक टुकड़ी बेकार घासोंको निकाल प्याज आदि सब्जियोंकी निकाई कर रही थी। मर्द खर्बूजा-तरबूजाकी जमीनमें थाला-बन्दी और आलूके खेतोंमे कुदाल चला मिट्टी चढानेमें लगे हुए थे। मर्दों की एक दूसरी टुकड़ी यूनुच्काको काटकर फैला रही थी और दूसरी टुकड़ी सूखे यूनुच्काके पूले बाँध रही थी। यात्रियोंने उनसे "थक न जाना" कहा, जिस पर काम करनेवालोंने "सलामत रहें" कहकर अधिक न बोलनेका भाव व्यक्त किया, क्योंकि यह कामका समय था।

अब खेत खतम हो गये थे। आगे गैरआबाद जमीन थी, जिसे ट्रैक्टर (मोटरवाला हल)-ड्राइवर घासोंको जड़से उखाड़ने-तोड़नेमें लगे हुए थे। बाबा साबिरने उधर अंगुली उठाकर कहा—यह जमीन इस साल जुतकर धूप खायगी और अगले साल इसमे दूसरे खेतोंसे भी अच्छी कपास होगी।

आगे विषमतल ऊबड़-खाबड़ मैदान आया, जहाँ कल्खोज़के माल चर रहे थे। दाखुन्दा और गुलनारने सैर खतम समझ गाँवकी तरफ लौटना चाहा। इसी वक्त बाबा साबिरने कहा—यदि थक नहीं गये तो

थोड़ा और आगे लालमी (बिना सिंचाईके) खेतोंमें चलें, वह भी हमारे कलखोज़के हैं।

—थकनेकी बात न करो बाबा—दाखुन्दाने कहा—हम जितने कदम आगे चलते हैं, उतना ही बल भी ज्यादा होता जा रहा है। तीन साल तक शहरकी बँधी हवामे हम काम सीखनेके लिये बन्द रहे। इस शुद्ध स्वच्छ वायुमें साँस लेना एक नई स्फूर्ति प्रदान करता है।

बहुत दूर नही जाना पड़ा। आध घटा बाद वह खेतोंके एक विस्तृत मैदानमे पहुँचे। बाबा साबिरने कहा—अभी इस जगह पानी नहीं ला सके, इसलिये यहाँ हम लालमी खेती करनेके लिये मजबूर हैं।

जौ और गेहूँ कट चुके थे। तिल, उड़द, लोबिया, ज्वार, कुजद, नखुदके मरकत-हरित पौधे पाँतीसे शोभा दे रहे थे। एक आध जगह परीक्षार्थ कपासको भी लालमीके तौरपर बोया गया था। बूढेने कलाईकी घड़ी देखकर कहा—चक नम्बर दो भी पानीसे पट चुका होगा, अब लौटना चाहिये।

यात्री आये रास्तेसे लौट चले। बाबा साबिर मेहमानोंकी मद-चारिकाका ध्यान न रख तेजीसे कदम बढाता उनकी नजरसे गायब हो गया।

१२

"पत्र"

दाखुन्दा और गुलनारने इस नये गाँवमे कलखोज़चियोको लिखना पढ़ना सिखाने तथा पार्टीके दूसरे कामोके लिये तीन मास दिये थे। अब उनके शहर लौटनेका समय आ गया था। लोगोंने उनकी बिदाईकी तैयारी की। आज दोनों अन्तिम बार जन-उद्यानमें जा बेचपर बैठे। इतने दिनोंसे बराबर आते-आते उद्यानके साथ उनका प्रेम-सा हो गया था। इसी समय एक साठ-साला बूढ़ा अपनेको आयुसे भी अधिक वृद्ध

दिखलाते, हाथमें बैसाखी लिये, कमर टेढ़ी किये लम्बी साँस खींचते धीरे-धीरे कदम रखते उद्यानकी एक तरफसे चलकर दाखुन्दा और गुलनारकी ओर आने लगा। पास आकर सलाम कहकर "उफ्!" कहते उसने साँस ली। फिर दाखुन्दाकी तरफ ज़रा देर देखकर बोला—"बेटा यादगार! मुझे नहीं पहचानता?"

दाखुन्दाने सिरसे पैरतक बूढेको देखकर कहा—नही, मै नहीं पहचानता।

—न, प ह चा न ना भी ठी क है—बूढेने हाँफते हुए कहा—पहले यह कि करीब बीस सालसे एक दूसरेको नहीं देखा। दूसरे यह कि तू सरकारका एक बड़ा आदमी बन गया है, मुल्ला हो गया है, कानूनदाँ हो गया है, बोलशेविक है, अब हम जैसे बूढ़े गुलामोको क्यो देखने लगा?

—अता (बाप)! इन बेकारकी बातोको छोड़, बतला कि मुझे कबसे जानता है और मैंने तुझे कहाँ देखा?

—मै तेरा पितृ-परिचित हूँ। जब तेरा बाप अजीमशाहके घरपर था तो अपने हर काममे मेरी सलाह लेता था, मै वही कुदरत समावारची हूँ। जब तू बदी हुआ था, उस वक्त कर्ज देकर मैंने ही तुझे सरेज़ूयके बदीखानेसे छुड़ाया।

—हाँ-हाँ, अब पहचाना तुझे—दाखुन्दाने कह गुलनारकी तरफ निगाह की—सच कहता है बाबा कुदरत, मेरे साथ तूने बहुत नेकी की है। मेरी पीठ-पीछे हर पाँच तका पर एक तका रोजाना सूद लेकर मुझे जेलसे छुड़ाया। और गुलनार! तेरा भी पितृ-परिचित है। हाकिमकी ओरसे मगनी माँगकर तेरे साथ बड़ी नेकी की है।

बूढा—हाय-हाय, यह मेरी बेटी गुलनार, क्या खूब—गुलनारकी ओर निगाह करके—बेटी गुलनार! तेरे साथ भी नेकी की थी। तुझे दर्रासे

निकालकर बिलायतके हाकिमके महलमें बेका (रानी) करके बैठाया था। आज तू भी नेकी करनेसे बाज न आ।

—खूब, अब क्या कर रहा है, और हमसे क्या चाहता है?—दाखुन्दाने पूछा।

—मै एक गरीब आदमी था। हाकिमखाना, काजीखानाके दरवाजे-पर समावारचीगीरी करके और गरीबोंको पॉच-दस करज दे दिन काटता था—बूढेने आह खींचकर फिर बात शुरू की—वह दिन चले गये। अब एक कौर रोटीके लिये भी मुहताज हूँ। चाहता हूँ कलखोजमे शामिल हो जाऊं और अपने बल-बूतेके अनुसार काम करके रोटी खाऊँ। लेकिन यह लोग 'पत्त्र' कहकर मुझे कलखोजमे नहीं लेते। तू आज बड़ा आदमी है और सब लोग तेरी इज्जत करते हैं। तू कृतज्ञता समझकर मेरी सहायता कर और 'पत्त्र-वत्त्र' न कर 'कलखोज'मे शामिल करा दे।

दाखुन्दा यद्यपि इस पितृ-परिचितको पहचान उसके कामोंको यादकर कुछ विमनस्क हुआ था, लेकिन उसके "पत्त्र-वत्त्र" कहनेसे वह अपनी हँसीको न रोक सका और 'पत्त्र-वत्त्रसे उनका क्या मतलब है' कहकर पूछा।

—मै क्या जानूँ इस रूसी बोली को। मैने इसका मतलब साबिरसे पूछा—वही साबिर जो अजीमशाहके घरपर रहता था। मैने उसके साथ भी उपकार किया था। उसने कहा, इसका मतलब है कि तू कमकरोंका दुश्मन है।

—लेकिन क्या साबिर अभी तक जिंदा है?

—हॉ, जिंदा है। जमीनदारीका नया सुधार हुआ, तब अजीमशाहकी जमीनसे कुछ हिस्सा उसको मिला था और कुछ हिस्सा घरकी नौकरानी लड़की फातिमाको मिला। दोनोने शादी कर ली। साबिर यहाँ चला आया, अब कलखोजका मेंबर है।

—फातिमा भी यहाँ ही है?—आश्चर्यके साथ दाखुन्दाने पूछा।

—चंद रोज पहले नहीं थी। कल साबरक घर गया था। वहां उसे देखा।

—और अजीमशाहका क्या हुआ?

बूढेने लंबी सॉस खींचकर कहा—बेचारा बाप क्रांतिके शुरू ही में डरके मारे मर गया। उसका लड़का दरवाजमें बसमाचियोंका सरदार बना था, लेकिन वह भी एक शोगनानी लड़की पर हाथ डालते वक्त एक ताजिक स्वयसेवकके हाथ मारा गया।

बूढेकी इस बातको सुनकर दाखुन्दाके ओठोंपर एक गर्वपूर्ण हसीकी रेखा फिर गई, लेकिन गुलनारकी आँखोंमे क्रोध झलकने लगा। बूढेकी निगाह उधर न थी। उसका सारा खयाल कलखोजमे शामिल होनेकी ओर था।

दाखुन्दाने बूढेसे कहा—हम आज शहर जाना चाहते हैं। मुझे साबिरका घर बतला। हम उसे देखना चाहते हैं। तेरे बारेमें उससे बात करके बतलायेंगे।

बूढा पहलेसे कुछ ताजा हो 'अच्छा' कहकर आगे चला और उन्हें गॉवके किनारेपर युरोपीय ढंगके नये घरोमेसे एकमे ले जाकर आवाज दी—साबिर! यह ले तेरे पुराने परिचितको तेरे पास लाया हूँ। अब पच्छ-वच्छ कहकर कलखोजमे शामिल होनेसे न रोकना।

दाखुन्दाने साबिरको देखते ही 'बाबा साबिर! अब पहचाना कि तू वही चचा साबिर है' कहते उसकी बगलमे जा उसके शिर और दाढ़ीको चूमा। फातिमा बेगीम आश्चर्यसे मिट्टीकी मूरत बन गई थी। उसे देखकर दाखुन्दा बोला—क्षमा करे बेगीम! इसी साल तुझे देखा। बहुत कोशिश की, लेकिन याद न कर सका कि तुझे कहॉ देखा था। जो भी हो, आज तुम दोनोंको अच्छी तरह पहचाना।

लेकिन बाबा साबिर और फातिमा अब भी न समझ पाये थे, कि बात क्या है, और न यही कि इस विद्यार्थीसे उनकी कहॉकी पहचान है।

कुदरत समाचारचीने उन्हें पूछताछका मौका दिये बिना "क्या पहचानता नहीं साबिर ! यह अका बाजारका पुत्र यादगार है और यह उसकी प्रदत्ता" कहकर उनकी तरफ इशारा किया।

बाबा साबिरने अतिथियोंको 'भले आये' कहनेसे पहले कुदरतकी तरफ निगाह करके "अच्छा किया जो तूने इन्हें यहाँ लाकर परिचय कराया, मैं इसके लिये तुझसे खुश हूँ। तू भी अच्छा आया, लेकिन इसी वक्त मेरे घरसे चला जा और फिर मेरे सामने न आना। मैं नही चाहता कि तेरे जैसे पराये पक्षके आदमीसे बात करूँ" कहकर उसे घरसे बाहर कर दिया।

कुदरतने घरसे निकलते वक्त दाखुन्दासे 'बेटा यादगार !' कहते उससे सहायताकी आशा प्रगट की, लेकिन देखा कि दाखुन्दा उसकी ओर ध्यान न दे फातिमाकी तरफ मुँह करके बात करनेमें लगा है।

कुदरत "उफ् . ! अजीमशाहका नमक तुम्हारा कलेजा फोड़कर निकले" कहते चला गया।

१३

सप्तम प्रजातंत्र

१९२९के अक्तूबरका अत था। किसलक-नौ (नयागाँव)के क्लब घरमे नरनारी भरे हुए थे। स्कूलकी संगीत-मडलीने अध्यापकके नेतृत्वमें दस-बारह तान और गीते सुनाई। लोगोंने गजल और कविता-पाठमें एक दूसरेका मुकाविला किया, फिर नाच शुरू हुआ। अतमें एक कोनेमें बैठे किसी आदमीने कहा—मेरा ख्याल है क्यों न हमारे प्रिय अतिथि साथी बाज़ार-जादा और गुलनार जो कि आज हमसे बिदा हो अपने विद्यालयको जा रहे हैं, एकाध पद्य कहकर हमें खुश करें।

चारों ओरसे 'निवेदन है निवेदन है' कहकर ताली बजने लगी।

दाखुंदा बोला—मित्रोंकी प्रसन्नताके लिये मैं उनकी इस माँगको माननेको तैयार हूँ। समरकंदके एक ताजिक कविके एक बिल्कुल नये

गीतको भी लिखकर मैने पासमे रखा है। लेकिन इस गीतको गानेमें एक शर्त है। बाबा साबिर और फातिमा बेगीम भी पुराने जमानेमे हमारे साथ एक जालिम परिवारमे जुल्म सहते रहे और हम सालों बाद एक दूसरेसे अलग हो आज मिले हैं। यदि वह भी हमारे गानेमे साथ हों तो।

चारों ओरसे 'प्रार्थना है, प्रार्थना है' की आवाज आई।

तालियोकी गूँजमे दाखुदा, गुलनार, बाबा साबिर और फातिमा बेगीम मचपर पहुँचे। पद्रह मिनटकी तैयारीके बाद पर्दा हटा। फिर जोरोसे तालियाँ बजने लगी। दाखुन्दाने हाथके इशारेस ताली बद कराई। फिर चारोने मिलकर गाना शुरू किया :—

हम गरीब हैं हमे हर बहाने — हाथोंसे जमानेके
सभी तीर जुलुमके जो जो हुए रवाने — हम हुए निशाने
हम गरीब हैं जो आराम न पाये — बीते जमानेमे
फिरते थे दर-बदर और खाना-ब-खाना — घबड़ाये हुए सीना
हम गरीब हैं कि बेवस्त्र बेजगह — दासतामे बायके
करते बहुत मेहनत ताकत-तोड़ते — दिन भी और रात
पैरोमे जजीर सिरपर असि कध पै डडा — जिंदान काना-खाना
अते हमारे तन व मन व सिरसे — और हृदयसे भी
ज्वाला भरी आग घनघोर उठी — विप्लव-कारी
इस ज्वालाभरी आगसे जली पुरानी दुनिया जला शाहोका दरबार
प्राचीन व्यवस्था अन्यायकारिणी भी — हुई लुप्त विश्वसे
हम गरीब हैं कि इस पर्वत औ'मरुको — कर दिया जिमि उद्य।
जो कुछ कि कहा था जैसे कि कहानी — दुनियाके लोगोने
हर्षसे आये कलखोजके सघमे — जैसे कि नमूना
एकताके जीवनसे भरे हुए — सुखी मनुष्य
यह लाभपूर्ण श्रम, यह पत्थरी हिम्मत- — की सदर प्रशंसा
गाते हैं प्रसन्न अपनी विजयके गीत — चग और डफके साथ

बड़े जोशकी तालियोंके साथ संगीत समाप्त हुई। लेकिन सभाके समाप्त होनेसे पहले कलखोजके एक प्रधानने मचपर आके कहा—'साथियों! मैं तुम्हारे सामने एक बहुत जबर्दस्त खबर सुनाने आया हूँ, जो अभी-अभी दोशबाकी डाकसे आई है। यह ऐसी खबर है जो मेरे, तुम्हारे और ताजिकिस्तानके सारे कमकरोंके सामने एक बहुत भारी जवाबदेही रखती है। सोवियतोंकी तृतीय विशेष कान्फ्रेंसने—जो कि पद्रह अक्टूबर १९२९को आरभ हुई थी—ताजिकिस्तानके कमकर जनसाधारणकी इच्छा और आर्थिक उन्नतिका विचार करके उज्बकिस्तानसे अलगकर ताजिकिस्तानको सोवियत-सघके अंदर सातवें सोवियत-समाजवादी-प्रजातत्रके रूपमे स्वीकार किया है।'

तालियाँ बजने लगी और लोगोने नारा लगाया 'जिदाबाद सोवियत-समाजवादी-प्रजातत्र-संघका सातवाँ प्रजातंत्र।'

एक दूसरी भी महत्त्वपूर्ण सूचना है—'कान्फ्रेंसके प्रतिनिधियोंने दोशबा शहरका नाम बदलकर स्तालिनाबाद रखनेकी इच्छा प्रगट की, इसे भी कान्फ्रेंसने एक रायसे स्वीकार किया।'

फिर तालियाँ बजी और नारा लगा 'जिदाबाद स्तालिन और स्तालिनाबाद।'

सभा समाप्त हुई।

समरकद १० मार्च १९३०

परिशिष्ट

१—'दाखुंदा' और ऐनी

सदरुद्दीन ऐनीका उपन्यास 'दाखुदा' अमीरके जमानाके बुखारा और ताजिकिस्तानके जीवन और समाजके संबधमे पहला बड़ा ग्रथ है। हमने पहले पहल ऐनीको उपन्यासकारके तौरपर उनकी कहानी 'आदीना'में देखा। लेकिन 'दाखुदा' बिल्कुल दूसरी चीज है। वह कलापूर्ण साहित्यकी एक उच्च-श्रेणीकी बहुमूल्य कृति ही नही है, बल्कि दाखुदाका महत्त्व सबसे अधिक इस बातमे है, कि इसमे बुखारा और ताजिकिस्तानकी बहुत सी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओ और वर्ग-सघर्षका चित्र खीचा गया है। दाखुदाकी घटनाएँ दिन-प्रतिदिन अधिक राजनैतिक महत्त्व रखेंगी।

इस उपन्यासका लेखक 'जदीदो' (नवीनवाद) आन्दोलनका एक प्रसिद्ध प्रतिनिधि और बुखाराकी क्रातिकारी हलचलमे आरभसे ही क्रातिके लिये काम करनेवाला रहा। इसलिये बुखारा-क्रातिकी घटनाओका विवरण उसके मुँहसे सुनना, उसकी कलमसे पढना एक विशेष महत्त्व रखता है।

ऐनी यद्यपि उन व्यक्तियोंमेसे हैं, जिन्होंने जदीदी-आदोलनकी बुखारामें नींव डाली, लेकिन वह 'जदीद (नवीन) वाद' और जदीदोंकी रगीन तस्वीर नहीं खींचते, बल्कि उनकी असली तस्वीरको पूरी निष्पक्षताके साथ

और घटनाओंके आधारपर पाठकोंके सामने रखते हैं। ऐनीने "दाखुदा"में एक कलापूर्ण किंतु सीधी भाषामें बतलाया है, कि जदीद मध्यमवर्ग (बुर्जुआजी) के सुधारक-समुदायके प्रतिनिधि थे। शोषित जनसाधारणसे उनका कोई संबंध न था, और न वह उनके अधिकारोंके हिमायती थे। 'दाखुदा'में पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)में बसमाचीगरीका पैदा होना, अनवरपाशाका आकर उनके साथ मिलना, जदीदोंका अनवर और बसमाचियोंसे सम्बन्धका बहुत स्पष्ट और सविस्तर वर्णन किया गया है।

इसलिये 'दाखुदा'को केवल एक कलापूर्ण साहित्य-ग्रंथके तौरपर ही नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक कृति—जिसमें मध्य एसियाके एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्रांतिका इतिहास वर्णित है—के तौरपर देखना चाहिए।

ताशकंद, दयाकोफ़्

४ सितंबर १९३०

२—सदरुद्दीन ऐनी *

ऐनीकी जुबलीके समय हमें अपने प्रिय 'मानव-आत्माके इंजीनियर' गोर्कीकी बात याद आती है। उसने अपनी जुबलीके समय कहा था--'है कोई स्थान पूँजीवादकी दुनियामें, जहाँ लेखकका इतना मान सम्मान हो सकता हो ? नहीं है। पूँजीवादका मंदिर ध्वस्त हो चुका है। वहाँ कोई चीज बची नहीं है।" मानव-आत्माके इंजीनियर सदरुद्दीन ऐनीकी जुबलीके समय आज भी हम उन शब्दोंको दुहरा सकते हैं...

सामंतवादी पूर्व (देशों)में रूदकी, फिरदौसी, सादी, उमर खैय्याम, हाफिज़ जैसे कितने ही योग्य और महान् साहित्यकार पैदा हुए हैं, किंतु

---

* ऐनीकी तीस-साला जुबलीके समय १६ नवंबर १९४५को स्तालिनाबादमें आविदोफ्का भाषण।

ये महामानव यदि दार (सूली)पर खींचे जानेसे बच पाये, तो भी वह सदा उत्पीड़ित या निर्वासित होकर रहे।...विश्वकवि और दार्शनिक नासिर खुसरूकी जीवन-घटना है।...एक दिन वह शहर नेशापूर पहुँच। दूरसे पैदल आनेसे जूते फट गये थे। उन्हें सीनेके लिये मोचीको दिया। इसी समय शहरमे हल्ला मचा। मोची अपने हथियारके साथ उस तरफ दौड़ गया। घटा बाद खूनसे रगे अपने चर्मावरकके साथ लौट आया। नासिर खुसरूने पूछा—'वहाँ क्या बात हुई?' मोचीने जवाब दिया—'एक पतित नास्तिक आदमी—जिसका नाम भी जिह्वापर नही लाना चाहता—का शिष्य हमारे शहरमे आया है।' कविने जोर देकर कहा—'जैसे भी हो उसका नाम बतलाओ।' मोचीने जवाब दिया—'उस पापीका नाम नासिर खुसरू है। अभी धर्म-युद्ध घोषित करके उसके शिष्यकी बोटियाँ-बोटियाँ उड़ा दी। मै देरसे पहुँचा और केवल अपने चर्मावरकको उसके खूनसे रग पाया। इसम भी पुण्य है, हाँ उतना नहीं।' अलबत्ता ठीक'—कविने जवाब दिया। इस घटनाको सुनकर उसका दिल काँप गया। वह सोचने लगा, यदि मेरे शिष्यके साथ ऐसा कर सकते हैं, तो मुझे पहचान लेनेपर मेरी क्या गत बनायेगे? फिर एकाएक अपने जगहसे उठ चिल्लाकर बोला—'नही, मै इस शहरमे नही ठहर सकता, जहाँ कि ऐसे पतितके शिष्य रहते हैं' और जूतेको बिना लिये ही नगे पैर शहरसे चला गया। यह था बर्ताव सामतशाही पूर्वका महान व्यक्तियोंके प्रति।

हमारे प्रसिद्ध लेखकके जीवन-पथका बड़ा भाग अमीरी अत्याचार और प्रतिगामिताके जमानेमे गुजरा। सदरुद्दीन ऐनी १८७८ ईस्वीमे बुखाराके पास गिजदवान तूमान (परगना)मे एक गरीब किसानके घर पैदा हुए। छः वर्षकी उम्रमे वह गाँवके मस्जिदवाले मकतबमे पढ़ने गये। माँने मकतब भेजते वक्त ऐनीसे कहा 'जब तू चार साल चार माह चार हफ्ता चार रोजका हुआ, तो तुझे तश्तरी और दस्तरखानके साथ हमने मकतब भेजकर पाठारभ करवाया था, लेकिन उस समय तू बहुत छोटा

था। मै बहुत डरती थी कि मकतबमें तुझे बहुत तकलीफ देंगे। इसीलिये रोक लिया और तू अब तक खेलता-कूदता रहा। लेकिन अब खूब मेहनत करके पढना, जिसमे तेरे घरपर रहनेके इन चार सालो तक मकतब जाने वाले अपने पड़ोसियोंके बराबर हो जाय।'

ऐनी जब बारह सालके हुए तो उनके बाप मर गये और बड़े भाई [हाजी सिराजुद्दीन खोजा] उन्हे बुखारा ले गये। वहाँ नौकरीपेशा का काम करते उन्होंने अपनी पढाई जारी रखी। उनका वह जीवन कष्ट और दुखपूर्ण जीवन था, लेकिन जीवनके यह अनुभव ऐनी जैसे सूक्ष्मदर्शी लेखकके भविष्यके कामके लिये बड़े ही लाभदायक सिद्ध हुए। ऐनीने उस जीवनके बारेमें कहा है। 'मेरी मासिक आय ७८ तकासे अधिक न थी। सारे मदरसेकी झाड़ू-बर्दारी और बड़ोंकी सेवा करना भी मेरे जिम्मे था। ऊपरसे मुतवल्ली (प्रबन्धक)ने मदरसाकी सपत्ति हिन्दू सूदखोर किरायादारोंके रहनेकी सरायका प्रबन्ध भी मेरे शिरपर रक्खा था। इसी समय मुझे सूदखोर हिंदुओंके जीवन और रीति-रिवाजोंका परिचय हुआ।

मदरसाके फर्राश (फर्श बिछानेवाले) होनेकी वजहसे उन्हे विद्वत्-ससारके साहित्यकारो और कवियो यानी अहमद कल्ला और दूसरोंसे परिचित होनेका मौका मिला। जल्दी ही सदरुद्दीन प्रगतिशील आदर्शकी ओर आकृष्ट हुए, जिसने उन्हे जदीदोकी पक्तिमे ला रक्खा।

ऐनीने कोशिश की, कि नये ढगके मदरसोको खोल नई तरहकी पाठ्य-पुस्तकोको तैयार कर विद्यार्थियोको पढ़ाया जाय। इसका परिणाम हुआ—अमीरके सामने दोषारोपण कर उन्हे दड दिया जाना, और अमीरके जल्लादोंके हाथसे पचहत्तर बेत खा जेलमे डाल दिया जाना।

ऐनी १९१८ ई०मे जेलसे मुक्त हुए। अमीरके हाथसे अब वह बाहर थे, लेकिन उसने उनके भाई तथा जदीदी आन्दोलनके पुरस्कर्ताओंमे

से एकका कत्ल कराया। अपमान, शारीरिक दण्ड, भाईका कत्ल और साथ ही किसानोंके कष्टमय जीवनके अनुभवने ऐनीको अमीरका दुश्मन बना दिया (अपने विचारों को ऐनीने) इन पद्योंमें प्रकट किया है :—

भगवान्! वह मुफ्ती, वह काजी, वह शाह और वजीर
नतशिर हो अपने रक्तमें लोटते होवें।

यह धधकते वाक्य यद्यपि अमीरों, खानों और जल्लादोंके सारे सम्प्रदायके विरुद्ध घृणा प्रकट करते हैं, किन्तु तो भी उस वक्त अभी उनका वाणीमें कमकरोंकी स्वतन्त्रताके क्रान्तिकारी मार्गका कहीं पता नहीं लगता। क्रान्तिकारी आन्दोलन आगे बढ़ा। फिर अक्तूबर (रूसी) क्रान्तिने उनपर जबर्दस्त प्रभाव डाला और सदरुद्दीन ऐनीको आगे बढ़ा पूर्वके क्रान्तिकारी लेखकोंकी पंक्तिमें ला खड़ा किया।

ऐनी की कितनी ही पुस्तकें रूसी, उजबेकी, उक्रेनी आदि भाषाओंमें अनुवादित हो चुकी हैं।

(ऐनीका) 'आदीना ताजिक भाषाके साहित्यमें यदि प्रथम उपन्यास है, तो सदरुद्दीन ऐनीकी दूसरी कृति 'दाखुन्दा' निश्चय सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति मानी जायगी ··ऐनीकी नई कृति 'गुलामान (जो दास थे)' इतिहासके एक बड़े भागका उच्च तथा मर्मजतापूर्ण दृश्य पेश करते प्रजातन्त्रिक कलम्बोजकी स्थापना और नवीन जीवन·· के नजदीक तक पहुँचाती है

अहमद कल्लोका ऐनीके ऊपर आरम्भमें बहुत प्रभाव रहा। सदरुद्दीन ऐनीके कृतित्वकी विशेषता अपने पहलेके लेखकोंसे क्या है? ऐनी किस तरहका श्रेष्ठ कलमका धनी है? सबसे पहला बड़ा काम ऐनीका है ताजिक भाषाको अरबी शब्दोंसे—जोकि लम्बे ऐतिहासिक कालमें आ घुसे थे—शुद्ध करना। इसी लिये सबकी समझमें आनेवाला उनकी कृतियोंसे बहुसंख्यक जनताने लाभ उठाया।

ऐनीने जनताकी चलती भाषासे सिर्फ फायदा ही नहीं उठाया, बल्कि उस भाषाको पूर्ण और उन्नत कर अपनी कृतियों द्वारा उसे दुनियाके साहित्यमें स्थान दिलाया···

'आदीना' और 'दाखुन्दा' की भाषा वह भाषा है, जिसमे लोग बातचीत करते हैं। इससे तथा जनसाधारणके जीवनकी गम्भीर जानकारीने ऐनीको बहुत जल्द कमकर-जन-साधारणकी भारी संख्यामें प्रसिद्ध कर दिया। गाँवों, कलखोजो और स्कूलोंमें ऐसे कितने ही पाठक मिलेंगे, जो 'आदीना' और 'दाखुन्दा' की कहावतोंको बातचीतमे प्रयुक्त करते हैं।

सदरुद्दीन ऐनीने ताजिकिस्तान समाजवादी सोवियत प्रजातन्त्रकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समितिके स्थायी सदस्यके तौर पर हमारे प्रजातन्त्रकी संस्कृतिके निर्माण करने और स्कूलोंकी समस्याओंको हल करनेमें भारी काम किया है।

पूज्य गुरु सदरुद्दीन ऐनी अधिक वर्षों तक हमारे भीतर रह शत्रुओंको भय भीत करते हमारे समाजवादी देशकी भलाईके लिये···काम करते रहें।

३—सदरुद्दीन ऐनी*

"· छः सालकी अवस्थामे माँ-बाप मुझे मस्जिदके मकतबमे ले गये · मकतबका फर्श केवल १६ वर्ग अर्शीन (६-६ वर्गगज) था। उसे लकड़ीके कठघरेसे नौ भागोंमें बाँट दिया गया था। विद्यार्थी इन्हीं कठघरोंमे ढोरोंकी तरह बैठते थे और मुल्लाका डडा उनके सिरपर रहता था। विद्यार्थी बिना समझे ही कुरानकी आयतोंको जोर जोरसे

* 'मास्कोन्यूज' ८ मार्च १९४७

दुहराया करते थे।...मैंने अपने जीवनमें दो स्वतन्त्रताओंको सबसे अधिक महसूस किया, जिनमेंसे एक वह थी जब कि बयालीस सालकी उम्रमें पचहत्तर बेत खाकर अमीरके जेलमें पड़े मुझे वहाँसे छुड़ाया गया और दूसरी उससे छत्तीस वर्ष और पहले छ: सालकी उम्रमें, जब कि मुझे मकतब न जानेकी इजाजत मिल गई। कह नहीं सकता, दोनोंमेंसे किसको ज्यादा मैंने पसन्द किया।" [ऐनीने एक जगह अपने बारेमें लिखा है।]

बारह सालकी आयुमें ऐनी गाँवसे अपने भाईके पास बुखारा-कदीममें चले गये। वहाँ उन्हें उक्त मदरसेमें चौकीदारका काम मिल गया। प्रबन्धकोंकी कृपासे जीविकाके लिये चौकीदारका काम करते भी मदरसामें पढ़नेकी आज्ञा मिल गई। यहाँ इस विद्यार्थी-जीवनमें शिक्षित नौजवानोंकी संगति पाकर ऐनीका ध्यान उस द्वन्द्वकी ओर गया, जो कि तत्कालीन समाजमें दिखाई पड़ता था। एक ओर तो यह विद्या और प्रकाश की हरियावल थी और दूसरी ओर चारों तरफ अनन्त विजन बालुकाराशि, एक ओर आँखोंको चकाचौंधमें डालनेवाला बुखारा-नगरका वैभव और दूसरी ओर बहुसंख्यक जनताकी घोर दरिद्रता।

१९१८ में क्रान्तिकी गूँज बुखारा पहुँची। शताब्दियोंसे दबी जनताने रूसी मजूर कोलोसोफके सैनिक दस्तेकी सहायतासे अमीर और उसकी हकूमतको मार भगाया। नई प्रजातन्त्री व्यवस्थाके प्रारम्भमें ऐनीको जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा, उन्होंने उनके कलामय मस्तिष्क और अनुभूतियोंको और भी सशक्त, और भी व्यापक बना दिया। यद्यपि उन्होंने क्रान्तिसे पहले ही साहित्य-क्षेत्रमें पग रखा था, लेकिन उन्हें अपने कामका पूरा अवसर सोवियत युगमें ही मिला। क्रान्तिके आते ही ऐनी दिलोजानसे अपनी जनताको विद्या और ज्ञानके आलोकसे आलोकित करनेमें जुट गये। सोवियतकी ओरसे पहलेपहल खोले गये स्कूलोंमें उन्होंने अध्यापनका काम किया, फिर मध्य-एसियाकी प्रथम प्रकाशन

संस्थामें सम्पादकका भार सँभाला, साथ ही प्रथम प्रकाशित होनेवाले पत्र पत्रिकाओंमें लेख लिखना प्रारम्भ किया। उनका प्रथम उपन्यास 'आदीना' ऐसे ही लेखोंक रूपमें निकला।

और अब उनके ताजिकिस्तानमें तीन हजार स्कूल, सात कालेज, एक युनिवर्सिटी, बास टेकनिकल स्कूल, पछत्तर दैनिक पत्र और पत्रिकाएं हैं। "ताजिक-सरकार-प्रकाशन-संस्था' (स्तालिनाबाद)की ओरसे पुस्तक-पुस्तिकाओंकी प्रतियां चार करोड़ बास लाख ताजिक भाषामें प्रकाशित हो चुकी हैं।

ऐना अब भी सोवियत ताजिकिस्तानके निर्माण कार्यमें भाग लेते हैं। पहली पंचवार्षिक योजनाके समय नव-निर्माणके स्थानोंमें नाचेंसे ऊपर तक उन्होंने घूम-घूमकर देखा और उन पर पत्रोंमें लेख लिखे। विश्व युद्धके समय ताजिक बहादुर तमूर मलिक पर ऐनाने पुस्तक लिखा। वख्श (वंक्षु) उपत्यकाका भारी नहर तथा बिजलीके कारखाने और दूसरे निर्माणों पर लेख लिखे।

दूसरी पीढ़ीके तरुण लेखकोंको तयार करनेमें ऐनाका विशेष हाथ है। वह उनके पास अपनी पुस्तकोंको [illegible] संशोधनके लिये भेजते हैं। १९४७के निर्वाचनमें लोगोंने ऐनाको ताजिकिस्तानकी पार्लामेन्टका मेम्बर चुना।

ऐनाकी पुस्तकोंके अनुवाद केवल सोवियनकी एसियाई भाषाओंमें ही नहीं, बल्कि उक्रइन, बेलोरूसिया और रूसकी भाषाओं में भी हुए हैं।

४—स्वलिखित जीवन-घटनाएं

"मैं सन् १८७८ में बुखारा जिलेके गिज्दवान तहसीलके साकतारी गाँवमें एक गरीब किसानके घर पैदा हुआ। बारह सालकी आयुमें

अनाथ हो गया। बड़ा भाई बुखारामें पढ रहा था, उसने मुझे अपनी संरक्षकतामें ले लिया। वहाँ मैं पढता और मजूरी करता रहा। मदरसा-आलमजानमें एक वर्ष झाड़ूदार (फर्राश) का भी काम किया। १६०५ मे अध्यापक और स्कूली पुस्तकोंके लेखनका काम करता रहा। १६१५-१६ में एक साल किज़िलूतप्पाके कपासके कारखानेके कटाईके आफिसमें काम किया

१६१६ में बुखारामें एक मदरसामें मुदर्रिस (प्रोफेसर) नियुक्त हुआ। १६१७ के राष्ट्रीय आन्दोलन या "फरवरी क्रान्ति"में अमीरके विरुद्ध भाग लिया। १६ अप्रेलको गिरफ्तार कर मुझे पछत्तर कोडे मारे गये और आबखाना नामक जेलमें डाल दिया गया। रूसी क्रान्ति-सेनाने मुझे जेलसे निकालकर कागनके अस्पतालमें रख दिया, जहाँ बावन दिन रहनेके बाद मैं स्वास्थ्य लाभ कर सका। १७ जून (१६१७)को समरकन्द आया। तबसे समरकन्द नगरमें ही मेरा निवास है।

मार्च १६१८ म कोलिसोफ्के युद्धकाडके समय मेरे छोटे भाईको—जो कि मुदर्रिस थे—अमीरने पकडवाकर मरवा दिया। १६१८ से मै सोवियत्के हाई स्कूलोंमें पढाने लगा। साथ ही १६१६—२१में समरकन्द-के दैनिक और मासिक पत्र पत्रिकाओंमें साहित्यिक सम्पादकका भी काम करता रहा। बुखाराकी क्रान्तिमें भाग ले अमीरके विरुद्ध जनताको उभाड़नेका काम किया। १६२२ में मेरे बड़े भाईको साकतारी गाँवमें बसमाचियोंने मार डाला। १६२१के अन्तसे १६२३ तक बुखारा जन-सोवियत्-प्रजातन्त्रके वकीलके सहायक (नायब)के तौर पर समरकन्दमें काम करता रहा।

१६२३के अन्तसे १६२५ तक समरकन्दमें सरकारी व्यापारका सचालक (डाइरेक्टर) रहा। १६२६ से १६३३ तक तिर्मिज़में साइन्स और साहित्य विषयक सम्पादकका काम किया। सितम्बर १६३३में

ताजिक सरकारने पेन्शन दे मुझे कामसे फुर्सत दे दी, जिसमें कि मैं घर पर रहकर अपना साइन्स (अनुसन्धान) और साहित्य सम्बन्धी कार्य स्वतन्त्रतापूर्वक कर सकूँ।

१९३५ से मैं उजबकिस्तानकी उच्च शिक्षण-संस्थाओं—उजबक सरकारी युनिवर्सिटी (समरकन्द), समरकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द ट्रेनिंग कालेज, ताशकन्द लॉ कालेज, मध्य एसिया युनिवर्सिटी (ताशकन्द) —में एम० ए०, डाक्टर-उमेदवार (पी-एच० डी०) और डाक्टर (डी० लिट्) का परीक्षाओंका परीक्षक और परामर्शदाता होता हूँ। इस समय मध्य-एसिया युनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी इब्राहीम मोमिनोफ, उजबक युनिवर्सिटीके डाक्टर-विद्यार्थी वाहिद अब्दुल्ला और डाक्टर-उमेदवार विद्यार्थी मिर्जाज़ादा और ताशकन्द ट्रेनिंग कालेजके एम० ए० के विद्यार्थी मर्दन शराफजादा और सदारत अयबजानाफ अपने अपने विषयों पर मेरे तत्वावधानमें काम करते हैं।

१९२३ में ताजिक समाजवादी सोवियत् प्रजातन्त्रकी केन्द्रीय कार्यकारिणीका मैं मेम्बर चुना गया। १९२९-३८ तक भी उसका मेम्बर रहा। १९३१ में ताजिक सरकारने मुझे "लाल श्रम-ध्वज" का तमगा प्रदान किया। १९३५ में सरकारकी ओरसे मुझे एक कार और भवन प्रदान किया और उजबक सरकारकी ओरसे सनद और रेडियो मिला।

१९२३ में अखिल सोवियत लेखक-संघका मैं मेम्बर चुना गया। १९३४ से १९४४ तक उसके प्रेसीदियम (सभापति-मंडल) का एक सभापति और ताजिकिस्तान तथा उजबकिस्तानके लेखक-संघोंकी उच्च-समितियोंका भी सदस्य रहा। अप्रैल १९४१ में सोवियत् सरकारने "आर्डर-लेनिन" नामक तमगा प्रदान किया। १९४३ में उजबक साइन्स अकदमीका मैं "माननीय सदस्य" निर्वाचित हुआ। १९४६ में "साइन्सके कामके लिये" तमगा मिला। १९३९ में स्तालिनाबादकी नगर सोवियत् (कार्पोरेशन) का मेम्बर चुना गया। २६ अक्टूबर

१९४० को "माननीय साइन्सी नेता ताजिकिस्तान समाजवादी सोवियत् प्रजातन्त्र" की उपाधि मिली। अक्टूबर १९४६ में उजबक युनिवर्सिटीकी साहित्य फैकल्टीका डीन (प्रधान) बनाया गया।

ऐनी*

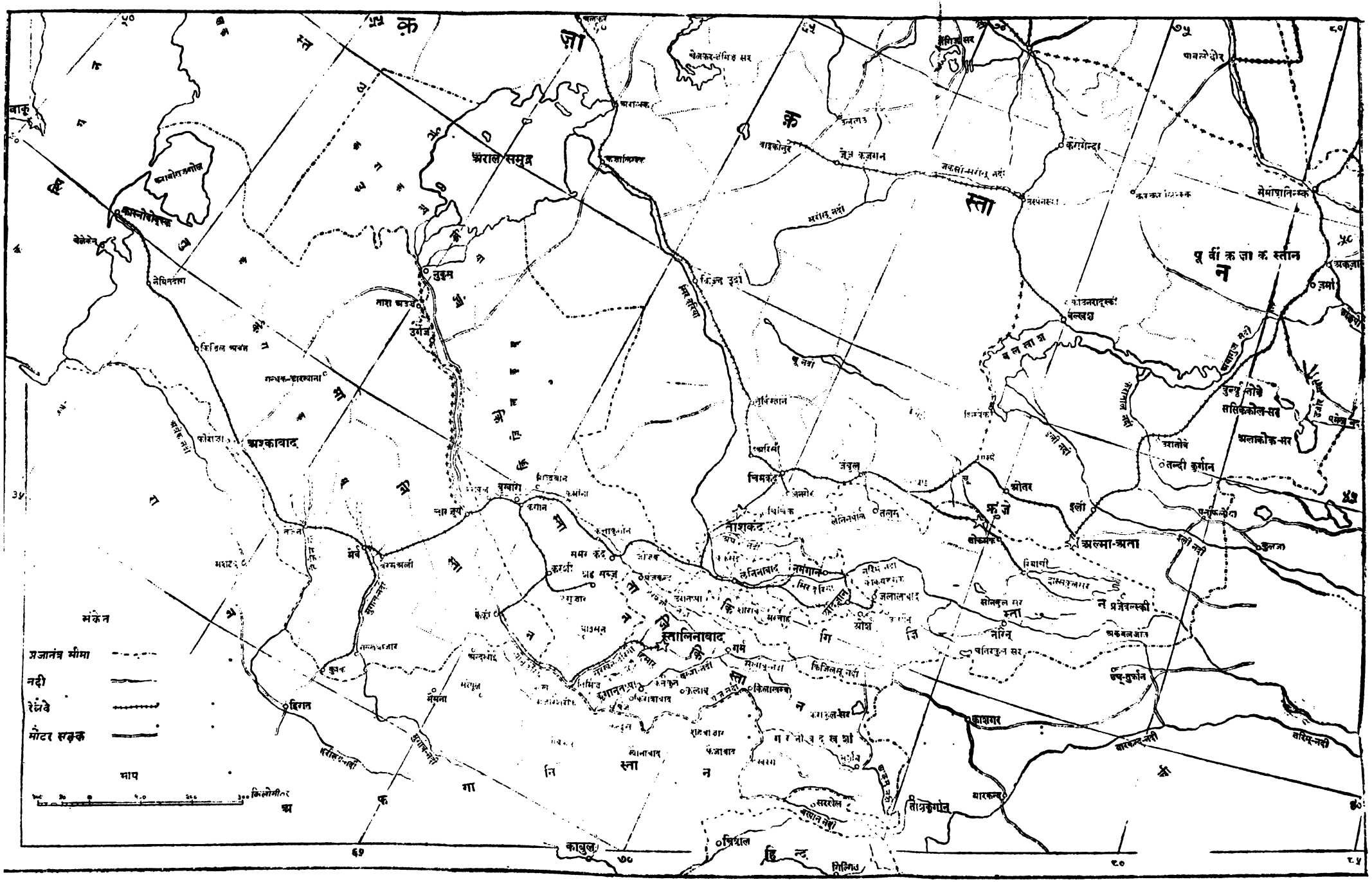
—२३ अप्रेल १९४७।

—:०:—

* मेरे कहनेपर ऐनीने उपरोक्त विवरण लिख भेजा था।—राहुल।

नम्बर	नाम	पृष्ठ	सन्	प्र० स्थान
१	जल्लादान-बुखारा	२१४	१९२२	
२	तारीख-अमीरान मगीती	३२०	”	ताशकन्द
३	तारीख इन्कलाब बुखाराकी सामग्री	३२०	१९२६	मास्को
४	इन्तिखाब-अदब ताजिक	१२८०	१९२६	मास्को
५	आदीना	१९२	१९२६	समरकन्द
६	अहमद देवबन्द	६४	१९३०	...
७	दाखुन्दा	८००	१९३१	कजान
८	कल्खोज कम्यूनिज्म	४८	१९३३	..
९	गुलामान	९६०	१९३४	समरकन्द
१०	मक्तब कुहना	९६	१९३५	समरकन्द
११	याददाश्त	१२८	१९३५	समरकन्द
१२	मर्ग सूदखोर	९६	१९३९	स्तालिनाबाद
१३	तीराज जहाँ	६४	१९३९	स्तालिनाबाद
१४	जस्न तारीखी	६४	१९३९	
१५	बूअर्लीसाना	९६	१९३९	लेनिनग्राद
१६	यतीम	२८८	१९४०	”
१७	जंग-इन्सान वा आब	१२८	१९४०	”
१८	“खमसा नवाई”	८९६	१९४०	ताशकन्द
१९	फिरदौसी व शाहनामा ओ	६४	१९४०	लेनिनग्राद
२०	रूदकी	१२८	१९४०	स्तालिनाबाद
२१	शेखसादी	९६	१९४२	”
२२	बगावत मुकन्ना	१६०	१९४४	स्तालिनाबाद
२३	तैमूर मलिक	१२८	१९४४	स्तालिनाबाद
२४	मिर्जा अब्दुल कादिर बेदिल	१६०		
२५	वेदाद आलोनास			
२६	नवाय			

नोट—इनके अतिरिक्त “शोला इन्कलाब”, ‘मआरिफ व ३२०० पृष्ठों के करीब लेख छपे हैं। १९२६ से आज तक साहित्य होगी।


अराल समुद्र
पूर्वी कज़ाकस्तान
अश्कावाद
स्तालिनाबाद
अल्मा-अता
फ्रुंजे
चिमकंद
ताशकंद
जंबुल
ओतर
इली
सोवियत
तुर्किस्तान
किज़ल उर्दा
उर्गंज
तुख़म
नाशा अउजे
किज़िल अर्वत
गल्यक-दारव्याना
फोवाडा
कुशका
मर्व
चारजुय
कुरका
हिसार
कुलाब
कालिनिन
जलालाबाद
सोनकुल सर
नारिन
प्रजेवल्स्की
अकबलआत
इस्सू-कुर्गान
कारागर
तोक्रकुर्गान
बारकल
कांबुल
त्रिग्राल
हिन्द
संकेत
प्रजातंत्र सीमा
नदी
रेलवे
मोटर सड़क
माप
किलोमीटर

कृतियाँ

विषय	अनुवाद का भाषाये आदि
क्रान्ति	"इन्कलाब" पत्रिका मे छपा
इतिहास	
"	(मूल उज्बक भाषा मे)
साहित्य	
उपन्यास	अनुवाद रूसी, अंग्रेजी फ्रेंच, उक्रइनी, उज्बकी
कहानी	रूसी अनुवाद
उपन्यासऐतिहासिक	रूसी, उक्रइनी, उज्बकी मे
लेख	रूसी
उपन्यासऐतिहासिक	मूल उज्बका मे। अनुवाद ताजिकी रूसी, उइगुरी
उपन्यास	रूसी अनु०
कविता सग्रह	
उपन्यास	अनुवाद रूसी
निबन्ध	
उपन्यास	
कविता(सम्पादित)	मूल उज्बका
निबन्ध	
इतिहास	
साहित्यिक निबन्ध	प्रेस मे
	"
	"

साहनावत", "रहबर-दानश "तगाह लेनिन , "शक नुर्स पत्रिकाओमे
और शोध सबधी कृतियो लेखो की पृष्ठ सख्या १६०० पृष्ठोके करीब